Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DHANVANTRI

1968 G. K. U.

Samaj Foundation Chennai an

DHANVANTRI

Domain. Gurukul Kangri Collectio

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113414

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

Diamond Book Binding House
Moh Karachi B.H.E.L Road Jwalapur

Stock Verification-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

~~RT 927~~

53

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्वन्तरि

ायुर्वेद का
र्व प्रिय सचित्र मासिक

स्वास्थ्य चर्चा

रुग्ण परीक्षा

वनस्पति विवेचन

औषधि निर्माण

सफल चिकित्सा

अप्रैल १९६८

भाग ४२ अङ्क ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल रजिस्टर्ड चिकित्सकों के लिए—

हमारे चिर-अनुभूत सफल सैट

हमारे निम्नलिखित औषधियों के सैट बहुत समय से अनेक चिकित्सकों द्वारा सफलतापूर्वक रोगियों को व्यवहार कराये जा रहे हैं, हजारों रोगी इनसे लाभ उठा चुके है। औषधियों की व्यवहार विधि औषधियों के साथ भेजी जाती हैं। चिकित्सकों तथा रोगियों को इन औषधियों से अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

१. श्वेतकुष्ठहर सैट—सफेद दागों को नष्ट करने वाली सुपरीक्षित तीन दवायें। समय कुछ अधिक लगेगा लेकिन सफेद दाग अवश्य नष्ट होंगे। आंतरिक रक्त-विकृति को दूर करती हुई स्थाई लाभ करने वाली औषधियां हैं। तीनों औषधियां १५ दिन सेवन करने योग्य का मूल्य आठ रुपया।

श्वेत कुष्ठहर वटी—३२ गोली की शीशी ३.००
श्वेतकुष्ठहर घृत—१ औंस (२८ मि. लि.) २.५०
श्वेतकुष्ठहर अवलेह—३० तोला (३५० ग्राम) ४.००

२. स्त्री रोगहर सैट—इसमें दो औषधियां हैं—१. स्त्री सुधा २. मधुकाद्यवलेह। इनके सेवन करने से स्त्रियों के सभी विशेष रोग नष्ट होते हैं। निर्बलता, आलस्य एवं अनियमितता नष्ट होकर उत्साह, स्फूर्ति, एवं नीरोगता शीघ्र मिलती है। १५ दिन सेवन योग्य औषधियां ८.००

स्त्री सुधा—१ बोतल (६२६ मि. लि.) ५.५०, ८ औंस (२२७ मि. लि.) का कार्डबोर्ड पैकिंग २.५०
मधुकाद्यावलेह—१५ तो. (१७५ ग्रा.) की शीशी ४.००

३. हिस्टेरिया हर सैट—स्त्रियों को दौरे से होने वाले इस रोग के लिए आशुलाभप्रद तीन औषधियों का व्यवहार अवश्य करावें। १५ दिन की दवा १०.००

हिस्टेरियाहर आसव—२० औंस (६३६ मि.लि.) ५.५०
हिस्टेरिया हर क्षार—आध औंस (१४ मि.लि) २.५०
हिस्टेरियाहर वटी—३० गोली की शीशी २.५०

४. निर्बलता नाशक सैट—अनुत्साह एवं निर्बलता से जीवन का आनन्द ही चला जाता है, गृहस्थी भारस्वरूप हो जाती है। इसके लिए निम्न तीन औषधियों का व्यवहार कर अपनी खोई जवानी को फिर से प्राप्त करें।

मकरध्वज वटी—४१ गोलियों की शीशी ३.५०
धन्वन्तरि तैल—मुरदार नसों पर मालिश के लिए १ शीशी आधा औंस (१४ मि. लि.) की ३.५०
धन्वन्तरि पोटली—सिकाई करने को एक डिब्बा ३.५०
तीनों औषधियों का सैट—मूल्य ९.०० पो. व्यय प्रथक

५. रक्तदोष हर सैट—इसमें धन्वन्तरि आयुर्वेदीय सालसा परेला, तालकेश्वर रस, इन्द्रवारुणादि क्वाथ तीन औषधियां हैं। इनके विधिवत् प्रयोग करने से सर्व प्रकार के रक्तविकार दूर होते हैं। फोड़े, फुँसी, चकत्ता, कुष्ठ आदि नष्ट होकर शरीर का रङ्ग रूप निखर आता है। १५ दिन की तीनों औषधियों का मूल्य ८.०० पो. व्यय ५ ००

धन्वन्तरि सालसा परेला—६३६ मि. लि. (१ बोतल) ५.००, (८ औंस) २.२५
तालकेश्वर रस—५.८३ ग्राम (६ माशा) ४ ४०
इन्द्रवारुणादि क्वाथ—१२ माशा—१.३५

अर्शान्तक सैट—वटी, मलहम, चूर्ण यह तीनों औषधियां दोनों प्रकार के अर्श नष्ट करने के लिये सफल प्रमाणित हुई हैं। १५ दिन की दवाओं का मूल्य ६.००

अर्शांतक वटी—३० गोली की १ शीशी ३.००
अर्शांतक मल्हम—आध औंस २ शीशी १.५०
अर्शांतक चूर्ण—८७ ग्राम (७॥ तो.) १ शीशी २.५०

७. वातरोगहर सैट—वात रोग हर तैल, रस एवं अवलेह तीनों औषधियों का सेवन करने से जोड़ों का दर्द, सूजन, अङ्ग विशेष की पीड़ा, पक्षाघात तथा सभी व्याधियों में अवश्य लाभ होता है। १५ दिन की तीनों दवा का मूल्य १०.००

वातरोगहर तैल—११४ मि. लि. (४ औंस) ३.००
वातरोगहर अवलेह—३० ग्राम (२॥ तोला) ४.००
वातरोगहर रस—(४ माशा) ५ ००

नोट—वात रोगी यदि साथ में बिजली की मशीन का व्यवहार भी करें तो शीघ्र लाभ होगा, इसमें संशय नहीं। बिजली की मशीन का मूल्य ३५.०० है।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113414

बनौषधि-विशेषाङ्क
(बनौषधि-विश्वकोष)

सम्पूर्ण बनौषधियों का विस्तृत वर्णन, विभिन्न अंगों का, पत्र-पुष्प-मूल-फल आदि का परिचय, उनका विभिन्न रोगों पर उपयोग तथा सफल प्रमाणित शास्त्रीय एवं स्वानुभवपूर्ण प्रयोगों का विशाल संग्रह क्रमशः धन्वन्तरि के विशेषांकों के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। इसके चार भाग प्रकाशित होचुके हैं, अभी २ या ३ भाग और प्रकाशित होने हैं। सभी चिकित्सकों के लिये यह साहित्य संग्रहणीय एवं पठनीय है। मूल्य–प्रथम भाग १०.००, द्वितीय भाग ८.५०, तृतीय भाग ८.५०, चतुर्थ भाग ८.५० पोस्ट व्यय पृथक् होगा। धन्वन्तरि के ग्राहकों को २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। चारों भाग एक साथ मंगाने पर कमीशन कम करके रियायती नैट मूल्य २५.०० पोस्ट व्यय ४.२५। २९.२५ मनियार्डर से भेजकर चारों भाग मंगावें।

पता–धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

ड्रग–एक्ट (हिन्दी में)
(Drugs & Cosmetics Act)

सितम्बर १९६५ तक संशोधित औषधि अधिनियम एवं प्रसाधन सामिग्री अधिनियम सम्पूर्ण फार्मों सहित सरल हिन्दी में प्रकाशित किया गया है यह पुस्तक सभी औषधि-निर्माताओं, औषधि विक्रेताओं तथा चिकित्सकों के लिए अवश्य पठनीय एवं संग्रहणीय है। आजकल के उलझन-पूर्ण समय में अपने व्यवसाय से सम्बन्धित नियमों की जानकारी रखना अत्यावश्यक है। अभी तक यह एक्ट हिन्दी में उपलब्ध नहीं था। अंग्रेजी से अनभिज्ञ व्यक्तियों के लिए इसका अभाव खटकता था। हमारे पास बहुत से पत्र इन नियमों की जानकारी देनेहेतु आते थे। इस कठिनाई को दूर करने के लिए ही हमने इसे हिन्दी में प्रकाशित किया है। प्रथम संस्करण शीघ्र समाप्त हो जाने की आशा है। अस्तु शीघ्र मंगालें। मूल्य—अजिल्द ६.००, सजिल्द ७.००

५ या अधिक प्रतियां एक साथ मंगाने वालों तथा पुस्तक विक्रेताओं को विशेष सुविधा दीजायगी।

प्रकाशक–धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़

नारी रोगांक
(नवीन संस्करण)

धन्वन्तरि का बहु-प्रसंशित एवं अत्युपयोगी विशेषांक (नारीरोगांक) जिसे सभी पाठकों ने अन्य सभी विशेषांकों से अधिक पसन्द किया था तथा जिसकी सभी प्रतियाँ थोड़े समय में ही समाप्त हो गई थीं—अब पुनः छप कर तैयार है। इस विशेषांक में सम्पूर्ण स्त्री-रोगों का विस्तृत सचित्र विवेचन तथा उनकी सफल चिकित्सा विधि दी है। इस विशेषांक के निर्माण में भारत के प्रख्यात एवं अनुभवी १३७ विद्वानों ने भाग लिया है। धन्वन्तरि साइज के ४६० पृष्ठ हैं। इस बार उत्तम ग्लेज कागज पर छपाया गया है। मूल्य इस संस्करण का १०.०० है। पोस्ट व्यय पृथक्।

धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये हैं स्कूल अध्यापक । बड़े विनयी और उदार । अपने छात्रों का जीवन बनाने के लिये इन्होंने तन-मन-धन से सेवा की है । इनकी बहुमूल्य सेवाओं के लिये इन्हें राज-पुरस्कार मिला । "क्या यह सम्मान ही सफलता का रहस्य है ?" यह पूछे जाने पर इन्होंने कहा—"कुछ और भी है । सच्ची लगन और त्याग । मैं यह सब कर सका क्योंकि मुझे घर की चिन्तायें नहीं हैं । जीवन से सन्तुष्ट हूं । दो ही बेटियां हैं मेरी । एक कालेज में लेक्चरार है । दूसरी डाक्टरी पढ़ रही है । दोनों अपने अपने रास्तों पर हैं । मैं उनकी तरफ से निश्चिन्त हूं ।

बच्चे कम हों तो सब कुछ आसान हो जाता है । न परेशानी न झंझट और जीवन सुख से कट जाता है ।"

ये खुश हैं —

और आप ?

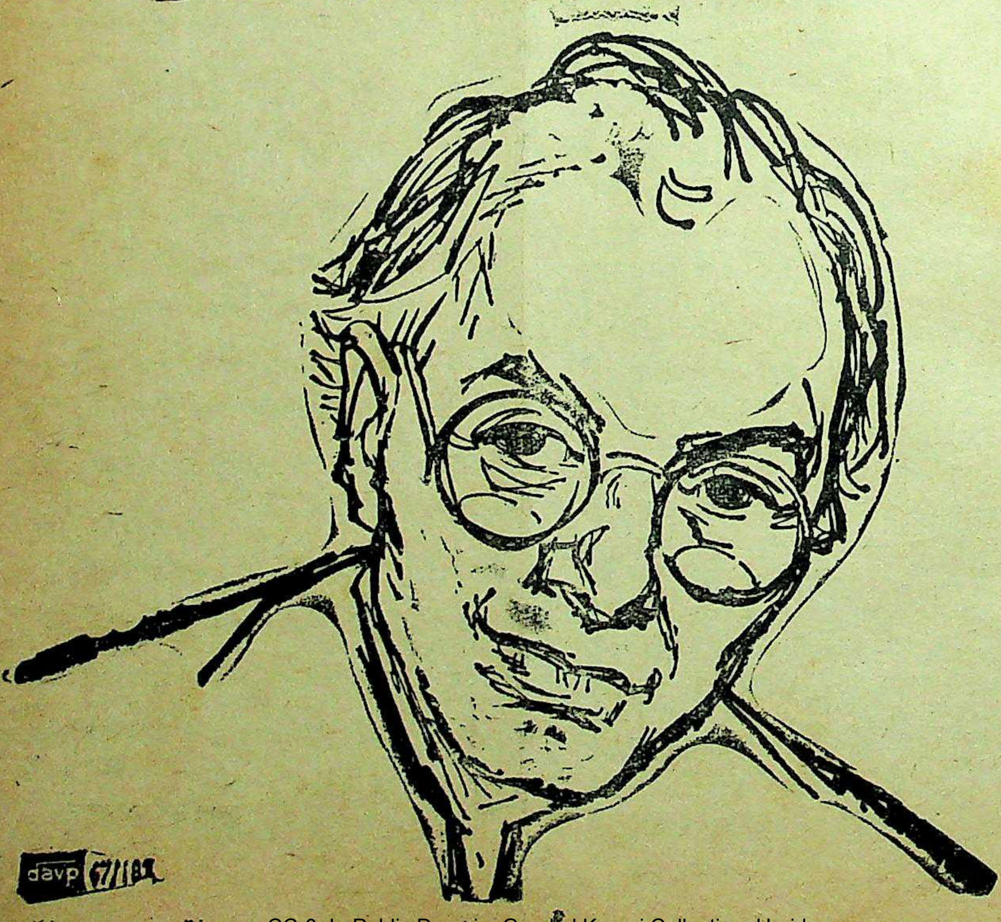

davp 67/182

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर रेलवे

१ अप्रैल १९६८ से समय सारिणी में परिवर्तन

दिनाङ्क १ अप्रैल १९६८ से समय सारिणी में सामान्य परिवर्तन किये जारहे हैं। कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन नीचे दिए जा रहे हैं–

नयी गाड़ियां चालू की गयीं —

(१) २ डी. एस. बी. पैसेन्जर बहादुरगढ़ और नई दिल्ली के बीच

(२) ५७ अप /५८ डाउन पठानकोट एक्सप्रेस के स्थान पर अमृतसर और पठानकोट की ४ ए. बी. पी. और ६ ए. बी. पी पैसेन्जर गाड़ी अब बम्बई बी. टी. और अमृतसर के बीच चला करेगी।

गाड़ियों की दूरी बढ़ाई गई —

(१) नंगल डाम और अम्बाला की बीच चलने वाली ५३ अप / ५४ डाउन नंगल डाम एक्सप्रेस अब देहली को / से सहारनपुर और मेरठ होते हुए चला करेगी।

(२) देहली किशनगंज और देहली सफदरजंग के बीच चलने वाली १ डी. एन. के/ २ डी. एन. के तथा ३ डी. एन. के / ४डी. एन. के. पैसेन्जर गाड़ी शकूर बस्ती को तथा शकूर बस्ती से चला करेगी।

गाड़ियां बन्द की गईं—

(१) २ एन. जी. डी. गाजियाबाद और दनकौर के बीच

(२) १ जी. डी. दनकौर और गाजियाबाद के बीच

गाड़ियों की चाल बढ़ाई गई—

कुल ४ गाड़ियों की चाल ५ से ७५ मिनट तक बढ़ाई गई है : उनमें से निम्न महत्वपूर्ण लम्बी दूरी तय करने वाली गड़ियां भी हैं—

१ अप दहली कालका मेल	१० मिनट
२ डाउन कालका देहली मेल	१० मिनट
११ अप दहली हावड़ा एक्सप्रेस	३५ मिनट
३८ डाउन पंजाब मेल	१० मिनट
९५ अप/९६ डाउन (एम. जी.) मारवाड़ मेल	७५ /५० मिनट

रुकने के नये स्थान—

निम्न नए रुकने के स्थान इन महत्वपूर्ण गाड़ियों पर बढ़ाए गए हैं—

गाड़ियां		स्टेशन
३१ अप/३२ डाउन	फ्रन्टियर मेल	व्यास
२७ अप/२८ डाउन	फलाइग मेल	व्यास
५ अप/६ डाउन	हावड़ा अमृतसर मेल	व्यास
५१ अप/५२ डाउन	सियालदाह-पठानकोट एक्सप्रेस	गोशियागंज
५२ डाउन	" " "	मिर्थल
६१ अप	तूफान एक्सप्रेस	हजरत निजामुद्दीन
११ अप/१२ डाउन	काश्मीर मेल	शकूर बस्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां गाड़ियां नहीं रुकेंगी

गाड़ियां	स्टेशन
३५१ अप इलाहाबाद सहारनपुर पैसेन्जर	बान्थरा
३७५ अप इलाहाबाद दहली पैसेन्जर	बाबूगढ़
८ एल एफ फिरोजपुर लुधियाना	पराओमाहना
३३ अप/३४ डाउन काशमीर मेल	मिरथल
१ ए. एच. एम. शटल	केलनवाली पंजाब
८ ए. बी. पी. पैसेन्जर	बटाला शुगर मिल्स

गाड़ियों के समय में महत्वपूर्ण परिवर्तन—

ब्रोड गेज (Broad gauge)

११ अप हावड़ा दहली एक्सप्रेस अब ६ बजकर ५ मिनट के बजाय ५ बजकर ३५ मिनट पर देहली पहुंचा करेगी।

१०८ अप झांसी सुल्तानपुर पैसेन्जर १५ बजकर २५ मिनट के बजाय १६ बजकर १५ मिनट पर सुल्लतापुर से चला करेगी, १८ बजकर ३५ मिनट के बजाय २० बजकर ४० मिनट पर लखनऊ पहुंचेगी तथा २१ बजकर ३५ मिनट के वजाय २३ बजकर ३५ मिनट पर कानपुर आवेगी।

१०७ डाउन झांसी सुल्तानपुर पैसेन्जर ४ बजकर ४० मिनट के बजाय ४ बजकर ५ मिनट पर कानपुर से चलेगी।

मीटर गेज (Meter gauge)

६५ अप मारवाड़ मेल ७ बजकर ५५ मिनट के वजाय ६ बजकर २५ मिनट पर जोधपुर से चलेगी और १० बजकर ४० मिनट के वजाय ६ बजकर २५ मिनट पर मारवाड़ पहुंचेगी।

६६ डाउन मारवाड़ मेल १७ बजकर ४५ मिनट के बजाय १८ बजकर ५ मिनट पर मारवाड़ से चलेगी और ७ बजकर ३० मिनट के वजाय ७ बजे बीकानेर पहुंचेगी।

२०७ अप आगरा एक्सप्रेस ६ बजकर १० मिनट के बजाय ५ बजकर ४० मिनट पर जोधपुर पहुंचेगी।

वातानुकूलित कोचों की व्यवस्था—

एक आंशिक वातानुकूलित कोच दहली और कालका के बीच १ अप/२ डाउन हावड़ा दहली कालका मेल में अब हफ्ते में तीन बार (tri-weekly) के वजाय प्रतिदिन।

एक वातानुकूलित कोच दहली और देहरादून के बीच ४१ अप/४२ डाउन मंसूरी एक्सप्रेस में प्रतिदिन।

एक पूरा वातानुकूलित कोच वम्बई सेन्ट्रल और पठानकोट के बीच ३ डाउन / ३३ अप और ३४ डाउन / ४ अप मेल में प्रतिदिन।

एक आंशिक वातानुकूलित कोच ३१-७-६८ तक दहली और बीकानेर के बीच ६१ अप/६२ डाउन बीकानेर मेल में हफ्ते में दो बार निम्नानुसार—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दहली से	सोमवार और बृहस्पतिवार
बीकानेर से	मंगलबार और शुक्रवार

एक आंशिक वातानुकूलित कोच हफ्ते में तीन बार दहली और जोधपुर के बीच ९३ अप/९४ डाउन जोधपुर मेल में निम्नानुसार—

दहली से	सोमवार, बुद्धवार और शनिवार
जोधपुर से	रविवार, मंगलवार और बृहस्पतिवार ।

एक आंशिक वातानुकूलित कोच दहली और अमृतसर के बीच ३१ अप/३२ डाउन फ्रांटियर मेल में पूर्ण वातानुकूलित कोच के स्थान पर।

वातानुकूलित स्थानों में घटोतरी—

नई दिल्ली और पठानकोट के बीच ५९ अप/६० डाउन श्रीनगर एक्सप्रेस में हफ्ते में तीन बार चलने वाला आंशिक वातानुकूलित कोच।

सीधे जाने वाले डिब्बों में महत्वपूर्ण परिवर्तन—

एक पूर्ण वातानुकूलित कोच, एक प्रथम दर्जे और एक द्वितीय दर्जे की स्लीपर (तीन सीट वाली) प्रत्येक बम्बई सेंट्रल और पठानकोट के बीच ३ डाउन/३३ अप और ३४ डाउन/४अप मेल में चला करेंगी।

एक प्रथक विभागों से निर्मित प्रथम और तृतीय दर्जे की कोच देहली और भुवनेश्वर के बीच ८६ डाउन, १८ डाउन, ३५२ डाउन और ८ डाउन तथा ७ अप, ३५१ अप, १७ अप और ८५ अप के बजाय अब नई देहली और भुवनेश्वर के बीच (सी. आर. ६४) ८ डाउन/३५२ डाउन/८६ डाउन और १७ अप / ३५१ अप/१७ अप (सी. आर. ६३) में चला करेगी।

क्योंकि नंगलडाम मेल अब देहली से और देहली तक के लिए बढ़ा दी गई है इसलिए १ अप/२ डाउन कालका मेल में देहली और नंगलडाम के बीच चलने वाला सीधा डिब्बा बन्द कर दिया जायेगा।

१ अप/२० डाउन में देहली तथा चंडीगढ़ के बीच एक ३ टायर तृतीय श्रेणी का स्लीपर आंशिक डिब्बा चला करेगा।

वृद्धि—

(भीड़ को हटाने के लिए) नई दिल्ली तथा पठानकोट के बीच ५९ अप/६० डाउन श्रीनगर एक्सप्रेस में तृतीय श्रेणी का एक अतिरिक्त डिब्बा तथा देहली और बरौनी के बीच [illegible] डाउन आसाम मेल में भी तृतीय श्रेणी का एक अतिरिक्त डिब्बा बढ़ा दिया जायेगा।

गाड़ियों के समय, सीधे जाने वाले खण्डीय डिब्बे चलाने और बन्द करने, गाड़ियों में स्थान के वर्गीकरण के फेर बदल आदि के सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिए कृपया अप्रैल १९६८ की समय सारिणी देखें। यह समय सारिणी रेलवे टिकट घर, आरक्षण, पूछतांछ कार्यालयों तथा प्रमुख स्टेशनों के बुकस्टालों पर बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

प्रमुख परिचालन अधीक्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

	श्री पं० बाबूलाल द्विवेदी	७
जय धन्वन्तरि	श्री वैद्य नर्वदेश गौतम	८
न वेगान्धारणीयम्	श्री आचार्य कृष्णदत्त शर्मा आयुर्वेदाचार्य एच. पी. ए.	१०
छात्रों तथा स्नातकों की कठिनाइयां	श्री वेद प्रकाश तिवारी	१३
गर्मियों में स्वास्थ्य रक्षा	श्री वैद्य दारोगा प्रसाद मिश्र	१५
रक्तपित्त—एक अध्ययन	श्री लक्ष्मीनारायण अलौकिक	१७
हृदय के रोगों की सरलतम गृह चिकित्सा	श्री ब्रज मोहन वाशिष्ठ ए. एम. बी. एस.	१९
शैशवातिसार	श्री कविराज केशवराय सोहनी उर्फ आत्माराम बाबा	२१
शीतला शान्ति उपाये		
स्वर्गीय पं० कृष्णप्रसाद त्रिवेदी बी. ए. आयुर्वेदाचार्य की जीवनी पर विहंगम दृष्टि		
	श्री नन्दकिशोर शर्मा सूर्य चिकित्सक	२३
	श्री आचार्य चरणतीर्थ जी महाराज	२५
अपस्मार	श्री डा० पद्मदेवनारायण सिंह एम. बी. बी. एस.	२७
कुछ विशेष उपयोगी विविध इन्जेक्शन	श्री डा० बनारसीदास दीक्षित एच. एम. डी. एस.	३०
गर्भस्राव या गर्भपात	श्री कविराज सन्तोष कुमार शतपथी	३३
कृमियों का प्रत्यक्षीकरण	श्री डब्ल्यू. आर. माकोड़े बी. ए. एम. एस.	३५
श्वास रोग की चमत्कारी दवा	श्री डा० महेन्द्र ठाकुर	३६
अभ्रक भस्म का सरल भस्मीकरण	श्री वैद्य नवीन भाई ओझा	३७
मयूर पिच्छ भस्म	श्री वैद्य रतन लाल जैन	३८
कुछ विविध आयुर्वेदिक सूचिकाभरण	वैद्यराज गोस्वामी जयनारायण गिरि (इन्दु)	४०
वनौषधि विवेचन	श्री शिवनारायण सक्सेना	४२
गुणकारी सब्जी मेथी	श्री आर्य वैद्य पं० मिलिन्द	४४
परीक्षित प्रयोग	श्री वैद्य मक्खन लाल शर्मा	४५
	श्री शम्भूगिरि सुकनगिरि गोस्वामी	४६
	श्री वैद्य मोहर सिंह आर्य	४६
स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी	श्री आचार्य कृष्णदत्त शर्मा आयुर्वेदाचार्य	४७
प्राकृतिक स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी	श्री गंगा प्रसाद गौड़ 'नाहर'	४९
समाचार एवं सूचनायें	... ...	५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिताहितं सुखंदुःखमायुस्तस्य हिताहितम् ।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ।। —चरक सूत्र १—४०

अप्रैल १९६८ | धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ द्वारा | भाग ४२
मात्र चिकित्सकों के लिए प्रकाशित । | अङ्क ४

जय धन्वन्तरि

महके सारा जगत सदा, 'धन्वन्तरि' दिव्य कुसुम से ।।

आयुर्वेद वाटिका में
'धन्वन्तरि' कली खिली है।

मानो जैसे सोने में
आ दिव्य सुगंध मिली है ।।

यों तो पहले से ही
आयुर्वेद चमन कुसुमित है ।।

किन्तु सभी से अधिक आज
'धन्वन्तरि' पर गर्वित है ।

हे प्रभु ! रुजहर ! अमर ! अलौकिक !
यही प्रार्थना तुम से ।

महके सारा जगत सदा
'धन्वन्तरि' दिव्य कुसुम से ।।

—श्री पं. बाबूलाल द्विवेदी
छिल्लका पो० कुआगांव (झांसी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न वेगान्धारणीयम्

श्री वैद्य नर्वदेश गौतम

आजकल जितनी भी बीमारियां हैं उनमें बहुत सी वेगों को धारण करने से ही होती हैं। अक्सर देखा जाता है कि बहुत से लोग वेगों को धारण करते हैं या रोकते हैं। कोई मलमूत्र के वेग को रोकता है, कोई वीर्य के वेग को, कोई अधोवायु और वमन के वेगों को रोकते हैं जिनको रोकने से कि मानव शरीर पर दुष्प्रभाव पड़ता है। कभी कभी तो इन वेगों को रोकने से बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। मैं पाठकों को कुछ बीमारियों के बारे में बता रहा हूं जो कि वेगों के धारण करने से होती हैं।

१—मल-मूत्र के वेग को रोकना

आजकल बहुधा देखा जाता है कि लोग जलूसों, मीटिंगों, टी पार्टियों या विवाह आदि में जाते हैं तो वहां वे लोग मल-मूत्र के वेगों को रोकते हैं। जिसकी वजह से बाद में बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है। मल के वेग को रोकने के बारे में चरक कहते हैं—

पक्वाशय शिरः शूलं वात वर्चो निरोधनम्।
पिण्डिकोद्वेष्टनाध्मानं पुरीषेस्या द्विधारिते॥

—च० सू० ७।६

मल का वेग रोकने से—पक्वाशय और शिर में पीड़ा, अधोवायु और बिष्ठा का रुकना, पिंडलियों में पीड़ा और अफारा आदि उपद्रव होते हैं। मल के वेग को रोकने से वायु कुपित हो जाती है और वह मूत्राशय तथा पेट में जाकर अफारा पैदा कर देती है। कभी कभी जांघों में भी पीड़ा हो जाती है और पेशाब भी कष्ट से उतरता है। जिसको कि मलावरोधज मूत्रकृच्छ्र कहते हैं।

चिकित्सा

मल के रुकने में स्वेदन, मालिश, गर्म जल में बैठना, तीनों प्रकार की वस्ति (निरूहण, अनुवासन, उदरवस्ति) वायु को अनुलोमन करने वाले गर्म और स्निग्ध पदार्थ खावें। गर्म जल का प्रयोग करें। यदि मूत्रकृच्छ्र हो जाये तो गोक्षुरादि गूगल का सेवन करायें। पेट साफ करने के लिए सरलभेदी वटी धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़) द्वारा निर्मित शाम को सोते समय एक गोली खाने से सुबह दस्त साफ होकर तबियत ठीक हो जाती है। लवणभास्कर चूर्ण का सेवन भी लाभप्रद है अथवा पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सौंठ इन पांचों से सिद्ध की हुई यवागू अग्नि को दीपन करती है और उदर के शूल को नष्ट करती है अथवा हरड़, पीपलामूल, सौंठ इनसे सिद्ध यवागू वायु को अनुलोमन करती है। सारे शरीर पर तिल के तेल अथवा सरसों के तेल की मालिश करायें। तेल को पहले गरम कर लेना चाहिए।

पथ्यापथ्य

खिचड़ी, अदरक, काली मिर्च, जीरा, लहसुन, प्याज, सौंठ, पीपल, लौंग, हरा धनियां, ताक, दूध आदि चीजें लाभप्रद हैं।

इमली, खट्टा मठा, खट्टा दही, खट्टा नीबू, बाजार की मिठाइयां, अधिक मीठे भोजन, ठंडे पानी से स्नान करना आदि हानिकारक हैं।

२—मूत्र के वेग को रोकना

वस्ति मेहनयोः शूलं मूत्रकृच्छ्र शिरोरुजा।
विनामो वङ्क्षणानाहःस्याल्लिङ्गं मूत्र निग्रहे॥

—च० सु० ७ ४

मूत्र का वेग रोकने से वस्ति और लिंग में पीड़ा होती है। मूत्रकृच्छ्र, मस्तक में पीड़ा, देह का नवना, पेट में पीड़ा और अफारा आदि उपद्रव होते हैं।

रौक्ष्याद्वेग विघाताद्वा वायुर्बस्तौ सवेदनः।
मूत्रमाविश्यचरति विगुणः कुण्डली कृतः॥
मूत्रमल्पाल्पमथवा सरुजं संप्रवर्तते।
वात कुण्डलिकां तां तु व्याधिं विद्यात्सुदारुणम्॥

—सू० उ० अ० ५

शरीर की रूक्षता या मूत्र के वेग को रोकने से वायु कुपित होकर चक्रवत् मूत्राशय में चलता रहता है और मूत्र से मिलकर पीड़ा पैदा कर देता है, तब पेशाब थोड़ा थोड़ा और पीड़ा के साथ उतरता है, इस महारोग को वात कुंडलिका कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशाब रोकने से वायु कुपित होकर वस्ति और कोख में इकट्ठा हो जाता है और वस्ति के द्वार को बन्द कर देता है तब मूत्र बन्द हो जाता है। इसे मूत्रातीत कहते हैं।

मूत्रस्य वेगेऽभिहते तदुदावर्त हेतुक।
अपानः कुपितो वायुरुदरं पूरयेद्भृशम् ॥
नाभेरधस्तादाध्मानं जनयेत्तीव्रवेदनम्।
तन्मूत्र जठरं विद्यादधो बस्ति निरोधनम्।

—सु० उ० अ० ५८

मूत्र के वेग को रोकने से अपान वायु कुपित होकर पेट को फुला देता है और नाभी के नीचे फूल जाता है, अत्यन्त पीड़ा होती है और मूत्राशय के नीचे का हिस्सा रुक जाता है अर्थात् पेशाब बन्द हो जाता है। इसे मूत्रजठर कहते हैं।

मुत्रितस्य स्त्रियं नातो वायुना शुक्रमुद्धतम्।
स्थानाच्युतं मूत्रयतः प्राक् पश्चाद्वा प्रवर्तते ॥
भस्मोदक प्रतीकाशं मूत्रशुक्रं तदुच्यते ॥

—वा० नि० अ० ९

लगे हुए पेशाब को रोक कर मैथुन करने से स्थान च्युत वीर्य वायु द्वारा ऊपर की तरफ को जाता है, फिर बाद में पेशाब करने पर आगे या पीछे राख मिले हुए पानी की तरह गिरता है। इसे मूत्र शुक्र कहते हैं।

चिकित्सा—

मूत्र के रुकने पर पसीना देना, जल में बैठना, मालिश करना, घृत पान करना, और निरूहण, अनुवासन, उदर बस्ति यह तीन प्रकार का बस्ति कर्म करना चाहिए। यदि मूत्रकृच्छ्र हो जाये तो सर्व प्रथम मलावरोध व मूत्रावरोध को दूर करें।

मलावरोध दूर करने के लिए मृदुविरेचन चूर्ण या सरल भेदी वटी का प्रयोग करें। मूत्रावरोध पर गोक्षुरादि गूगल का प्रयोग करें अथवा पुनर्नवा, लोह भस्म, हल्दी, गोखरू, गूलर, मूंगे की भस्म, धाय के फूल इन सबको पीस कर दूध, जल, मधु और ईख के रस में मिलाकर पीवें तो कफ और वात जनित मूत्रकृच्छ्र, पथरी तथा शर्करा में आशातीत लाभ होता है। सन्निपातज मूत्रकृच्छ्र में वायु आदि का विचार करके क्रमानुसार तीनों दोषों की मिली-जुली चिकित्सा करनी चाहिए। यदि वातादि तीनों दोषों में कफ की अधिकता हो तो प्रथम वमन करावें यदि पित्त की अधिकता हो तो प्रथम विरेचन करावें, और वायु की अधिकता में हमेशा वस्ति कर्म करावें। यदि सब प्रकार की चिकित्सा करने पर भी मूत्रकृच्छ्र शांत न हो तो उसको पुरानी मद्य और मध्वासव सेवन करावें।

पथ्यापथ्य—

खुली हवा में टहलना, धूप में बैठना, स्त्री संग, खजूर, शालूक, कैथ, जामुन, कषाय रस और दूध, भात, खिचड़ी, घी, धूप में मालिश करना, गर्म जल का सेवन लाभप्रद है।

खट्टी-मीठी चीजों का सेवन, लाल मिर्च, बाजार की मिठाईयां, व्यायाम, मलमूत्र के वेगों को रोकना, सूखे अन्न-पान एवं ठंडे जल का सेवन, आदि हानिकारक हैं।

वमन के वेग को रोकने के दोष—

कण्डू कोठाऽरुचिव्यङ्ग शोथ पांडु वामय ज्वराः।
कुष्ठ हृल्लास वीसर्पाश्छर्दि निग्रहजागदा ॥

—च० सू० ७/१२

वमन के वेग को रोकने से शरीर में खाज, कोठे में पीड़ा, अरुचि, व्यंग (झांई), सूजन, पांडु, ज्वर, कुष्ठ, हृल्लास, विसर्प आदि रोग वमन के वेग को रोकने से होते हैं।

चिकित्सा—

वमन के वेग को रोकने से हुए रोगों में, भोजन के बाद वमन कराना, धूम्रपान, लंघन, सिरा मोक्षण, रूक्ष अन्न-का सेवन, व्यायाम, विरेचन आदि कर्म करने से उत्पन्न रोगों में लाभ होता है। कल्याणघृत, जीवनीय घृत, वृष्य-योग, मांस रस आदि का सेवन लाभदायक है। अथवा, पीपल, लौंग, मिर्च को कूटकर शहद के साथ खायें तो कफजनित बलवान छर्दि भी दूर होती है। पित्त की छर्दि में यवों के सत्तू, गाजर और पीपल का चूर्ण मिलाकर मिश्री तथा शहद के साथ सेवन करायें। वातिक छर्दि में उत्तम प्रकार से बनाये हुए तीतर, मोर आदि के रसों का सेवन करायें। अथवा त्रिकुटा, सेन्धानमक, संचर नमक, विडनमक इन से सिद्ध किये गये घृत का सेवन करायें।

पथ्यापथ्य—

घृत, गुड़, खीर, मांस रस, अवलेह, पोदीना, कागजी नीबू, लौंग, दालचीनी, पीपल, कालीमिर्च, यव, गाजर, मिश्री, शहद, पुराने गेहूं का आटा, शाली चावल आदि लाभप्रद हैं। लंघन का निर्देश भी दिया गया है परन्तु वातज छर्दि को छोड़कर शेष में लंघन करा सकते हैं।

—शेषांश पृष्ठ १२ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छात्रों तथा स्नातकों की कठिनाइयां

श्री आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य आयुर्वेदाचार्य एच. पी. ए.

वर्तमान युग में चिकित्सा विज्ञान (आयुर्वेद, यूनानी, एलोपैथी, प्राकृतिक) के छात्रों को स्नातक बनने के बाद इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा या इण्डियन मेडिकल कांसिल द्वारा रजिस्ट्रेशन (पञ्जीकृत) प्रमाणपत्र प्राप्त कर, चिकित्सा कार्य में प्रवृत्त होना वैद्य मार्ग है। यह पञ्जीकृत प्रमाणपत्र ही एक प्रकार की राजाज्ञा है। आयुर्वेद संहिता ग्रंथों में चरक सुश्रुत तथा वाग्भट्ट आदि में भी राजाज्ञा को प्रमुखता दी है। इस विषय में सुश्रुत संहिता का निम्न उद्धरण पठनीय है—

अधिगत तन्त्रेणोपाशिततन्त्रार्थेन इष्टकर्मणां कृतयोग्येन शास्त्रं निगदिता राजानुराग्तेन नीचनखरोम्णा शुचिना शुक्लवस्त्र परिहितेन छत्रवनां दण्डहस्तेन सोपानत्केनाहुतवेशेन सुमनसा कल्याणाभिव्यवहारेणाकुहकेन बन्धुभूतेन भूतानां सुसहायवता वैद्येन विशिखाऽनुप्रवेष्टव्या: ।

इसके अंतर्गत 'राजानुशातेन' यह शब्द शासन द्वारा चिकित्सा व्यवसाय पर नियन्त्रण करने का समर्थन करता है। प्राचीन काल में भी पाठ्यक्रम के सांगोपांग (सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक) अध्ययन करने के बाद ही राजाज्ञा मिलती थी। अयोग्य चिकित्सकों पर नियन्त्रण करना भी सरकार का ही कार्य है।

अतो विपरीतानां रोगाणामभिसरा हन्तारो प्राणानां ....—...लोकस्य..............राज्ञाम्वयावाच्चरन्ति राष्ट्राणि।

इसलिए चिकित्सक को कर्म में निष्णात तथा शास्त्र ज्ञाता होना चाहिए।

धन्वन्तरि के विधि विधानांक में आयुर्वेदिक महा विद्यालयों के छात्रों की मूलभूत कठिनाइयों तथा स्नातकों के कण्टकाकीर्ण मार्ग पर विचार करना समय की मांग है। आयुर्वेद जीवन का विज्ञान है। इस बात को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ आयुर्वेदज्ञ तथा इतिहास वाले बराबर कानों में डालते रहते हैं। सम्प्रति इस जीवन विज्ञान का प्रायोगिक पहलू धूमिल हो रहा है। इस विधि विधानांक के माध्यम से यदि आयुर्वेद संसार में किंचित भी जागृति पैदा हो तो शुभ लक्षण होगा। इस विशेषांक में प्रकाशित नियम उपनियम जन मानस तक, वैद्यों तक तथा सरकार के सिंह द्वार तक पहुंच कर कुछ दिशा दर्शन कर सकेगा। ऐसा मेरा नम्र विचार है।

आयुर्वेद के साहित्य में मानव जीवन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्वों के विश्लेषण एवं संरक्षण की असीम शक्ति निहित है। आयुर्वेद के सिद्धान्त आज भी उतने ही मूल्यवान हैं। जितने निर्माण समय में थे। आयुर्वेद विगत कई शताब्दियों के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक झटकों के बाद भी स्थिर रहा। वर्तमान में 'इस घर को आग लगी है घर के चिराग से'-ज्वलन्त प्रश्न है ?

यह युग अर्थ प्रधान है तथा—' सर्वेगुणाकाञ्चनमाश्रयन्ति' की उक्ति को चरितार्थ कर रहा है। देश व्यापी राजरोग हड़ताल आयुर्वेदिक महाविद्यालयों में भी लगा हुआ है। स्नातकों को अपनी मांगों के लिये करुण पुकार करनी पड़ रही है। यह इस बात का प्रमाण है कि आयुर्वेदोपजीवी समाज के सामने बड़ी बड़ी कठिनाइयां उत्पन्न हो गई हैं अतः आयुर्वेद के महाविद्यालयों के स्तर को सुधारना तथा स्नातकों को आर्थिक सहयोग देकर उन्नत करना चाहिए। यह सरकार का पुनीत कर्तव्य है।

छात्रों की कठिनाई

एक आयुर्वेदीय पाठ्यक्रम देश व्यापी स्तर पर निर्मित तथा प्रचलित करना चाहिए। अलग अलग प्रकार का पाठ्यक्रम, उपाधियां तथा वेतनस्तर आयुर्वेद विज्ञान की मूलभूत मौलिकता पर सीधा आघात है। इन्हीं विभिन्नताओं के कारण समाज तथा सरकार वैद्य समाज को विचित्र दृष्टि से देखती है। छात्रों को अध्ययन काल में आयुर्वेदीय साज सज्जा से युक्त आतुरालय नहीं मिलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहां आयुर्वेद के त्रिदोषादि तथा प्रकृति परीक्षणादि मूलभूत सिद्धान्तों के आधार पर अच्छी प्रकार से रोग, रोगी परीक्षा एवं चिकित्सा का क्रियात्मक ज्ञान हो सके तथा शल्य, शालाक्य, प्रसूति आदि तन्त्रों का व्यवहारिक ज्ञान मिल सके। पञ्चकर्म, रसायन तथा वाजीकरण का तो अंशमात्र भी प्रयोगिक नहीं मिल पाता है। द्रव्य-गुण, रस शास्त्र एवं भैषज्य कल्पना में भी वाञ्छित ज्ञान नहीं मिल पाता है। अतः छात्रों के लिए सम्पन्न आयुर्वेदिक महाविद्यालय तथा आतुरालय होने चाहिए। आयुर्वेदीय पाठ्यक्रम के लिए माध्यम हिन्दी भाषा को (प्राचीन भाषा को) स्वीकार कर लेना चाहिए। प्रायोगिक का अभाव तथा भाषा की क्लिष्टता भी छात्रों की मुख्य कठिनाई है।

स्नातकों की कठिनाई

५ या ६ वर्ष का पाठ्यक्रम पूर्ण करके स्नातक जब कार्य क्षेत्र में उतरता है यह समय उसके लिये बड़ा ही संक्रमणशील होता है। विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न उपाधिधारी स्नातकों को एक दूसरे प्रान्त में चिकित्सा कार्य करने का अधिकार नहीं मिलता, रजिस्ट्रेशन नहीं होता। दूसरी ओर राज्याधिकार नहीं मिलता। इसके अलावा डाकतार, रेलवे, सेना, बीमा आदि राजकीय विभागों में कोई स्थान नहीं मिलता। सार्वजनिक स्वास्थ्य इकाई, परिवार नियोजन, मलेरिया उन्मूलन, क्षय एवं चेचक तथा कुष्ठ निवारण योजना में भी नहीं लिया जाता है। अच्छे चिकित्सालय, क्षेत्र तथा साज सज्जा नहीं मिलती। ५-६ वर्ष तक नियमित अध्ययन करने के पश्चात अत्यधिक मंहगाई के इस युग में वेतन अत्यल्प मिलता है। यह सभी बातें छात्रों तथा स्नातकों के लिये असन्तोषदायक हैं।

अब सम्पूर्ण देश में प्रचलित आयुर्वेद के विकेन्द्रीयकरण युक्त संस्थानों तथा उनके द्वारा दी जाने वाली डिप्लोमा तथा डिग्री के बारे में पढ़िये—

(१) विश्वविद्यालयों द्वारा दी जाने वाली आयुर्वेदीय उपाधियां—

संख्या	सस्था का नाम	उपाधि नाम
(१)	काशी हिंदू विश्वविद्यालय	ए. एम. एस., ए० बी० एम० एस०
(२)	पूना विश्वविद्यालय	बी.ए. एम. एस.
(३)	गुजरात विश्वविद्यालय	बी० ए० एम० एस०
(४)	केरल विश्वविद्यालय	बी० ए० एम०
(५)	सागर विश्वविद्यालय	जी. ए. एम. एस.
(६)	लखनऊ विश्वविद्यालय	बी.एम. बी. एस.

(२) विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाने वाला डिप्लोमा—

(१)	केरल विश्वविद्यालय	डी० ए० एम०

(३) राज्य चिकित्सा परिषदों द्वारा दी जाने वाली आयुर्वेदिक उपाधियां—

(१)	भारतीय चिकित्सा परिषद उत्तर प्रदेश	बी.आई. एम. एस., ए., एम. बी. एस.
(२)	भारतीय चिकित्सा परिषद राजस्थान	भिषगाचार्य
(३)	राज्य परिषद तथा फेकल्टी आफ आयुर्वेद एण्ड यूनानी मेडीसिन, बिहार	जी, एफ.एम.एस.
(४)	„ „ बम्बई	जी. एफ. ए. एम.
(५)	भारतीय चिकित्सा परिषद विदर्भ, नागपुर	बी. ए. एम. एस.
(६)	„ „ ग्वालियर, मध्यदेश	आयुर्वेद विज्ञानाचार्य ए० एम० एस०
(७)	„ „ मद्रास	जी० सी० आई० एम०
(८)	„ „ मैसूर	जी० सी० ए० एम०
(९)	„ „ पंजाब	जी० ए० एम० एस०

(४) राज्य परिषदों द्वारा दिए जाने वाले आयुर्वेदिक डिप्लोमा—

(१)	भारतीय चिकित्सा परिषद आंध्र	आयुर्वेद विशारद
(२)	„ „ आसाम	डी. ए. एम. एस.
(३)	„ „ मैसूर	एल. ए. एम. एस.
(४)	„ „ उड़ीसा	डी० ए० एम०एस०
(५)	„ „ राजस्थान	भिषग्वर
(६)	„ „ पंजाब	वैद्यवाचस्पति
(७)	„ „ उत्तरप्रदेश	आयुर्वेदाचार्य
(८)	„ „ देहली	धन्वन्तरि/भिषगा०
(९)	„ „ मद्रास	एल० आई० एम०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०) फेकल्टी आफ आयुर्वेद पश्चिमी बंगाल	आयुर्वेदतीर्थ एम. ए. एस. एफ
(११) स्टेट फेकल्टी आफ आयुर्वेद एण्ड यूनानी मेडिसिन, बम्बई	डी. ए. एस. एफ.

(५) अन्य उपाधियां

(१) निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ, देहली	आयुर्वेदाचार्य
(२) मद्रास विश्वविद्यालय	आयुर्वेद शिरोमणि
(३) भारतीय चिकित्सापरिषद उत्तर प्रदेश	आयुर्वेदाचार्य

(६) अन्य डिप्लोमा तथा डिग्री

(१) भारतीय चिकित्सा परिषद आंध्र	आयुर्वेद प्रवीण
(२) कमेटी फार शुद्ध आयुर्वेद कोर्स बम्बई	आयुर्वेद प्रवीण
(३) ,, ,, गुजरात	आयुर्वेद प्रवीण/ डी० एस० ए० सी०
(४) ,, ,, मैसूर	आयुर्वेद प्रवीण/ डी० एस० ए० सी०
(५) प्रबन्ध समिति माधव स्मारक आयुर्वेदिक कालेज, कन्नूर	वैद्यविभूषण
(६) प्रबन्ध समिति केरलीय आयु. विद्यालय, शोरानूर	वैद्य पदन
(७) प्रबन्ध समिति आर्य वैद्य पाठशाला—कोटाकल	आर्य वैद्यन
(८) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग	आयुर्वेदरत्न (उपाधि)
(९) तिब्बिया कालेज जयपुर	भिषगाचार्य धन्वन्तरि (उपाधि)

(७) स्नातकोत्तर उपाधियां

(१) इन्स्टीट्यूशन फार आयुर्वेदिक स्टडीज एण्ड रिसर्च, जामनगर	एच.पी.ए. मेडिसिन
(२) झांसी आयु. विश्वविद्यालय	डी. एस्-सी. ए
(३) हिंदू विश्वविद्यालय	डी. आयु. ए (D. Ay. M.)

इन सब पर ध्यान देने पर ३७ प्रकार की नामावली (डिग्री तथा डिप्लोमा) सामने आती हैं। इस युग में इतनी विभिन्नता से काम नहीं चलता। एक संगठन, एक उपाधि, एकस्तर की ही आवश्यकता है।

—श्री कृष्णदत्त जी आचार्य एच. पी. ए.
राजकीय आयु० औषधालय
मु० पो० गणेशगढ़ (श्रीगङ्गानगर)

पृष्ठ ९ का शेषांश

ठण्डे पानी का सेवन, बासी भोजन, मठा, धुयें में बैठना, आदि हानिकारक हैं।

वीर्य के वेग को रोकने से उपद्रव और यत्न

मेढ़्रे विषण्योः शूलमङ्गमर्दो हृदिव्यथा ।
भवेत्प्रति हते शुक्रे विबद्धं मूत्रमेवच ॥
—च० सू० ७–८

वीर्य के आये हुए वेग को रोकने से लिंग और पोतों में पीड़ा का होना, अङ्गों का टूटना, हृदय में व्यथा और मूत्र का रुकना आदि उपद्रव होते हैं।

चिकित्सा—

तत्राभ्यंगावगाहाश्चमदिरा चरणायुधाः ।
शालिः पयो निरूहाञ्चशस्त मंथुन में वच ॥
—च० सू० ७-९

वीर्य के वेग के रुकने पर मालिश, अवगाहन, मद्यपान, मुर्गे का मांस, चावल, दूध, निरूहन वस्ति, मैथुन आदि कर्म वीर्य के वेग रोकने से हुए उपद्रवों को शांत करते हैं।

मुर्गे के मांस से सिद्ध पेया वीर्य-मार्ग के सब रोगों को शांत करती है। अथवा—

योगराज गूगल या गोक्षुरादि गूगल को गो दुग्ध के साथ सेवन करायें। लोहासव, देवदार्व्यादि अरिष्ट, दशमूलारिष्ट का प्रयोग शत प्रतिशत लाभदायक है।

पथ्यापथ्य—

घी, चावल, मांस का रस, मद्यपान, स्त्री प्रसङ्ग, हलासन, खुली हवा में टहलना आदि लाभप्रद हैं मूत्रादि के वेगों को नहीं रोकना चाहिए।

—श्री नर्वदेश जी गौतम वैद्य
द्वारा श्री पदमचन्द जी वैद्य A. S. B. S.
मु० कल्याणपुर पो० घोहरोल व० अर्की (महासू)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्मियों में स्वास्थ्य की रक्षा

श्री वैद्य वेदप्रकाश तिवारी

भारत एक उष्ण प्रधान देश होने के कारण यहां गर्मियों के दिनों का विशेष महत्व है। इन दिनों सूर्य की तीक्ष्ण किरणों के द्वारा निरन्तर ताप बरसता रहता है। इन दिनों सूर्य भगवान वृद्धि को प्राप्त होते हैं। गर्मी में शरीर का सोम अंश स्वभावतः कम होता जाता है। रूक्षता तथा उष्णता के कारण वायु का संचय होता रहता है।

गर्म वायु को सहन कर सकने या न कर सकने की क्षमता वायु की आर्द्रता पर निर्भर रहती है। वायु मंडल में आर्द्रता अधिक होने पर पसीना अधिक न आ सकेगा जैसा कि बरसात में होता है। इस प्रकार बरसात में गरमी अधिक अनुभव होती है। बरसात की अपेक्षा गर्मियों में पसीना कम आता है। और वह भी शीघ्र वायुमण्डल में मिलता रहता है। सर्दियों की तुलना में गर्मियों में हमारे शरीर में अनेक परिवर्तन हो जाते हैं। जैसे रक्तवाहिनियों में तनाव की कमी, मूत्र, रक्त में कमी फेफड़ों का फैलाव आदि। गर्मियों में स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से आहार बिहार तथा दिनचर्या में सावधानी बरतनी चाहिए। ताकि शरीर की स्निग्धता की पूर्ति होती रहे, और वायु का संचय अधिक न हो। ठंडे प्रदेशों में रहने वाले लोग जब गर्म प्रदेशों में रहने के लिए जाते हैं तो उनमें निम्न लक्षण स्पष्ट दिखाई देते हैं। दिमागी कार्य करने की शक्ति में कमी, सामान्य निर्बलता, रक्त संस्थान में गड़बड़ी आदि गर्म प्रदेशों में रहने वालों को भी ये लक्षण हो जाया करते हैं। किन्तु उनमें सहन करने की आदत अपेक्षाकृत अधिक होती है। हमें अपनी दैनिक चर्या को निम्न रूप से रखना चाहिए, तभी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

भ्रमण—प्रायः सभी ऋतुओं में भ्रमण उत्तम है। फिर भी गर्मियों में प्रातःकाल का भ्रमण स्वास्थ्य की देन है। वह भी प्रातः ४-५ बजे के बीच में घूमना उचित है। प्रातः जितनी जल्दी शय्या छोड़ दी जाय उतना ही आयुवर्धक है। कहा भी है—

ब्राह्मे मुहूर्ते या निद्रा पुण्यासा क्षय कारिणी।
तां करोति [illegible] [illegible] शुभकृति॥

स्नान—यों तो सभी ऋतुओं में स्नान लाभदायक है किन्तु इन दिनों प्रातः स्नान अत्यन्त लाभदायक है। अतः सूर्योदय से पहले या कुछ ही देर बाद स्नान करना उचित है। नियमपूर्वक स्नान करते रहने से रक्त संचार की क्रिया भलीभांति होती रहती है। इस ऋतु में स्नान अधिक देर तक करना चाहिए। सायंकाल को भी स्नान करना चाहिए। स्नान के बाद मोटे तौलिए से शरीर को रगड़ना चाहिए। तैरना भी इन दिनों लाभदायक है। जिन्हें तैरना आता है उनके लिए यह ऋतु बड़ी ही सुहावनी है। तैरना इन दिनों एक उचित व्यायाम भी है।

दिवास्वप्न—इन दिनों दिन में सोना हितकर है। चारपाई या बिस्तर की अपेक्षा फर्श ठण्डा रहता है। इसलिए सुविधा हो तो नीचे ही लेटना चाहिए। स्कन्द पुराण में तो बैसाख मास में खाट पर सोना त्यागने को कहा है।

इन दिनों सूर्य की प्रखर किरणों की चकाचौंध को कम करने के लिए खिड़कियों व दरवाजों के अन्दर की ओर हरे या पीले रंग के पर्दे टंगे होने चाहिए। सामर्थ्य के अनुसार खश की खिड़की व दरवाजे बनाकर पानी का छिड़काव करने से शीतलता का आनन्द आता है।

शीत लेप—इस ऋतु में चन्दन का शीतल लेप करना चाहिए। साधन हो सके तो खस, केवड़ा, चम्पा आदि की सुगन्धियां विशेष रूप से प्रयोग में लावें। इस सम्बन्ध में चरकाचार्य ने कहा है—

भजेत चंदनं दिग्धांगं प्रवाते दर्भ मस्तके।
व्यंजने पाणिस्पर्श चंदनोदक शीतले॥

पानक—आम की कैरी के पानक का सेवन लू से बचने का सुगम साधन है। प्रतिदिन सायंकाल को भूनकर उसका रस निचोड़ लें और आवश्यकतानुसार चीनी मिलाकर भोजन के साथ प्रयोग करें। इसी प्रकार इमली का पना भी उपयोगी है। २ घंटे तक इमली को भिगोकर मथकर छानें व उचित मात्रा में गुड़ या चाशनी मिलाकर भोजन के साथ लें।

गन्ने व संतरे का रस—गन्ने का रस गर्मी में एक उत्तम पेय है। सबसे लाभप्रद बात यह है कि सस्ता होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की वजह से गरीब भी इसे सेवन कर सकते हैं। दोप-हर में एक दो बार गन्ने का रस पी लेने से पेट के साथ ही दिमाग में भी शांति आती है व मूत्र खुलकर आने से तबियत भी हल्की हो जाती है।

आंवला—गर्मी के दिनों में आंवला का सेवन बहुत ही लाभदायक है। आंवला अपने विशेष गुण के कारण बढ़ी हुई गर्मी को शांत करता है। मस्तिष्क में ताजगी पैदा करता है। नीबू की शिकंजी बनाकर या केवल नीबू का उपयोग हितावह है।

प्याज और पोदीना—निर्धनों के लिए प्याज व पोदीना प्रकृति की सस्ती देन है। इन दिनों इसका नियमित सेवन करने से लू नहीं लगती। पुदीने की चटनी या रायता, पेय में कालीमिर्च, नमक, नीबू, मिलाकर भी पिया जा सकता है। प्याज को इन दिनों कई प्रकार सेवन करके लू से बचने का सुगम साधन बनाया जा सकता है।

ठंडा पानी—गर्मियों में ठण्डे पानी की मांग चारों तरफ है। इसके बिना आदमी बेचैन हो जाता है। पानी को ठण्डा करने के लिए बर्फ का अधिक मात्रा में प्रयोग करते हैं जो स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकर है। इससे प्यास शांत होने के बजाय और अधिक प्यास लगती है। यदि थोड़ा परिश्रम या सावधानी बरती जाय तो पानी ठण्डा और सुस्वादु बनाया जा सकता है।

कुछ जाड़े के बने हुये घड़े ले लीजिए, उन्हीं घड़ों को पानी से भरकर रख लें। यदि पर्याप्त साधन हो सके तो २-४ परत बालू मिट्टी रख कर ऊपर से पानी छिड़क कर उसके ऊपर पानी वाले घड़े रखें तो पानी ठण्डा प्राप्त हो सकेगा और घड़े के चारों ओर गीला स्वच्छ कपड़ा लपेटा जा सकता है। सम्भव हो सके तो छोटी सुराइयों को पंखे के नीचे रखने से पानी ठण्डा प्राप्त हो सकेगा। उस पानी में यदि गुलाब या केवड़े का अर्क डालें तो स्वाद और अच्छा हो जाता है। घड़े ऐसी जगह पर रखें जहां रोशनी कम हो तथा हवा का आने का मार्ग न हो। सदैव ध्यान रहे कि घड़े का मुंह हमेशा बन्द रखना चाहिए।

पथ्य—

उपरोक्त वस्तुओं का सेवन करते हुए गर्मी के दिनों में कम खाना हितकर है। जौ, मूङ्ग, चौलाई, पपीता, नीबू, तरबूज, ककड़ी, खीरा, पेठा, करेला, बथुआ, घीयातोरई, परवल का प्रयोग करें। सत्तू के साथ दूध चीनी मिलाकर लेना चाहिए। आयुर्वेद के सिद्धांतानुसार सत्तू में घी मिला कर शीतल जल से सेवन करना चाहिए। इस सम्बन्ध में संस्कृत का एक सुभाषित है—

चन्दनं च चतुर्द्वारं चापरं चीर चंद्रिका।
चम्पकं च चतुर्नारी ग्रीष्मे सप्त सुखावहा॥

अर्थात् चन्दन, हवादार मकान, पंखा, तन पर कपड़ा, चांदनी, चम्पा, चतुर्नारी ये सात गर्मी में सुखदायी हैं।

अपथ्य—

इस ऋतु में विशेष कर मदिरा सेवन नहीं करना चाहिए। इसके सेवन से शरीर में शीघ्र शिथिलता, दाह, मूर्च्छा आदि हो जाती हैं। यदि औषधि के रूप में मदिरा लेनी हो तो अल्प मात्रा में जल मिलाकर देवें। अन्य उत्तेजक मादक पदार्थ भी न लेवें। इस ऋतु में निम्न वस्तुयें भी हानिकर सिद्ध होती हैं।

१—बर्फ तथा बर्फ से बने पदार्थ।
२—दोपहर की धूप।
३—अधिक व्यायाम तथा परिश्रम।
४—चरपरे तथा उष्ण पदार्थों का अधिक सेवन।

—श्री वैद्य वेदप्रकाश तिवारी,
चिलयानौला (रानीखेत) उ० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तपित्त--एक अध्ययन

श्री वैद्य दारोगाप्रसाद मिश्र

'पित्तेन सम्मिश्रितं रक्तं रक्तपित्त'

कहा गया है कि—रक्तपित्ता में रक्त के भीतर पित्ता की मात्रा बहुत बढ़ जाती है और उससे रक्त में अधिक ऊष्मा की वृद्धि हो जाती है। ऊष्मा की अधिकता के कारण धमनी की केशिकायें फट जाती हैं और आमाशय से रक्त निकल कर मुखमार्ग से बाहर आने लगता है जिसे रक्त-पित्ता कहते हैं। पक्वाशय की पतली-पतली केशिकायें फट कर जब रक्त निकालती हैं तब उसे अधोगत रक्तपित्त कहते हैं। पित्ताधिक्य में रक्त आमाशय और पक्वाशय दोनों ओर से गिरने लगता है तब उसे उभयगत रक्तपित्ता कहते हैं। यहां तक कि प्रकोप होने पर रक्त नाक, कान, नेत्र, लिंग, योनि और रोम कूपों से भी निकलने लगता हैं। डाक्टरों का हाई ब्लडप्रेसर भी रक्तपित्त रोग ही है। रक्तपित्त की दवा करने पर ही हाई ब्लडप्रेसर की शान्ति होती है।

माधवकार ने लिखा है कि जब मनुष्य विशेषकर धूप में रहता है, अधिक व्यायाम, मैथुन, शोक करता है या अधिक रास्ता चलता है, तीखे पदार्थ, गरम पदार्थ, क्षारीय पदार्थ, नमकीन पदार्थ, खट्टे पदार्थों या कड़वी चीजों का अधिकतम उपयोग करता है तब उसके शरीर में इन वस्तुओं से पित्त अधिक बढ़ जाता है। कोई जरूरी नहीं है कि इनमें से सभी पदार्थों का सामूहिक उपयोग हो। एक-एक पदार्थों के विशेष उपयोग से भी रक्तपित्ता होते देखा गया है।

नारियों में मासिक स्राव की गड़बड़ी से भी रक्तपित्त होते देखा गया है। युवती, सुपुष्ट नारियों में मैथुनाभाव से भी रक्तपित्त होते देखा गया है। चिन्ता क्रोध की अधिकता से भी यह रोग होता है। महर्षि चरक ने रक्तपित्ता की बड़ी सुन्दर सम्प्राप्ति बताई है—

तस्मिन प्रमाणाति वृत्ते पित्तं प्रकुपित्तं यदैव यकृत्-प्लीह प्रभवाणां लोहितवहानां स्रोतसां लोहिताभिष्यन्दिनो मुखान्यासाद्य प्रतिरुन्ध्वात् तदा पित्तं लोहितंदूषयति।

अर्थ—व्यायामादि कार्यों एवं तीक्ष्ण पदार्थों आदि के विशेष उपयोग से पित्त अपने प्रमाण से अधिक बढ़ जाता है। पांच अंजलि पित्त और छः अंजलि कफ शरीर में रहना चरक ने बताया है। पांच अंजलि पित्त का अर्थ है मागधमान से १६ भर = तीन कनवां १ भर एवं कालिंगमान से ३२ भार = ६कनवां १ भार। इस प्रमाण से रक्तपित्त में पित्त और अधिक हो जाता है तब यह पित्त यकृत प्लीहा स्थित पित्त निर्माणक यन्त्रों से रक्त संवहन के द्वारा हृदय से होकर सर्वाङ्ग शरीर में घूमने लगता है एवं धमनियों पर उसका प्रेसर पड़ने लगता है। मोटी धमनियां तो उस प्रेसर को सहन करती हैं पर पतली-पतली केशिकायें बर्दास्त न करके फट जाती हैं और रक्तपित्त हो जाता है।

रक्तपित्ता में पित्त मिश्रित रक्त निकलता है। अतः उसका रूप भी शुद्ध रक्त से बदरूप होता है। वह रक्त स्वाद में भी कटु हो जाता है। इसे कुत्ते या बिल्ली नहीं खाते, उस रक्त पर मक्खी नहीं बैठती, कौआ भी उसे नहीं छूता है।

यक्ष्मा, रक्तार्श, रक्तातिसार, प्रदर, उरःक्षत के रक्तों को कुत्ते कौओं के द्वारा आहार होते देखा गया है। मक्खियां भी उन पर बैठती हैं। रक्तपित्त के रक्त में उष्णता और अलकोहल भी रहते हैं जिनसे सीमेंट के ऊपर, चूने के ऊपर, रेह के ऊपर, सोडे के ऊपर वह रक्त खौलते देखा गया है। यह रोग इस समय अधिक हो रहा है।

रक्तपित्त की चिकित्सा

चरक सूत्र स्थान २४ वें अध्याय में शोणित रोग की चिकित्सा का अतीव सुन्दर सूत्र चित्रित किया गया है। कहा है कि—

कुर्यात् शोणित रोगेषु रक्तपित्तहरीं क्रियाम्।
विरेकं उपवासं वा स्रावणं शोणितस्यच॥

रक्तपित्त के रोग में ही नहीं समस्त शोणितगत रोग में रक्तपित्त को कम करने का उपाय करें। रक्त को कम करने और पित्त को कम करने का उपाय करने से यह रोग तत्काल शान्त हो जाता है। इसमें फल, दूध, मिश्री, शांति, हर्ष, शुद्ध हवा का सेवन करें। लाल मिर्च, नमक, कड़वा तेल, डालडा की चीजें, अधिक मसाला की चीजें, भुने हुए चने, आम की खटाई, लहसुन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीजें । अदरख की चीजें, गोल मिर्च, सौंठ, मैथी का प्रयोग नहीं करें, भात नहीं लें, बासी चीजें नहीं लें, मैथुन नहीं करें, प्रेम प्रलाप नहीं करें, क्रोध नहीं करें, चिन्ता न करें, व्यायाम नहीं करें, यवक्षार, सज्जी क्षार, इमली, चिड़चिड़ी, मीठे सोड़े का प्रयोग किसी भी भांति न करें। इससे बढ़ा हुआ पित्त या रक्त कम हो जाता है। विरेचन कराने से भी रक्त एवं पित्त की मात्रा कम होती है। उपवास से भी लाभ होता है। यदि बहुत अधिक रक्त या पित्त बढ़ गया हो तो रक्त का निर्हरण कराना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

आहार में अम्ल पदार्थ की अधिकता से तो अम्ल विपाक हो ही जाता है। अम्लविपाक हो तो पित्त रूप में यकृत में जाकर कन्दिकाओं के द्वारा परिणित हो जाता है। अतः रक्तपित्त में अम्ल पदार्थ विषवत् हैं। पाखाना कराने से ऊर्ध्वगत रक्तपित्त में बड़ी शांति तत्काल आती है। रोम कूप से खून गिरते हुए मैंने देखा है और उस रोगी को भूत ने पकड़ लिया है ऐसा कहते हुए वैद्यों के द्वारा भी मैंने सुना है। पर यहां रक्तपित्त का उपाय करने पर सफलता प्राप्त की गई।

रक्तपित्त की अनुभूत चिकित्सा

रक्तपित्त के रोगी को देशी गेहूं के आटे की रोटियाँ शुद्ध घृत में बनाकर (पूड़ियां) देनी चाहिए। मूंग की दाल, मसूर की छिलके युक्त दाल, चने का झोल, परवल, पपीता, केला, लौकी, बथुआ, पेठा, करेला, भिण्डी, टमाटर की सब्जी घी में लौंग, हल्दी, धनियां, तेजपात, दालचीनी, जटामांसी देकर बनाकर लें। गाजर का हलवा, गाजर का रस, बीदाना का रस, सन्तरे का रस, सेब का कतरन, मुनक्का, मखाना का हलवा या इन्हें सेंधा नमक देकर भूनकर लें। अरारोट का आटा, मिश्री, छोटी इलायची मिलाकर सिझाकर जल से दें। जल में गुलाब जल मिलाकर पियें। बार्ली, अरारोट में भी गुलाब जल मिलाकर पियें, ब्रह्मचर्य से रहें, बाद में उपत्यका या समतल जगहों में घूमें।

प्रायःकाल और सायंकाल—

रक्तपित्तान्तक लोह १ गोली, सुधानिधि रस १ रत्ती, चन्दनादि चूर्ण ६ माशा मधु से चाटें। बाद में वासकाम्बु ५ तोला पियें।

बारह बजे दिन एवं ९ बजे रात में—

प्रवाल पिष्टी २ रत्ती, कामदुधा रस २ रत्ती, शतपुष्पादि चूर्ण ६ माशा मधु में चाटें। बाद—

उशीरासव २॥ तोला में गुलाबजल १ तोला मिलाकर पियें।

हरे नारियल का पानी, तार की मिश्री मिला कर पीने से बड़ा लाभ होते देखा गया है। भतिया खीरा (हरा खीरा) भतुआ का मुरब्बा बड़ा लाभ करता है। गाय के घी में कूष्माण्ड खण्ड बना कर जलपान करें। सेंधा नमक का प्रयोग करें।

—श्री दारोगाप्रसाद मिश्र
ओड़ो (गया) बिहार

मोती चूरा

मोती बींधते समय जो चूरा निकलता है उसे हमने संग्रह कर मंगाया है। मोती की पिष्टी व भस्म बनाने में इसे व्यवहार में लें। आपको किफायत रहेगी।

मूल्य–१० ग्राम १२.५०

मोती छिलका

सीप में अन्दर मोती के ऊपर एक आवरण रहता है जिसको हटाकर मोती निकाला जाता है। इस आवरण की भस्म, पिष्टी बनाकर हमने प्रयोग की है और हमने पाया है कि यह मुक्ता भस्म तथा मुक्तापिष्टी से गुणों में किसी प्रकार भी कम नहीं है। कतिपय हमारे ग्राहकों ने भी मोती छिलकों का प्रयोग किया है उनकी भी यही राय है अस्तु आप भी उन्हें मंगाकर अवश्य प्रयोग करें।

मूल्य—१० ग्राम–१२.००

टूटे मोती

गहनों के लिये मोती में छेद करते समय जो मोती टूट जाते हैं उनका भी संग्रह किया है।

मूल्य १० ग्राम ३०.००

दाऊ मैडीकल स्टोर्स, बिजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय के रोगों की सरलतम गृह चिकित्सा

श्री लक्ष्मीनारायण अलौकिक

संसार में जितने भी रोग हैं उन सब में हृदय के रोग ही ऐसे हैं जिनमें मौत का कोई भरोसा नहीं रहता। हृदय रोग से ग्रसित अच्छा-खासा तन्दुरुस्त दीखने वाला आदमी भी चलते-चलते या बात करते करते मृत्यु की गोद में लुढ़क पड़ता है।

हृदय के रोगों की पहुंच फिलहाल शिक्षित परिवारों तक ही हुई है, या यूं कहें कि हृदय के रोग उन्हीं व्यक्तियों को होते हैं जो खानपान और रहन-सहन के आरोग्यानुकूल नियमों का पालन नहीं करते हैं तथा आवश्यकता से अधिक मानसिक परिश्रम करते हैं तो भी दूसरी बात नहीं होगी। स्मरण रहे मस्तिष्क का हृदय से बहुत गहरा सम्बन्ध है। मस्तिष्क से जब सोचने विचारने का कार्य असाधारण रूप से लिया जाता है उस समय मस्तिष्क में उत्पन्न हुए भावों का असर हृदय पर ही होता है। भय, चिन्ता, ईर्ष्या और विषाद के भावों से हृदय की मांसपेशियां कमजोर होने की बात तो सभी जानते हैं लेकिन यह चीजें तो अशिक्षित परिवारों में भी पाई जाती हैं, जहां हृदय रोगों की पहुंच बहुत कम है। हो सकता है देहात और कस्बों में रहने वाले लोगों को जल, वायु और भोजनादि आरोग्यप्रद मिलता हो जिससे रोगोत्पादक भावों का प्रभाव दब जाता हो या दूसरे रूप में प्रकट होता हो। हृदय की मांसपेशियां मजबूत हों तो सामयिक रोगोत्पादक भावों का कोई भी असर सामने नहीं आता है।... शहरों के अस्वस्थ वातावरण में रहने वाले मानसिक श्रमिकों को ही हृदय के रोग अधिकांशतः आ घेरते हैं। जिसकी वजह जन्मजात दुर्बल हृदय ऊपर से विचारों का बोझ। याद रहे मस्तिष्क से कार्य लेते समय श्वास प्रश्वास का क्रम बहुत कुछ बिगड़ जाता है। साधारण अवस्था में हम जितनी गहरी सांस लेते और छोड़ते हैं उसमें मस्तिष्क पर दबाब के अनुसार २० प्रतिशत से ८० प्रतिशत तक की कटौती आ जाती है। इस कटौती के परिणामस्वरूप रक्त का कार्बनडायोक्साइड शरीर से बाहर नहीं हो पाता और वह लगातार हृदय पर अपना घातक असर डालता रहता है। यहां यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि हमारे रक्तकणों में हीमोग्लोबिन नाम का एक रासायनिक पदार्थ रहता है जो प्रतिक्षण रक्त धारा में उत्पन्न हुए कार्बन को शोषण करने का तथा फेफड़ों में पहुंचने के दौरान कार्बन को उगलकर आक्सीजन ग्रहण करने का कार्य करता रहता है। हीमोग्लोबिन के इस रक्त शुद्धि के कार्य से वही व्यक्ति लाभान्वित होता है जो श्वास प्रश्वास की गहराई में कटौती नहीं आने देता।

हृदय में होने वाले रोगों के छः प्रकार हैं। हृदय का दर्द, हृदय का भारीपन, हृदय की धड़कन, सांस फूलना, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप। हृदय के सभी रोग रक्त में विजातीय द्रव्य के संग्रह होने से तथा हृदय की मांसपेशियां दुर्बल होने से ही होते हैं। इन रोगों को ठीक करने के लिए डाक्टर और वैद्य लोग केवल हृदय को मजबूत करने वाली औषधियों की व्यवस्था करते हैं। रक्त को सम्पूर्ण रूप से शुद्ध करके रोग ठीक करने का इरादा वे कभी नहीं रखते। रखें भी क्यों जब ? वे हर रोग को स्वतन्त्र आक्रमण समझने की तथा उसी के अनुसार चिकित्सा करने की जानकारी हासिल किये हुए हैं। हृदय को मजबूत करने वाली जो दवायें वे रोगी को देते हैं वे सब एक निश्चित समय तक के लिए ही हृदय को आरोग्यता प्रदान करती हैं। थके मांदे शरीर पर चाय, काफी, शराब आदि की जो कृपा प्रत्यक्ष दिखाई देती है वैसी ही रुग्ण हृदय पर दवाओं की होती है। थक कर सुस्त हुए घोड़े को चाबुक लगाकर फुर्तीला बनाया जा सकता है पर वह फुर्ती जैसे उसके शरीर के लिए नुकसानदायक है वैसे ही उत्तेजक दवाओं से हृदय को आरोग्य करने वाली बात समझनी चाहिए। यह देखा गया है कि दवाओं का असर खत्म होने के बाद हृदय और भी ज्यादा कमजोर हो जाता है। अतः इन्जेक्शन, दवाओं आदि का व्यवहार रुग्ण हृदय पर भूल कर भी नहीं करना चाहिए। रक्त शुद्धि के पश्चात जब हृदय को कुछ आरोग्यता मिल जाए उस समय दवाओं की हल्की मात्रा देकर हृदय का उपकार किया जा सकता है ऐसा कई प्राकृतिक चिकित्सकों का मत है।

हृदय रोग का उपचार लिखने के पूर्व हम हृदय के कमजोर तथा बीमार होने के कारण बताते हैं। कोई केम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय का रोगी इन कारणों को छोड़कर अपने हृदय को बगैर औषधोपचार के स्वस्थ कर सकता।

१—शरीर की क्षमता से बाहर मानसिक परिश्रम करना।
२—अत्यधिक मैथुन।
३—अस्वस्थ वातावरण में रहना।
४—चाय, काफी, सिगरेट, शराब इत्यादि मादक द्रव्यों का सेवन।
५—मिर्च मसालों से बने गरिष्ठ खाद्यों का सेवन।
६—अम्लधर्मी खाद्यों पर निर्भर रहना।
७—कठिन मेहनत में जुटे रहना, विश्राम की इच्छा पर भी विश्राम नहीं करना।
८—प्यास लगने पर पानी नहीं पीना।
९—मल-मूत्र छींक, डकार, जम्हाई के वेगों को रोकना।
१०—हमेशा की कब्जियत।
११—छाती को कई कपड़ों से ढंके रहना।
१२—नींद कम लेना।
१३—आवश्यकता से अधिक भोजन करना व शारीरिक श्रम तथा व्यायाम से जी चुराना।
१४—भय, चिंता, ईर्ष्या, ग्लानि, विषाद तथा कुढ़न से घिरे रहना।
१५—बहुत गर्म भोजन ग्रहण करना व भोजन के बाद सीधे काम पर लग जाना। स्मरण रहे हृदय और पाकस्थली के बीच सिर्फ एक पेशी का व्यवधान है। पाकस्थली में पहुंचा हुआ गर्म भोजन हृदय को भी प्रभावित करता है।

अब हम हृदय रोगों की ऐसी गृह चिकित्सा का उल्लेख करना चाहते हैं जिसे प्रत्येक गृहस्थ बगैर किसी परेशानी के ले सके। डाक्टरी चिकित्सा वाला खर्च तथा परिणामी अनिष्ट इसमें लेशमात्र भी नहीं है। मजे की बात तो यह है कि इस चिकित्सा के लेने के बाद हृदय की आरोग्यता ही नहीं मिलेगी बल्कि उन सब रोगों से छुटकारा मिल जायगा जो विजातीय द्रव्यों के सहयोग से शरीर में पैदा होने वाले थे। प्राकृतिक चिकित्सा की यही विशेषता है कि इसमें हर रोग को ठीक करने के लिए शरीर को स्वच्छ और सशक्त किया जाता है। एक विद्वान चिकित्सक ने कहा है कि साफ सुथरे और मजबूत शरीर में रोगों की उत्पत्ति किसी भी तरह नहीं हो सकती। प्राकृतिक चिकित्सा का लक्ष्य भी यही है। तो लीजिये चिकित्सा क्रम इस प्रकार है—

रोग की हालत एवं शरीर की सामर्थ्य के अनुसार २४ घंटे से ७२ घंटे का उपवास कीजिए। हृदय के सामान्य नये रोग तो सिर्फ उपवास से ही चले जाते हैं। उपवास काल में प्रातः आधा घंटा के लिए पेडू पर मिट्टी की पुल्टिस लेने के बाद एनिमा लेकर पेट साफ कर लेना जरूरी है। उपवास में सिर्फ नीबू और मधु मिले पानी पर ही निर्भर रहें। प्रत्येक तीसरे घंटे आधा सेर पानी पीते रहें। सुबह शाम ठंडी मालिश (स्पंज बाथ) लें। किसी महीन वस्त्र को बार बार पानी में भिगोकर उससे शरीर को रगड़ने को ही ठंडी मालिश कहते हैं। यह मालिश पूरे शरीर पर एक साथ नहीं बल्कि एक एक अङ्ग पर चलाई जाती है। सिर, मुंह, गर्दन, छाती, पीठ, हाथ, पेडू, गुप्तांग, जांघें और पैर इन पर एक के बाद दूसरे पर ठंडी मालिश ली जाती है। जिस अङ्ग पर ठंडी मालिस ली जा चुकी हो उसे सूखे कपड़े से पोंछ कर व सूखी मालिश लेकर पहले की तरह गर्म करके दूसरे अङ्ग पर ठंडी मालिश लें। एक बार में ली जाने वाली ठंडी मालिश में करीब २५-३० मिनट लग जाने चाहिए। यह ठण्डी मालिश शरीर के सभी रोगों के मूल कारण को दूर करने की सामर्थ रखती है। इससे स्नायुमण्डल को नवजीवन प्राप्त होता है, नया रक्त बनता है तथा शरीर का समस्त विष रोम छिद्रों के रास्ते से धीरे धीरे बाहर जाता रहता है।

छाती में दर्द की शिकायत हो तो दर्द के स्थान पर ठण्डी गर्म सेक या छाती की लपेट अथवा दोनों लेकर तिल के एक छटांक तेल में ३ माशा के मान से सेंधा नमक डालकर उससे मालिश करनी चाहिए।

उपवास को किसी फल के एक पाव रस से या गाय अथवा बकरी के धारोष्ण दूध से तोड़िए। धारोष्ण दूध न मिले तो एक उफान के दूध में थोड़ा मधु या ग्लूकोज मिला कर पिया जा सकता है। उपवास की अवधि के अनुसार फलाहार, रसाहार एवं दूध छाछ पर निर्भर रहिये। यदि उपवास २४ घंटे का हो तो ४८ घंटे और उपवास ४८ घंटे का हो तो ७२ घंटे फलाहार दूध आदि पर रहें। उसके बाद अन्नाहार शुरू कर सकते हैं। शुरू शुरू में बहुत कम भोजन करना चाहिये। जिन्हें हृदय का असाध्य रोग

—शेषांश पृष्ठ २० पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैशवातिसार

श्री व्रजमोहन बाशिष्ठ ए० एम० बी० एस०

भारतवर्ष में शिशुओं में पाया जाने वाला यह सर्वाधिक प्रचलित रोग है। प्रत्येक वर्ष कई सहस्र शिशु अतिसार अथवा तद्जन्य उपद्रवों की चपेट में आकर अकाल ही काल-कवलित हो जाते हैं। शिशुओं में अतिसार मुख्यत: तीन कारणों से उत्पन्न होता है।

आहार जन्य दुष्टि—अनियमित रूप से दुग्धपान कराना, अधिक, अशुद्ध पात्र में रखा हुआ अथवा सड़ा, बासी आहार द्रव्य देना, जलीय आहार की विपुलता, विशिष्ट असह्य प्रोटीन युक्त आहार की अनूर्जता (Allergy) दुष्पाच्य आहार, ये सभी कारण शिशु की सुकोमल आंत्रवाहिनी को क्षुभित अथवा दूषित करके अतिसार के उत्पादक हैं।

इस प्रकार अजीर्ण के कारण अधिक संख्या में दुर्गन्धित, हरे-पीले, फटे हुए, शूल और वमन युक्त, अम्लीय प्रतिक्रिया वाले अतिसार की उत्पत्ति होती है।

ग्रीष्मऋतु जन्य अतिसार—ग्रीष्म काल में स्वभाववशात् पाचन क्रिया कुछ शिथिल हो जाती है। तृषा, घाम, स्वेदादि के निमित्त ग्राह्य जल या जल बहुल पेय पदार्थों से अन्नवाहिनी के पाचक रस हल्के (dilute) हो जाते हैं। इस प्रकार आहार के स्वयंमेव दुष्पाच्य होने के अतिरिक्त यह जल बहुलता भी मिलकर आन्त्र की स्फुरण गति में वृद्धि कर अतिसार की जनक हो जाती है।

ग्रीष्म, वर्षा में अनेक स्थलों का जल भी दूषित हो जाता है। इस प्रकार बाहक दोषानुसार ऐसे स्थल विशेषों में विस्तृत रूप से मारक स्वरूप (Epidemic) का अतिसार या आंत्रशोथ सदृश रोग भी फैल जाते हैं।

ग्रीष्मातिसार में कै, ऐंठन युक्त शूल, न्यून प्राकृतताप, शरीर में जलाभाव के लक्षण, तृषा, मूत्रकृच्छादि की उपस्थिति रहती है। दुर्गन्धित, श्लेष्मायुक्त और परिवर्तित वर्ण वाला मल आता है। निपात (Collapse) भी विशिष्टतः इस भांति का अतिसार शिशुओं में पाया जाता है।

उपसर्ग जन्य अतिसार—आहार, जल या वायु के संक्रमण के अतिरिक्त शरीर के आंत्रातिरिक्त अन्य अवयवों में भी उपसर्ग की उपस्थिति कई बार इस रोग के उत्पादन में सहायक होतीहै। श्वसन संस्थान, मूत्र प्रणाली और मध्यकर्ण के उपसर्गों के फलस्वरूप काफी परिमाण में आंत्रप्रदाह, अतिसार, क्षोभ जैसी विकृतियां उत्पन्न हो जाती हैं। ये दोष अथवा सम्बन्धित जीवाणु शरीर की प्रणाली से दूसरी प्रणाली में स्थानान्तरित हो जाते हैं। यहां तक कि कभी कभी वातनाड़ी समूह (Nervous System) के भागों में भी पहुंच कर स्नायु विकृति कर देते हैं। किन्तु विस्तार भय से इस लेख में इन विकृतियों का स्पष्टीकरण उचित नहीं है।

उपसर्ग जन्य अतिसार में मल हरा, पीला, चिकना, रक्त, श्लेष्मा और वायु के साथ आता है। इस अवस्था में जल की शरीर में बहुत कमी आजाती है। फलस्वरूप नेत्र गड्ढों में चले जाते हैं। सामने का तालु (Anterior fontenellae) पिचक जाता है। श्वसन-गति बढ़ जाती है। जिससे कई बार श्वसन-संस्थान की विकृति का सन्देह हो जाता है।

इस प्रकार की दुष्टि में बिषमयता के लक्षण भी उक्त जलाभाव के लक्षणों के साथ ही स्पष्ट हो उठते हैं। विषमयता के कारण ज्वर, वमन, पेट में दर्द, आध्मान, दौर्बल्य, हाथ-पैरों में ऐंठन, दोष के शुरू में मिलते हैं। यह विषमयता की प्रारंभिक अवस्था है।

अति गंभीर अवस्था में ताप उच्च या प्राकृत से कम रहता है, बेचैनी बढ़ जाती है। आक्षेप, वमन, मूत्रावरोध और मूर्च्छा हो जाते हैं। इस अवस्था को शिशु विशूचिका Cholera infantum) कहते है। मल की प्रतिक्रिया का क्षारीय हो जाना विषमयता का विशेष चिह्न है।

चिकित्सा–

सर्व प्रथम आहार को रोक देना उत्तम है। तत्पश्चात आंत्रगत दुष्टि के निष्कासनार्थ एरण्ड स्नेह देना चाहिए। फिर दोषानुसार विशिष्ट चिकित्सा काफी सार्थक होजाती है। शरीर में जलाभाव और विषमयता के लक्षणों की प्रथमतः और उपयुक्त चिकित्सा की जानी चाहिए।

अतिसार की चिकित्सा में संग्राहक और पाचक योगों तथा लाक्षणिक चिकित्सा का काफी प्रचलन है।

कर्पूर रस, कपर्द भस्म संजीवनी तीनों बराबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बराबर मिलाकर ½ से २ रत्ती तक की मात्रा में दिन में तीन बार देने से अतिसार में शीघ्र लाभकारक हैं।

भुवनेश्वर चूर्ण २ रत्ती रामबाण आधा रत्ती और शुक्ति भस्म १ रत्ती की मात्रा दिन में चार बार देनी चाहिये। अतिसार के साथ साथ दाह, तृषा और दुर्गन्ध पूर्ण मल में भी लाभदायक है।

गंगाधर रस ½ रत्ती भुनी हींग के साथ सशूल और ऐंठनयुक्त अतिसार में लाभप्रद है।

चारों मगज (यूनानी) हरड़, सोंठ समभाग कढ़ाही में कच्चा पका कर २ रत्ती की मात्रा में आयु के अनुसार बेल के मुरब्बे या दाड़िम शर्बत के साथ देने से अत्युत्तम और विश्वसनीय कार्य करते हैं। (सुधाकर फार्मेकोपिया)

प्रवाहिकान्तक चूर्ण ३ रत्ती, मुक्ताशुक्ति भस्म १ रत्ती और वमन कुठार रस १ रत्ती दिन में ३ या ४ बार देने से वमन और अतिसार में अच्छा लाभकर है।

कर्पूरधारा १ से २ बून्द जल में डालकर देने से वमन और ऐंठन युक्त अतिसार के साथ ही शूलको भी बन्द करता है।

जातिफलादि चूर्ण और भुना सुहागा दोनों समभाग मिलाकर २ से ४ रत्तीतक की मात्रा में दिन में ३ या ४ मात्रायें देने से हरे, पीले और आव मल के आने में लाभप्रद है।

एलोपैथिक चिकित्सा में एम्बेडिन सशूल अतिसार में अन्य सल्फा औषधियों के साथ २ से १० बूंद की मात्रा में देने से आशानुकूल फल मिलता है।

सल्फाडायजीन, सल्फाथायजोल, सल्फाग्वानिडीन, सल्फासक्सिडीन, ऐन्टीरोबायाफार्म, एन्ट्रोजाइम, मेक्साफार्म भी वयानुसार ½ से १ गोली की मात्रा में आंत्र प्रदाह, अतिसार में अच्छा लाभ करते हैं।

यदि उक्त सल्फा आदि औषधियों से लाभ न हो तो एन्टीरोस्ट्रेप, आरियोमाईसीन, एक्रोमाइसीन, क्लोरोस्ट्रेप जैसे योगों से जल्दी लाभ होता है। ये योग शर्बत या बून्दों के रूप में सुस्वादु आते हैं।

अतिसार के उपद्रवों की चिकित्सा—आक्षेप, मूर्च्छा, हृद्दौर्बल्य हेतु वृहदकस्तूरी भैरव रस, रस सिन्दूर, सिद्ध मकरध्वज ½ से ½ रत्ती तक (वयानुसार) मुख द्वारा और नस्य रूप में कोई तीव्र हृदयोत्तेजक नस्य (अत्यावश्यकता में) दिया जा सकता है। सिद्ध मकरध्वज को पुष्टी चूर्ण के साथ मिलाकर हृदय प्रदेश पर मालिश करने से हृदय गति के अवरोध को दूर किया जा सकता है।

आधुनिक योगों में कोरामिन, कार्डियाजोल एड्रिनलीन, स्ट्रिकनीन, एमाइनोफिलीन का मुख द्वारा और सूचिका द्वारा प्रयोग त्वरित और आशानुकूल फल देता है।

—श्री ब्रजमोहन वाशिष्ठ ए., एम. बी. एस.
प्रधान चिकित्सक—गवर्नमेण्ट आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी
मनिवाली, (श्रीगंगानगर) राजस्थान

पृष्ठ १८ का शेषांश

हो उन्हें रोग आरोग्य होने तक एक समय भोजन व सुबह शाम फल दूध पर रहना उचित है। विश्वास है एक माह में हृदय की खराब से खराब हालत भी दूर हो जायगी।

अन्नाहार में गेहूं, चावल की अपेक्षा ज्वार मक्का हृदय के रोगियों को ज्यादा माफिक पड़ते हैं। इनमें धारक तत्वों का परिमाण ज्यादा रहता है गेहूं ही लिया जाये तो उसके चोकर को प्रथक न करना चाहिए। चावल पालिश वाले नहीं लेने चाहिये।

श्वास प्रश्वास का व्यायाम हृदय रोगों का अन्यतम सफल उपचार माना गया है। समतल जमीन पर लेट कर या दण्ड की तरह सीधे खड़े होकर दश पन्द्रह गहरी सांस लेने और उसे कुछ क्षणों तक छाती में रोककर पुनः बाहर निकाल देने को ही श्वास प्रश्वास का व्यायाम कहते हैं।

हृदय रोगों में मट्ठा (छाछ) एवं त्रिफला अत्यन्त उपकार करने वाले पदार्थ हैं। वर्षों की हृदय की बीमारी इनसे रफा दफा हो सकती है। त्रिफला सेवन करने का सबसे अच्छा तरीका है, रात को मिट्टी के बर्तन में २ तोले त्रिफला का चूर्ण, १० तोला पानी में भिगो दीजिये और सुबह मसल छान कर पी लीजिये। छाछ का सेवन भोजन के साथ अथवा खाली पेट कभी भी किया जा सकता है।

हृदय रोगों से ग्रस्त व्यक्ति काम धन्धे से फारिग होकर महीने पन्द्रह दिन के लिए सौ मील दूर किसी भी स्थान पर रह ले तो उसे बहुत लाभ हो सकता है। स्थान परिवर्तन से हृदय के रोग वगैर किसी चिकित्सा के ठीक हो सकते हैं ऐसे कई प्रयोग सफल हुए हैं। लेकिन याद रहे हमने आरम्भ में हृदय रोग के जो कारण बताये हैं उन्हें तो हर हालत में छोड़ने होंगे।

—श्री लक्ष्मीनारायण 'अलौकिक'
धामगढ़ (मध्य प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113414

शीतला शान्ति उपाये

श्री कविराज केशवराय सोहनी उर्फ आत्माराम बाबा

ग्रामों में जहां वैद्य अथवा डाक्टर का मिलना कठिन है। बहुत से रोगी बिना इलाज अच्छी सेवा और औषधि प्रयोग के माता जी की गोद में चले जाते हैं। अतः यह उपाय शान्ति प्राप्त करने के लिये प्रस्तुत किये जाते हैं। नित्यप्रति श्री शीतलाष्टक का पाठ रोगी के निकट या घर में अवश्य शान्ति होने तक कराया जावे।

औषधि —

(१) प्रवाल पिष्टी ½ से १ रत्ती तक, त्रिभुवनकीर्ति रस १ रत्ती दिन में ऐसी तीन मात्रा शहद से दें।

काढ़ा—खूबकला, गिलोय, ब्राह्मी, धमांसा, पित्त-पापड़ा, चिरायता और कुटकी इन सब औषधियों को ६-६ माशा लें। आठ गुने जल में पकाकर आधा रहने पर उतार छान कर पिलावें। आधा प्रातः आधा सायंकाल या रात्रि को दें।

यह योग शीतला या रोमान्तिका के विष को बाहर निकालता है और दोष को पचाता है।

इसके अतिरिक्त फोड़े को पकाने के लिये इसकी पुल्टिस बांधी जाती है।

(२) गुडूची का प्रयोग शीतला की बढ़ी हुई अवस्थाओं में भी सुधार लाता है अतः इस को नहीं भूलना चाहिए।

(३) शीतला रोग होने पर धनिये के फांट से रोज आंखें धोते रहने पर आंखों में दाने नहीं होते। यदि हुए तो भी सरलता से शमन हो जाते हैं। एरण्ड तेल की बूंद डालने से नेत्र साफ होते हैं।

(४) एक औषधि चिकित्सा—

अर्णी—इसके मूल का फांट या पत्तों का क्वाथ देने से विस्फोट, ज्वर, मसूरिका, लघु मसूरिका आदि में आराम होती हैं।

मात्रा—६ से ९ ग्राम तक।

(५) कांचनारत्वक ६ ग्राम का क्वाथ कर स्वर्णमाक्षिक भस्म २-२ रत्ती के साथ प्रयोग करावें। इससे शीतला विष जल्दी बाहर आ जाता है। दिन में दो बार अवस्थानुसार तीन बार भी दे सकते हैं।

सावधान—स्वर्णमाक्षिक के प्रयोग में यह विशेष ध्यान देने योग्य है कि खटाई चाहे किसी प्रकार की हो न दी जावे। इससे एक प्रकार का विष उत्पन्न होकर जोड़ों में दर्द करता है।

(६) नीम की छाल का फांट बनाकर देने से शीतला की खुजली और ज्वर का वेग कम हो जाता है और विस्फोट पाक और रोपण में सहायता देता है।

(७) अगर जलन हो तो गूलर के पके फल १-१ सुबह व शाम खिलाते रहने से शीतला की जलन दूर होती है।

(८) संहजने के वृक्ष पर होने वाले बांदे का मूल लेकर गरम राख में दबाकर फिर नरम पड़ने पर २-४ बूंद रस और ½ रत्ती गौलोचन और शहद मिला कर चटाने से शीतला का बल कम हो जाता है।

(९) सुपारी का चूर्ण जल के साथ ले लेने पर विष आसानी से बाहर निकल आता है।

(१०) संहजने के पानी के रस में राल मिलाकर शीतला के दानों पर लगाने से शीतला के दाने बैठ जाते हैं और रोग बढ़ता हुआ रुक जाता है।

(११) शतावरी का क्वाथ पिलाने से शीतला का विष अधिक नहीं फैल सकता।

(१२) लहसुन—शीतला के दानों में कीड़े पड़ने से खुजली चले तो लहसुन, राल और हींग का धुआं देने से कृमि मर जाते हैं और जखम जल्दी भर जाता है।

(१३) हल्दी और कत्था को बारीक पीस कर फूटे हुए दानों पर बुरकते रहने से आराम होगा।

(१४) बन हल्दी, आंवला और कड़वी जीरी को जल में भिगो कर मर्दन करके धोने या स्नान कराते रहने से शीतला के दाग और त्वचा विकृति दूर होती है।

(१५) श्री मेघमुनी इस चूर्ण का प्रयोग मुफीद बतलाते हैं। रक्त चन्दन, सफेद चन्दन, पित्तपापड़ा, नीम, पटोल पत्र समान भाग चूर्ण बनाकर बराबर की मिश्री मिलाकर ठंडे जल से प्रयोग करावें।

मात्रा—१ से ३ माशा प्रातः सायं अथवा १ मात्रा रात्रि को सोते समय दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ सप्ताह में दाह,खुजली, तीव्र ज्वर आदि उपद्रवों को नष्ट करता है। अनुभूत है ।

तीव्र ज्वर-प्रलाप में मुक्ता $\frac{1}{8}$ रत्ती, प्रवाल १ रत्ती, अमृतासत्व ४ रत्ती, गोदंती भस्म १ रत्ती, लक्ष्मी बिलास रस १ रत्ती। ऐसी दो मात्रा शहद के साथ देकर ऊपर से उक्त क्वाथ का प्रयोग करावें। १०४ का ज्वर २ मात्रा के प्रयोगानन्तर १०२ पर आ जाता है।

(१६) नीम और गेरू का लेप करायें। (कोमल पत्र या स्वरस लें)।

(१७) बकायन की शाखा (डाली) से नीचे लिखे मन्त्र को २१ बार पढ़ कर झाड़ें। प्रयोग के पूर्व ग्रहण में १०००० या किसी अमावस्या को १०००० पढ़कर मन्त्र सिद्ध करलें।

मन्त्र—ॐ ह्रीं प्रति चक्रे फुट विचकाय स्वाहा ॐ ह्रों नमः।

इस मन्त्र का प्रयोग रोग प्रति रोधनार्थ (Preventive) अथवा रोग दूर करणार्थ (Curative) किया जा सकता है। यह मेरा अनुभूत है और ४ रोगी अच्छे करने का अवसर मिला है। इसको मेघ मुनी द्वारा प्राप्त किया गया है।

शीतला और रोमांतिका की रोकथाम

केला के बीज प्रयोग करावें। १ से ८ बीज तक दे सकते हैं।

१—काली मिर्च, पुनर्नवा मूल दोनों को समान भाग पीस कर पानी से चने प्रमाण गोलियां बनालें। $\frac{1}{2}$ से १ गोली माता के दूध में घिसकर दें।

बड़े बच्चों को $\frac{1}{2}$ से १ गोली तक प्रातः सायं ७ दिन प्रयोग करायें।

२—सागवान के सूखे फल जलाकर इसका कोयला १ से २ फल प्रमाण शहद से चटावें या पानी से प्रयोग करावें। हुक्मी और यकीनी चिकित्सा है। मैं इसका प्रयोग रोग की अवस्था में भी करता हूं।

शीतला के असाध्य लक्षण

खांसी, हिचकी, प्रमेह, तीव्र ज्वर, प्रलाप, अरति, मूर्च्छा, तृष्णा, दाह, नेत्र कौटिल्य, मुख, नासिका तथा आंखों से रक्त स्राव, गले में घुरघुराहट, श्वास। यह जिस रोगी में हों भला चाहने वाला चिकित्सक इसका इलाज न करे।

इसमें खांसी और तीव्र ज्वर वाले रोगी पर हमने बड़े परिश्रम से स्वास्थ्य लाभ कराया है। परन्तु पथ्य पालन ठीक से न होने पर एक रोगी की नेत्र ज्योति नष्ट हो गई।

शीतला में पथ्य—

लंघन, वमन, विरेचन, शिरावेध, पुराने साली चावल, साठी के चावल, चने, मसूर, मूंग, संहजना, जौ, कांचनार की कली का यूष (जीरा नमक मिलाकर) जौ, अनार, अंगूर, मुनक्का, मीठा गूलर फल (अवस्था विशेष में हितकारी) पेठा, शीतल जल, ककोड़ा, कपूर, गोदं की भस्म, केला, गौ घृत यह पथ्य है।

अपथ्य—

हवा, पसीना, मिर्च, खटाई, तेल, भारी पदार्थ, मैथुन, क्रोध, शोक, चिन्ता, वेगों का रोकना, खट्टे, चरपरे, तीक्ष्ण पदार्थ, गर्भवती स्त्री की छाया तथा अन्य इसी प्रकार के पदार्थ यह कुपथ्य हैं।

विशेष अनुभूत योग—फरवरी के अन्तिम ७ दिन, मार्च के (पहले) १० दिन के भीतर १० से १२ तक साबित मोती बालकों को निगलवा दिये जायें तो रोमान्तिका चेचक और टाइफाइड ज्वर से ९०% छुट्टी मिल जाती है।

—श्री कविराज केशवराय सोहनी बी० ए०
गवर्नमेण्ट आयुर्वेदिक डिस्पेन्सरी, निजामपेट
निजामाबाद (आंध्र प्रदेश)

जुशांदा
(जुकाम नाशक क्वाथ)
बिगड़े जुकाम के लिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजन्म जनसेवी स्वर्गीय
पं० श्री कृष्णप्रसाद त्रिवेदी B. A. आयुर्वेदाचार्य

की जीवनी पर विहंगम दृष्टि

श्री नन्दकिशोर शर्मा सूर्य चिकित्सक

पूज्यनीय आयुर्वेदाचार्य श्रीमान कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी का जन्म मध्यप्रदेश के चांदा जिले में हुआ था, आपके पिता श्री गणपतप्रसाद जी पुलिस महकमे में कोर्ट इन्सपेक्टर थे।

आपने नागपुर में कालेज का शिक्षण प्राप्त करते हुए वैद्यक का अध्ययन राजवैद्य इन्दौरकर जी से किया था।

सर्व प्रथम वर्धा के मारवाड़ी विद्यालय ने आपको विद्यालय में संस्कृत, इंगलिश और वैद्यकी के अध्यापन कार्य में नियुक्त किया था।

पहले आपकी इच्छा वकालत परीक्षा पास करने की थी किंतु सन् १९२० की नागपुर कांग्रेस ने आपके इरादे को तोड़कर निस्वार्थ जन सेवा की ओर प्रवृत्त कर दिया।

हिंगनघाट के माननीय सेठ मथुरादास जी के बुलाने पर आप हिंगनघाट आए और वहां पर एक श्रीकृष्ण औषधालय स्थापित किया जहां पर धर्मार्थ रूप से जन सेवा का उत्तम कार्य हुआ। इसके अतिरिक्त आपके प्रयत्नों से हिंगनघाट में स्थानीय वैद्यों की एक सभा स्थापित हुई जिसका सम्बन्ध निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डल से हुआ।

हिंदी का आयुर्वेद सम्बन्धी ऐसा कोई बिरला ही सामयिक पत्र होगा जिसमें आपके मननीय एवं गंभीर लेख प्रकाशित न हुये हों।

आपने कृष्ण विषहरण नामक एक अपूर्व औषधि शोध कर निकाली जिसका पूर्ण प्रयोग धन्वन्तरि के चिकित्सांक में आपने उदार अन्तःकरण से प्रकट किया है। इस प्रयोग से महान विषधर सर्प नष्ट किये जा सकते हैं तथा अन्य पचासों रोगों पर इसका सफलता पूर्वक उपयोग होता है।

आपने अनेक वर्षों तक अनुभूत योगमाला नामकप्रसिद्ध मासिक पत्रिका में सारगर्भित लेखों के अतिरिक्त उत्तरकला के द्वारा लाखों कष्टसाध्य रोगियों को रोग से छुटकारा दिया है।

आपके दीर्घकाल के अनुभव से लिखी हुई निम्न पुस्तकें विशेष लोकप्रिय साबित हुई हैं जो वैद्यों तथा गृहस्थों के लिये अत्युपयोगी हैं—

बृहदासवारिष्ट संग्रह दो भाग, वैद्य कार्यालय -मुरादाबाद औषधि गुणधर्म विवेचन २भाग, अंत्रवृद्धि, अर्शचिकित्सा— अनुभूत योगमाला आफिस बरालोकपुर इटावा यू० पी०

बृ० पाक संग्रह, चिकित्सा रहस्य, इन्फ्लुएंजा श्री धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ अलीगढ़ (उ० प्र०)

चिकित्सा रहस्य का दूसरा भाग जो कि पहले भाग की अपेक्षा लगभग तीन गुना बड़ा ग्रन्थ है अभी प्रकाशित नहीं हुआ।

धन्वन्तरि के चार वृहतकाय विशेषांक "बनौषधि विशेषांक" जिनमें से प्रथम भाग के तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

इन पंक्तियों के लेखक के साथ साक्षात्कार—

पूर्व जन्म के संस्कारवश एवं हरिकृपा से १९४० से इस सेवक से उनका सम्बन्ध हुआ। आप श्रीरामचरितमानस के अनन्य अनुयायी थे—इसी के प्रताप से आपने मेरे पाणिग्रहण होने से १।। वर्ष पूर्व आर्शीर्वाद दिया था जिनकी कतिपय पंक्तियां निम्न हैं।

हरदा २८।२।५०

प्रिय श्री नन्दकिशोर जी !!

जय श्रीहरि

आप प्रसन्नतापूर्वक अपना पाणिग्रहण संस्कार करें। हमारी औषधि का सेवन व्यर्थ नहीं जावेगा। हरि कृपा से १।। वर्ष पश्चात् आपको उत्तम पुत्र की प्राप्ति होगी।

भवदीय

श्री कृष्णप्रसाद त्रिवेदी

तदनुसार दिनांक १८।८।५१ को पुत्र हुआ जो कालेज में पढ़ रहा है। हरदा मुकाम पर काफी समय तक आपके चरणों में रहने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ नित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल को आपके आश्रम में श्री रामचरित मानस का पाठ होता था मुझे भी संकल्प करवाया जो आज तक बिना नागा पाठ चल रहा है।

प्रसंगवश श्री रामचरित मानस से जो अलभ्य लाभ हुआ उसे भी धन्वन्तरि के सुज्ञ पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित कर रहा हूं।

अभी अभी जिस बच्चे का जिक्र किया है वह बचपन में आक्षेपक रोग से आक्रांत था पर्याप्त चिकित्सा हुई परन्तु रोग समूल गया ही नहीं।

पूज्य त्रिवेदी जी से प्रार्थना करने पर निम्न प्रयोग प्राप्त हुआ जिसे यथा विधि बनाकर बच्चे के ललाट पर व आंखों में लगाया गया एक सप्ताह में रोग चला गया।

प्रयोग—एक शनिवार से दूसरे शनिवार तक प्रतिदिन सायंकाल को शुद्ध गोघृत का दीपक जला कर ऊपर कांसे का कटोरा रख देवें एवं पूर्वाभिमुख होकर सुन्दरकांड का पूर्ण पाठ करें एक सप्ताह बाद काजल निकाल कर सुरक्षित रख लेंवे इसे बच्चे के ललाट व आंखों पर लगाया करें।

आगर पर श्री गायत्री महायज्ञ एवं युग निर्माण सम्मेलन के शुभ अवसर पर पूज्य त्रिवेदी जी को पं० श्री राम जी शर्मा आचार्य मथुरा वालों के साथ १९५७ में बुलाया था कुछ समय तक आपने सेवक के घर पर निवास किया। पारस्परिक चर्चा में मैंने निवेदन किया कि बनौषधि सम्बन्धी संग्रह पर्याप्त नहीं है और वर्तमान में आयुर्वेद की उपेक्षा की जारही है पूर्ण विश्वास है आप आयुर्वेद जगत को यह निधी प्रदान कर देंगे इस पर आपने कहा कि इतना विशाल व्यय उठाने को कोई तैयार नहीं है उसी समय मथुरा में श्री गायत्री सम्मेलन था पूज्य त्रिवेदी को लेकर मथुरा आया और निवेदन किया आयुर्वेद के प्राण वैद्य श्री देवीशरण गर्ग सुविज्ञ सम्पाद महोदय धन्वन्तरि वाले इस कार्य को मूर्तरूप अवश्य दें और हुआ भी ऐसा ही।

पूज्य त्रिवेदी जी को विजयगढ़ लाया गया यहां प धन्वन्तरि के विशेषांक के रूप में लगातार १० वर्षों (वृद्धावस्था में) अनवरत परिश्रम से बनौषधि विशेषां ४ भाग की अमूल्य निधि प्रकाशित हुई तथा पांचवा भा भी आधे से ऊपर लिखा जा चुका था कि दिनांक १४. ६७ को महानिमंत्रण प्राप्त हुआ और वे सदा के लि प्रस्थान कर गये। मृत्यु के समय वे धीरे से बोले संस की नश्वरता के बीच माया मोह का क्या प्रयोजन? तब इस समय एक चिंता से व्याकुल हूं वह यह कि बनौषधि विशेषांक को मैं गत् दस वर्षों से निरन्तर लि रहा था वह अपूर्ण रहा गया है। मेरे उस प्रयास में जन का बहुत बड़ा हित सन्निहित है। यदि उसका आश्वा मिल जाय तो मैं चिन्ता मुक्त होकर प्रयाण करूं। यही आज भी गुंजायमान हो रहे हैं। पृथ्वी माता परोपका एवं धर्मप्राण विद्वान वैद्यों से शून्य नहीं है क्या पूज्य त्रिवे जी के इस संकल्प को उनकी शैली में पूर्ण कराकर वै समाज सच्ची श्रद्धांजलि पूज्य त्रिवेदी जी को अर्पित करें

संचालक महोदय धन्वन्तरि इस कार्य में पूर्णतः स योग देने को कटिबद्ध हैं "सुज्ञेषु किमधिकम्"।

— विदुषानु

श्री नन्दकिशोर शर्मा सूर्या चिकि

आगर (मालवा) म०

सरल भेदी वटी
कब्ज़नाशक गोलियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपस्मार (मिरगी)

श्री आचार्य चरणतीर्थ जी महाराज

कारण—शराब जैसी नशीली चीजों की आदत से, अतिविषय भोग से हस्तमैथुन की कुटेब से, मस्तिष्क रोग से, कृमि रोग से, गर्भाशय के दर्द से, बात रोग, आक्षेप, धनुर्वात, सन्निपात आदि रोगों में उपद्रव स्वरूप भी यह रोग होता है।

परिचय—हृदय कांपता है, हृदय और दिमाग शून्य जैसा लगता है, स्मरण शक्ति कम हो जाती है, रोगी चलते फिरते चिल्ला कर गिर पड़ता है। आंख की पुतली चढ़ जाती है और सिर्फ सफेद भाग दीखता है। जीभ दांतों में सट जाती है। मुख में फेन आता है। गरदन फिर जाती है। खींचतान जैसे जैसे बढ़ती है शकल काली पड़ती जाती है। थोड़ी देर के बाद खींचातान बन्द होती है तब रोगी सो जाता है। आरम्भ में ६-८ महीने के बाद एक दफे आती है पर पीछे समय गुजरने पर रोग का दौरा जल्दी जल्दी होने लगता है। यहां तक कि एक दिन में दो तीन बार तक दौड़ा पड़ने लगता है।

वात प्रधान होने से शरीर कांपता है, दंतौरी बंधती है, मुख में से फेन निकलता है, श्वास बढ़ती है, लार निकलती, अंधेरा छाने लगता है। पित्तप्रधान होने से आंख, मुख और फेन पीले होते हैं तृषा बहुत लगती है। चारों ओर जलता हुआ दीखता है। कफप्रधान होने से आंख और फेन सफेद होता है, शरीर ठंडा पड़ता है और पीठकी ओर खींचतान ज्यादा समय तक रहती है। कई रोगी विचित्र प्रकार से चीखते चिल्लाते हैं। सारे शरीर के स्नायुओं में खींचतान होती है।। दांत की बतीसी बंध जाती है। श्वास रुंध जाता है। किसी को पेशाब, दस्त और वीर्यस्राव तक हो जाता है। हृदय फूलता है पेट गुड़गुड़ाता है।

पथ्यापथ्य—इस रोगी को अकेला कहीं नहीं जाने देना चाहिये। दौड़े के समय सावधानी रखना उसके हाथ पांव को चोट न हो इसकी संभाल रखना। छाती खुली रखना, पंखा करना। जीभ की रक्षा के लिए मुख में पोची लकड़ी रखना। द्राक्षासव पिलाना अंजन-नस्य का उपयोग करना। आहार विहार में संभाल रखना सादा लघुपाचन हो जाय अजीर्ण कब्जी न हो इस प्रकार की खुराक देना। घी, तेल और खांड, शक्कर का मिष्ठान्न कम खिलाना। दस्त और पेशाब हमेशा साफ हो ऐसी दवा देना। औरतों को ऋतु-मासिक धर्म नियमित आना चाहिए। चिंता, क्रोध, भय, शोक न होने देना। किसी को पानी या अग्नि के पास करने से या देखने से (दौरा) आजाता है उनसे दूर रखना। हरा शाक कम खिलायें।

चिकित्सा—

अपस्मार नाशक रस—पारद, गंधक, ताम्र भस्म, अभ्रकभस्म, शुद्ध मनसिल, शुद्ध हरताल, बच, कुष्ठ, हींग, अजमोद, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, रुद्राक्ष, सैंधानोंन मोर पुच्छ की भस्म, लशुन, ब्राह्मी, सब समान भाग लेकर इसमें मालकांगनी का तेल सबके वजन से सोलवां हिस्सा की भावना देकर, अज (बकरा) के पेशाब और मूसाकानी और ब्राह्मी प्रत्येक के रस की एक एक भावना देकर रत्ती प्रमाण गोली बनालें या चूर्ण ही रहने दें। मात्रा ३ से ६ रत्ती गाय के घी या कल्याणघृत से दें एक दो महिनों तक सेवन करने से यह रोग मिट जाता है।

भूत भैरव लघु—पारद, गंधक, ताम्र भस्म, लोह भस्म, शुद्धहरताल, शुद्ध मनशिल, अभ्रक भस्म, प्रत्येक दश-दश तोला लेकर गोमूत्र में घोट सुखाकर तैयार रखें, और ७० तोला शुद्ध गन्धक को लोहे की कढ़ाई में डाल धीमी आंच से पकावें, पिघल जाने पर ऊपर लिखे सात द्रव्यों का चूर्ण इसमें डाल दें और हिलाकर पर्पटी की तरह गोमय के ऊपर बिछाये हुए केले के पत्ते पर डाल कर पर्पटी की तरह तैयार करें। चार घंटा के पीछे निकालकर घोटकर रखलें। मात्रा ४-६ रत्ती कल्याणघृत से अथवा गाय घी या दूध के साथ दें।

भूत भैरव महा—रससिंदूर, रौप्य भस्म, सुवर्ण माक्षिक, लोहभस्म, अभ्रक भस्म, शिला चंद्रोदय, शिलाजीत प्रत्येक १० तोला, गंधक २० तोला, सुवर्ण भस्म ५ तोला सबको साथ मिलाकर उसमें, असगंध, पुनर्नवामूल, रुद्राक्ष, जटामांसी, कुष्ठ प्रत्येक १० तो. कूट कपड़छन कर ऊपर के मिश्रण के साथ मिला देवें। बाद में अरणी, शतावरी, मयूरशिखा, तुलसी, गोरखमुण्डी प्रत्येक की १-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना देकर छाया में सुखाकर घोटकर रखें, ३ से १२ रत्ती रोग का स्वरूप देखकर गाय के दूध अथवा कल्याण घृत, ब्राह्मीघृत या ऊंटनी के घृत के साथ देने से अपस्मार, उन्माद, हिस्टेरिया आदि रोग मिटते हैं। रोग का स्वरूप और रोगी का शरीर देखकर उचित समय तक औषधि सेवन करावें।

अपस्मार मिश्रण—भूतभैरव महा १ तोला, वात चिन्तामणि बृहत् आधा तोला, सर्वेश्वर पर्पटी आधा तोला, सुवर्ण बसन्त मालती आधा तोला, स्वर्ण भस्म रत्ती ¼ तोला, रत्न भागोत्तर रस आधा तोला सब साथ मिलाकर ६४ पुड़ियां बनालें। दोनों वक्त च्यवनप्राश, अश्वगंधादि अवलेह आदि के साथ दें। रोगी की अवस्था के अनुसार न्यूनाधिक समय तक सेवन करावें।

अपस्मारहर चूर्ण—सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, चव्य, चित्रक, हरड़, सेंधानमक, वायबिडङ्ग, अजवायन, अजमोद, धनियां, जीरा, लशुन, तज, सरसों, सहजने का बीज, मालकांगनी, गोखरू, बला बीज, असगंध, पीपरामूल, कुटकी, अतीस, देवदार, रास्ना, नागरमोथा, जटामासी, पुनर्नवा मूल, लौंग सब समभाग लेकर कूटकर रखना २ से ४ माशा पानी के साथ देना। अपस्मार, उन्माद, हिस्टेरिया शराब से उत्पन्न हुआ भ्रम, चक्कर और मानसिक रोग में, मदात्यय में उत्तम गुणकारी है।

मिरगी के दौड़े का सामान्य उपचार

अपस्मारहर अंजन—मेंसिल, शुद्ध रसांजन (रसौत) कबूतर की बीट समभाग लेकर घोटकर रखें। जब दौड़ा हो तब अंजन करें।

प्रयोग—

१—बलामूल, हल्दी, दारू हल्दी, बच, सप्तपर्ण, कुटकी, जटामांसी समभाग कूटकर ४ से ६ माशा पानी के साथ दें।

२—ब्राह्मी, मूसाकानी, मेंहदी, पाड़, पुष्करमूल, हल्दी, कपूरकाचली, निशोथ समभाग कूट २ से ३ माशा पानी के साथ दें।

३—सारिवा, रास्ना, शतावरी, असगंध, अजमोद, पुनर्नवा, सर्पगंधा समानभाग कूटकर २ से ३ माशा पानी के साथ दें।

४—बच, ब्राह्मी, मूसाकानी, प्रत्येक ५ तोला, सौंठ, पीपल, कालीमिर्च, हरड़ प्रत्येक २॥-२॥ तोला, लहसुन ६ तोला, गूगल १० तोला सब साथ कूटकर २ से ४ माशा पानी के साथ दें।

५—करंज बीज, आंवला, मालकांगनी, बच, तुलसी आमियाहल्दी, कचूर, शतावरी, सिद्धेश्वर (सघेसडो) शिरीष, हल्दी, सरसों, कुष्ठ, जटामांसी समभाग कूटकर २ से पांच तोला चूर्ण को पानी में पीसकर गरम कर सारे बदन में मालिश करें।

६—ब्राह्मी के छाया में सुखाये हुए पत्ते, बच, शंखाहूली, रुदन्तीक्षुप, शंखकीट, काली मिर्च, रास्ना, सहंजना के बीज, सरसों समान भाग लेकर कूट कपड़छन कर २ से ४ माशा पानी के साथ दें और नाक में सुघावें, आंख में अंजन करें तथा श्वास में इसका धुआं देवें।

७—पुराना कपड़ा एक हाथ का लेकर, हाथी के पांव और हृदय के बीच जो पसीना होता है उससे उसे भिगो छाया में सुखाकर रखना। रोगी को दौड़ा आवे तब ५-६ इन्च का उस कपड़े का टुकड़ा काटकर तीन चार तोला पानी में भिगोकर मसल कर उस पानी की बूंदें उसकी नाक में डालना। नाक से १-२ जंतु बाहर निकल आयेंगे। और अपस्मार सदा के लिए मिट जायगा।

८—चमार दूधली के फल १ तोला, कालीमिर्च, ¼ तोला, साथ मिलाकर घोंटकर कपड़छन कर नस्य दें।

९—हाथी का मद और कालीमिर्च साथ में घोटकर गोली बनाकर रखें। इसे पानी में घिसकर नाक में डालें।

१०—गधे के अगाड़ी के चार दांत जलाकर उसका धुंआ श्वास में लेने से मृगी मिटती है।

११—अरनी के मूल की छाल १ तोला, बकरी के दूध में पीसकर पिलावें। ७ से १४ दिन तक पिलाने से रोग मिटता है।

१२—अरीठे के फल का छिलका, इंगुदी (इंगोरिया) के फल, समुद्रफल, जियापोता (पुत्र जीवक) के फल की गिरी सब समान भाग लेकर पानी में घोटकर रत्ती प्रमाण गोली बनालें। दौड़ा आवे तब पानी में पीस कर नाक में डालें।

१३—समुद्र फल को गधे के पेशाब में पीसकर प्रातःकाल नाक में बूंद डालें और इसका धुंआ नाक के द्वारा श्वास में लें। १४ दिन यह प्रयोग करने से रोग मिटता है।

१४—इन्द्रवारुणी के फलका रस निकाल कर पांच दश बूंद नाक में डालें और इस फल को अग्नि में डाल इसका धुंआ भी नाक के द्वारा श्वास में लें।

—श्री आचार्य चरणतीर्थ जी महाराज
गोंडल (सौराष्ट्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विशेष उपयोगी विविध इंजेक्शन

श्री पद्मदेवनारायणसिंह एम. बी. बी. एस.

(नवम्बर १९६७ से आगे)

मोर्फिन, पेथीडीन, एट्रोपिन, हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड आदि तथा अन्य शूल या आक्षेप निवारक, पीड़ाहर औषधियों के योग

सभी तरह के शूल, आक्षेप या पीड़ाओं को दूर करने के लिये इनका १ एम्पुल का अधस्त्वगीय या मांसपेशी में इन्जेक्शन लगाया जाता है और आवश्यकता होने पर ५,७ या १२ घण्टे बाद इन्जेक्शन दुहराया जा सकता है।

बेङ्गाल इम्युनिटी—

(१) १/१०० ग्रेन के १ सी. सी. के ६, १२ और ५० एम्पुलों के बक्सों में।

(२) पेथीडिन हाइड्रोक्लोराइड (Pethidine Hydrochloride) ५० एम. जी. के १ सी. सी. और २०० एम. जी. के ६ एम्पुलों के बक्सों में।

(३) मौर्फीन सल्फेट—१ सी. सी. के १/४ ग्रेन, १/३ ग्रेन और १/२ ग्रेन के ६ और १२ एम्पुलों के बक्सों में मिलता है।

(४) मौर्फीन और एट्रोपिन—

मौर्फीन सल्फेट १/४ ग्रेन + एट्रोपिन सल्फेट १/२०० या १/१०० ग्रेन	१/३ ग्रेन + १/१५० ग्रेन	१/२ ग्रेन + १/१०० ग्रेन	१ सी.सी के ६ और १२ एम्पुलों के बक्सों में

ईस्ट इण्डिया फार्मास्युटिकल वर्क्स—

(१) मौर्फिन सल्फेट—१६ और २० एम. जी. शक्तियों के १ सी. सी. के ५ एम्पुलों के बक्सों में।

(२) मौर्फिन एण्ड एट्रोपिन—१६ एम. जी. और ०.३ एम. जी.; १६ एम. जी. + ०.६ एम. जी. और २० एम. जी. + ४ एम. जी. क्रमशः मौर्फिन सल्फेट + एट्रोपिन सल्फेट के एम्पुलों में।

(३) एट्रोपिन सल्फेट इंजेक्शन—०.६ एम. जी. के १ सी. सी. के १०० एम्पुलों के बक्सों में।

स्टैण्डर्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स कलकत्ता—

(१) मौर्फीन सल्फेट इंजेक्शन—१/४ ग्रेन; १/३ ग्रेन और १/२ ग्रेन के १ सी. सी. के ६, १२ और ५० एम्पुलों के बक्सों में।

(२) इंजेक्शन मौर्फीन सल्फेट एण्ड एट्रोपीन (Injection Morphine and Atropine)

मार्फिन सल्फेट १/४ ग्रेन + एट्रोपिन सल्फेट १/२०० ग्रेन	१/४ ग्रेन + १/१०० ग्रेन	१/३ ग्रेन + १/२०० ग्रेन	१/३ ग्रेन + १/१५० ग्रेन	१/२ ग्रेन + १/१०० या ५/२०० ग्रेन	१ सी. सी. के ६ और १२ एम्पुलों के बक्सों में मिलता है

(३) इंजेक्शन हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड या स्कोपलामाइन (Injection Hyoscine Hydrobromide or Scopalamine)—१/१०० ग्रेन के १ सी. सी. के ६ और १२ एम्पुलों के बक्सों में।

(४) एट्रोपीन सल्फेट (Atropine Sulphate) के १/६० ग्रेन, १/१०० ग्रेन और १/२०० ग्रेन के १ सी. सी. के ६, १२ और ५० एम्पुलों के बक्सों में।

बङ्गाल केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स कलकत्ता—

(१) मौर्फिन सल्फेट (Morphine Sulphate) १/४ ग्रेन, १/३ ग्रेन, १/२ ग्रेन शक्तियों के १ सी. सी. के ६ एम्पुलों के बक्सों में। मात्रा—१ एम्पुल का अधस्त्वगीय या इण्ट्रामस्कुलर इंजेक्शन।

(२) मौर्फिन एण्ड एट्रोपिन (Morphine and Atropine) १ सी. सी. में—(क) मौर्फिन सल्फेट १/२ ग्रेन + एट्रोपिन सल्फेट १/१०० ग्रेन।

(ख) मौर्फिन सल्फेट १/३ ग्रेन + एट्रोपिन सल्फेट १/१५० ग्रेन।

(ग) मौर्फिन सल्फेट १/४ ग्रेन + एट्रोपिन सल्फेट १/१०० ग्रेन।

(घ) मौर्फिन सल्फेट [illegible] ग्रेन + एट्रोपिन सल्फेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

$\frac{१}{१५०}$ ग्रेन।

(ङ) मौफिन सल्फेट $\frac{१}{४}$ ग्रेन+एट्रोपिन सल्फेट $\frac{१}{२००}$ ग्रेन के ६ एम्पुलों के बक्सों में। मात्रा—१ एम्पुल का सब कुटेनियस या इण्ट्रामस्कुलर इंजेक्शन।

(३) हायोसीन हाइड्रोब्रोमाइड या स्कोपलामाइन (Hyoscine Hydrobromide or Scopalamine) $\frac{१}{१००}$ ग्रेन औषधि युक्त १ सी. सी. के १२ और ५० एम्पुलों के बक्सों में। मात्रा—१ एम्पुल का मांसपेशी में इन्जेक्शन।

(४) एट्रोपिन सल्फेट (Atropine Sulphate)—(क) $\frac{१}{६०}$ ग्रेन औषधि युक्त १ सी. सी. के ५०, ५०० और १००० एम्पुलों के बक्सों में।

(ख) $\frac{१}{१००}$ ग्रेन के १ सी. सी. के ६, १२, ५०, ५०० और १००० एम्पुलों के बक्सों में, $\frac{१}{२००}$ ग्रेन के १ सी. सी. के ५० एम्पुलों के बक्सों में।

मात्रा और प्रयोग—१ एम्पुल का इण्ट्रामस्कुलर इंजेक्शन।

(५) पेथीडीन हाइड्रोक्लोराइड (Pethidine Hydrochloride)—१०० एम. जी. शक्ति के २ सी. सी. के ६ ऐम्पुलों के बक्सों में। मात्रा—५०-१०० एम. जी. का इण्ट्रामस्कलूर इंजेक्शन।

ग्लुकोनेट कम्पनी—

(१) मौफिन—$\frac{१}{४}$ ग्रेन या १६ एम. जी. की शक्ति में १ सी. सी. के ५ और २५ एम्पुलों के बक्सों में। मात्रा—१ एम्पुल का इण्ट्रामस्कुलर या सबकुटेनियस इंजेक्शन। आवश्यकता होने पर ४-६ घण्टे बाद इंजेक्शन दुहराया जा सकता है।

(२) मौफिन $\frac{१}{४}$ ग्रेन+एट्रोपिन सल्फेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन १ सी. सी. के ५ और २५ एम्पुलों के बक्सों में मिलता है। एट्रोपिन मौफिन के प्रायः सभी दुर्गुणों और अनिष्टकारी प्रभावों का निराकरण करता है। मात्रा—१ सी. सी. का इण्ट्रामस्कुलर अधस्त्वगीय इंजेक्शन आवश्यकतानुसार १ या २ बार रोज। सभी तरह के शूलों और पीड़ाओं को बहुत जल्द दूर करता है।

(३) एट्रोपिन सल्फेट—$\frac{१}{६०}$ ग्रेन (१ एम.जी.) और $\frac{१}{१००}$ ग्रेन (०.६ एम. जी.) और $\frac{१}{२००}$ ग्रेन की शक्तियों में १ सी. सी. के ५, २५ और ५० एम्पुलों में। मात्रा—इच्छित या आवश्यकतानुसार शक्ति के १ एम्पुल का मांसपेशी में या अधस्त्वगीय इंजेक्शन।

(४) एट्रोपिन सल्फेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन+स्ट्रीक्नीन $\frac{१}{६०}$ ग्रेन १ सी. सी. के ५ एम्पुलों के बक्सों में। मात्रा—१ एम्पुल का इण्ट्रामस्कुलर इंजेक्शन।

बरोवेलकम् कम्पनी—

(१) मौफिन सल्फेट इंजेक्शन—$\frac{१}{२}$ ग्रेन, $\frac{१}{३}$ ग्रेन और $\frac{१}{४}$ ग्रेन शक्तियों के १ सी. सी. के १२ और १०० एम्पुलों के बक्सों में। सबकुटेनियस या अधस्त्वगीय इंजेक्शन (१ एम्पुल का) लगाया जाता है।

(२) मौफिन सल्फेट विथ एट्रोपीन इंजेक्शन—मौफिन सल्फेट $\frac{१}{२}$ ग्रेन या $\frac{१}{३}$ या $\frac{१}{४}$ ग्रेन+एट्रोपीन सल्फेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन के १ सी. सी. के एम्पुल १२ और १०० एम्पुलों के बक्सों में।

(३) पेथीडिन हाइड्रोक्लोराइड—(क) इंजेक्शन-५० एम. जी. प्रति सी. सी. की शक्ति में १ सी. सी. और २ सी. सी. के १२ और १०० एम्पुलों के बक्सों में।

(ख) टेबलेट २५ और ५० एम. जी. के २५ और १०० टिकियों की बोतलों में। मात्रा—१०० एम. जी. मुख मार्ग से या अधस्त्वगीय या इण्ट्रामस्कुलर इंजेक्शन द्वारा।

डे मेडिकल स्टोर, कलकत्ता—

(१) मौफिन सल्फेट $\frac{१}{४}$ ग्रेन+एट्रोपिन सल्फेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन और (२) मौफिन सल्फेट $\frac{१}{२}$ ग्रेन+एट्रोपिन सल्फेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन के १२ एम्पुलों के बक्सों में।

हिन्द केमीकल्स, कानपुर—

(१) मौफिन सल्फेट—$\frac{१}{४}$ ग्रेन और $\frac{१}{२}$ ग्रेन के १सी. सी. के ६; १२ और १०० एम्पुलों के बक्सों में।

(२) मौफिनसल्फेट $\frac{१}{४}$ ग्रेन+एट्रोपिन सल्फेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन; और मौफिन सल्फेट $\frac{१}{२}$ ग्रेन+एट्रोपिन सल्फेट $\frac{१}{१००}$ ग्रेन युत १ सी. सी. के ६; १२, और १०० एम्पुलों के बक्सों में।

इन्जेक्शन के लिए हाइपोडर्मिक टेबलेटस–जल (परिश्रुत) के साथ एक बड़े चम्मच में गर्म करके इनका इन्जेक्शन स्वयं ही तैयार किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) एट्रोपिन सल्फेट $\frac{1}{100}$ ग्रेन के २० टिकियों का ट्यूब ।

(४) मौर्फिन सल्फेट $\frac{1}{4}$ ग्रेन या $\frac{1}{2}$ ग्रेन शक्ति के क्रमशः २० और १२ हाइपोडर्मिक टेबलेट् के ट्यूब में ।

(५) मौर्फिन सल्फेट $\frac{1}{4}$ ग्रेन+एट्रोपिन सल्फेट $\frac{1}{150}$ ग्रेन के टिकियों के ट्यूब में ।

(६) मौर्फिन सल्फेट $\frac{1}{2}$ ग्रेन+एट्रोपीन सल्फेट $\frac{1}{100}$ ग्रेन के १२ टिकियों के ट्यूब में ।

(७) पेथीडिन हाइड्रोक्लोराइड—५० एम. जी. शक्ति के १ सी. सी. और १०० एम. जी. के २ सी. सी. के ६; १२; और १०० एम्पुलों के बक्सों में ।

स्टंडमेड कम्पनी—

(१) पेथीडिन हाइड्रोक्लोराइड—५० एम. जी. और १०० एम. जी. शक्तियों के एम्पुल्स ।

(२) मौर्फिन सल्फेट—$\frac{1}{4}$ ग्रेन, $\frac{1}{3}$ ग्रेन और $\frac{1}{2}$ ग्रेन के शक्तियों में १ सी. सी के ६; १२; और १०० एम्पुलों के बक्सों में ।

(३) मौर्फिन सल्फेट $\frac{1}{4}$ ग्रेन एट्रोपिन सल्फेट $\frac{1}{200}$ ग्रे.	$\frac{1}{4}$ ग्रेन $\frac{1}{100}$ ग्रे.	$\frac{1}{3}$ ग्रेन $\frac{1}{150}$ ग्रे.	$\frac{1}{2}$ ग्रेन $\frac{1}{100}$ ग्रे.

शक्तियों के ६; १२ और १०० एम्पुलों के बक्सों में

बूट्स कम्पनी—

हाइपोडर्मिक या अधस्त्वगीय इंजेक्शन के लिये टेबलेट्स ।

(१) मौर्फिन सल्फेट के $\frac{1}{4}$ ग्रेन और $\frac{1}{2}$ ग्रेन के क्रमशः २० और १२ टिकियों का ट्यूब ।

(२) मौर्फिन सल्फेट $\frac{1}{4}$ग्रेन+एट्रोपिन सल्फेट $\frac{1}{100}$ के २० टिकियों का ट्यूब ।

(३) एट्रोपिन सल्फेट $\frac{1}{100}$ ग्रेन की २० टिकियों का ट्यूब ।

क्विनीन (QUININE) के इंजैक्शन्स

(मलेरिया चिकित्सा के लिये) १ एम्पुल (५ या १० ग्रेन) का नितम्ब की मांसपेशी में गहरा इन्जेक्शन रोज २-३ दिनों तक लगाया जाता है । अत्यधिक या सांघातिक अवस्थाओं में ग्लुकोश इन्जेक्शन के साथ मिलाकर बहुत धीरे धीरे और बहुत सावधानीपूर्वक सिरा में इन्जेक्शन लगाया जाता है ।

बेङ्गाल केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

(१) क्वीनीन बाई हाइड्रोक्लोराइड ५ ग्रेन के १ सी. सी. और १० ग्रेन के २ सी. सी. के ६; ५०; ५०० और १००० एम्पुलों के बक्सों में । (२) क्वीनीन बाई हाइड्रोक्लोराइड इन सक्करोस शोल्यूशन ५ ग्रेन औषधियुत १ सी. सी. के और १० ग्रेन औषधियुत २ सी. सी. के ६; ५०; ५०० और १००० एम्पुलों के बक्सों में।

ईस्ट इण्डिया फार्मास्युटिकल वर्क्स—

क्वीनिनडाई हाइड्रोक्लोराइड इन्जेक्शन—१ सी.सी. में ५ ग्रेनके ५; १००; और १००० एम्पुलों के बक्सों में ।

स्टंडमेड कम्पनी—

क्वीनिन बाई हाइडोक्लोराइड–१ सी. सी. में ५ ग्रेन और २ सी. सी. में १० ग्रेन औषधियुत ६; १२, और १०० एम्पुलों के बक्सों में ।

बङ्गाल इम्युनिटी—

(१) क्वीनीनबाई हाइड्रोक्लोराइड—१ सी. सी. में ५ ग्रेन औषधियुत ६; ५०; ५००, और १००० एम्पुलों के बक्सों में ।

२ सी. सी. में ५ ग्रेन औषधियुत ५०; ५००; और १००० एम्पुलों के बक्सों में ।

२ सी. सी. में १० ग्रेन औषधयुत ६; १२; ५०; ५००; और १००० एम्पुलों के बक्सों में ।

(२) क्वीनीन बाई हाइड्रोक्लोराइड विथ सक्करोस शोल्यूशन (इस इन्जेक्शन को लगाने से दर्द थोड़ा कम होता है)—५ ग्रेन औषधियुत १ सी० सी० और २ सी० सी० के ५०; ५००; १००० एम्पुलों के बक्सों में । १० ग्रेन के २ सी० सी० के ६; १२; ५०; ५०० और १००० एम्पुलों बक्सों में ।

बरोवेलकम कम्पनी—

क्वीनिन डाई हाइड्रोक्लोराइड—१सी० सी० में ५ ग्रेन और २ सी० सी० में १० ग्रेन के १२ और १०० एम्पुलों के बक्सों में ।

स्टैन्डर्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

(१) क्वीनीनडाई डाइड्रोक्लोराइड और (२) क्वीनीन डाई हाइड्रोक्लोराइड विथ सक्करोस शोल्यूशन; ५ ग्रेन औषधियुत १ सी० सी० और १० ग्रेन औषधियुत २ सी० सी० के ६; १२; और ५० एम्पुलों के बक्सों में ।

—शेषांश पृष्ठ ३२ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भस्राव या गर्भपात

[नवम्बर १९६७ के अङ्क से आगे]

श्री डा० बनारसीदास दीक्षित H.M.D.S.

गर्भस्राव या गर्भपात दोनों शब्दों का अर्थ प्रायः बोलचाल की भाषा में एक प्रकार का ही होता है। किन्तु अनेक ग्रन्थकारों ने ३ मास तक गर्भस्राव एवं ४ मास से ६ मास तक के गर्भ नष्ट होने को गर्भपात बताया है। ७ मास को सतवांसा प्रसव एवं ८ मास के को अठवांसा प्रसव कहते हैं।

एक बार गर्भस्राव होने के बाद बराबर ही गर्भस्राव का भय बना रहता है। अतः कारण की खोज करके उसकी प्रतिषेधक चिकित्सा करना अति आवश्यक है।

कारण—

(१) बार बार गर्भपात होने का इतिहास सुनते ही सर्व प्रथम चिकित्सक की धारणा होती है कि रोगिणी में स्वोपार्जित एवं वंशगत सिफलीटिक दोष है या नहीं? इसकी जानकारी के लिये एलोपैथिक के भक्त प्रायः रक्त परीक्षा कराते हैं और परीक्षा की रिपोर्ट को ब्रह्मवाक्य मानते हैं। किन्तु चिकित्सा काल के अनुभव के आधार पर ऐसा देखा गया है कि जहां रोगी को स्वोपार्जित सिफलीटिक दोष रहता है वहां माइक्रोस्कोप द्वारा रक्त परीक्षा करने पर कीटाणु नजर आ जाते हैं। किन्तु वंशगत दोष की प्राप्ति होने पर माइक्रोस्कोप के द्वारा भी दोष पकड़ा नहीं जाता है और अन्दाज से ही दवाइयों का प्रयोग करते हैं।

होमियोपैथिक में दोष को खोज करने का एक ही तरीका है वह है रोगी लिपि, सावधानतापूर्वक रोग लक्षणों का संग्रह करने पर वंशगत इतिहास से या रोगी के मानसिक और शारीरिक लक्षणों के द्वारा अनुभवी चिकित्सक से कोई भी दोष छिप नहीं सकता। प्रत्येक दोष अपने अपने स्वतन्त्र लक्षणों को पैदा करता है। अतः रोगी लिपि बहुत ही सावधानीपूर्वक करनी चाहिए। रोगी लिपि ही सफलता का आधार है। अच्छी रोगी लिपि तैयार होने पर बाहर आना चिकित्सक का काम हो जाता है।

(२) आघात लगने के कारण भी गर्भपात होता है जैसे घोड़े या ऊंट की सवारी करना, ऊंची नीची जमीन में मोटर, गाड़ी आदि में सफर करना अथवा अन्य किसी प्रकार की चोट आने के फलस्वरूप गर्भपात होते देखा गया है।

(३) भय के कारण किसी प्रकार का भयंकर दृश्य या अन्य किसी प्रकार के भय, शोक, दुःख आदि मानसिक आघात होने से भी गर्भपात होता है।

(४) गर्भाशय में या उसके आसपास के स्थान में ट्यूमर आदि उपमांस होने पर गर्भ को बढ़ने के लिये पर्याप्त स्थान न मिलने के कारण भी गर्भपात हो जाता है।

(५) अर्गट, कुनेन आदि गर्म दवाइयों के अथवा मिथ्या आहार बिहार के कारण भी गर्भपात होता है।

लक्षण—

गर्भपात होने के पूर्व लक्षणों पर ध्यान रखना अति आवश्यक है। सर्व प्रथम रोगी को हलका हलका शीत अनुभव होता है उसके साथ ही आलस्य, दुर्बलता, जंभाई आदि लक्षण देखे जाते हैं। उसके बाद ही तलपेट में दर्द अनुभव होता है यह दर्द कमर से उठकर तलपेट में जाता है, दर्द ऐंठन की तरह या प्रसव वेदना की तरह का होता है। यह दर्द पीठ, कमर, तलपेट और जांघों तक फैल जाता है। इस दर्द की एक विशेषता यह है कि दर्द आता है फिर कुछ देर के लिये शान्त हो जाता है इस प्रकार रुक रुक कर दर्द होता है। कुछ देर बाद ही दर्द के साथ ही पानी की तरह का एक पदार्थ निकलता है और फिर दर्द के साथ रक्तस्राव होने लग जाता है। रक्त लाल कभी कभी जमा हुआ गिरता है। अन्त में तेज दर्द आकर गर्भपात हो जाता है। गर्भपात होने के बाद ऐंठन युक्त दर्द में अपने आप ही कमी महसूस होने लगती है।

चिकित्सा —

रोगिणी को शान्त भाव से चित्त लिटा देना चाहिए। **घूमने फिरने से रक्तस्राव अधिक होता है। चारपाई या**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौकी जिस पर रोगिणी को सोना है उसके पैर की तरफ के पावों के नीचे १-१ ईंट लगाकर कुछ ऊंचा कर देना चाहिए। रोगिणी के पास अनावश्यक औरतों की भीड़ न हो क्योंकि आने वाली औरतें रोगिणी की बीमारी को अधिक बढ़ाकर कहती हैं जिससे रोगिणी का मनोबल कम होता है।

हमेशा रोगिणी को सान्त्वना देते रहना चाहिये। भय आदि के कारण रोग हुआ होवे तो साईक्लोजिक व्यवस्था द्वारा आत्मबल बढ़ाने का प्रयास करना चाहिये।

औषधि व्यवस्था—

एकोनाइट नैपलस ३×६, ३०

भय अथवा क्रोध के कारण गर्भस्राव होने की अवस्था में इसका प्रयोग होता है। रोगिणी को भय होता है कि कोई भयानक घटना होने वाली है। इसके साथ ही तेज प्यास, बेचैनी, मृत्यु भय, अस्थिरता, भयानक वेदना आदि इस दवा के चरित्र एवं लक्षण रहते हैं।

प्रायः अनुभव के आधार पर देखा गया है कि उपरोक्त लक्षणों के रहने पर एकोनाइट देने से रोगिणी को शान्ति मिलती है, बेचैनी आदि उपसर्ग दूर हो जाते हैं। शेष लक्षणों के लिये आपको अन्य दवाइयों पर ध्यान देना होगा।

प्रभेद—क्रोध के कारण गर्भस्राव होता हो तो कैलोमिला से तुलना करनी चाहिये। भय के कारण होने पर ओपियम् से तुलना करनी चाहिये।

वाईवर्नम प्रूनिफोलियम् Q

यह दवा २-३ मास के गर्भस्राव में लाभप्रद है। दर्द के साथ ही यह दवा रक्तस्राव को भी रोक देती है। गर्भस्राव की आशंका होते ही इसका प्रयोग करना चाहिये। इस दवा के दर्द की प्रकृति हमेशा याद रखनी चाहिये। इस दवा की वेदना कमर से उठकर पेट में होती हुई जराजु में जाकर शेष होती है। रक्तस्राव ढेला ढेला जमा हुआ होता है।

याद रखना चाहिये कि गर्भस्राव अतिरज आदि में प्रूनिफोलियम् एवं बाधक वेदना में वाईवर्नम ओपुलस का प्रयोग करना चाहिये।

अमेरिका के प्रसिद्ध डा० डब्ल्यू. ए. डयूवे एम. डी. ने अपने 'प्रेक्टीकल थेराप्यूटिक्स' नामक पुस्तक में लिखा है कि गर्भपात होने का भय, जब कि दर्द पीठ से आकर निचले पेट में होता हुआ जांघों में उतर जाता है। इस प्रकार के ऐंठन वाले दर्द को यह औषधि बन्द करेगी एवं बार बार गर्भपात होने की प्रबलता को दूर करती है।

सैवाईना ६×३०

तीसरे मास के गर्भस्राव में यह दवा विशेष कार्य करती है। अनाचक रक्तस्राव होकर गर्भस्राव होने की आशंका होते ही इस दवा का प्रयोग करना चाहिये। शरीर के अंग प्रत्यंगों में दुर्बलता की अनुभूति होती है। रक्तस्राव के साथ ही सेक्रम-अस्थि (कूल्हे की हड्डी) से जननेन्द्रिय की जड़ तक या कमर के नीचे के हिस्से से जननेन्द्रिय तक खींचने की तरह का दर्द होना इसका प्रधान लक्षण है। इस प्रकार का दर्द गर्भपात होने के पहले होने पर आप सेवाइना देकर गर्भपात की आशंका को दूर कर देंगे। यदि उपरोक्त प्रकार का दर्द और उसके साथ ही लाल रंग एवं गांठदार रक्तस्राव होता हो तो आप प्रसव के या गर्भस्राव के बाद का रक्तस्राव या अतिरज के रक्तस्राव को भी रोक सकेंगे। गर्भाशय की दुर्बलता के कारण होने वाले गर्भस्राव में भी यह लाभप्रद है।

प्रतिषेधक चिकित्सा—

जिन स्त्रियों को छोटी उम्र में रजःस्राव आरम्भ हुआ हो और गर्भाशय की दुर्बलता के कारण बराबर तीसरे मास में गर्भस्राव हो जाता हो उन महिलाओं को गर्भ रहने के बाद सेवाईना ३० या २०० शक्ति का प्रयोग किया जावे तो यह आशंका दूर हो जाती है। जहां गर्भस्राव का कारण सिफलिटिक दोष होवे उस जगह पुरानी बीमारी के नियमानुसार एण्टीसिफलीटिक चिकित्सा करना उचित है। एण्टीसिफलीटिक चिकित्सा करने के पूर्व पति पत्नी दोनों का ही इतिहास पूछकर दोनों को लक्षणानुसार दवा देने पर विशेष लाभ होगा।

मेरा अनुभव—

गर्भस्राव की आशंका होते ही यदि मेरे को बुलाया जाता है तो सर्व प्रथम कारण की खोज करता हूं एवं शारीरिक और मानसिक लक्षणों का संग्रह करके रोगणी को शांतभाव से विश्राम की पूर्ण व्यवस्था करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनावश्यक स्त्रियों की भीड़ को रोगणी के पास से हटा देता हूं। एवं एकोनाईट के लक्षण होने पर ३-४ मात्रा एकोनाईट देता हूं। यदि कुछ रक्तस्राव भी प्रारंभ हो गया होवे एवं साथ में दर्द होतो निम्न व्यवस्था करता हूं—आधा पाव जल में वाईवर्नम् प्रुनिफोलियम की १५ बूंद डालकर एक शीशी में तैयार करके दे देता हूं। यदि ३-३॥ मास का गर्भस्राव हो तो साथ में सेवाईना ६ या १० की ६ खुराक सुगर आफ मिल्क में बनाकर दे देता हूं। एवं रोग की गति के अनुसार १ घंटे से ३ घंटा के अन्तर से पर्याय क्रम से देता हूं। इस प्रकार से प्रायः सफलता मिल जाती है।

यदि कारण चोट लगना आदि हो तो सर्व प्रथम मैं आर्निका से श्री गणेश करता हूं।

क्रानिक रोगणियों पर लक्षण के अनुसार एण्टी सिफलीटिक चिकित्सा से सफलता मिल जाती है।

श्री मान वैद्य देवीशरण जी गर्ग प्रधान सम्पादक धन्वन्तरि पत्रिका के अनुभव से भी मैंने काफी सफलता प्राप्त की है। यह योग "गुप्त सिद्ध प्रयोगांक" भाग ४ पृष्ठ ५१६ पर है। इससें रोगणी को प्रति मास १-१ पत्ता पलास (खाखरा, ढाक) क्रमशः बढ़ाकर गोदुग्ध के साथ सेवन कराने से ३-४ स्थानों पर सफलता मिली है। पाठकों को इससे लाभ उठाना चाहिये।

मेरे मित्र वैद्य श्री नारायण दत्त जी (दिवराला) सीकर वालों ने एक बार बताया था कि पलास पत्र का सेवन नाल परिवर्तन में भी लाभप्रद है। पर अभी तक मैंने नाल परिवर्तन पर प्रयोग नहीं किया है।

आर्निका मौन्ट ६; ३०, २००

चोट लगने के कारण गर्भस्राव की आशंका होते ही सर्व प्रथम आर्निका का प्रयोग करना चाहिए। सब शरीर में दर्द गर्भपात एवं प्रसव के बाद आर्निका का प्रयोग करने से सेप्टीक आदि होने का भय नहीं रहता है।

सीपिया ६, ३०, २००—

पांचवे मास में होने वाले गर्भपात को रोकने के लिए सीपिया बहुत शक्तिशाली दवा है। दुवली पतली स्त्रियां जिनका स्वभाव विरक्तिपूर्ण होवे; जरायु का बाहर निकलना एवं जरायु नीचे की ओर निकल जावेगा इस प्रकार की अनुभूती तब रोगणी पैर पर पैर लगाकर बैठती है।

कोलो फाईलम् ३, ६, ३०—

कमर एवं पीठ में अत्यन्त वेदना होती है और उसके साथ ही जरायू की कमजोरी की वजह से जिन्हें अकसर गर्भस्राव हो जाया करता है, उनको गर्भस्राव की सम्भावना हो जाये और जरायु तथा तलपेट में दर्द के साथ कुछ-कुछ रक्तस्राव होता रहे तो इससे लाभ होता है। वात प्रकृति की स्त्रियों में यह विशेष लाभप्रद है।

कल्केरिया फ्लोर १२×

जिन स्त्रियों को मृत संतान पैदा होती होवे या ७-८ मास में प्रसव होजाता हो उनको गर्भ रहने के बाद से यह दवा सुबह और शाम को नित्य दो बार सेवन कराने से यह दोष दूर हो जाता है।

ऐलेट्रिस फेरिनोसा Q ३×६

गर्भ स्राव का उपक्रम होना हो और पहले कमर में दर्द मालूम होता हो इसके प्रयोग से लाभ होने की सम्भावना है। बार बार गर्भ स्राव दोष को भी यह दवा दूर करती है। यह बार बार होने वाले गर्भस्राव को जो गर्भाशय की दुर्बलता के कारण हो, यह दवा अधिक लाभप्रद है।

मिली फोलियम् १×३

अधिक परिश्रम करने के कारण जरायु से रक्तस्राव होने लग जावे रक्त लाल एवं अधिक मात्रा में होवे उसके साथ किसी प्रकार का दर्द न हो तो यह लाभप्रद है।

आरम म्यूरेटिकम् नेट्रोनेटम् ३×६×३०

स्त्री में यदि सिफलीटिक दोष होवे और उसके कारण बार बार गर्भस्राव होता हो तो यह लाभप्रद है। यह दवा गर्भाशय की स्थान च्युति में भी लाभप्रद है।

उपरोक्त दवाईयों के अलावा और भी बहुत सी दवाइयां हैं जो कि लक्षण सादृश्य होने पर लाभप्रद हैं।

—श्री डा० बनारसी दास दीक्षित
दीक्षित फार्मेसी, रक्सौल (चम्पारण) बिहार

पृष्ठ २६ का शेषांश

ओपील फार्मास्युटिकल्स—

क्वीनीन बाई हाइड्रोक्लोराइड इन्जेक्शन विद सक्करोस शोल्यूशन—५ ग्रेन औषधियुत १ सी० सी० और २ सी. सी. के १० और ५० एम्पुलों के बक्सों में।

कलकत्ता क्लीनिकल रिसर्च एशोशियेशन लि०—

क्वीनिन हाइड्रोक्लोराइड विथ सक्करोस शोल्यूशन—५ ग्रेन के १ सी० सी० और १० ग्रेन के २ सी० सी० के २५; ५० और १०० एम्पुलों के बक्सों में।

—श्री डा० पद्मदेव नारायणसिंह एम. बी. बी. एस.
बंगला नं० F. ४०, पो० सिंदरी (धनवाद)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृमियों का प्रत्यक्षीकरण

श्री कविराज सन्तोषकुमार शतपथी

परिचय—तिल के समान १/८ इंच लम्बा होता है।
स्थान—केश है। **नाम**—यूका है।

यूका

परिचय—स्वाभाविक नाप १/१० इंच लम्बा होता है।
स्थान—लोम है, क्वचित वस्त्र में भी पाया जाता है।
नाम—पिपीलिका (चरक एवं सुश्रुतानुसार)

पिपीलिका

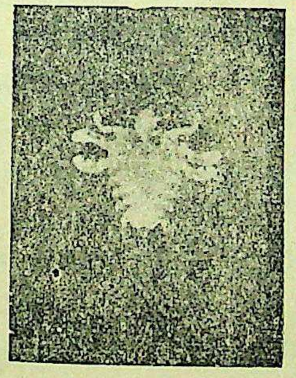

परिचय—लम्बाई १/१० इंच और चौड़ाई १/२० इंच होती है। श्वेत वर्ण युक्त होता है।

स्थान—पक्वाशय है।

नाम—ककेरुक—चरक मत से होता है। अजव—सुश्रुत मत से होता है।

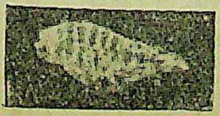

ककेरुक

परिचय—१/८ इंच लम्बा, चौड़ा १/३२ इंच होता है। श्वेत वर्ण युक्त।

स्थान—पक्वाशय।

नाम—मकेरुक—(चरकमत)। विजवा—(सुश्रुतमत)

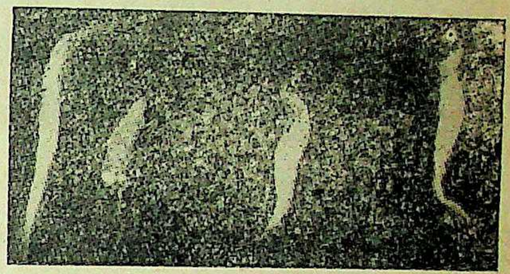

परिचय—लम्बाई १/४ इंच, मुंह में एक नीली रेखा रहती है एवं श्वेत वर्ण युक्त। (चित्र ऊपर देखें)

स्थान—पक्वाशय।

नाम—लेलिह (चरक) किप्या (सुश्रुत)

परिचय—यह फीता कृमि है। कद्दू दाना के रूप में विख्यात है। (चित्र ऊपर देखें)

स्थान—पक्वाशय।

नाम—सौसुराद (चरक) तृण्य (सुश्रुत)

उपर्युक्त कद्दू दाना का रूप एतत्तुल्य पेट में रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

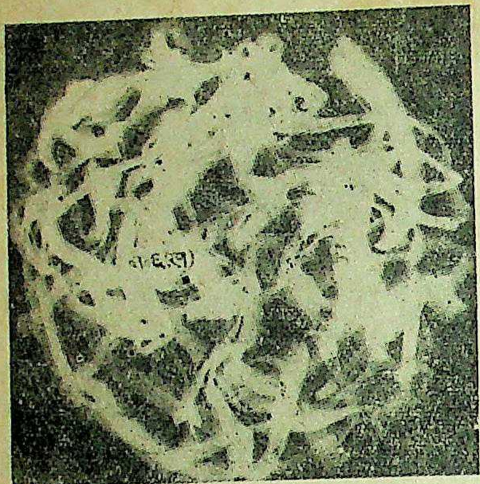

परिचय—यह मेष लोमवत पतला सर्वत्र समान एवं ताम्र वर्णवत होता है। (चित्र नीचे देखें)

स्थान—पक्वाशय।

नाम—सशूल (चरक) द्विमुख (सुश्रुत)

परिचय—लम्बाई ३-४ इंच, लम्बाई यत्र तत्र बड़ी भी रहती है। रंग लाल या सफेद होता है। लाल एवं सफेद उभय कृमि को चरक कफज कृमि में अन्तर्भाव किये हैं परन्तु सुश्रुत गण्डूपदाकृति लाल वर्ण वाले कृमि पुरीषज कृमि में अन्तर्भाव किए हैं। (चित्र नीचे देखें)

स्थान—आमाशय (चरक) पक्वाशय (सुश्रुत)

नाम—उदरावेष्टा (चरक) गण्डूपद (सुश्रुत)

गण्डूपद (उदरावेष्ट)

चरक और सुश्रुत संहिता में कृमियों के रूप आदि का सामूहिक भाव से उल्लेख है। यद्यपि कृमियों के दर्शन के बाद भी कौन से कृमि किस नाम से निर्देश किये जायें यह कहना कठिन है तथापि कृमियों के नामकरण में यथासम्भव उक्त संहिताओं का आश्रय लिया गया है। उपर्युक्त आधार पर अगर कोई नाम युक्ति सम्भव नहीं जंचे तो वैद्य बन्धुओं से सआग्रह निवेदन है कि कृपया प्रमाण एवं युक्तियुक्त विषय इस पत्रिका में प्रकाश करने का प्रयास करें।

चरक संहिता में पुरीषज कृमि के नाम आदि निम्नलिखित रूपेण वर्णित हैं—

पुरीषजास्तुल्यसमुत्थाना श्लेष्मजैस्तेषां संस्थानं पक्वाशयः। प्रवर्धमानास्त्वधो विसर्पन्ति। यस्य पुनरामाशयामुखास्युस्मदनन्तरि तस्योद्गारनिश्वासाः पुरीषगन्धिनःस्युः संस्थानवर्ण विशेषास्तु सूक्ष्मवृत्तपरीणाहाः। श्वेता दीर्घोणांशुक संकाशाः केचित्, केचित् पुनः स्थूलवृत्त परीणाहा श्याव नील हरित पीताः। तेषां नामानि ककेरुकमकेरुकाः िहाः,लेलिहाः शालूवकाः सौसुरादाश्चेति। प्रभाव पुरीषभेद कार्श्यं पारुष्यं लोमहर्षाभिनिर्वर्तनं च। तत्र वाष्य गुदमुखं परितुदन्तः कण्डू श्चोपजनयन्तः गुदमुखं पर्यासते। स जात हर्ष गुदानिष्क्रमणमतिबेलं करोति। (चरक संहिता सप्तमोध्याय विमान १२)

सुश्रुत संहिता में पुरीषज कृमि आदि के नाम निम्न लिखित हैं—

अजवा विजवा किप्यास्तृप्या गण्डूपदास्तथा, चुरवो द्विमुखश्चैव सप्तैवेते पुरीषजाः। श्वेताः सूक्ष्वास्तवन्त्येते गुदं प्रतिसरन्ति चा। तेषामेवापरे पुच्छे पृथवश्चा भवन्ति हि। शूलाग्निमान्द्य पांडुत्व विष्टम्भ गलसंक्षयः। प्रसेकारुचि हृद्रोग विड्भेदास्तु पुरीषजैः। (सुश्रुत संहिता उत्तर तन्त्र चातुः पंचामोध्याय ३)

चरक ककेरुक मकेरुक लेलिह सशूल तथा सौसुराद कृमि पुरीजष हैं यह उल्लेख किए हैं। इनका स्थान पक्वाशय है। रूप एवं आकृति के सम्बन्ध में सूक्ष्म चतुष्पार्श्व में गोलाकार श्वेत वर्ण वाले दीर्घ भेड़ के केश के समान केश वाले कोई कोई स्थूल चतुष्पार्श्व समान वाले, श्याम, नील, पीत-हरित एवं पीत वर्ण वाले रंग से युक्त होते हैं।

सुश्रुत अजव, विजव, किप्य, नृत्य, गंडूपद, चुरू एवं द्विमुख इन सबों को पुरीषज कृमियों में निर्देश किए हैं। इनकी आकृतियों एवं रूप के सम्बन्ध में श्वेत, सूक्ष्म, गुह्य भाग में विचरण करने वाले हैं। कुछ ऐसे जो स्थूल पुच्छ वाले होते हैं।

—शेषांश पृष्ठ ४६ पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वास रोग की चमत्कारी दवा

श्री डा० डब्ल्यू. आर. माकोड़े बी. आर., बी. ए. एम. एस.

हम वैद्यों डाक्टरों को एक ऐसी अनुभूत दवा का वृतान्त सुनाते हैं जिससे श्वास रोग (दमा) के हजारों रोगी स्वस्थ हो चुके हैं और जिसको आजकल न केवल भारत में बल्कि संसार के तमाम देशों में असंख्य चिकित्सक अपने लाखों रोगियों पर सफलता से प्रयोग कर रहे हैं। इस दवा के आविष्कार की कहानी भी बहुत रोचक है। कलकत्ता के प्रसिद्ध डाक्टर डी० एन० चटर्जी ने अपनी पुस्तक ड्रग्ज आफ इण्डिया (Drugs of India) में इस दवा का वृतान्त विस्तारपूर्वक लिखा है। यहां उसका सारांश लिखा जाता है।

काफी वर्षों की बात है कि एक व्यक्ति को पिछले बीस वर्ष से श्वास रोग (दमा) था। उसने देश के तमाम प्रसिद्ध डाक्टरों, वैद्यों और हकीमों से चिकित्सा कराई परन्तु उसको कोई लाभ न हुआ। उसको प्रतिदिन कई कई बार दमा के दौरे पड़ते थे। लाभ न होने पर तंग आकर उसने चिकित्सा करानी बन्द करदी।

वह चाय बहुत पिया करता था। एक दिन जब उसने अपनी आदत के अनुसार चाय पी तो उसके कुछ समय बाद वह अपने शरीर में नई शक्ति और चुस्ती प्रतीत करने लगा। उसका दमा का दौरा और कष्ट भी घट गया था। उसको बहुत आश्चर्य हुआ कि आज चाय में ऐसी कौनसी विशेषता आ गई है कि उसका २० वर्ष का पुराना दमा का रोग घट गया है। उसने अपने नौकर को चाय की केटली लाने को कहा। केतली को ध्यान से देखने पर उसने केटली में एक काला कीड़ा मरा हुआ पाया। चाय पीने के बाद उसको तमाम रात दमा का दौरा नहीं पड़ा। इस कीड़े के प्रभाव से उसका रोग कम होने लग गया और वह दुबला पतला रोगी मोटा ताजा होने लग गया।

केटली में मरा हुआ कीड़ा काकरोच, तिल चिट्टा (Blata) था। उसके सम्बन्धी और मित्र उसका दमा दूर हो जाने पर चकित हो गये। एक मित्र जो चिकित्सक तो नहीं था परन्तु जिसको रिसर्च का बहुत शौक था यह जानने के लिये कि क्या वास्तव में इस कीड़े से दमा रोग के तमाम रोगियों को आराम आ सकता है? उसने कीड़े काफी संख्या में इकट्ठे करके उनको पानी में उबाल कर ठण्डा करके छान लिया और उसमें बराबर मात्रा में एलकोहल मिला दिया ताकि यह दवा काफी समय तक पड़ी रहने पर भी खराब न हो। वह कलकत्ता की हर गली कूचों में जाता और लोगों से श्वास रोगियों का पता पूछता और दमा के हर रोगी को इस दवा की एक दो बूंद थोड़े पानी में मिलाकर पिला देता। दमा के दौरा के समय यह दवा आधे आधे घंटे बाद दी जाती है। उसने इस दवा से कलकत्ता में दमा के सैंकड़ों रोगी स्वस्थ बना लिये। इसके घर में दमा के रोगी सैंकड़ों की संख्या में प्रतिदिन आने लग गये।

अब यह होमियोपैथिक दवा संसार के तमाम देशों में सफलतापूर्वक प्रयोग की जा रही है। इस कीड़े को भारतवर्ष में तिलचट्टा तलपोका—अंग्रेजी में काकरोच और ब्लाटा ओरियण्ट कहते हैं।

यह दवा होम्योपैथिक रूप में इस कीड़े से टिंचर के रूप में तैयार की जाती है और ब्लटा ओरियण्ट के नाम से बिकती है।

भारत विख्यात प्रसिद्ध सोशल रिफारमर श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने ही सबसे पहले काकरोच से दवा बनाकर कलकत्ता के हजारों रोगियों को मुफ्त बांटी थी। इसके बाद कलकत्ता के प्रसिद्ध होम्योपैथिक डाक्टर डी० एन० राय ने यह दवा तैयार की।

बलटा ओरियण्ट

यह दवा जिसकी इतनी प्रशंसा की गई है भारत और दूसरे देशों में लाखों रोगियों पर प्रयोग की जा रही है। श्वास रोग (दमा) चाहे वह किसी भी प्रकार का हो विशेषकर मोटे रोगियों का दमा, दमा के दौरों में जब रोगी को सांस लेने में सख्त कठिनाई हो और खांसी के कारण रोगी को बहुत कष्ट हो रहा हो। सर्दी और वर्षा के मौसम में दमा का रोग बढ़ जाये तो यह दवा देने से रोगी के कष्ट तुरन्त दूर हो जाते हैं। रोगी का दौरा होते ही इस दवा का होम्योपैथिक मदर टिंचर दो से

—शेषांश पृष्ठ ३६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्रक भस्म का सरल भस्मीकरण

श्री डा० महेन्द्र ठाकुर

अनेक वैद्य अभ्रक भस्म बनाने में घोर परिश्रम करने के पश्चात भी असफल पाये जाते हैं। वे अभ्रक के फूंकने में जी तोड़ प्रयास करते हैं फिर भी असफल होकर वह कह उठते हैं—'क्या किया जाय बस एक ताव की कमी रह गई है ?'

वास्तव में अभ्रक एक ऐसी ठोस धातु है जो रेल के ब्यायलर में डाल दी जाय और वह इंजिन दिल्ली से बम्बई तक चले फिर इस इंजिन के ब्यायलर से इसे निकाला जाये तो वह जैसा का तैसा निकलेगा।

वैद्यक शास्त्रों में कई विधियों का वर्णन किया गया है जिनसे अभ्रक को सरलतापूर्वक फूंका जा सकता है। निम्न सरलीकरण की योजना एक ऐसी उपयोगी सिद्ध होगी जो अन्य विधियों से अधिक सरल है और उससे हर कोई फूंक सकता है।

विधि—

सर्व प्रथम एक एक किलो मूली, ग्वारपाठा और अमरबेल लो। तीनों को अलग अलग पीसकर मिला लो और एक कोरी हांडी को पानी से धोकर साफ करलो फिर उस पर एक कपड़ा डाल कर कपड़े पर वह पिसा हुआ मसाला डाल दीजिये। फिर उस कपड़े की पोटली बनाकर एक फुट ऊंचे स्थान पर लटका दीजिए। नीचे वह हांडी रहनी चाहिये जिसमें गूदे का रस टपक टपक कर गिरता रहे।

स्मरण रहे यह क्रिया शाम के समय करनी चाहिए जिससे सारी रात बूंद बूंद करके सारा रस टपक जाये। जब हांडी में समस्त रस टपक जाय तो प्रातः उसमें उतना अभ्रक डाल दीजिए जितना उसमें डूबा रह सके।

अब उस हांडी को चालीस दिन तक तरावट में रखे रखिये। इकतालीसवें दिन उन डलियों को निकाल कर लकड़ी के कोयले की दहकती आग में रख दीजिए।

केवल ८ मिनट तक उस आग में रखिये। बस चिमटे से धीरे धीरे पकड़ पकड़ कर सब डलियां निकाल लीजिये। अभ्रक भस्म तैयार हो चुकी होगी।

किसी भी डली को फोड़ कर देखिये। वह शीघ्रही फूट जायेगी और उसकी राख (भस्म) बिखर उठेगी। यह भस्म दमा व कास के लिये अचूक औषधि है।

—श्री डा० महेन्द्र ठाकुर
बोरखेड़ा (कोटा) राज०

पृष्ठ ३५ का शेषांश

आठ बूंद थोड़े पानी में मिलाकर रोगी को पिलाते रहें और आधे आधे घण्टे बाद दवा देते जायें। इससे दौरों के कष्ट तुरन्त कम हो जाते हैं। रोग को स्थायी रूप में जड़ से उखाड़ने के लिये यही दवा ६× की शक्ति में दो बूंद की मात्रा में थोड़े पानी में मिलाकर प्रातः सायंकाल काफी समय तक देते रहें। इसके अतिरिक्त यह दवा फेफड़ों की क्षय की खांसी, सूक्ष्म वायु प्रणालियों की खांसी में भी बहुत लाभदायक है। डा० ऐलन और डा० हेसेन की राय में यह दवा रोगी की भयानक शोथ जो दूसरी दवाइयों जैसे डिजिटेलिस और एपोसाईनम से भी दूर न हुई होती। इस दवा से ऐसी शोथ भी दूर हो जाती है।

ऐमाईल नाइट्राइट (Amyl Nitrate)

जब रोगी को दमा का दौरा सख्त हो रहा हो, सांस लेने में सख्त कठिनाई हो और रोगी को कष्ट असहनीय हो तो इस दवा की चार बूंदें साफ धुले हुए रूमाल पर डालकर नाक के पास रखकर सुंघाये। दौरा मिनटों में दूर हो जाता है और रोगी के तमाम कष्ट दूर हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह दवा दिलका दौरा होने के समय, मिर्गी का दौरा, आधे सिर का सख्त दर्द, हाई ब्लडप्रेसर जिसके कारण चेहरा लाल हो जावे। सिर में रक्त इकट्ठा हो जाये तो इसको रूमाल पर डाल कर सुंघाते ही रोगी के तमाम कष्ट तुरन्त दूर हो जाते हैं।

—डा० डब्ल्यू आर माकोड़े बी० आर०,
बी० ए० एम० एस०
शासकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय,
रायपुर (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मयूरपिच्छ भस्म

श्री वैद्य नवीन भाई ओझा D. Sc. A., H. P. A.

पक्षी जगत में मयूर का स्थान विशिष्ट है। वह इसके सुन्दर, चमकीले, स्निग्ध, नयनरम्य पिच्छ द्वारा विशेष आकर्षक और मोहक लगता है। इसी वजह से वह भारत का राष्ट्रीय पक्षी बन सका है। वह सरस्वती देवी का वाहन बन सका है और भगवान कृष्ण के मुकट में भी मयूरपिच्छ ने स्थान पाया है। अपने प्रमाण से तीन से चार गुना पिच्छ होने से वह लम्बे तक उड़ नहीं पाता। यह नर मयूर के सम्बन्ध में है।

वर्षाऋतु में मयूर अपनी पूंछ का त्याग करता है। प्रातःकाल मयूर निवास वाले पेड़ के नीचे उसके पीछे का ढेर पाया जाता है। सायंकाल खेत में घूमने निकलोगे तो इधर उधर उसकी पूंछ को पाओगे। यह पूंछ को जमाकर लेना चाहिए।

मयूरपिच्छ को पवित्र समझा जाता है। अतः मंदिर, मसजिद आदि धार्मिक स्थानों में उसका झाडू प्रयुक्त किया जाता है। कई लोग मयूरपिच्छ के आकर्षक पंखे भी बनाते हैं। इसके अतिरिक्त कलात्मक कारीगरी में वह प्रयुक्त किये जाते हैं।

आयुर्वेद के आचार्यों ने कहा है कि हरेक पदार्थ औषधि है। अतः मयूरपिच्छ भी औषधि हो सकती है यह अब हम देखेंगे—

मयूरपिच्छ में ताम्र होता है। कई वैद्य बन्धुओं ने मयूरपिच्छ से ताम्र निकाला भी है। यह ताम्र शुद्ध होता है। किन्तु बाजारू ताम्र से इस ताम्र की कीमत ज्यादा होने से मंहगा पड़ता है। इसलिये उसका ज्यादा व्यवहार नहीं होता। उसकी भस्म ज्यादा प्रमाण में प्रयुक्त होती है। उसके ऊपर हम सोचेंगे—

मयूरपिच्छ भस्म बनाने की विधि सरल है। पूंछ के बीच में की सफ़ेद डंडी को दूर करके बाकी का चमकीला भाग जमा करना चाहिए। उसे लोह की कढ़ाई में डालकर नीचे से मन्दाग्नि देना चाहिए और उस को कलछी से चलाते रहना चाहिए। थोड़ी देर के बाद दुर्गन्धि युक्त (धुंआं) निकलेगा। अन्त में काले वर्ण की अल्प मात्रा में किरकिरी भस्म तैयार होती है। उसे बोतल में भर कर रखलें।

इस भस्म का विशेष गुण यह है कि प्रकुपित ऊर्ध्वगत वायु का वह शमन करता है और उसकी गति अनुलोम करता है। इसलिये उसका उपयोग छर्दि, हिक्का, कास और श्वास में होता है।

छर्दि में उसका चमत्कारिक प्रयोग है। कैसी भी छर्दि को दो रत्ती की मात्रा (शहद के साथ) तुरन्त बन्द कर देती है। २-४ खुराक देना चाहिए। जरूरत पर उसमें सूतशेखर रस, छर्दिरिपु चूर्ण, निम्बत्वक भस्म आदि मिलाने से ज्यादा लाभ होता है।

यह मयूरपिच्छ भस्म हरेक मनुष्य आसानी से बनाकर अपने पास रख सकता है।

— वैद्य श्री नवीनभाई ओझा D.S.C.A., H.P.A.

सम्पादक—वैद्य कल्पतरु,

—स्वामी नारायण मार्ग, बड़ौदा

जानकारी

गत वर्ष ६७ के लघु विशेषांक 'पक्षाघात चिकित्सांक' में 'मल्ल सोमरस' नामक एक औषधि का पाठ है जिसमें 'दुआं का तेल' नामक द्रव्य का उल्लेख है। इस द्रव्य की कई सज्जनों ने जानकारी चाही है।

उत्तर में निवेदन है कि यह 'दुआं का तेल' उत्तर प्रदेश के एटा, मैनपुरी, आगरा आदि जिलों में बहुतायत से मिलता है। बहुत से व्यापारी सरसों के तेल में इसकी अत्यधिक मिलावट करते हैं।

इस उक्त दुआं के तेल को तारामीरा तेल या तरे का तेल भी कहते हैं।

—श्री वैद्य चन्द्रशेखर जैन शास्त्री, जबलपुर

सम्पादक—पक्षाघात चिकित्सांक

भूल सुधार

माह जनवरी ६८ की धन्वन्तरि में आचार्य श्री चरणतीर्थं जी महाराज का आमवात पर एक लेख पृष्ठ १८ पर प्रकाशित हुआ है उसमें आरोग्यवर्धनी नामक औषधि के पाठ में २० तोला चित्रक मूल के स्थान पर ६० तोला छप गया है। कृपया पाठक उसमें सुधार करलें।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ विविध आयुर्वेदिक सूचिकाभरण

श्री वैद्य रतनलाल जैन

मैं अब आपकी सेवा में माह दिसम्बर १९६७ के पृष्ठ ३२ से आगे ४·४ (आयुर्वेदिक फार्मेसियों के) आयुर्वेदिक सूचिकाभरण प्रस्तुत करूंगा।

मार्तंड फार्मस्युटिकल्स

१—**तापीना**--रोगनिर्देश (Indications)-नाड़ी का मन्दगति से चलना, हृदयोत्तजक, खांसी, नजला, सदमा, न्यूमोनिया में उपयोगी।

पैकिङ्ग—१ मि. लि. के ३ एम्पुलों के बक्सों में।

प्रयोग विधि—त्वचान्तर्गत प्रतिदिन या आवश्यकतानुसार।

२—**दूध प्रोटीन**—रोगनिर्देश—तीव्र तथा जीर्णशोथ, संधिशोथ, प्रसूतिक ज्वर, प्रदर, खुजली, चमला, विसर्प, आंख दुखना में विशेष उपयोगी।

पैकिङ्ग—२ मि. लि. के ६ एम्पुलों के बक्सों में।

प्रयोग विधि—मांसपेशी (गहरा) आवश्यकतानुसार

३—**निडोरन**—रोग निर्देश—निद्रल, वमन निवारक, सल्फाड्रग्स के अनेक उपद्रवों को रोकने में मानसिक रोगों में, रक्त चाप वृद्धि, उन्माद, प्रलाप पर उपयोगी।

प्रयोग विधि—गहरामांस पेश्यान्तर्गत आवश्यकतानुसार।

४—**प्रदरारि**—रोग निर्देश—स्त्रियों के समस्त प्रकार के रज: विकार, रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, नष्टार्तव, गर्भस्राव में विशेष उपयोगी।

पैंकिग—६×२ मि. लि. के बक्सों में।

प्रयोग विधि—मांसपेशी में सप्ताह में ३ बार।

५—**पुनर्नोल**—रोग निर्देश—मूत्रावरोध, हृदयावरोध, हृदय शूल, जलोदर, फुफ्फुसीय शोथ।

पैंकिग—६×२ मिलीलिटर के बक्सों एवं ६×१० मिलीलिटर के बक्सों में।

प्रयोग विधि—गहरा नितम्ब मांसपेश्यान्तर्गत।

ए० बी० एम० रिसर्च इन्स्टीट्यूट

१—**यकृदरि**—रोग निर्देश—यकृत तथा प्लीहा वृद्धि, बाल यकृत रोगों में अत्यन्त लाभप्रद।

पैंकिग—६×२ सी. सी. के बक्सों में।

प्रयोग विधि—रोजाना या एक दिन छोड़ कर नितम्ब प्रदेश में मांसपेश्यान्तर्गत।

२—**लौहमल्ल**—रोग निर्देश—पाण्डु, यकृत रोगों में सर्वाङ्ग शोथ एवं आयरन (लोह) की कमी की पूर्ति करता है।

पैंकिग—६×२ सी. सी. के बक्सों में।

प्रयोग विधि—नितम्ब प्रदेश में गहरा मांसपेश्यान्तर्गत।

३—**जीर्ण ज्वरारि**—रोग निर्देश—पुराना बुखार प्रसूतिक ज्वर, आन्त्रिक ज्वर में उपयोगी।

पैंकिग—६×२ सी. सी. के बक्सों में।

प्रयोग विधि—मांसान्तर्गत।

४—**अतिसारघ्न**—रोग निर्देश—अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार, वृहदांत्र शोथ पर लाभप्रद।

पैंकिग—६×२ सी. सी. के बक्सों में।

प्रयोग विधि—मांसान्तर्गत आवश्यकतानुसार।

जी० ए० मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी

१—**चोबचीनी**—रोग निर्देश—उपदंश, भगन्दर, अर्श गण्डमाला।

२—**जमीकन्द**—रोग निर्देश—बबासीर, प्लीहा, गुल्म क्षुधा हीनता।

३—**नीबू**—रोग निर्देश—रक्त विकार, कब्ज, कोष्ठ बद्धता, मन्दाग्नि।

४—**वासा**—रोग निर्देश—रक्तपित्त, श्वास कास कामला, क्षयकास।

प्रयोग विधि—जी० ए० मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी के सभी सूचिकाभरण मांसान्तर्गत सप्ताह में तीन बार दिये जाते हैं। यह ५ और १० मिलीलिटर प्रति वायल में आते हैं। ये इन्जेक्शन अवस्थानुसार वयस्कों को ... से २ मिलीलिटर तथा बच्चों को ½ से १ मिलीलिटर दिये जाते हैं।

प्रताप फार्मा प्राइवेट लिमिटेड

१. **गुडूची**—रोग निर्देश-विषम ज्वरों में, यकृत रोगों में, कामला, तृषा, सिर दर्द, पीठ दर्द और शिथिलता में

२. **विषमान्त**—रोग निर्देश-नये एवं पुराने विषम ज्वरों के लिए अचूक। प्रसूतिक ज्वर में उपयोगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. दुग्धा—रोग निर्देश—त्वचा के रोग, फोड़ा, फुंसी, पामा, कण्डू, शीतपित्त, चूने की कमी में लाभदायक है।

४. कुटजा—रोग निर्देश—मरोड़, पेचिश और संग्रहणी के लिए अत्युत्तम है। उदर एवं मलाशय द्वार की वेदना में भी लाभदायक है।

उपरोक्त प्रताप फार्मा के इन्जेक्शन मांसान्तर्गत आवश्यकतानुसार लगाये जाते हैं। ये २ सी. सी. के ६ एम्पुलों के बक्सों में आते हैं।

जे० जे० डीशेन हैदराबाद

१. आयोबीन—रोग निर्देश—रक्तशोधक के रूप में त्वचा के रोग में, टांसिल व अन्य ग्रन्थियों की सूजन एवं औपसर्गिक रोगों में उपयोग किया जाता है।

२. नर्वोप्लेक्स—रोग निर्देश—अनिद्रा, मानसिक आवेश, स्नायु तनाव, दमा या श्वास, मूर्छा व स्त्रियों में गर्भाशय के उन जटिल रोगों के इलाज में जिनका संबंध स्नायु मण्डल से होता है।

३. ओपोक्वीनीन—रोग निर्देश—पुराने व छिपे हुए मलेरिया के बुखार में इसकी सिफारिश की जाती है। यह यकृत या लीवर तथा प्लीहा के रोगों में भी विशेष रूप से शिशुओं और बच्चों में लाभदायक है।

४. रेमोरिन—रोग निर्देश—सन्धिवात, आमवात रोगों में विशेष उपयोगी। इसके अलावा स्नायु वेदना के कारण होने वाले सर दर्द व शरीर में होने वाले अन्य अङ्गों की किसी भी प्रकार की पीड़ा में इसे दिया जा सकता है।

जे० जे० डीशेन के उपरोक्त सूचिकाभरण त्वचान्तर्गत या मांसान्तर्गत, बच्चों को ½ सी. सी. एवं वयस्कों को १ सी. सी. दिन में एक बार दिए जाते हैं। ये १ सी. सी. के ६ एम्पुलों के बक्सों में आते हैं।

—वैद्य श्री रतनलाल जैन
राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय
चावण्ड वाया सराड़ा (उदयपुर) राजस्थान

मार्तण्ड एवं प्रताप फार्मा के प्रभावकारी आयुर्वेदिक इंजेक्शन

प्रताप फार्मा—

१—**कुटजा**—अन्तड़ियों के विकार, मरोड़, पेचिश के लिए	६×१ सी.सी.का बक्स	२.७५
२—**दशमूल**—प्रसूत ज्वर, प्रसूत के गन्दे स्राव को साफ करने के लिए	६×१ सी.सीका बक्स.	२.७५
३—**घृतकुमारी**—विषम ज्वर, प्रसूता ज्वर, यकृत, प्लीहा वृद्धि, मासिक स्राव में पिलाने के लिए	६×२ सी सी.का बक्स	३.३०
४—**विषमान्त**—नये व पुराने विषम ज्वर के लिए	६×२ सी.सी.का बक्स	३ ३०
५—**प्रदरारि**—प्रदर को दूर करने, मासिक स्राव को नियमित करने हेतु	६×२ सीसी.का बक्स	३.८५
६—**शूलहर**—आंतों के कीड़े मारने, पेटशूल व अफारा में उपयोगी	६×१ सी.सी.का बक्स	२.७५

मार्तंड——

७—**तापीकर**—निमोनियां, नजला, इन्फ्लुएन्जा व जुकाम खांसी के लिए	६×१ सी.सी.का बक्स	३.३०
८—**दुग्ध प्रोटीन**—सन्धिशोथ, जीर्ण शोथ, अर्बुद, दाह, खाज, फोड़ा-फुंसी के लिए	६×२ सी.सी.का बक्स	१.६५
९—**नोडोरिन**—मिर्गी, मिचली, वमन, उन्माद, मनो-विभ्रम में लाभदायक	६×१ सी.सी.का बक्स	२.५०
१०—**प्रदरारि**—श्वेत-रक्त प्रदर, गर्भाशय शूल, शोथ, रज विकार के लिए	६×२ सी.सीं.का बक्स	३.३०

एवं अन्य आयुर्वेदिक इञ्जेक्शन हमसे मंगावें

नोट—आर्डर देते समय अपना रजिस्ट्रेशन नं. अवश्य लिखें।

पता—दाऊ मैडीकल स्टोर्स, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनौषधि विवेचन

ब्राह्मी

वैद्यराज गोस्वामी श्री जयनारायण गिरि "इन्दु"

भारतीय वसुन्धरा के उद्यान में विविध वनौषधियों की प्रचुरता है। उन वनौषधियों में समस्त रोग नाशक गुण विद्यमान रहते हैं। परम प्राचीन काल के आयुर्वेद प्रवर्तकों तथा निघण्टुकारों ने जहां तक सम्भव हो सका, अपने ग्रंथ रत्नों में उनका उल्लेख कर दिया है लेकिन आयुर्वेद कल्याणार्थ उसे अग्रमुख करना हम नवीन पीढ़ियों का कर्त्तव्य है।

दिव्यौषधीनां बहवः प्रभावाः।
वृन्दारकाणामिव विस्फुरन्ति ॥

इन्हीं दिव्य महौषधियों में ब्राह्मी भी एक है। इस दिव्यौषधि से प्रायः सभी शिक्षित व्यक्ति पूर्णरूप से न सही परिचयात्मक रूप से अवश्य परिचित हैं। वास्तव में यह अपने अद्भुत गुणों के अनुसार सही रूप में दिव्य औषधि है। पाश्चात्य चिकित्सक ब्राह्मी को 'हाइड्रोक्टाइल एशियाटिका' कहकर सम्बोधित करते हैं। भारतीय वैद्य इसे परम प्राचीन काल से जानते हैं। इसका ठोस प्रमाण यह है कि एक वैदिक मन्त्र में ब्राह्मी के सन्तानोत्पादक गुण का वर्णन किया है। वैदिक साहित्य में ब्राह्मी को सरस्वती कहा है। क्योंकि इसमें मेधा वृद्धि करने का अनोखा गुण है।

तनूषा भिषजा सुते शिवनाभा सरस्वती।
मध्वा रजांसोन्द्रियमिन्द्राय पथिभिर्वहान् ॥

विद्वान वैद्य सन्तानोत्पत्ति के लिये मधु के साथ ब्राह्मी का सेवन करायें। इस प्रकार ब्राह्मी के सेवन से पुत्रोत्पादन में मुख्य शुक्र और आर्तव द्वारा गर्भ धारण होता है। वेदोत्तरकालीन साहित्य में ब्राह्मी का मुख्य प्रयोग मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाने में ही किया जाता है। फिर भी उसका पौष्टिक गुण सभी ने स्वीकार किया है।

—आयुर्वेद विकास

यह दिव्यौषधि दो प्रकार की पायी जाती है। प्रथम को हम लोग ब्राह्मी कहते हैं तथा दूसरी को मण्डूकपर्णी। ब्राह्मी की वेल नहीं होती है जबकि मण्डूकपर्णी की बेल होती है। ब्राह्मी के पत्र कुछ गोल आकार में चांदी की चवन्नी से मिलते हैं लेकिन मण्डूकपर्णी के पत्र ब्राह्मी के पत्र से अधिक बड़े होते हैं। ब्राह्मी, स्वाद में कुछ कड़वाहट लिये होती है लेकिन मण्डूकपर्णी ब्राह्मी की अपेक्षा जायके में मधुर होती है। गुणों की दृष्टि से ब्राह्मी और मण्डूकपर्णी में अधिक अन्तर नहीं है।

इसके अन्दर 'अलकोहल ईथर' नामक तैल द्रव्य पाया जाता है जो धूप में सुखाने पर उड़ जाता है अतः ब्राह्मी को यदि सुखाना हो तो सदा छाया में ही सुखाना चाहिये।

ब्राह्मी अत्यन्त शीतल होती है। यह दिल और दिमाग को अनुपम बल प्रदान करती है। इसके द्वारा शक्ति का स्रोत भी निराले ढङ्ग से खुलता है। ब्राह्मी दूसरी औषधियों की तरह वात तन्तुओं तथा मस्तिष्क को उत्तेजना नहीं पहुंचाती, किन्तु उसमें पौष्टिक तत्व को पहुंचाकर शांति पैदा करती है।

आयुर्वेद में ब्राह्मी के इतने प्रयोग दिये गये हैं कि यदि सबका वर्णन किया जाय तो एक पुस्तिका आसानी से बन सकती है। इनमें से कुछ प्रयोग उन्माद, मृगी, बवासीर, स्वप्नदोष, हिस्टीरिया, स्वरभेद, स्वेदाधिक्य, दाह और शीतांगसन्निपात में प्रचलित हैं। ब्राह्मीघृत, ब्राह्मीवटी एवं सारस्वतारिष्ट का प्रयोग तो सभी चिकित्सक करते हैं, जिन्हें बिना किसी से परामर्श किये उपयोग में लाया जा सकता है।

जिन लोगों को रक्त विकार की शिकायत रहती है, चमड़ी पर छोटी छोटी फुन्सियां निकल आती हों तब खून की खराबी को ब्राह्मी दूर कर देती है। जिन्हें कण्ठ में माधुर्य लाना हो, आवाज मोटी पड़ गई हो, तब भी ब्राह्मी फलप्रद है।

मानव मस्तिष्क कमजोर हो जाने पर वात नाड़ियां अकारण ही क्षुब्ध हो जाती हैं, फलतः मस्तिष्क अपना सन्तुलन खो बैठता है। तब अर्द्धविक्षिप्त की तरह अव्यवस्थित भाषण तथा असंबद्ध कार्य होने लगते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी स्थिति में याददास्त की कमी महसूस होती हो अथवा मृगी, पागलपन जैसे मानसिक रोग हों, तब ब्राह्मी का सेवन हितकर है। किन्तु ऐसी अवस्था में इसके साथ शंखपुष्पी भी चतुर्थांश मिला देनी चाहिए। ब्राह्मी तो चेचक में रामबाण ही है।

उपर्युक्त गुणों के साथ इसमें कतिपय दोष भी हैं। इससे गात में रूखापन उत्पन्न होता है। दूसरी खराबी यह है कि यह मलावरोध भी करती है, किन्तु इन दोनों को आसानीपूर्वक दूर किया जा सकता है। रूक्षता नाश हेतु स्निग्ध पदार्थों के साथ तथा मलावरोध के कारण हेतु हलका सा रेचन प्रयोग करना उचित है। उचित ढङ्ग से ब्राह्मी का सेवन बुद्धि जीवियों के लिए एक वरदान है।

गर्मी में तो यह अनुपम पेय है। करीब १ तोला हरी पत्तियां ब्राह्मी की ले आवें। हरी न मिल सके तो सूखी ही रात को भिगो देवें। फिर प्रातः काल उसमें भीगे बादाम १० नग, पोस्तदाना ३ माशा, इलायची दाना तथा थोड़ी सी काली मिर्च मिलाकर सिल पर खूब रगड़ कर पीस लें। मिश्री और पानी इच्छानुसार मिला छानने के उपरांत पी लें। प्रातःकाल पीने से दिन भर तरी मालूम पड़ेगी। जिन लोगों को सोड़ावाटर या चाय पीने की आदत हो, इस ठण्डाई का कुछ दिन प्रयोग करके देखें तो मालूम होगा कि मानसिक श्रम कितना ही क्यों न करें? दिमाग में थकान नहीं होगी। पाचन शक्ति भी बढ़ेगी और मलावरोध भी दूर होगा।

ब्राह्मी का रस आधा सेर, बादाम की गिरी का चूर्ण १० तोला, सोंठ १ तोला और कालीमिर्च २ माशा मिला कर २ सेर चीनी की चासनी कर लें। इस प्रकार यह एक अत्युत्तम शर्बत तैयार हो जायगा। दिन में दो बार इसे ले सकते हैं। यह शीतल और स्मरणशक्तिदाता है।

फायलेरिया पर— ब्राह्मी, हल्दी तथा गुड़ को महीन पीसकर गोमूत्र के साथ सेवन करावें। हमारा परीक्षित योग है।

दाह के लिए—

(क) ऊपर लिखे योग का ही प्रयोग करें।

(ख) धनियां तथा ब्राह्मी को रात्रि भर शीतल जल में फुलाकर भांग के समान घोटकर तदुपरांत वस्त्र से छान कर मिश्री के साथ पिलाने से दाह दूर होगा। यह योग रत्न भावप्रकाश में है।

स्वरभंग के लिए—

(क) ब्राह्मीघृत सेवन करें।

(ख) ब्राह्मी, बच, हर्र, अडूसे की जड़ और पीपल इन पांचों औषधियों का चूर्ण दो से चार माशा तक मधु के साथ चाटने से आवाज ठीक होती है। वैद्य रहस्य तो लिखता है कि इसके सेवन से स्वरभंग नष्ट होकर अति मनोहर (किन्नर सदृश) स्वर बन जायगा।

हिस्ट्रिया में—

सारस्वतारिष्ट, ब्राह्मीघृत और अन्य औषधियों में स्वर्ण भस्म तथा चिंतामणि चतुर्मुख रस लाभकारी है।

अपस्मार मृगी में—

(क) ब्राह्मी का रस मधु के साथ।

(ख) बच तथा कूट दोनों का चूर्ण दो माशा ब्राह्मी के रस के साथ खिलाने मात्र से सोलह दिन में ही लाभ होने लगता है। मेरा परीक्षित योग है।

(ग) ब्राह्मी घृत अत्युत्तम है।

(घ) स्मृतिसागररस पंचगव्य के साथ लें।

इन चारों में से कोई एक यत्न करना चाहिए।

चेचक में—

ब्राह्मी वटी लें। योग—अभ्रक भस्म, संगेयशब की भस्म या पिष्टी, अकीक की भस्म या पिष्टी, माणिक्य की भस्म या पिष्टी, चन्द्रोदय, प्रवाल की भस्म या पिष्टी, कहरवा की पिष्टी, सोने की भस्म या वरक, मोती की पिष्टी, प्रत्येक ६-६ माशा, जायफल, लौंग, कूट, जावित्री, स्याह जीरा, छोटी पीपल, पीपल, दालचीनी, अनीसून, असगन्ध, अकरकरा, धनियां, बंशलोचन, छोटी इलायची के बीज, शंखाहूली, श्वेत चन्दन, सौंफ, तेजपात, नागकेशर, रूमीमस्तंगी, पीपलामूल, चित्रक के मूल की छाल, कुलिंजन प्रत्येक ४-४ माशा, कस्तूरी, अम्बर, ब्राह्मी, निशोथ, अगर और केशर प्रत्येक १॥-१॥ तोला लें। प्रथम केशर, कस्तूरी और अम्बर को खूब महीन पीस कर उसमें अन्य भस्में और पिष्टियां मिला सोने के बर्क १-१ करके मिलावें। पीछे अन्य द्रव्यों का कपड़छन चूर्ण मिला १ दिन ब्राह्मी के स्वरस में मर्दन कर दो-दो रत्ती की गोलियां बना छाया में सुखाकर शीशी में भर लें।

मात्रा—१-२ गोली। दिन में २-३ बार आवश्यकतानुसार दें।

—सि० यो० सं०।

—शेषांश पृष्ठ ४३ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुणकारी सब्जी-मैथी

श्री शिवनारायण सक्सेना

साधारणत: भोजन में दाल, चावल और रोटी होती है। इस प्रकार का भोजन शरीर को आवश्यकतानुसार शक्ति प्रदान नहीं करता। इसलिए हरी सब्जियों का विशेष महत्व बताया जाता है। जीवन बिकास के अनेक अमूल्य तत्व इन हरी सब्जियों में भरे पड़े हैं, उनमें से एक अत्यन्त गुणकारी सब्जी मैंथी भी है।

मेंथी का पोधा अत्यन्त छोटा होता है। उस पर छोटी पत्तियां आती हैं। फूलने से पहले आई हुई पत्तियों को तोड़कर साग बनाते हैं, जब फूल आजाता है तब इसकी सब्जी नहीं बनाई जाती। इसमें पतली ५-६ इन्च लम्बी फलियां आती हैं जिसमें पीले रङ्ग का बीज होता है। सर्दी में मेंथी की सब्जी बाजार में खूब बिकती है। इसकी कोमल कोमल शाखायें तथा पत्तियां इन दिनों सुखाली जाती हैं और फसल समाप्त होने पर पुन: उसे सब्जी बनाने के काम लाते हैं। सूखी पत्तियों का साग भी स्वादिष्ट रहता है।

पत्तियों का साग आलू, टमाटर तथा पालक आदि में मिलाकर बनाया जाता है। पकोड़ी, कचौड़ी और पराठे भी बनाये जाते हैं। सर्दी के दिनों में मेंथी के पीले दानों का हलुआ तथा लड्डू तैयार करते हैं। यह लड्डू जोड़ों का दर्द दूर करने वाले तथा वात-व्याधि को नष्ट करने वाले हैं। मसालों में भी मेंथी का प्रयोग किया जाता है।

शरीर शास्त्रियों ने मैंथी को उपयोगी बताते हुए इसमें अनेक रासायनिक तत्वों की भी खोज की है देखिये इस सब्जी में कौन कौन से रासायनिक तत्व हैं ?

पानी	८१.८%
कार्बोहाइड्रेटस	९.८%
प्रोटीन	४.९%
खनिज पदार्थ	१.६%
रेशा	१.०%
कैलशियम	०.४७%
वसा	०.९%

विटामिन 'ए' तथा 'बी' की पर्याप्त मात्रा भी पाई जाती है १०० ग्राम मेंथी में १६.६ मिलीग्राम लोहा पाया जाता है। लगभग ५० ग्राम मेंथी में १९ जीवन प्रदायनी कैलोरियां पाई जाती हैं।

अनेक रोगों में उपयोगी——

मेंथी सब्जी ही नहीं है वरन् इसके अनेक उपयोग ऐसे भी हैं जो आश्चर्य में डालने वाले हैं। अनेक रोगों में औषधि की तरह इसे प्रयोग किया जाता है। आप भी इसे आजमा कर देख सकते हैं।

(१) वात व्याधि में मैंथी दानों को थोड़े पानी में उबालिये और काली मिर्च तथा सेंधानमक मिलापीजिये।

(२) आमातिसार के रोगी को मैंथी के दानों का महीन चूर्ण दही में मिलाकर खिलाइये।

(३) जिन्हें सर्दी जुकाम की अधिक शिकायत रहती है वे आलू, पालक या लौकी के साथ मैंथी की सब्जी का प्रयोग करें। आंतरिक कोष्ठ शुद्धि हो जाने से सर्दी जुकाम नहीं रहेगा।

(४) बहुमूत्र के रोगियों को मैंथी की पत्तियों का २०० ग्राम रस नित्य पीना चाहिए।

(५) यदि किसी को लू लग जावे तो मैंथी के सूखे पत्ते पानी में भिगोइये, थोड़ी देर बाद मसल कर उन्हें छानिये, बाद में शहद मिलाकर पिला दीजिये। लू का प्रभाव समाप्त हो जायेगा।

(६) रक्तातिसार में मैंथी की पत्तियों के रस में काली दाख पीसकर खिलाना चाहिए।

(७) जिनकी पाचन क्रिया ठीक न हो, भूख न लगती हो। वे कम से कम १५ दिन मैंथी और पालक की मिश्रित सब्जी रोटी के साथ खावें।

(८) मेथी के बीज उत्तेजक और बलवर्द्धक होते हैं। सर्दी के दिनों में मेथी के बीज घी में भूनकर आवश्यकतानुसार खोया, गोंद, मेवा और चीनी आदि मिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लड्डू बना लेना चाहिए। प्रतिदिन सुबह शाम एक-एक लड्डू दूध के साथ खाने से कमजोरी दूर होती है।

दानों की सब्जी भी कमजोरी को दूर करने के लिये उपयोगी सिद्ध हुई है।

(६) खूनी बवासीर में दूध के साथ मेथी के बीज देने से खून बन्द हो जाता है।

(१०) मेथी के पत्ते घी में भूनकर खिलाने से पेचिश के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(११) बढ़ी हुई तिल्ली और जलोदर आदि रोगों में भी मैंथी का प्रयोग बड़ा लाभकारी है। पशुओं को यदि मैंथी खिलाई जावे तो वे मोटे हो जाते हैं और दूध की मात्रा बढ़ा देते हैं।

—श्री शिवनारायण सक्सेना
पं० मोतीलाल नेहरू छात्रावास
झांसी रोड, ग्वालियर—१

पृष्ठ ४१ का शेषांश

अर्श (बबासीर) रोग पर—

ब्राह्मी, नीम के पत्ते, कनेर के पत्र, गुड़, कड़बी तुरई की जड़, इन सबको कांजी में पीस मस्सों पर लेप करने से मस्से मरकर गिर जाते हैं।

नीबू को निबौली, रसोत, शुद्ध गुग्गुल, हर्रे की छाल मुनक्का दो-दो तोले, गुलाब के पुष्प, ब्राह्मी (सूखी), सनाय १-१ तोले, पीपल १।। तोला इन सब दवाओं का चूर्ण करके शेष में गुग्गुल मिलाकर त्रिफला के काढ़े से बेर के बराबर गोलियां बनालें। सुबह और शाम जल से ३-३, ४-४ गोलियां सेवन करें। कब्जियत रहे तो गरम जल के साथ लें। दोनों प्रकार के बबासीर में लाभ होता है।

उन्माद में—

(क) सारस्वत चूर्ण का प्रयोग करें। योग—कूट, असगन्ध, सेन्धानमक, अजमोद, दोनों जीरे, सोंठ, काली-मिर्च, पिप्पली, पाठा, शंखाहूली इन सबके बराबर बच का चूर्ण ब्राह्मी के रस में १० पुट देकर छाया में सुखाओ। इसका चूर्ण मधु के साथ उन्माद में दें।

(ख) ब्राह्मी का रस नित्य पीने से लाभ होता है।

(ग) बच, कूठ, शंखाहूली, धतूरे की जड़ का चूर्ण बना लें। ब्राह्मी के रस की ७ पुट और काले धतूरे के बीजों के तेल की ५ पुट देकर नास बनावें और नस्य लें।

—वैद्य रहस्य

वायु जन्य विकार में—

सारस्वत चूर्ण का प्रयोग करें।

प्रमेह में—

सारस्वत चूर्ण का प्रयोग करें।

हृदय की दुर्बलता में—

ब्राह्मी वटी का प्रयोग खमीरा गावजवान के साथलें।

रक्त शुद्धि पर—

ठण्डाई बना कर दें।

सन्निपात ज्वर में—

सन्निपात ज्वर में यदि प्रलाप हो तो ब्राह्मी वटी को तगरादि क्वाथ के अनुपान से दें।

वात रोग में—

ब्राह्मी वटी का प्रयोग दशमूल-क्वाथ के अनुपानसे दें।

अपतन्त्रक में—

मास्यादि क्वाथ के साथ ब्राह्मी वटी का प्रयोग करें।

संतत ज्वर में—

शहद के साथ ब्राह्मी वटी का प्रयोग करावें।

भ्रम (सिर में चक्कर आने) में—

ब्राह्मी वटी का सेवन द्राक्षादि चूर्ण के साथ करें।

रस ज्ञान के हेतु—

ब्राह्मी, पलासपापड़ा, राई, काला जीरा, पिप्पली, पीपलामूल, चित्रक और सोंठ इन सबका चूर्ण बनाकर जिह्वा पर लेप करें अथवा काढ़ा बना कुल्ली करें तो रस ज्ञान प्राप्त होगा। "नू० मृ० सा०"।

स्मरण शक्ति के लिये—

स्मरणशक्ति के हेतु "ब्राह्मी वटी" का सेवन करें।

योग—रससिंदूर ५ तोले, अभ्रक भस्म, बंगभस्म, शोधित शिलाजीत, कालीमिर्च, पीपल, वायबिडंग प्रत्येक १-१ तोला लेकर कूट कपड़छन कर चूर्ण बना, ब्राह्मी के क्वाथ में घोट कर चना बराबर गोलियां बना सुखाकर सुरक्षित रख लें। यह वटी ताकत और स्मरणशक्ति की वृद्धि तथा कमजोरी नष्ट करने के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसकी १-१ गोली दिन में २-३ बार आवश्यकतानु-सार मक्खन, मलाई, दूध आदि के साथ दें।

—गो० श्री जयनारायण गिरि "इन्दु"
पजवां पो० नूरचक (दरभंगा) बिहार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षित प्रयोग

अर्श रोग

अर्श रोग का मिटाना अब आसान है। आपके सामने जो औषधियां रक्खी जाती हैं उनका बनाना एवं बनाकर स्तेमाल करना भी आसान है।

अर्श ६ प्रकार का होता है—

(१) वात जन्य (२) पित्त जन्य (३) वायु जन्य (४) त्रिदोषज (५) रक्तज एवं (६) सहज।

मगर वर्तमान में अर्श को दो प्रकार का ही समझा जाता है - बाहर का अर्श एवं आन्तरिक अर्श।

गुदा के चारों ओर बाहर के अर्श दिखाई देते हैं। उनके ऊपर शोथ-ब्रण-दाह न हो, उनमें रक्त का प्रमाण बढ़ा न हो तब तक उनमें दर्द नहीं होता, कब्ज में मल का दबाव होने से वे फूलते हैं। हर शिरा का अंतिम भाग एक अंकुर जैसा बन जाता है। इन शिराओं में रक्त की विकृति से शोथ उत्पन्न हो जाता है। वेदना बढ़ने पर असह्य होती है।

आर्य वैद्य श्री पं० मिलिन्द शास्त्री
दिवानपुरा, (भावनगर) गुजरात

शिरायें फूलने से पहले गुदा में खुजली उत्पन्न होती है। शिराओं में कुपित रक्त बढ़ जाने से भूरे रङ्ग की गांठ बनती हैं। रोगी आसानी से चल नहीं सकता।

आंतरिक अर्श में जब अर्श होता है कोमल होता है, बाद में कठोर बन जाता है। यह गुदा के अन्दर होते हैं, सब मल त्याग के वक्त बाहर निकलते हैं बाद में अन्दर चले जाते हैं। मल त्याग के समय अगर मल सूखा हो तो रक्त भी गिर जाता है। बार बार रक्त गिरने से पांडुरोग भी हो जाता है।

पुराने कब्ज एवं मन्दाग्नि से अर्श होते हैं।

मेरी अनुभूत औषधि—

यष्टीमधु २०० ग्राम, सनाय पत्ती २०० ग्राम, सौंफ २०० ग्राम, शुद्ध आंवलासार गंधक, दारूहल्दी, लाल हरीत की सोंठ, सक्कर प्रत्येक १००-१०० ग्राम सबका चूर्ण बना कर रखलें।

मात्रा—६ ग्राम रात्रि को सोने से पहले पानी से।

गुण—कब्ज को मिटाता है। अर्श में लाभकारी है, रक्त विकार में भी उपयोगी है।

प्रक्षालन वारि—

सुबह ठीक से मलत्याग होगा। उस वक्त सामान्यजल से प्रक्षालन न करके निम्न जल का उपयोग करें—

तुत्थ ३ ग्राम, स्फटिका खील ३ ग्राम, सुवर्ण गैरिक ६ ग्राम जल में घोल कर उपयोग करें। बाद में आंतरिक अर्श हो तो अन्दर मत जाने देवें, मगर निम्न प्रकार धूम्र लेवें—

अर्शारि धूम्र—

कुचला, सर्प की केचली, कटेरी बीज, शांग के अंकुर, हस्ति दंत चूर्ण, समी वृक्ष के पत्ते, अशुद्ध हिंगुल, घोड़े के नख, समान भाग लेकर चूर्ण बना लेवें।

विधि—१ चम्मच चूर्ण में २ चम्मच तक शुद्ध घृत डाल कर मिश्रित करके अंगारे पर डालते जावें और धुआं अर्श पर ही लगे ऐसी व्यवस्था करें। निर्वात स्थान में ही बैठें या कम्बल ओढ के रखें। धूम्र लेने के बाद निम्न मलहम अवश्य लगावें—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्श नाशक मलहम—

नीम बीज का मगज, रसवंती, सुवर्ण गैरिक, वर्की हरताल, कत्था सफेद, तुत्थ, कली चूना, स्फटिका खील, सरडाशांगी, आंवा हल्दी, गोरोचन, कासीस, सिंदूर, कपूर, सुदर्शन, गेलीक एसिड समान वजन में लेकर शतधौत घृत में मिश्रित मलहम जैसा बनालें। सुबह साम निम्नौषधि खावें—

अर्शान्तक गुटिका—

नागकेशर असली, सत गिलोय, चित्रकमूल, सोंठ, पीपरामूल, वायविडंग, हरीतकी छिलके, बहेड़े के छिलके, आमला, तालीसपत्र, ताड़मूल, दालचीनी, लोह भस्म, इन्द्रयव, बिल्व फल गर्भ, रक्तस्फटिका खील, रीठा के छिलका, रसवंती, शुद्ध आमलासार गंधक, मुक्ताशुक्ति भस्म, एलिया, नीम बीज का गर्भ, दन्तीमूल, स्वर्णमाक्षिक भस्म, सबका पौडर लेकर मूली के रस में ३ दिन घोटकर बेर जैसी गोली बना लेवें।

मात्रा—३-३ गोली सुबह शाम पानी के साथ। रात को पहला लिखा चूर्ण लेवें।

अधिक से अधिक ४० दिन यह प्रयोग करना पड़ता है।

पथ्य—जमीकन्द, मूली, तक्र का अधिक उपयोग करें। मल मूत्र का वेग न अटकावें। संयम रक्खें। भोजन लघु एवं सुपाच्य ही लेवें। गर्म चीजें न खावें।

—आर्य वैद्य श्री पं० मिलिन्द
दिवानपरा, भावनगर (गुजरात)

बच्चों की कुकर खांसी (हूपिङ्ग-कफ)—

यह बड़ी हठीली है, बड़ी कठिनाई से ही जाती है, इससे बच्चों को दीर्घकाल तक कष्ट उठाना पड़ता है, बच्चे खांसते खांसते कै (वमन) तक कर देते हैं, चेहरा लाल हो जाता है, पेट, छाती में कष्ट होता है, यह अन्य खांसियों से अधिक कष्टप्रद होती है। हमारा यह प्रयोग ८० प्रतिशत सफल रहा है।

जहां पर आज की नवीन आविष्कृत, पेटेण्ट औषधियां, सल्फा ड्रग्स, एन्टीबायोटिक्स, पेनीसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसीन, ओरियोमाइसीन, हूपिङ्ग कफ वैक्सीन आदि आदि फेल हो जाती हैं, वहां पर अनेक बार का परीक्षित यह प्रयोग लाभ करता है। वैद्य बन्धु प्रयोग कर अवश्य लाभ उठायें।

प्रयोग—

(१) बहेड़े के चूर्ण की भस्म (बहेड़े के चूर्ण को मिट्टी के तवे पर ढक्कन देकर अन्तर्धूम जला देना चाहिये)। बहेड़े के चूर्ण की भस्म, कालीमिर्च, सौंठ, पीपल, हरीतकी, आंवला, वांसा ये सातों द्रव्य १-१ तोला, पके अनार का छिलका ५ तोला, मिश्री ८ तोला इन सबको चूर्ण विधि से वस्त्रपूत चूर्ण बनाकर मिश्री मिला स्वच्छ शीशी में भरकर सुरक्षित रखलें, बस दवा आप की तैयार होगई।

मात्रा एवं सेवन विधि—

बच्चों को ६ से ८ रत्ती तक (बड़ों को १ माशे से २ माशे तक) मधु में मिलाकर चटा देवें। प्रातः सायं, दुपहर को, दिन में तीन बार और ऊपर से "कुमार्यासव" आधा तोला, "द्राक्षारिष्ट" आधा तोला, समभाग पानी में मिलाकर पिला देना चाहिये।

कभी कभी इससे किसी को उल्टी (कै) हो जाती है परन्तु सभी को नहीं और हमेशा भी नहीं, उल्टी होजाने से किसी प्रकार की हानि नहीं, अपितु फायदा ही होता है।

इससे श्वास प्रणालियों में पुराना विकृत जमा हुआ 'कफ' बाहर निकल जाता है जिससे खांसी का वेग शिथिल हो जाता है।

इस प्रकार, इस विधि से कुछ दिन नियमित सेवन कराने से बड़ा चमत्कारी लाभ होता है और यह कष्टकारक व्याधि कारण सहित हमेशा के लिये नष्ट हो जाती है।

विशेष:—

यह खांसी अधिक दिनों तक रहने से, किसी किसी बच्चे को 'श्वास' पकड़ लेता है, ऐसा अनुभव में आया है। ऐसी अवस्था में वहां पर मैंने ५-१० बूंदे 'कनकासव' की उक्त दोनों आसवों में मिलाकर सफलता प्राप्त की है।

चूसने का प्रयोग—

बहेड़े के ऊपर घृत चुपड़ कर ऊपर से स्वस्थ गाय का गोबर, लपेटकर कण्डों की अग्नि में पका लेना चाहिए, सम्यक पक जाने पर निकाल कर टुकड़े कर के मुख में रखकर दिन में कई बार चूसना चाहिए। यह भी खांसी में बड़ा गुणकर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों को जो चूस नहीं सकते हैं उन्हें भस्म योग से सूक्ष्म करके दिया जा सकता है।

—श्री वैद्य मक्खनलाल शर्मा
राजकीय आयु० चिकित्सालय
जसवन्तपुरा (जालोर)

दंत रोग पर अनुभव—

भिलावा १ पाव, सेंधानमक १पाव इन दोनों को कोरी मिट्टी के बर्तन में भर कर ऊपर परई (मिट्टी का बरतन) रखकर मिट्टी लगा दें और इसके ऊपर जंगली कण्डे या घर के ही कण्डों से इस हण्डी पर खूब अंगार लगावें कि वह अन्दर का भिलावा जल जाय। फिर निकालकर ठण्डा होने पर १ तोला कालीमिर्च, जीरा १ तोला, कपूर आधा तोला पीसकर इन तीनों को और हण्डी का भिलावा नमक पीसकर यह तीनों जीरा, कपूर, कालीमिर्च मिला कर दें इससे दन्त रोग पायरिया इत्यादि रोग दूर होंगे व असमय में हिलने वाले दांत मजबूत होंगे।

—श्री शम्भूगिरी सुकनगिरी गोस्वामी
मनेरी (बालाघाट) मध्य प्रदेश

निराला योग—

(१) स्वर्ण जल—स्वर्णपत्रक १२ ग्राम, लवणाम्ल १२ ग्राम, शोरकाम्ल ८ ग्राम लेकर एक बोतल में डाल कर हिलायें। एक मास में स्वर्णपत्रक अम्ल में मिल जायेंगे फिर इसमें १२० मि. लि. गुलाब जल मिलाकर रख लें।

(२) रजत जल—रजत पत्रक १२ ग्राम, शोरकाम्ल १२ ग्राम लेकर एक बोतल में भरकर रख दें। एक मास के पश्चात् रजत पत्रक गल जायेंगे। फिर इसमें १२० मि० लि० गुलाब जल मिलाकर रख लें।

(३) मुक्ताजल—मुक्ता १२ ग्राम को १ लिटर निम्बू स्वरस में खरल करें, एक मास तक खरल करें, स्वरस समाप्त होने पर पुनः इतना ही रस डाल कर खरल कर ब्लाटिंग पेपर से छान लें।

(४) लोहजल—फौलाद २०० ग्राम गरम करके १०१ बार सरसों के तैल में बुझावें। फिर एक बोतल बट दुग्ध में खरल कर गजपुट की आंच में फूंक दें। इस प्रकार १०१ बार फूंकें। तत्पश्चात खट्टे अनार के रस में खरल करें। अनार स्वरस २० मि० लि० लें।

अब चारों मिला दीजिए दवा तैयार है।

मात्रा—७ से १० बूंद।

अनुपान—अर्क गावजबां।

गुण—यह दवा कण्ठ से नीचे उतरते ही रक्त में मिल कर तुरन्त अपना प्रभाव दिखाती है। किसी कारण से भी शारीरिक दुर्बलता आई हो तो इसके सेवन से दूर होजाती है। क्षय वालों के लिए ईश्वरीय वरदान है। हृदय, मस्तिष्क को बल प्रदान करने में अपूर्व है। नपुंसक (नामर्द) को मर्द बनाने की महौषधि है। मोती ज्वर में अत्युत्तम है। पाचन विकार को दूर कर रक्त वर्धन में बेजोड़ है।

—वैद्यराज श्री मोहरसिंह आर्य
मिसरी, डा० चरखी दादरी (महेन्द्रगढ़)

पृष्ठ ३४ का शेषांश

चरक ने पुरीषज कृमि ५ बताये हैं। सुश्रुत ने सात प्रकार निर्देश किये हैं। सुश्रुतोल्लिखित गण्डूपद कृमि को चरक कफज कृमि में अन्तर्भाव किये हैं। कारण—चरक पुरीषज कृमि में गण्डूपदाकृति भी कोई कृमि रहता है—ऐसा निर्देश नहीं दिए हैं परन्तु कफज कृमि में गण्डूपदाकृति कृमि रहने का स्पष्ट उल्लेख है। चरक संहिता सप्तम अध्याय विमान स्थान स्थित एकादश श्लोक निम्नलिखित है—

श्लेष्मजा क्षीर गुड़तिल मत्स्यानूपमांस पिष्टान्न परमान्न कुसुम्भस्नेहाजीर्ण पूतिक्लिन्न संकीर्ण विरुद्धासात्म्य भोजनसमुत्थाना: तेषामामाशयस्थानम्। प्रवर्धमानास्तूर्ध्वमधो वा विसर्पन्ति, उभयतो वा। संस्थानवर्ण विशेषास्तु श्वेता प्रथुब्रध्न संस्थाना केचित, केचित् वृत्तपरीणाहा गण्डूपदा कृतयश्च, श्वेतास्ताम्रावभासा, केचिदणव: दीर्घास्तन्त्वाकृमय: श्वेता:। तेषां त्रिविधानी श्लेष्मनिमित्तानां कृमीणां नामानि। अन्तरादा, उदरादा, हृदयादाश्चुरवदर्भपुष्पा, सौगन्धिका: महागुदाश्चेति।

उपर्युक्त चरकोक्ति से स्पष्ट है कि चुरू और गण्डूपद कफज कृमि हैं, कारण गण्डूपदाकृति कृमि को तो कफज कृमिगत माना गया है। साथ ही चुरू कृमि का नाम भी स्पष्टतः उल्लेख मिलता है।

—कविराज श्री सन्तोषकुमार सतपथी
शशिभूषण आयुर्वेद गवेषणा मन्दिर
सराय केला (सिंहभूमि)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी

श्री आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य आयुर्वेदाचार्य; एच. पी. ए. मेडीसिन (जाम.)

प्रश्न—मेरी आयु ५५ वर्ष है स्वास्थ्य ठीक काम कर रहा है। लेकिन पिछले २०-२५ साल से स्मरणशक्ति क्षीण होनी शुरू हो गई है और इतनी क्षीण अवस्था को पहुंच रही है कि अब समय समय पर आपत्ति उठानी पड़ती है। —राजबहादुर मिश्रा वैद्य ध० ग्रा० ३१२८३

उत्तर—मिश्र जी आयु के अनुसार कुछ अनुभव तो बढ़ता है, लेकिन स्मरण शक्ति क्षीण होनी शुरू हो जाती है। इसके लिए प्रथम तो आप अपने कामों की एक संक्षिप्त सूची बनाकर तैयार रक्खा करें। अब रही औषधि सेवन की बात—इसके लिए आप तीन मास तक स्मृतिसागर रस ३ रत्ती, बसन्तमालती १।। रत्ती ऐसी दो मात्रा प्रातः सायं च्यवनप्राशयावलेह २ तोला के साथ चाटकर ऊपर से दूध लीजिए। तालु प्रदेश पर बादाम का तैल अथवा नारायण तैल की मालिश रात्रि में शयन के समय १५ से २५ मिनट तक कीजिए।

प्रश्न—मेरे सेवक को उबासियां बहुत आती हैं, अपान वायु भी बहुत आती है। पेशाब भी बहुत आता है। 'धन्वन्तरि' में उत्तर लिखकर भेजिये।

—गोविन्दराम भाटिया फ्लावर मिल जैतपुर (राजकोट)

उतर—दिन में तीन बार अग्नितुण्डी वटी ४-४ पानी से दीजिए। भोजन के बाद द्राक्षासव तीन चम्मच पानी मिलाकर दीजिए।

प्रश्न—सिर में दर्द, दिमाग की कमजोरी, शारीरिक कमजोरी, पेशाब पीला आदि है। कृपया धन्वन्तरि में उत्तर देवें।

—देवीदयाल, इञ्जिनियरिंग स्कूल, रांची (बिहार)

उत्तर—इसी प्रश्नावली में धन्वन्तरि ग्राहक नंबर १२८३ का उत्तर पढ़ लीजिए। चूंकि आप विद्यार्थी हैं अतः पढ़ने में अधिक ध्यान देवें।

प्रश्न—शारीरिक, मानसिक स्तर बहुत गिर गया है, किसी काम में मन नहीं लगता कृपया उपचार लिखें।

—वृजनरेशसिंह, रहंवा रायबरेली

उत्तर—आप निश्चित रूप से प्रश्न पूछ सकते हैं—कारण आप धन्वन्तरि के पाठक हैं। वैसे आपके लिखे अनुसार मानसिक चिन्ता ही इस रोग का कारण है। फिर भी आप आमलकी चूर्ण २-२ माशा प्रातः सायं शीतल जल अथवा दूध से लेवें। सारे शरीर में तैल की मालिश भी अच्छी रहेगी। मूल्यवान औषधि की दृष्टि से प्रश्न प्रथम का उत्तर पढ़कर काम में ले सकते हैं।

प्रश्न—पायरिया और कब्जियत की सफल चिकित्सा लिखें। मसूढ़े कमजोर हो गये हैं, दांत कुछ कुछ हिलते हैं। —शम्भुदयाल डालमिया, लखीसराय मुंगेर —ध० ग्रा० २७०१६

उत्तर—डालमियाजी—जो रोग स्वयं या लक्षण रूप में घर कर लेते हैं—वे घर में ही रहना चाहते हैं। पायरिया, कब्जियत भी ऐसे ही है। पायरिया तो प्रायः ही मिलता है। कब्जियत को दूर करने के लिये दूध में घृत २ चम्मच लम्बे समय तक लेवें अथवा आधा सेर दूध में १ छटांक मुनक्का (दाख) उबाल कर लीजिए। पायरिया में अधिक ब्रुश नहीं करें। नीम की दातुन कीजिए।

प्रश्न—धर्मपत्नी की आयु ३५ वर्ष है। प्रसव के चार मास बाद कपड़े धो रही थी, अचानक ही दायें हाथ के पहुँचा (मणिबन्ध) तथा बांये टखने (घुटनों) में दर्द होने लगा। कई प्रकार की औषधियां दीं लाभ नहीं है...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार लिखें। महावीर प्रसाद अध्यापक
ध० ग्रा० २२४२६

उत्तर—आपने तो दर्जनों दवाओं के नाम लिखे हैं—खैर आप इन्हें महायोगराज गुग्गुल २ वटी, समीरपन्नग रस १ रत्ती। ऐसी दो मात्रा रास्नादि क्वाथ १ तोला (क्वाथ विधि से बनाकर) के साथ प्रातः सायं देवें। नारायण तैल की मालिश कर स्थान को उष्ण वस्त्र से बांध देवें।

प्रश्न—आयुर्वेदिक औषधि, तथा अन्य चिकित्सा उपयोगी सामान मिल सकने का पता दीजिये।

—एक पाठक

उत्तर—स्थान तथा नाम तो बहुत हैं लेकिन आयुर्वेद की निर्मित शास्त्रीय औषधियां, बहुमूल्य खनिज द्रव्य तथा चिकित्सा उपयोगी उपकरण—धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़) तथा दाऊ मेडीकल स्टोर्स, विजयगढ़ (अलीगढ़) से भी प्राप्त हो सकते हैं।

प्रश्न—मैंने इम्पीरियल होम्योपैथी कौंसिल-जम्मूतवी से परीक्षा देकर एम० एस० सी० (होमियो) का डिप्लोमा लिया है। रजिस्ट्रेशन कराना चाहता हूं-कैसे होगा?

—परशुराम वर्मा ध. ग्रा. २५४६

उत्तर—स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी में इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया जाता। अपने कालिज से ही संपर्क करें वे ही रास्ता बतायेंगे।

प्रश्न—जब से होश सम्भाला है, कर्णस्राव से ही त्रस्त पाया। हर संभव प्रयास किया, लेकिन निष्फल रहा। श्रवण शक्ति में कुछ न्यूनता आगई है। धन्वन्तरि के माध्यम से उत्तर दीजिए।

—वि. ना. मिश्र ध. ग्रा. २०८५७

उत्तर—आपने लक्षण तो लिखे हैं लेकिन क्या-क्या उपाय किए नहीं लिखे। कृपया आप 'दशमूल क्वाथ' के पानी से कान को धोकर नारायण तैल की ४-५ बूंद डालें। सप्तामृतलोह ३ रत्ती, मुक्ताशुक्ति १ रत्ती, प्रवाल २ रत्ती। ऐसी तीन मात्रा बराबर की मिश्री मिलाकर शीतल जल अथवा दूध से ३ मास तक लीजिए।

प्रश्न—उम्र ५० वर्ष से ऊपर है। जब मूत्र पीला होता है तो गर्मी होकर दाह तथा टीस मारता है। कृपया उपचार लिखें?

—हरिदत्त आयुर्वेद शास्त्री ध. ग्रा. ३३१७०

उत्तर—शीतल पर्पटी ३ रत्ती, नाग केशर चूर्ण १ माशा। बराबर मिश्री मिलाकर दूध या जल से लेवें।

प्रश्न—(क) बाबा की उम्र ५५ वर्ष है। करीब ५ वर्ष से वातरोग है—अधिकतर गले के ऊपर इसका प्रकोप होता है। लगभग नित्य कहीं न कहीं इसका प्रकोप रहता है—उपचार बतावें।

(ख) रोगी की उम्र २५ साल। करीब डेढ़ माह पूर्व पेट की बायीं तरफ मांस के गोले के तरह मालूम हुआ—दर्द बहुत होता था। एलोपैथिक दवा से रोग ठीक होगया पर कमजोरी अधिक है—कृपया उपचार बतावें?

(ग) दोस्त की उम्र २२ वर्ष है, करीब ६ साल से बाल पक रहे हैं। इस समय तक ⅓ भाग सफेद हो चुका है। आजकल लोमा हेयर टानिक का प्रयोग चल रहा है—उपचार बतावें?

—प्रेमचन्द गुप्त S/o गब्बूलाल ध. ग्रा. १३७४५

उत्तर—(क) महायोगराज गुग्गुल ३-३ गोली दो बार दूध के साथ दीजिए। नारायण तेल की मालिश वात प्रकोप के स्थान पर करावें।

(ख) गुल्म जैसे लक्षण हैं। शंख भस्म २ रत्ती कपर्द भस्म १ रत्ती भोजन के पूर्व पानी के साथ लेवें। भोजन के बाद द्राक्षारिष्ट २ चम्मच पानी मिलाकर लेवें।

(ग) लोमा हेयर टानिक को चलने दीजिए अथवा लम्बे समय तक भृङ्गराज तैल का प्रयोग करें। सफलता दूर है।

प्रश्न—पेशाब के साथ धातु जाती है, कमजोरी है उपचार लिखें? —भंवरलाल, दयालपुरा (जालोर)

उत्तर—आंवले का चूर्ण १ छोटे चम्मच भर रात्रि में शयन के समय पानी से लेवें। चन्द्रप्रभावटी दूध के साथ प्रातः सायं लें।

प्रश्न—मेरी बड़ी भाभी सा. जिनकी उम्र ३२ वर्ष है गत दो-तीन वर्षों से नाक व उसके आस-पास दोनों गालों पर काले धब्बे जैसे हो रहे हैं, ये अच्छे नहीं हो रहे हैं। उपचार लिखें? —धैरूलाल गहलोत ध. ग्रा. ३०१

उत्तर—यह व्यंग (Melanoderma of face) नामक रोग है। विशेष चिकित्सा इसकी नहीं है। हल्दी और जायफल को पानी में पीसकर मुख पर जहां धब्बे हैं लगावें अथवा किंशुकादि तैल (सिद्ध योग संग्रह)

—शेषांश पृष्ठ ५१ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकृतिक स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी

[इस स्तम्भ में "धन्वन्तरि" के पाठकों के स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ, प्राकृतिक चिकित्साचार्य श्री गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर' एन० डी० द्वारा दिए जाते हैं। प्रश्नकर्त्ता एक बार में एक से अधिक प्रश्न न पूछें। प्रश्नादि भेजने का पता है—श्री पं० गंगाप्रसाद जी गौड़ 'नाहर' एन. डी. प्राध्यापक एवं प्रा० चिकित्सक—भारतीय प्राकृतिक विद्यापीठ, डायमण्ड हार्बररोड पो० बिष्णुपुर (२४ परगना) पू० बङ्गाल

प्रश्न—निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर पत्र पाते ही दें। श्री गंगाधर देव के सारे शरीर में, यानी दोनों बाहों में, दोनों पैरों में तथा दोनों हाथों पर चार-पांच जगह त्वचा पर मटमैले रंग के दाग हुए हैं। बायें और दायें हाथ में ६-६ इञ्च लम्बे और ४-४ इञ्च चौड़े ये दाग हैं। पैरों पर कहीं पर एक इञ्च और कहीं पर ४ इञ्च लम्बे चौड़े दाग हैं। दाग की जगह पर चुटकी काटने पर या सुई चुभोने पर कुछ नहीं मालूम पड़ता, यानी दागों की जगहों पर त्वचा सुन्न पड़ गई है। रोगी की उम्र लगभग २४ वर्ष की होगी। एलोपैथिक चिकित्सा बहुत करायी गयी, पर लाभ कुछ भी नहीं हुआ। आप ही कोई उपाय बतायें ? —श्री तारक प्रसाद, मारखम, समस्तीपुर

उत्तर—आपके आदेशानुसार आपका पत्र पाते ही आपके प्रश्न का उत्तर तो हम नहीं दे सके श्री तारकप्रसाद जी जिसके लिए आप मुझे क्षमा करें। कारण स्पष्ट है, अर्थात 'धन्वन्तरि' के इस स्तम्भ में प्रश्न कर्ताओं के प्रश्नों के उत्तर नम्बर बार दिये जाते हैं। आप का नम्बर अब आया है, इसलिये उत्तर देर से दिया जाना स्वाभाविक है।

श्री गंगाधर देव का रोग कुष्ठ रोग की कोटि का एक भयानक चर्म रोग है जो शरीर में विषमयता बढ़ जाने के कारण प्रकाश में आया है। इस रोग को दूर करने के लिए उन्हें सत्वर नमक, मसाला, तेल, खटाई, सफेद चीनी, चाय, नशे की चीजें, तथा अन्य उत्तेजक खाद्य पदार्थ और औषधियों का त्याग कर देना चाहिये और तीन से सात दिनों का पूर्ण उपवास करना चाहिये। उपवास के दिनों में सुबह-शाम—दोनों वक्त शौच से लौटने के बाद गुनगुने पानी का एनिमा लेना चाहिये। एनिमा के पानी में १०-२० बूंद कागजी नीबू का रस डाल देने से आंतों में जमे मल की सफाई भलीभांति हो जायगी, उन दिनों ताजे ठंडे जल में कागजी नीबू का रस निचोड़ कर थोड़ी-थोड़ी मात्रा से कई बार पीना चाहिये। इससे शरीर की विषमयता के दूर होने में मदद मिलेगी।

सात दिन उपवास कर चुकने के बाद सात दिन रसाहार करना चाहिये। रसाहार में मौसम के ताजे रसदार फलों का रस पीना चाहिए या कच्ची और ताजी साग-तरकारियों को उबालकर उसका रस या सूप पीने के काम में लाना चाहिए। एक वक्त में एक ही प्रकार का फल वा सब्जी काम में लाना ठीक रहेगा। रसाहार के दिनों में भी उपवास-काल की भांति ही प्रतिदिन दोनों समय एनिमा लेकर पेट साफ करते रहना चाहिए और थोड़ा-थोड़ा करके प्रचुर मात्रा में जल पीते रहना चाहिए।

रसाहार के बाद सात दिनों तक केवल फल खाकर रहना चाहिये। इन दिनों रोज एनिमा लेने की जरूरत नहीं है। पर कभी-कभी जब कब्ज मालूम हो तो एनिमा लेकर पेट साफ कर लेना चाहिये।

उसके बाद सबेरे नाश्ते में फल दूध, दोपहर के भोजन में चोकरदार आटे की रोटी या गेहूं की दलिया, उबली और बिना मसाले की सब्जी, सब्जियों का सलाद तथा दही लेना चाहिए जिसके दो घंटे बाद एक गिलास गाय के दूध का ताजा मठा पीना चाहिये। शाम का भोजन सूर्यास्त से पहले कर लेना चाहिये जो हल्का हो और उसमें रोटी सब्जी और कुछ सूखे मेवे हों।

उपचार में रोजाना किसी तालाब के किनारे जाकर उसकी गीली साफ मिट्टी को लेकर तमाम बदन में विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर शरीर के दागों पर गाढ़ी-गाढ़ी लगाना चाहिए और कुछ देर तक हल्की धूप में बैठे रहना चाहिए ताकि बदन परकी लगी गीली मिट्टी कुछ सूख जाय। उसके बाद तालाब के पानी में खूब मल-मल कर नहाना चाहिए और बदन के सूख जाने पर बदन पर और खासकर उन दागों पर गरी के तेल में कागजी नीबू का रस फेंट कर लगाये।

सप्ताह में एक बार पूरे शरीर का भाप-नहान लेना उसके बाद १० मिनट तक कटि स्नान करना चाहिए।

रात को सोते वक्त कमर पर गीले कपड़े की पट्टी चार बार लपेट कर ऊपर से सूखा ऊनी कपड़ा लपेट देना चाहिए और उसे सबेरे खोलना चाहिए।

प्रश्न—मुझे पुराना ब्रांकाइटिस लगभग १०,१२ साल से है पीला-पीला कफ आता रहता है। सुबह के समय कफ अधिक आता है। रात को खांसी की बजह से नींद नहीं आती। हर समय श्वास-कष्ट बना रहता है पर शाम व सुबह को अधिक श्वास फूलता है। मुझे नाभि के पास का हर्निया भी है। नीचे ऊंचे या टेढ़ा मेढ़ा होने से आंत उतर जाती है। पेट में सुण्डी के पास हर्निया वाली जगह को दबाने से दर्द होता है। ऐसा लगभग ५ वर्षों से होता है। पेट की दाहिनी ओर भी दर्द हुआ करता है। तीसरे मुझे हाईब्लडप्रेशर भी है। सिर हर समय भारी रहता है और कनपटी की दोनों नसें कभी कभी फटने-फटने कोहो जाती हैं। सारे दिन बदन टूटता रहता है। दो कदम चल नहीं सकता। यदि चलूं तो पसीने पसीने हो जाता हूं। धूप मुझे जरा भी बर्दाश्त नहीं होती। गर्मियों में गर्मी और सर्दियों में सर्दी अधिक लगती है। कोई काम करने का जी नहीं करता। खड़ा रहूं तो बैठा नहीं जाता और यदि बैठा रहूं तो उठा नहीं जाता। यह हालत लगभग २-३ साल से है। सदैव कब्ज बना रहता है। सुबह लगभग पाव-डेढ़ पाव ठंडे पानी का एनिमा लेता हूं, फिर भी उसी दिन टट्टी न होकर अगली सुबह पतली टट्टी आती है। टट्टी से कभी-कभी मल के स्थान पर चावलों के मांड़ जैसी चीज तोला, आधी तोला गिरती है। पेट बड़ा सख्त रहता है। अपान वायु बड़ी बदबूदार निकलती है। पेशाब कर चुकने पर इन्द्री द्वारा सफेद लेसदार ५-७ बूंद कोई चीज गिर जाती है। दो साल से मैं अंग्रेजी और देशी दवाइयां कर रहा हूँ पर कोई लाभ नहीं हो रहा है। मेरे दोनों टांसिल भी बढ़े हुए हैं। रात को गले में बड़ा दर्द होता है। गले में खुश्की भी बेहद रहती है। पैरों के घुटनों में भी बड़ा दर्द होता है यहां तक कि कभी-कभी एड़ी से बिल्कुल चला नहीं जाता टांसिल की तथा पैरों के दर्द की तकलीफ लगभग ३-४ माह से है। मैं शादी शुदा हूँ। आंखें मटियाली सी रहती है। नाखून सफेद हैं, पर सर्दियों में नीले हो जाते हैं।

एक व्यक्ति आपके यहां से अपने रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा कराकर बिल्कुल ठीक होकर यहां आया है। उसी के कहने पर मैं नौ महीने से प्राकृतिक चिकित्सा कर रहा हूं। मुझे पक्का विश्वास है कि मैं प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा अवश्य ठीक हो जाऊंगा। (इसके बाद प्रश्नकर्ता ने एक पूरा दैनिक चिकित्सा प्रोग्राम लिखा है जो बहुत लम्बा होने के कारण इस स्थल पर उसकी पुनरावृत्ति नहीं की गयी) पर बावजूद ९ मास तक इस प्रोग्राम के चलाने पर भी मेरे रोग और तकलीफ ज्यों की त्यों बनी हुई है। कृपया अपने ढङ्ग का उचित प्राकृतिक उपचार लिखें ताकि मैं अपने उपर्युक्त रोगों से शीघ्र छुटकारा पाजाऊं।

—श्री ओमप्रकाश कुई वालान हिसार

उत्तर—भाई ओमप्रकाश जी प्राकृतिक चिकित्सा को जितनी सहज और सरल आप समझते हैं उतनी सहज व सरल यह है नहीं। मेरे एक रोगी को आप डाक्टर मानकर जो उसके कहे अनुसार अपने रोगों का उपचार कर रहे हैं यह बड़ा भयावह है। कारण, गलत निसर्गोपचार से आपको न केवल लाभ ही नहीं होगा अपितु लाभ के बदले बड़ी हानि भी हो सकती है। उदाहरणार्थ, कब्ज में ठंडे पानी का एनिमा लेना, वह भी पाव-डेढ़ पाव पानी का उच्च रक्तचाप में नमक का प्रयोग, नीबू की खटाई का प्रयोग, तथा नीबू का शिकंजवीन पीना आदि बिल्कुल गलत प्रयोग हैं जिनको जारी रखकर आप स्वास्थ्य-लाभ की आशा करते हैं जबकि आप पुराने ब्रान्काइटिस श्वास-रोग, हर्नियां, यकृत-विकार, उच्चरक्तचाप वात रोग, भयानक कब्ज, मूत्र विकार तथा टान्सिल के बढ़ने आदि कष्ट साध्य रोगों से एक बुरी तरह से आक्रान्त हैं। कृपया वर्तमान उपचार-क्रम एक दम बन्द करदें और नीचे का उपचार क्रम चालू करके लाभ उठावें—

सर्व प्रथम तीन दिनों का पूर्ण उपवास करें इन दिनों कागजी नीबू का रस मिला जल थोड़ा थोड़ा करके प्रचुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्रा में पीवें और दोनों वक्त शौच से आने के बाद सेर-डेढ़ सेर गुनगुने पानी का एनिमा लें। उपवास के बाद तीन दिनों तक केवल रसदार फलों के रस वा साग-सब्जियों के सूप पर रहें और इन दिनों भी एनिमा लेकर पेट को साफ करते रहें पर इन दिनों एनिमा का पानी गर्म नहीं ठंडा रहेगा। रसाहार के बाद सात दिनों तक केवल फलाहार करें और फलाहार के बाद केवल दो समय भोजन करें तथा नाश्ता के समय केवल गरम पानी में कागजी नीबू निचोड़कर पीवें। दोपहर के भोजन में फल और गाय का ताजा मठा लें और सायंकाल के भोजन में चोकरदार आटे की रोटी और उबली सब्जी। शाम का भोजन हल्का होना चाहिए और सूर्यास्त के पहले कर लेना चाहिए।

रोज सुबह शाम १५-१५ मिनट का उदर स्नान करना चाहिए। और रात को सोते समय रात भर के लिये कमर की गीली लपेट लगानी चाहिये या पेडू की गीली मिट्टी की पट्टी। दिन में हर्निया की पेटी का प्रयोग करना चाहिये। दिन में रोज तीसरे पहर एक घंटा के लिए छाती की गीली लपेट भी लगानी चाहिए।

पृष्ठ ४८ का शेषांश

यादव जी) का लगाना शुरू करें।

प्रश्न—बालक की आयु २० वर्ष है। ५-६ वर्ष से उसकी नाक में बहुत कड़ी पपड़ी जमने लगी है जो बड़ी कठिनाई से निकलती है। दुर्गन्ध भी आती है। उपचार लिखें?

—राधाकृष्णसिंह, अमांवा, हरोनी—लखनऊ

उत्तर—यह उष्णता (पैत्तिक गुण) से है। इन्हें प्रवाल पिष्टी ३ रत्ती, कामदुधा रस (मोती युक्त) २ रत्ती दो बार शहद से देवें। षटबिन्दु तैल नाक में लगावें। तीन मास तक औषधि देवें, प्रयोग करें। पथ्य से सामान्य भोजन करता रहे।

प्रश्न—मेरा कण्ठ ३-४ वर्षों से खराब है। आवाज साफ नहीं निकलती। दही खाने से यह हुआ—ऐसा लगता है। उपचार लिखें? गोपालकृष्ण पाराशर, कुकड़ेश्वर

उत्तर—व्योषादि वटी ४-६ तक चूसने के काम में लेवें। अथवा मुलहठी (मधुयष्टि) मुंह में रखिएगा।

प्रश्न—यहां बच्चों को पोलियो व्याधि बहुत फैली हुई है। आप कृपया इस रोग का आयुर्वेद शास्त्र में क्या नाम है बताते हुए चिकित्सा विवरण दीजिए?

वैद्य ही. लक्ष्मण ध. ग्रा. १६२६६ (आन्ध्र प्रदेश)

उत्तर—विशेष अध्ययन के लिये तो सितम्बर अक्टूबर ६७ का धन्वन्तरि देखिये। वैसे पोलियो को बाल-पक्षाघात की संज्ञा दी गई है।

प्रश्न—मां पेट की बीमारी से पीड़ित हैं। बायीं तरफ सूजन है। श्वेत प्रदर भी है। कृपया धन्वन्तरि के मार्फत उपाय बतावें?

—कु० आशा तारफरे अग्रवाल

उत्तर—आपकी माता जी के लिए जहां तक पेट की बीमारी का प्रश्न है, आरोग्यवर्धिनी ४-४ रत्ती प्रातः सायम् जल से देवें। प्रातः १० बजे, सायं ४ बजे प्रवाल पिष्टी २ रत्ती, मुक्ताशुक्ति २ रत्ती ऐसी दो मात्रा पानी या दूध से देवें।

प्रश्न—करीब दो वर्ष से बहुत ही कम सुनाई देता है। आयुर्वेद उपचार लिखें?

—सुरेन्द्रकुमार अत्रे ध. ग्रा. ३२३४३

उत्तर—आपके विस्तृत पत्र को पूरी तरह पढ़ लिया। आप इस औषधि व्यवस्था को २-३ मास तक लेने के बाद पुनः सम्पर्क करें। महा योगराज गुग्गुल ३ रत्ती, स्वर्ण भस्म ⅛ रत्ती ऐसी दो मात्रा भोजन के बाद मिश्री घृत मिलाकर चाटें दूध ऊपर से ले सकते हैं। कान में बराबर बिल्व तैल डालें। सम्भवतः इससे आपको काफी लाभ प्रतीत होगा। भीतर की नाड़ियों की दुर्बलता से यह बाधिर्य रोग का रूप हो रहा है, अतः औषधि लेवें।

सूचना—पाठक गण प्रश्न भेजते समय आयु, लक्षण, रोग की अवधि आदि बातें सुन्दर अक्षरों में तथा संक्षेप में लिखकर भेजें। सामान्यतया प्रश्नों के उत्तर तीसरे महिने प्रकाशित होते हैं। जिन प्रश्नों की बातें सामान्यतः एक सी होती हैं—उनका अलग अलग उत्तर देना स्थान हो तभी संभव है। पोस्ट कार्ड या लिफाफे पर एक ही तरफ साफ साफ लिखें। प्रश्न इस पते पर भेजिए—

—आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य चिकित्सा सलाहकार
पो० गणेशगढ़ (श्री गंगानगर) राजस्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार एवं सूचनायें

उत्तर प्रदेश इंडियन मेडिसिन बोर्ड की बैठक और उसके महत्वपूर्ण निर्णय

दिनांक ३० व ३१ जनवरी १९६८ ई० को उ.प्र. आयुर्वेद यूनानी फैकल्टी की महत्वपूर्ण बैठक धन्वन्तरि-भवन लालबाग लखनऊ में वैद्य दरबारीलाल शर्मा की अध्यक्षता में हुई, जिसमें स्वीकृत हुए प्रस्तावों में से निम्न मुख्य हैं—

मैनेजर साहू रामनारायण मुरली मनोहर आयुर्वेदिक कालेज ने सुझाव दिया था कि उपाधि परीक्षा में प्रवेश योग्यता हेतु इन्टर संस्कृत के अतिरिक्त इण्टर साइन्स उत्तीर्ण भी रक्खी जाय जिससे कि कालेजों में छात्रों की कमी न रहे स्वीकार हुआ।

पाठ्यक्रम सुधार हेतु बनाई उपसमिति की रिपोर्ट दिनांक २३ व २४ नवम्बर १९६७ की स्वीकार की गई।

बोर्ड द्वारा नियुक्त पैनल की अन्तिम रिपोर्ट पढ़ी गई निश्चय हुआ कि पैनल की रिपोर्ट के आधार पर १—द्विवेदी आयुर्वेद विद्यालय कानपुर, २—मेरठ आयुर्वेदिक कालेज मेरठ, ३—कान्यकुब्ज आयुर्वेदिक कालेज लखनऊ, ४—तिब्बिया कालेज सहारनपुर, ५—तिब्बिया स्कूल वाराणसी को असम्बद्धता का नोटिस दिया जाय तथा जुलाई मास से सहायक वैद्य परीक्षा की प्रवेश योग्यता हाई स्कूल कर दी जाय।

इसके अतिरिक्त उपाधि परीक्षा एवं सहायक वैद्य परीक्षा के हेतु सम्बद्ध विद्यालयों के सुधार हेतु पैनल ने जो रिपोर्ट व सुझाव दिए हैं यह उनकी प्रबन्धक समितियों को भेजदिए जायें ताकि वे उन्हें तदर्थ शीघ्र कार्यान्वित कर सकें।

बोर्ड के पाठ्यक्रम तथा प्रवेश योग्यता में संशोधन

उ. प्र. आयुर्वेद यूनानी तिब्बी फैकल्टी तथा बोर्ड द्वारा नियुक्त पाठ्यक्रम के सुधार हेतु उपसमिति की बैठक दिनांक २३ तथा २४ नबम्बर, १९६७ की कार्यवाही जो कि दिनांक ३१ जनवरी १९६८ ई० द्वारा फैकल्टी और बोर्ड की बैठक में स्वीकृत होचुकी है। पाठकों की जानकारी हेतु मुख्य परिवर्तन नीचे दिये जा रहे हैं।

उपसमिति ने प्रवेश योग्यता के सम्बन्ध में निम्न लिखित प्रवेश योग्यतायें निर्धारित की हैं—

१—इण्टरमीडिएट साइण्टिफिक ग्रूप (बी०) (आयुर्वेदिक) के साथ उत्तीर्ण परीक्षा।

२—संस्कृत विषय को लेकर इण्टरमीडिएट या समकक्ष परीक्षा।

३—वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय के साथ उत्तीर्ण सम्पूर्ण मध्यमा परीक्षा।

इसके अतिरिक्त नियमों में भी अनेक संशोधन किए गए हैं जोकि स्थानाभाव के कारण नहीं दिए।

उ.प्र. सरकार के विरुद्ध हाईकोर्ट में रिट दायर

पता चला है कि उ. प्र. शासन की आदेश संख्या ३१७५/५-२२/६३ दिनांक २९ सितम्बर १९६० जिसके द्वारा नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ देहली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, गुरुकुल वृन्दावन, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर आदि संस्थाओं को अमान्य घोषित करते हुए इनके स्नातकों का रजिस्ट्रेशन बन्द कर दिया गया है। इस आदेश के विरोध में आचार्य बदरीविशाल त्रिपाठी कानपुर तथा उनके सुपुत्र श्री रमेश चन्द्र जी त्रिपाठी ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक रिट दायर करदी है जिसमें आयुर्वेद सन्देश के गतांक में प्रकाशित "राज्यपाल के नाम खुला पत्र" में दी गई धाराओं तथा बोर्ड और फैकल्टी के प्रस्तावों का उल्लेख करते हुए न्यायाधीशों से अनुरोध किया गया है कि उक्त आदेश को शीघ्र निरस्त करदें।

म. प्र. के राजकीय आयु. कालेज अनिश्चित काल के लिये बन्द

भोपाल का समाचार है कि म. प्र. सरकार ने ग्वालियर तथा रायपुर के आयुर्वेद कालेजों को अनिश्चित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल के लिए बन्द कर दिया है। उक्त कालेजों के विद्यार्थियों के लिए किये जारहे आन्दोलन के परिणामस्वरूप ही सरकार को ऐसा निर्णय लेना पड़ा है। उक्त कालेज के विद्यार्थियों की मांगें निम्न प्रकार हैं।

(१) आयुर्वेदिक कालेजों के स्नातकों को सरकारी सेवा में द्वितीय श्रेणी की मान्यता,वेतन मानआदि दियेजायें।

(२) आयुर्वेदिक शोध कार्यों कोअधिकाधिक प्रोत्साहन दिया जाय तथा उनके लिए एम. बी. बी. एस. का एक संक्षिप्त कोर्स तैयार किया जाय।

पंजाबके वैद्यों को एलोपैथी करने का अधिकार

पता चला है कि इण्डियन मेडिकल एसोसियेशन तथा नेशनल मेडिकल एसोसियेशन के प्रयत्नों से पंजाब तथा पेप्सू के समस्त रजिस्टर्ड वैद्यों व हकीमों से एलोपैथी औषधियों के प्रयोग का अधिकार छीनकर कुछ थोड़े से डाक्टर नामधारी चिकित्सकों को एलोपैथी का अधिकार देकर प्रांत में जो एक खलबली दिनांक २५ अक्टूबर १९६६ से मच गई थी उसके विरोध में वैद्य कपिलदेव खमानू निवासी ने हाई कोर्ट में एक रिट दायर करदी थी किन्तु हाईकोर्ट का फैसला होने से पूर्व ही सरकार ने निम्न आदेश जारी कर समस्त वैद्य-हकीमों को पुनः अधिकार दे दिये है कि वे एलोपैथी की समस्त औषधियों का प्रयोग कर सकते हैं।

यह नोटीफिकेशन इस प्रकार है—

ड्रग्स एण्ड कास्मेटिक्स एक्ट १९४० की धारा (ई.-ई.) और उपधारा (iii) तथा १९४५ के बनाये हुए रूल्स के अनुसार पंजाब सरकार नया आदेश प्रदान करती है कि जो वैद्य हकीम पूर्वी पंजाब आयुर्वेदिक एवं यूनानी प्रैक्टिनर्स एक्ट १९४९ तथा पेप्सू आयुर्वेदिक एवं यूनानी प्रैक्टिशनर्स एक्ट २००८ बिक्रम सं० के आधार पर रजिस्टर्ड किए गए हैं, वे पंजाब प्रदेश में आधुनिक चिकित्सा पद्धति एलोपैथी करने के अधिकारी समझे जायेंगे जिनका विवरण ड्रग्स कास्मेटिक्स एक्ट १९४० में दिया है।

(२) सरकार के इस उल्लिखित आदेश के अनुसार पूर्व सूचित आदेश १०४४७–४ I. H. B. III–६६। १०२७५ दिनांक १५ अक्टूबर १९६६ तथा ६३८६ I. H. B. II–६७। १८१४६ दिनांक ३० जून १९६७ को रद्द समझा जाय।

—द० सरलाग्रीवाल
सेक्रेटरी टू गवर्नमेंट पंजाब
(मेडीकल एवं हेल्थ विभाग)

गोरखपुर और झांसी में मेडिकल कालेज—

उ. प्र. के स्वास्थ्य मन्त्री श्री प्रताप सिंह ने सूचना दी है कि गोरखपुर तथा झांसी में मेडीकल कालेज बनवाने के लिए जमीन का अधिग्रहण किया जा चुका है। इन जमीनों पर कब्जा मिलते ही कार्यारम्भ कर दिया जायेगा।

पं० प्रेमशंकर शर्मा सेवा निवृत—

पता चला है कि राजस्थान आयुर्वेद विभाग के सेवा निदेशक पं० प्रेमशंकर शर्मा भिषगाचार्य अध्यक्ष कौंसिल-आफ स्टेट बोर्डस् एण्ड फैकल्टीस् आफ इण्डियन मेडिसिन आफ इण्डिया का कार्यकाल समाप्त हो जाने के कारण वे आयुर्वेद विभाग के सेवा निदेशक पद से इसी जनवरी मास में सेवा निवृत्त होगये हैं। पुनः उनके स्थान पर आयुर्वेदाचार्य पं. दौलतराम चतुर्वेदी ए. एम. एस. प्रिंसिपल राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय जयपुर की नियुक्त की गई है।

श्वास रोग पर पंचकर्म चिकित्सा प्रारम्भ

देश के कोने कोने से रोगियों का आगमन

श्री धन्वन्तरि मन्दिर, श्वास रोग चिकित्सान्वेषण केन्द्र, रतनगढ़ (राजस्थान) में स्नेहन, स्वेदन के बाद वमन (उल्टी) विरेचन (दस्त) आदि के द्वारा पंचकर्म विधान से शरीर का शोधन करके श्वास रोग पर विशिष्ट चिकित्सा प्रारम्भ हो गई है।

चिकित्सा के लिये देहली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पंजाब व हरियाणा, राजस्थान आदि प्रांतों से रोगी आये हुए हैं। जनरलवार्ड व आरोग्य कुटीर में रोगियों की अधिकता के कारण संस्था के अधिकारीगण नूतन पंचकर्म भवन में अन्य व्यवस्था करने का विचार कर रहे हैं।

आयुर्वेद महाविद्यालय रीवां म०प्र० का वार्षिक सम्मेलन

दिनांक १८ फरवरी १९६८ रविवार को आयुर्वेद महा विद्यालय के प्रांगण में अध्यापक गण एवं छात्रों द्वारा विद्यालय के वार्षिक सम्मेलन का अभूतपूर्ण आयोजन किया गया जिसमें वक्ताओं ने आयुर्वेद के उत्थान पर अपने अपने प्रेरक विचार व्यक्त किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान में आयु. स्नातकोत्तर शिक्षा प्रारंभ की जाय

जयपुर २८ फरवरी–आयुर्वेदिक स्नातकोत्तर सम्मेलन राजस्थान (वैज्ञानिक संगठन) के महासचिव आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य ने एक वक्तव्य में कहा है कि आयुर्वेद विज्ञान के क्षेत्र में भी शीघ्र ही स्नातकोत्तर शिक्षा आरम्भ की जानी चाहिए। उन्हो ने कहा–

(क) स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को जो वर्षों से राज्य सेवा में कार्यरत हैं उन्हें नियुक्ति दिनांक से ही 'अ' ग्रेड दिया जाना चाहिये।

(ख) स्नातकोत्तर शिक्षा को विभागीय वरिष्ठ पदों के लिए विशेष योग्यता स्वीकार की जानी चाहिए।

(ग) बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन राजस्थान के प्रमाण पत्र में स्नातकोत्तर शिक्षा की विशेष योग्यता का (काय चिकित्सा अथवा शल्य चिकित्सा) उल्लेख होना चाहिए। अतः राजस्थान की लोक प्रिय सरकार राज्य में शीघ्र ही स्नातकोत्तर शिक्षा केन्द्र स्थापित करे तथा स्नातकोत्तर उपाधिप्राप्त छात्रों को योग्यतानुसार पद एवं वेतन देने का आदेश प्रसारित कर अनुग्रहीत करें। —महा सचिव

विष्णु यज्ञ में निःशुल्क चिकित्सालय–

कौच नगर जालौन में महा विष्णु यज्ञ के शुभ अवसर पर सहकारी औषधि निर्माणशाला रानीखेत की ओर से निःशुल्क चिकित्सालय बड़ा ही सराहनीय रहा। इसमें अनेकों डाक्टर तथा वैद्यों ने भाग लिया और लगभग ७००० रोगियों की निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा की गई।

श्री अवंतिका आयुर्वेद संभाषा परिषद्

श्री अवंतिका देशी चिकित्सक मण्डल उज्जैन के तत्वावधान में नवगठित अवंतिका आयुर्वेद संभाषा परिषद का उद्घाटन, दिनांक १६-२-६८ को श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा० लि० के संस्थापक माननीय वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा वैद्यशास्त्री द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

अनेक विद्वान सज्जनों ने अपने अपने खोजपूर्ण लेखों द्वारा वैद्यों का मार्ग दर्शन किया। और अन्त में स्वल्पाहार एवं सामूहिक छवि अंकन के बाद डा० पिण्डावाला ने आगत अतिथि एवं उपस्थित चिकित्सकों तथा नागरिकों का आभार प्रदर्शन किया। —प्रचार मन्त्री

नाड़ी विज्ञान अनुसंधान भवन का वार्षिक उत्सव

दिनांक ३-२-६८ बसंतपंचमी को नाड़ी अनुसंधान भवन, मंगलागौरी में तृतीय वार्षिकोत्सव कविराज वृजमोहन दीक्षित के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री बाजपेयी जी, चिकित्सा क्षेत्राधिकारी श्री जगदीश प्रसाद खन्ना, श्री रामकैलाश शास्त्री, श्री शिवनाथ जी वैद्य, 'आज' के सम्पादक श्री लक्ष्मीशंकर व्यास आदि उपस्थित थे। —प्रबन्धक

आयुर्वेदक चिकित्सक संघ माधौगढ़

माधौगढ़ (जालौन)—आज दिनांक ३-३-६८ को क्षेत्रीय आयुर्वेदिक चिकित्सक संघ का प्रथम अधिवेशन आयुर्वेद जगत के प्रकाण्ड विद्वान श्री पं० बद्री विशाल त्रिपाठी मरूपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। धन्वन्तरि पूजन के बाद श्री त्रिपाठी जी एवं श्री पं० सुरेन्द्रनाथ जी दीक्षित लखनऊ ने वैद्यो को आशीर्वाद दिया एवं वैद्यों के संगठन बढ़ाने एवं आयुर्वेद को समुन्नत बनाने का मार्ग दर्शन किया।

राजकीय आयु. तथा यूनानी चिकित्सक संघ का १७ वां वार्षिक सम्मेलन और चुनाव

लखनऊ १ मार्च १९६८–आज राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सक संघ के १७ वें, द्विदिवसीय वार्षिक अधिवेशन में प्रस्ताव स्वीकृत किये गये कि वैद्य एवं हकीमों को भी सरकारी नौकरियों में एलोपैथिकों के समान ही वेतन स्तर, आयास तथा अन्य सभी सुविधायें दी जायें। साथ ही संघ का चुनाव भी इस प्रकार सम्पन्न हुआ—

सभापति—हकीम अबुलफजल चिकित्साधिकारी कबरई
उपसभापति—वैद्य शारदा प्रसाद शुक्ल हरचन्दपुर
" हकीम मुइनुद्दीन रामपुर
प्रधान मंत्री—वैद्य श्री परमेश्वर बिल्डियाल घुरवारा
आय-व्यय निरीक्षक–वैद्य श्री राममूर्ति पाठक रामपुर
प्रचार मंत्री—वैद्य कुन्दनलाल आर्य, स्टेट फार्मेसी, लखनऊ
—मंत्री

जिला वैद्य सभा बरेली–

दिनांक ४-२-६८ को जिला वैद्य सभा बरेली का वार्षिक चुनाव आयुर्वेद जगत के प्रतिष्ठत व्यक्ति श्री श्रमंदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मा वैद्य भू० पू० M. L. P. वर्तमान सदस्य इंडियन मेडीसिन बोर्ड उ. प्र. के सभापतित्व में निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

१. अध्यक्ष—श्री पं. मदनमोहन द्विवेदी शास्त्री आयु०
२. उपाध्यक्ष—श्री नरोत्तम त्रिपाठी वैद्यराज
३. सहाध्यक्ष—श्री पं० शिवदत्त शास्त्री वैद्यराज
४. मन्त्री—श्री चन्द्रशेखर शर्मा वैद्यवर
५. उपमंत्री—श्री शंकरलाल वैद्य
६. संगठन मंत्री—श्री धरणीधर शर्मा वैद्य
७. कोषाध्यक्ष—श्री राधेश्याम अग्रवाल आयुर्वेद रत्न
८. निरीक्षक—श्री गोपीनाथ मिश्र वैद्य —प्रधान मन्त्री

तहसील वैद्यसभा फिरोजाबाद—

दिनांक १५।१।६८ को दिन के २ बजे श्री वैद्य रामजी लाल के औषधालय पर तहसील वैद्य सभा की बैठक हुई आय-व्यय निरीक्षक की रिपोर्ट के साथ हिसाब पेश हुआ आवश्यक संशोधन के बाद आय व्यय स्वीकार किया गया तत्पश्चात निम्न पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित हुए—

१. प्रधान—श्री जगन्नाथ प्रसाद शास्त्री
२. उप प्रधान—श्री चन्द्रशेखर शर्मा
३. „ „ श्री गौतमसिंह शर्मा
४. मन्त्री—श्री बनारसीदास विद्यार्थी
५. उप मन्त्री—श्री रामस्वरूप जैन
६. „ „ श्री सावलसिंह
७. प्रचार मन्त्री—श्री सत्यपाल सिंह दीक्षित
८. कोषाध्यक्ष—श्री शिवप्रसाद शास्त्री
९. आय व्यय निरीक्षक—प्रेमदत्त शास्त्री
१०. पुस्तकाध्यक्ष—श्री केदारनाथ शास्त्री —मन्त्री

छात्रसमिति नेहरू आयुर्वेद महाविद्यालय बैतूल (म० प्र०)

वर्ष १९६७-६८ के लिए निम्नानुसार छात्र चुनाव सम्पन्न हुआ।

(१) राधिका प्रसाद वर्मा—जनरल सेक्रेटरी।
(२) आत्मा राम माकवे—गेम्स सेक्रेटरी।
(३) वासुदेव प्रसाद तिवारी—लेबार्टरी प्राक्टर।
(४) विजय कुमार वर्मा—लाइब्रेरी-प्राक्टर।
(५) रामानन्द सोनी—कक्षा प्रतिनिधि तृतीय वर्ष।
(६) प्रकाश कुमार जोगे—कक्षा प्रतिनिधि द्वितीय वर्ष।
(७) महेश कुमार जैन—कक्षा प्रतिनिधि प्रथम वर्ष।

छात्र कार्यकारिणी समिति

आयुर्वेद मंडल आगर मालवा—

परगना आयुर्वेद मण्डल आगर के प्रथम चुनाव दि० २१।२।६८ को श्री. वासुदेव जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य उज्जैन की अध्यक्षता में निम्नानुसार हुआ—

अध्यक्ष—श्री वैद्य बालमुकुन्द जी शर्मा
उपाध्यक्ष—श्री वैद्य गिरजाशंकर जी शर्मा
मन्त्री—श्री वैद्य कैलाश चन्द्र गोयल

कार्य कारिणी सदस्य—

(१) श्री वैद्य मोहनलाल शर्मा
(२) „ „ मुरलीधर जी दुबे
(३) „ „ कृष्णदास बागड़ी
(४) „ „ पुरुषोत्तम पौराणिक —नन्दकिशोर शर्मा

क्षेत्रीय वैद्य सम्मेलन माधौगढ़—

दिनांक १५-१-६८ को माधौगढ़ (जालौन) में क्षेत्रीय वैद्य सम्मेलन की बैठक देवी जी के पुण्य स्थल पर सम्पन्न हुई जिसमें नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं वैद्य समुदाय बड़े हर्ष के साथ एकत्रित हुआ। इस सम्मेलन में एक क्षेत्रीय आयुर्वेदिक चिकित्सक संघ की स्थापना भी हुई तथा १५ सदस्यों की एक कार्यकारिणी आयुर्वेद को उन्नत करने के लिए गठित की गई। और सरकार से मांग की गई कि वह धन्वन्तरि दिवस को राष्ट्रीय स्वास्थ्य दिवस एवं आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति घोषित करे।

कार्यकारिणी—

अध्यक्ष—श्री पं० रामचरन शास्त्री माधौगढ़
उपाध्यक्ष—श्री पं० बाबूराम महते माधौगढ़
मन्त्री—श्री शिवरामसिंह भदौरिया वैद्याचार्य माधौगढ़
उप मन्त्री—श्री वैद्य शंकर दयाल गुप्ता माधौगढ़
प्रचार मंत्री—श्री बाबूराम गुप्ता वैद्य गोहन
कोषाध्यक्ष—श्री रुस्तम सिंह जी कुशवाहा वैद्य अटागांव
—अध्यक्ष

वैद्यसभा जबलपुर का वार्षिक चुनाव—

वैद्य सभा की विगत आम सभा में वैद्य पुरुषोत्तमलाल जी गोस्वामी की अध्यक्षता में १९६८ के लिए निम्न पदाधिकारी चुने गये—

१. अध्यक्ष—वैद्य श्री यमुना प्रसाद शास्त्री
२. उपाध्यक्ष—„ „ दौलतराम शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३. मन्त्री—श्री वैद्य सुदर्शनप्रसाद पांडेय
४. उप मंत्री—,, ,, पुरुषोत्तमलाल सिद्ध
५. कोषाध्यक्ष—वैद्य श्री कन्हैयालाल शर्मा
६. आय व्यय निरीक्षक—वैद्य श्री पुरुषोत्तमदास हूंका
७. प्रचार मन्त्री—वैद्य श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त

मध्यप्रदेश आयुर्वेद मंडल भोपाल—

म. प्र. आयुर्वेद मण्डल भोपाल शाखा का वार्षिक चुनाव दिनांक ७-१-६८ को वैद्य खुशीलाल जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें नये वर्ष के निम्न पदाधिकारी निर्विरोध चुने गये।

अध्यक्ष—वैद्य श्री खुशीलाल
उपाध्यक्ष—,, ,, शिबनारायण द्वय
महामंत्री—,, ,, ऊधवदास मेहता
मंत्री—वैद्य श्री कल्याणमल छापरवाल
प्रचार मंत्री—वैद्य श्री एस. के माहेश्वरी
कोषाध्यक्ष—वैद्य श्री रामनारायण माहेश्वरी

तथा कार्यकारणी के अन्य सदस्य भी निर्विरोध चुने गए। —मन्त्री

वैद्य सभा हींगणघाट—

दिनांक ३१-१-६८ को रात्रि के ७॥ बजे श्री मोहता दातव्य चिकित्सालय में स्थानीय वैद्य बन्धुओं की सभा श्री पं. वैद्यराज शोभालाल जी शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उक्त सभा में निम्न लिखित प्रस्ताव पारित किये गये।

सर्व प्रथम—स्व० श्री वैद्यराज केदारनाथ जी शर्मा के दुर्घटनाग्रस्त हो असामयिक निधन पर वैद्यसभा द्वारा शोक प्रगट किया गया तथा उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। साथ ही इस सभा ने स्व० लोकनायक बापू जी अणे के असामयिक निधन पर भी शोक प्रकट कर उनके दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान करने की प्रार्थना की।

अन्य एक प्रस्ताव द्वारा आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारी सर्व श्री पं० शोभाराम शर्मा अध्यक्ष, वैद्य हरवाजी नारायणराव गुलकरी आयुर्वेदाचार्य उपाध्यक्ष श्री, वैद्य कृष्णराव हरवाजी गुलकरी प्रधान मंत्री, वैद्य दीन बन्धु मिश्रा उपमंत्री तथा वैद्य चतुर्भुज जी सान धनिया कोषाध्यक्ष चुन लिये गये।

वैद्य सभा जबलपुर—

यह सभा आयुर्वेद जगत के प्रख्यात चिकित्सक एवं मनीषी नागपुर निवासी आयुर्वेदाचार्य पं० श्री केदारनाथ शर्मा के जीप दुर्घटना में आकस्मिक दुर्भाग्यपूर्ण दुखद निधन पर अपना हार्दिक शोक व्यक्त करती है।

—मन्त्री वैद्य सभा, जबलपुर

वैद्य मंडल अमृतसर का वार्षिक चुनाव—

दिनांक ७-१-६८ को आर्यसमाज मन्दिर श्रद्धानन्द बाजार में वैद्य इन्द्रजीत शर्मा की अध्यक्षता में वर्ष १९६८ के लिए निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री ज्ञानचन्द जोशी वैद्यवाचस्पति
उप प्रधान—श्री मदनमोहन पुष्करणा वैद्यवाचस्पति
,, ,, श्री स्वामी रामानन्द वैद्य
प्रधान मन्त्री—श्री सन्तराम डोगरा वैद्याचार्य
उप मन्त्री—श्री दर्शन कुमार वैद्य
प्रचार मन्त्री -श्री बाबूराम शर्मा वैद्याचार्य
कोषाध्यक्ष—श्री मनोहर सिंह वैद्य
आयव्यय निरीक्षक—श्री मदनमोहन पाठक —प्रधान मन्त्री

मशीनें बिकाऊ हैं

औषधियां बनाने की	बिजली से चलने वाली
डिसेन्टीग्रेटर	मिक्शचर पाऊडर
पल्वराईजर	मिक्शचर लिक्विड
खरल	स्टीमपेन कापर
ग्रेन्युलेटर	फिल्टर
बाल मिल	छलनी

विशेष जानकारी के लिये लिखिये—

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी,

हरिद्वार (सहारनपुर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप रोगी हैं

और चिकित्सा कराते-कराते परेशान हैं तो अपने रोग का विवरण हमको लिखें, हम आपके लिए शीघ्र लाभदायक औषधि-व्यवस्था करेंगे तथा यदि आप चाहेंगे तो औषधियां भी भेज दी जायेंगी। धन्वन्तरि के प्रधान सम्पादक तथा कुशल एवं विख्यात चिकित्सक श्री वैद्य देवीशरण गर्ग आपके पत्र को ध्यान से पढ़-समझ कर अपने ४० वर्ष के चिकित्सा-अनुभव के आधार पर उचित औषधियां लिखेंगे तथा उन औषधियों से आपको निश्चय ही लाभ होगा। सैकड़ों रोगी इस प्रकार नित्य औषधियां मंगाते और लाभ उठाते हैं।

–नियमों को ध्यान से पढ़ें–

१—आगे भी यथासमय समुचित उत्तर देने तथा औषधियां भेजने के लिए सुविधा रहे–इसके लिए आपकी फाइल बनाई जायगी। उसका शुल्क २) रु० मनियार्डर से अवश्य भेजें। उस मनियार्डर की रसीद पत्र के साथ भेज दें जिससे कि मनियार्डर मिलने की प्रतीक्षा न करनी पड़े।

२—उत्तर के लिए अपना पूरा पता लिखा तथा टिकिट लगा लिफाफा साथ में अवश्य भेजें।

३ – विवरण संक्षिप्त तथा आवश्यक ही लिखें। निरर्थक बातों से पत्र लम्बा न करें। अधिक विस्तृत व लम्बा पत्र समय नष्ट करता है।

४—औषधियां भी मंगाना चाहें तो पत्र में स्पष्ट लिखदें।

५—रोग-विवरणयुक्त पत्र "चिकित्सा-विभाग" को भेजें। उसमें कार्यालय सम्बन्धी अन्य बातें न लिखें।

नोट—फायल बनाने के लिए २) रुपया के मनियार्डर की रसीद या उत्तर के लिए लिफाफा पत्र के साथ न आने पर उत्तर देना कठिन होगा।

पता–धन्वन्तरि कार्यालय [चिकित्सा विभाग]

विजयगढ़ जिला अलीगढ़

मुद्रक—वैद्य देवीशरण गर्ग, धन्वन्तरि प्रेस विजयगढ़; प्रकाशक—वैद्य देवीशरण गर्ग, धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़
सम्पादक—वैद्य देवीशरण गर्ग, ज्वालाप्रसाद अग्रवाल B. Sc. दाऊदयाल गर्ग A. M. B. S.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

For the use of Registered Medical Practitioners, Hospitals and Laboratories only
Registerd with the Registrar of Newspapers for India under R. N. 2197-57
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जठराग्नि (भूख) बढ़ाने के लिए धन्वन्तरि अग्नि
वल्लभ क्षार अत्यन्त उत्तम है। यह अत्यन्त स्वादिष्ट पा
पाचक है। इसके सेवन से जठराग्नि प्रज्वलित होती है
खाया हुआ खाना हजम होता है। भूख न लगना, दस्त
साफ न होना, खट्टी डकारों का आना, पेट में दर्द तथा
भारीपन होना, तबियत मिचलाना, अपान वायु का बिग
ड़ना आदि शिकायतें दूर होती हैं। परदेश में रहकर
सेवन करने वालों को जल दोष नहीं सताता। गृहस्थों
के लिए संग्रह करने योग्य स्वादिष्ट चूर्ण है। पेट के दर्द
में १॥ से तीन ग्राम उष्ण जल के साथ तथा मलावरोध में
इतनी ही मात्रा में उष्णजल में घोलकर लेना चाहिए
इससे डकारें आती हैं, वायु निकलती है तथा तुरन्त आराम
होता है। भोजन अच्छी तरह से न पचने के कारण कभी
कभी उल्टी या दस्त होते हैं तब भी इसके सेवन से लाभ
होता है। मलावरोध होकर पेट में वायु रुक जाने की
आदत हो तो उन्हें भी इसके सेवन से लाभ होगा।

पाचक अग्निवर्धक
कब्ज को मिटानेवाला

धन्वन्तरि

अग्नि वल्लभ क्षार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

आयुर्वेद का सर्वोत्तम सचित्र हिन्दी मासिक

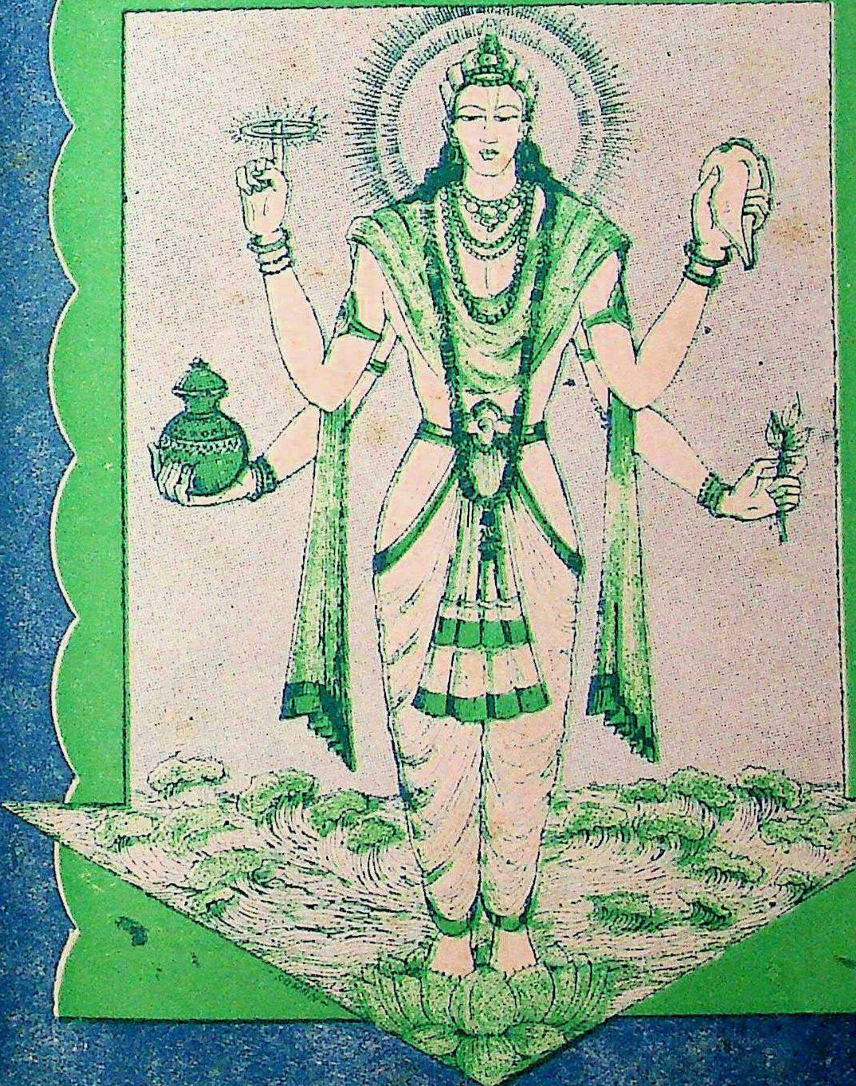

FOR REGISTERED MEDICAL PRACTITIONERS ONLY

अक्टूबर १९६८

प्रकाशक - धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सफल सेट

निम्नलिखित औषधियों के सैट सैकड़ों-हजारों रोगियों पर सफल प्रमाणित होने के बाद वैद्य समाज के समक्ष प्रस्तुत किये गये थे और अब तो इनकी पर्याप्त प्रसिद्धि है। अनेक चिकित्सक इन्हें मंगाकर अपने रोगियों पर व्यवहार करते हैं, यदि आपकी चिकित्सा में इन रोगोंसे पीड़ित रोगी हों तो उन्हें निःसंकोच सेवन करावें। अवश्य लाभ होगा।

(१) **श्वेतकुष्ठहर सैट**—सफेद दागों को नष्ट करने की सुपरीक्षित तीन दवायें। समय कुछ अधिक लगेगा लेकिन सफेद दाग अवश्य नष्ट होंगे। आंतरिक रक्त-विकृति को दूर करती हुई स्थाई लाभ करने वाली औषधियां हैं। तीनों औषधियां १५ दिन के लिये —८.००

श्वेतकुष्ठहर वटी—३२ गोली की शीशी ३.००

श्वेतकुष्ठहरघृत—१ औंस (२७ मि. लि.) २.५०

श्वेतकुष्ठहर अवलेह—३० तोला (३५० ग्राम) ४.००

(२) **स्त्री रोगहर सैट**—इसमें दो औषधियां हैं—१. स्त्री सुधा २. मधुकाद्यवलेह। इनके सेवन करने से स्त्रियों के सभी विशेष रोग नष्ट होते हैं। निर्बलता, आलस्य एवं अनियमितता नष्ट होकर उत्साह, स्फूर्ति एवं नीरोगता शीघ्र मिलती है। १५ दिन के सेवन योग्य औषधियां ८.००

स्त्री सुधा—१ बोतल (६२६ मि. लि.) ५.५०, ८ औंस (२२७ मि. लि.) कार्डबोर्ड पैकिंग २.५०

मधुकाद्यवलेह—१५ तो. (१७५ ग्रा.) की शीशी ४.००

३—**हिस्टेरियाहर (हिस्टोजित) सैट**—स्त्रियों को दौरे से होने वाले इस रोग के लिए आशुलाभप्रद तीन औषधियों का व्यवहार अवश्य करावें। १५ दिन की तीन दवाओं का मूल्य १०.००

हिस्टेरियाहर आसव—२२ औंस (६२६ मि.लि.) ५.५०

हिस्टेरिया हर क्षार—आध औंस (१४ मि. लि.) २.५०

हिस्टेरियाहर वटी—३० गोली की शीशी २.५०

(४) **निर्बलता नाशक सैट**—अनुत्साह एवं निर्बलता से जीवन का आनन्द ही चला जाता है, गृहस्थी भारस्वरूप हो जाती है। इसके लिये निम्न तीन औषधियों का व्यवहार कर अपनी खोई हुई जवानी को फिर से प्राप्त करें।

मकरध्वज वटी—४१ गोलियों की शीशी ३.५०

धन्वन्तरि तैल—मुरदार नसों पर मालिश के लिए १ चौथाई औंस (१८ मि. लि.) की २.५०

धन्वन्तरि पोटली मिलाई करने को एक डिब्बा २.५०

तीनों औषधियों का सैट—मूल्य ९.०० पो व्यय २.

(५) **रक्तशोधहर सैट**—इसमें धन्वन्तरि आयुर्वेद सालसा परेला, तालकेश्वर रस, इन्द्रवारुणादि क्वाथ तीन औषधियां हैं। इनके विधिवत् प्रयोग करने से सर्व प्रकार के रक्तविकार दूर होते हैं। फोड़े, फुंसी, चकत्ता, आदि नष्ट होकर शरीर का रङ्ग-रूप निखर आता है। १५ दिन की तीनों औषधियों का मूल्य ९.००, पोस्ट व्यय ५.२५

धन्वन्तरि सालसा परेला—६२६ मि.लि. (१ बो) ५.

तालकेश्वर रस—५.८६ ग्राम (६ माशा) ४.००

इन्द्रवारुणादि क्वाथ—१२ मात्रा—१.५०

(६) **अर्शान्तिक सैट**—वटी, मलहम, चूर्ण यह तीनों औषधियां दोनों प्रकार के अर्श नष्ट करने के लिए सफल प्रमाणित हुई हैं। १५ दिन की दवाओं का मूल्य ६. पोस्ट व्यय १.००

अर्शान्तिक वटी—३० गोली की १ शीशी ३.००

अर्शान्तिक मलहम—१४ मि. लि. (आध औंस) शीशी १.५०

अर्शान्तिक चूर्ण—८७ ग्राम (७॥ तो.) १ शीशी २.

(७) **वातरोगहर सैट**, वात रोग हर तैल—रस अवलेह तीनों औषधियों का सेवन करने से जोड़ों का सूजन, अङ्ग विशेष की पीड़ा, पक्षाघात तथा सभी वात व्याधियों में अवश्य लाभ होता है। १५ दिन की तीनों दवाओं का मूल्य १०.००

वात रोग हर तैल—११४ मि. लि. (४ औंस) ३.

वातरोगहर अवलेह—२९ ग्राम (२॥ तोला) ४.

वातरोगहर रस—३.९० ग्राम (४ माशा) ५.००

नोट—वात रोगी यदि साथ में बिजली की मशीन का व्यवहार भी करें तो शीघ्र लाभ होगा, इसमें सन्देह नहीं। बिजली की मशीन का मूल्य ३५.०० है। डाक व्यय एवं सेलटैक्स आदि पृथक।

निर्माता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि त्रयोदशी के उपलक्ष में

(२० अक्टूबर से २० दिसम्बर सन् १९६८ तक)

विशेषांक रियायती मूल्य में

धन्वन्तरि के विशेषांक कितने उपयोगी होते हैं इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। जिसने धन्वन्तरि का एक भी विशेषांक देखा है वह धन्वन्तरि के उपलब्ध सभी विशेषांक प्राप्त न करना चाहे यह हो नहीं सकता। इस अवसर से आप भी लाभ उठायें। निम्न प्राप्य विशेषांकों में से जो विशेषांक आपके पास न हों उनको उस अवधि के अन्दर रियायती मूल्य से अवश्य मंगालें।

नाम विशेषांक	पूरा मू०	रियायती मू०
पुरुष रोगांक (राज संस्करण)	८.५०	५.५०
नारीरोगांक (नवीन संस्करण)	१०.००	६.५०
प्राकृतिक चिकित्सांक	८.५०	४.५०
यूनानी चिकित्सांक	८.५०	४.५०
यूनानी चिकित्सांक (राजसंस्करण)	८.५०	५.५०
वनौषधि विशेषांक प्र.भाग (रा.सं.)	१०.००	६.५०
वनौषधि विशे. द्वितीय भाग (रा.सं)	८.५०	५.५०
वनौषधि विशेषांक तृतीय भाग	८.५०	४.५०
" " (राजसंस्करण)	८.५०	५.५०
वनौषधि विशेषांक चतुर्थ भाग	८.५०	४.५०
" " " (राज. सं.)	८.५०	५.५०
शिशुरोगांक (राजसंस्करण)	८.५०	५.५०
कायचिकित्सांक (राजसंस्करण)	८.५०	५.५०
संक्रामक रोगांक	४.००	२.००
" " परिशिष्टांक	१.००	०.५०
कल्प एवं पंचकर्म चिकित्सांक	४.००	२.००
चिकित्सा समन्वयांक प्रथम भाग	समाप्त	
" द्वि. भाग	२.००	१.००
श्वास अङ्क (थीसिस)	१.५०	०.६०
श्वास अङ्क	१.००	०.६०
विषि विधानांक	२.००	१.००

नाम विशेषांक	पूरा मू०	रियायती मू०
पथरिया अङ्क	१.००	०.६०
कासरोगांक	१.००	०.६०
शूलरोगांक	१.००	०.६०
इञ्जेक्शन विज्ञानांक (प्र.भा.) द्वि.सं	३.००	१.५०
आयुर्वेद-शिक्षणांक	१.५०	०.६०
पक्षाघात अङ्क प्रथम-खण्ड	२.००	१.१०
पक्षाघात अङ्क-द्वितीय-खण्ड	२.००	१.१०
पंच कर्म विज्ञानांक	१.५०	०.६०

नियम—

१—यह रियायती मूल्य २० अक्टूबर से २० दिसम्बर १९६८ तक रहेगा, बाद में नहीं।

२—पोस्ट व्यय, पैकिङ्ग व्यय या रेल व्यय पृथक देना होगा।

३—अधिक विशेषांक रेल द्वारा मंगावें। स्टेशन का नाम लिखें तथा ५.०० एडवांस अवश्य भेजें। विशेषांक वजनी होते हैं। इस वर्ष काफी पोस्ट व्यय बढ़ गया है। यदि रेलवे स्टेशन आपके पास में है तथा स्टेशन से पार्सल छुड़ाने में आप कष्ट अनुभव न करें तो रेल गाड़ी से ही मंगावें।

४—इस रियायती मूल्य पर किसी प्रकार का कमीशन किसी को नहीं दिया जायगा।

५—विशेषांक के साथ अन्य पुस्तकें या अन्य कोई वस्तु पोस्ट द्वारा नहीं भेजी जा सकेंगी।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्तण्ड के आयुर्वेदिक इंजेक्शन तथा पैटेंट औषधियां

गत २० वर्षों से सहस्रों वैद्यों द्वारा लाखों रोगियों पर अनुभूत और विश्वसनीय इन चमत्कारी आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों और पेटेण्ट दवाओं से आप भी प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा और जनता का विश्वास प्राप्त कीजिये ।

मार्तण्ड फार्मेस्युटिकल्स, बड़ौत लाखों रुपये के वैज्ञानिक यन्त्रों और आटोमेटिक मशीनों से परिपूर्ण एयर कन्डीशन्ड लैबोरेट्री है । जिसमें औषध कानून के अन्तर्गत फार्मेस्युटिकल इञ्जनियरों और कैमिस्टों के उत्तरदायित्व में विटामिन्स, हार्मोन, एन्टीबायोटिक्स, सल्फाड्रग्स दवाओं तथा एलोपैथिक और आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों का निर्माण होता है ।

मार्तण्ड आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों के फार्मूलों में आयुर्वेद की युगों से अनुभूत और प्रसिद्ध जड़ी-बूटियों के क्रियाशील तत्वों के साथ साथ एलोपैथी की आधुनिक और प्रभावशाली औषधियां भी मिलाई गई हैं । इसलिये ये आयुर्वेदिक इञ्जेशन तत्काल लाभ करते हैं । ऐलोपैथिक इञ्जैक्शनों से भी ये अधिक गुणकारी होते हैं । पहले एक छोटा सा आर्डर भेजकर इनकी परीक्षा कीजिये । निश्चय ही आपको अपने आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों पर गर्व होगा ।

(१) **सोमा इञ्जेक्शनः**—दम्मा और श्वांस के दौरे में तुरन्त लाभ करता है । ६×१मि. लि. बक्स ३-३०

(२) **शूलान्तक इंजेक्शन**–उदर शूल, पार्श्व शूल, संधि शूल, सब वातिक शूलों के लिए रामबाण है । ६×१ ,, ,, २-४८

(३) **स्मृतिवा इंजेक्शनः**—मिर्गी, उन्माद, हिस्टीरिया, बच्चों के कमेड़े (आक्षेप) में ६×१ ,, ,, ५-५०

(४) **शरपुंखा इंजेक्शनः**–पाण्डु रोग, कामला, जिगर, तिल्ली, कमजोरी में लाभप्रद ६×२ ,, ,, ३-००

(५) **तापोकर इंजेक्शनः**–निमोनिया, नजला, जुकाम, इंफ्लुएञ्जा के लिए । ६×१ ,, ,, ३-३०

(६) **रासोन इंजेक्शनः**–गठिया वायु, संधि शोथ, सन्धि शूल, गृध्रसी में रामबाण ६×२ ,, ,, ३-००

(७) **प्रदरारी इंजेक्शनः**–रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, गर्भाशय शोथ, रजः विकारों में, ६×२ ,, ,, ३-००

(८) **प्रवाल इंजेक्शनः**–कमजोरी, कैलशियम की कमी, रक्तस्राव, रक्तपित के लिए ६×२ ,, ,, २-२०

(९) **पुनर्नोल इंजेक्शनः**–हृदय शूल, हृदयावरोध, तथा लगातार दमकशी में ६×२ ,, ,, २-५०

(१०) **पुनर्नवा इंजेक्शनः**–मूत्रल (पेशाब लाने वाला) इंजेक्शन है । ६×२ ,, ,, ३-००

(११) **मारुताशी इञ्जेक्शनः**–गठिया का दर्द, पुराना संधिशोथ, जोड़ों की सूजन में, ६×२ ,, ,, ३-००

(१२) **निडोरीन इञ्जेक्शनः**–मिचली, उन्माद, प्रलाप, मनोविभ्रम में आशुगुणकारी ६×२ ,, ,, २-५०

(१३) **क्लीवांतक इंजेक्शनः**–नपुंसकता, ध्वज भंग, जननेन्द्रिय की कमजोरी दूर करता है ६×१ ,, ,, ६-६०

(१४) **कुर्चोनम इंजेक्शनः**–सब प्रकार के अतिसार, खूनी पेचीस में आशुगुणकारी है ६×१ ,, ,, ६-००

(१५) **हिरण्य इंजेक्शनः**—दम्मे के दौरे में फौरन लाभ करता है । ६×१ ,, ,, २-७५

(१६) **गिरपार इंजेक्शनः**—वमन, हिक्का, स्वप्न दोष, बलगमी खांसी, उदर शूल, तथा सब प्रकार के शूलों के लिए रामबाण । ६×१ बक्स ,, २-५०

(१७) **दुग्ध प्रोटीन इंजेक्शनः**–गर्भाशय शोथ और फोड़े फुंसियों के लिये । ६×२ बक्स ,, १-६५

(१८) **हृदयामृत इंजेक्शनः**—दिल का दौरा, घबराहट सदमा, हृदय और फेफड़ों को उत्तेजित करता है, दिल को ताकत देता है । ६×१ बक्स ,, १-३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१९) **कार्डीनोल इञ्जेक्शन**—दिल का दौरा, हृदय बैठना, श्वास और दिल की मन्द गति को ठीक करता है। हृदयोत्तेजक है। ६×१ बक्स ३-५०

(२०) **विटामिन बी.** $_{१२}$ इंजेक्शन—रक्ताल्पता, पांडु रोग, कमजोरीके लिये प्रसिद्ध। ५ मि. लि. २-००

(२१) **पैरामोल टेबलेट**—पार्श्व शूल, सिर दर्द, कमर दर्द, दन्त दर्द तथा वर्षा, सर्दी से उत्पन्न बुखार को उतारने की सुरक्षित दवा है। स्ट्रिप १० टेबलेट १-५०

(२२) **पुनर्नोल टेबलेट:**—जलोदर और शोथनाशक है तथा मूत्र लाती है। २५ टेबलेट २-७४

(२३) **सल्फाआयोबेल टेबलेट:**—पेट में आंव, मरोड़ और खूनी पेचिश के लिए। २० टेबलेट ३-७५

(२४) **सर्पेन्थिन टेबलेट:**—कमेड़े, प्रलाप, उन्माद, मिर्गी, नींद लाने के लिए। २५ टेबलेट १-१२

(२५) **बजरंग तिला:**—नपुंसकता, जनेन्द्रिय की कमजोरी और शिथिलता के लिए। १ औंस ३-००

(२६) **अर्थोपाइरीन कैप्सूल:**—गठियावाय, संधि शोथ और दर्द के लिए रामबाण १०० टेबलेट ५-००

(२७) **क्लोरोमाइसीन कैपशूल:**—टायफाइड ज्वर, (म्यादी बुखार) की रामबाण दवा १२ कैप्सूल ३-५०

(२८) **क्लोरोफील स्ट्रेप्टो कैपशूल:**—पेचिस और टाइफायड के लिए अचूक दवा है। १२ कैप्सूल ४-५०

(२९) **सोमा टेबलेट:**—दम्मे में, श्वांस-प्रश्वांस और हृदय गति को नियमित करके नींद लाता है, श्वांस दम्मे की अनुपम औषधि है। २५ कैप्सूल ४-५०

(३०) **सोमा टेबलेट:**—श्वांस, कास, दम्मा, बलगमी खांसी की प्रसिद्ध दवा है। १०० टेबलेट ३-५०

(३१) **क्यूलोरीन टेबलेट:**—प्रदर और अनियमित रक्त स्राव की अचूक दवा है। १०० टेबलेट ३-००

(३२) **सेप्टीनाल:**—फोड़ा, फुन्सी, घाव जलन, त्वचा रोग कीट दंश के लिए, २० ग्राम टयूब १-५०

(३३) **कोडोपिल:**—सर्दी, बुखार, जुकाम, सिर दर्द, दन्त दर्द, कान दर्द, में आशुगुणकारी १० टेबलेट १-००

(३४) **एडकाल** (विटामिन ए. डी. ड्राप्स:)—जुकाम, दुर्बलता, कृमि दन्त में लाभप्रद १५ मि. लि. १-५०

(३५) **सिटामाइडोल:**—रोहें, गुहेरी निकलना, नेत्रशोथ, लालिमा के लिए। १० प्रतिशत मि. लि. १-२५

(३६) **प्रोमाइजीन:**—अलर्जी, खुजली, जी मिचलना, वमन में अचूक। २५ टेबलेट २-८२

(३७) **इप्रोनिल:**—मस्तिष्क के तनाव से उत्पन्न सिर दर्द, दिल की धड़कन, घबराहट में २५टेबलेट ३-२५

(३८) **इक्वीब्रीयम:**—मानसिक उत्तेजना, मनोविभ्रम, प्रलाप, निद्रानाश, उन्माद, मिर्गी अनेक रोगों में रामबाण है। १० टेबलेट स्ट्रिप १-२०

(३९) **प्रोमेक्टिल:**—मिचली, वमन, उन्माद, मनोविभ्रम, प्रलाप में अचूक। २५ टेबलेट १-६०

(४०) **रिंगकिल** (मरहम)—दाद, चमला तथा चर्म रोगों के लिए आदर्श एक शीशी ०-६०

(४१) **विटामिन बी** ^{१} (Vit. B_1 100 mg) टेबलेट:—वातरोगों में आशुगुणकारी १०० टेबलेट ३-५०

दीपावली उपहार:—प्रत्येक २५ रु० नेट के माल पर ६ प्रतिशत वैद्यकीय कमीशन के अतिरिक्त एक मानव शरीर क्रिया विज्ञान का २०×३० इञ्ची बड़ा रंगीन चित्र अथवा पैरामोल १० टेबलेट का एक स्ट्रिप पैकिंग मूल्य १ रु० ५० पैसे माल के साथ मुफ्त भेजा जावेगा। १०० रु० नेट का आर्डर देने पर कमीशन १२ प्रतिशत मिलेगा, विभिन्न ४ चित्र अथवा ४ पैरामोल स्ट्रिप उपहार में दिए जावेंगे तथा आपके नजदीक के रेलवे स्टेशन तक का मालगाड़ी का रेल भाड़ा भी हम सहन करेंगे। २ प्रतिशत सेल्स टैक्स और डाक खर्च पृथक लगेगा।

अपना शानदार जीवन बनाने के लिये इन भरोसे की चमत्कारी दवाओं का सहारा लीजिये।

प्रसिद्धि और नाम कमाइये।

मार्तण्ड फार्मेस्युटिकल्स, बड़ौत (दिल्ली के निकट) उ० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनौषधि-विशेषांक

(वनौषधि-विश्व कोष)

स्वर्गीय श्री पं. कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी ने लगभग १५ वर्ष पूर्व वनौषधि विषयक विशाल साहित्य लिखना प्रारम्भ किया था। उस साहित्य को हम पुस्तक रूप में प्रकाशित करना चाहते थे। लेकिन कतिपय कारणों से हम उसे पुस्तक रूप में प्रकाशित करने में असमर्थ रहे और उस अलभ्य साहित्य को धन्वन्तरि के विशेषांकों के रूप में प्रकाशित किया। इसके ४ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। पांचवा भाग वर्ष १९६९ में प्रकाशित किया जा रहा है। जो ४ भाग प्रकाशित हो गये हैं उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

प्रथम भाग—	पृष्ठ ५५२	वनौषधि--संख्या---१५१	अ से 'औ' तक की।
द्वितीय भाग—	पृष्ठ ५२८	,, ,, --२३१	क वर्ग सम्पूर्ण
तृतीय भाग—	पृष्ठ ५४४	,, ,, --२१४	च से ध तक
चतुर्थ भाग—	पृष्ठ ५००	,, ,, --१७४	न से व तक

कुल चार भागों में २१२४ पृष्ठ, ७१५ वनौषधियों का विस्तृत विवरण तथा हजारों प्रयोगों का संग्रह है

मूल्य—प्रथम भाग (द्वितीय संस्करण)	१०.००	रियायती मूल्य	६.५०
द्वितीय भाग	८.५०	,, ,,	५.५०
तृतीय भाग	८.५०	,, ,,	५.५०
चतुर्थ भाग	८.५०	,, ,,	५.५०
			२३.००

नोट—प्रथम भाग (द्वितीय संस्करण) की थोड़ी प्रति शेष हैं। तृतीय संस्करण छप रहा है।

पोस्ट-व्यय—१ भाग (कोई सा) मंगाने पर	१.५०
२ भाग ,, ,,	२.३०
३ भाग ,, ,,	३.२०
४ भाग ,, ,,	४.००

नोट—चारों भाग मंगाने के लिये पोस्ट व्यय सहित २७.०० मनियार्डर से भेजें। प्रथम भाग समाप्त हो गया था, पुनः छपाया गया वह भी थोड़ा बचा है, अन्य भाग भी समाप्त होने वाले हैं। अस्तु ग्राहकों को जो भाग उनके पास न हों इस समय रियायती मूल्य से मंगा लेने चाहिये।

पांचवां भाग वर्ष १९६९ में प्रकाशित होगा

इस भाग का लगभग ½ भाग स्वर्गीय त्रिवेदी जी द्वारा लिखा रखा है शेष ½ भाग को वैद्याचार्य श्री उदयलाल जी महात्मा बहुत परिश्रम तथा मनोयोगपूर्वक लिख रहे हैं। हमारा विश्वास है कि ग्राहक पूर्व के चार भागों के समान ही इस पांचवें भाग को भी अवश्य पसंद करेंगे।

आपके पास जो भाग न हों इस समय रियायती मूल्य से मंगा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की सबसे सस्ती हिन्दी की एलोपैथिक पुस्तक– 'चिकित्सा आलोक'

पुस्तक की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषतायें :–

● सन् १९६८ में छपी इस पुस्तक में कई सौ रोगों की एलोपैथिक पेटेण्ट "टेब्लेटों" "कैप्सूलों" पेटेण्ट "पेयों", "बूंदों" तथा "इन्जेक्शनों" द्वारा सफल चिकित्सा चार्टों में दी है। ● विश्वविख्यात डाक्टरों के कई सौ "अनुभव" दिए हैं। ● "बच्चों" के सौ के लगभग रोगों की "सरल एलोपैथिक चिकित्सा" चार्टों में दी है। ● कई सौ पेटेण्ट औषधियों की "मैटेरिया मेडिका" दी है। ● बैटरी के सैलों से चलने वाली 'बिजली की मशीन" से इलाज करना बताया है। "बैटरी वाली बिजली की मशीन" से इलाज करके आप अपनी आमदनी कई गुणा बढ़ा सकेंगे। ● कई सौ रोगों की 'विटामिन चिकित्सा" दी है। आप अपनी "आयुर्वेदिक" या "यूनानी" औषधियों के साथ साथ इन "विटामिनी औषधियों" को भी दीजिए, आपके रोगी शीघ्र "स्वस्थ" होंगे। ● दिसम्बर १९६७ तक की "काम विज्ञान" की "एशिया", "अफ्रीका" और "यूरोप" में हुई कई सौ नई नई खोजें दी हैं। ● "लूप" के बारे में नई से नई जानकारी देकर, "लूप" के दुरुपयोग से होने वाले विकारों की चिकित्सा भी दी है। ● "पुरुषों" तथा "स्त्रियों" के "गुप्त" रोगों की "एलोपैथिक चिकित्सा" चार्टों में दी है।

● १९६८ में छपी यह "चिकित्सा आलोक" नामक पुस्तक एलोपैथी की हिन्दी की, संसार की सबसे सस्ती और उत्तम पुस्तक है। सौ के लगभग चार्टों और चित्रों वाली पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया। एक रुपये का मनियार्डर भेज देने पर 'डाक खर्च माफ' करके यह पुस्तक आपकी सेवा में भेज दी जायेगी।

स्वर्णपदक प्राप्त डा० "कोकचा" की मशहूर मैडिकल पुस्तकों की एक झलक

१—एलोपैथिक पेटेण्ट चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा विश्वकोषः
१३०० के लगभग चार्टों चित्रों वाली पुस्तक का मूल्य केवल दस रुपये।
२—अनुभव के मोती—डाक्टरों के अनुभव तथा अनुभव विश्वकोषः छः सौ बहत्तर पृष्ठों वाली पुस्तक का मूल्य ६ रुपये।
३—इंजेक्शन चिकित्सा नवनीत चार्टसः सात सौ के लगभग चार्टें चित्रों से सजी पुस्तक का मूल्य ८ रुपये
४—निदान नवनीत चार्टस तथा निदान विश्वकोषः कई सौ चार्टों-चित्रों से सजी पुस्तक का मूल्य ८ रुपये।
५—काम विज्ञान विश्वकोष तथा आधुनिक काम विज्ञानः सन् १९६८ में छपी इस पुस्तक का मूल्य ८ रुपये।
६—परिवार नियोजनः सुख का आयोजनः २०० के लगभग चार्टों-चित्रों वाली पुस्तक का मूल्य ६ रुपये।
७—गुप्तरोग चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा गुप्तरोग विश्वकोष (बिजली की चिकित्सा सहित): मूल्य ३ रुपये।
८—पुरुष गुप्तरोग चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा पुरुष गुप्तरोग विश्वकोषः (विद्युत्चिकित्सा सहित): मूल्य २.५०
९—स्त्री रोग चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा स्त्री रोग विश्वकोष (बाल रोग परिशिष्ट सहित) मूल्य २.५०
१०—कामसूत्र नवनीत चार्टस (१६ परिशिष्टों सहित) (संस्कृत के कामसूत्र का चार्टों-चित्रों में अनुवाद) मूल्य ५.००
११—महर्षि वात्स्यायन के पत्र वयस्कों के नाम (परिवार नियोजन नवनीत सहित): मूल्य ५ रुपये।
१२—सरल चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा सरल चिकित्सा विश्वकोष (सितम्बर १९६८ में छपी हुई) मूल्य ३ रुपये
१३—अपटूडेट एलोपैथिक टेबलेट गाइड चार्टस तथा टेबलेट विश्वकोष—एक हजार के लगभग चार्टों-चित्रों वाली पुस्तक-रत्न का मूल्य केवल आठ रुपये। यह फरवरी १९६९ के आस-पास तैयार होगी।

नम्र निवेदन— ● "चिकित्सा आलोक" पुस्तक को छोड़ कर सभी पुस्तकों का डाक खर्च अलग होगा। ● केवल चिकित्सकों को दो आने रुपया कमीशन दिया जाता है। ● एक साथ दस रुपया से अधिक की पुस्तकें मंगाने पर "चिकित्सा आलोक" नामक पुस्तक बिना मूल्य (मुफ्त) भेजी जाएगी।

हिन्दी की मैडिकल पुस्तकें मंगवाने का एकमात्र विश्वस्त स्थान—

साधना प्रकाशन (रजिस्टर्ड) १७/१११ रोहतक रोड, नई दिल्ली–५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय—सूची

आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति	श्री बल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश'	८
चिकित्सकों के लिये स्पष्टीकरण	श्री प्रेम कुमार स्वन्नी ए. एम. बी. एस.	१०
युवानी पिड़का —मुहांसे	श्री वैद्य वागीशदत्त आयुर्वेदाचार्य	१२
आमवात	श्री डा० प्रभाकर चटर्जी आयुर्वेद बृहस्पति	१६
यक्ष्मा की सफल चिकित्सा	श्री लक्ष्मीचन्द्र गुप्त	२०
फोड़े और व्रण	आचार्य श्री चरणतीर्थ महाराज	२३
विविध इन्जेक्शन	श्री डा० पद्मदेव नारायण सिंह एम. बी. बी. एस.	२६
शरद के आहार विहार	श्री गोपाल जी द्विवेदी वैद्य	२९
शिलाजीत	श्री अम्बिका प्रसाद अवस्थी	३२
ज्योतिष और आयुर्वेद	विद्या वाचस्पति श्री गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'	३४
गोखरू	श्री वैद्य चन्द्रशेखर मिश्र	३७
चित्रक या चीता	श्री मक्खनलाल वैद्य भूषण	३८
मेरी सफल चिकित्सा विधि	श्री वैद्य हरिमोहन शर्मा	४०
यक्ष्मा पर अजा पंचक घृत	श्री वैद्य मदनलाल श्रोत्रिय	४२
गौ मांस न खाने का वैज्ञानिक रहस्य	श्री बल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश'	४२
परीक्षित प्रयोग	श्री डा० हरिश्चन्द्र त्रिपाठी	४४
	श्री रामरतन वैद्य	४४
	श्री कवि० जीवानन्द साहू	४४
	श्री डा० गेबी अली आयुर्वेद रत्न	४५
साहित्यालोचन	श्री अम्बिका प्रसाद अवस्थी	४६
विधि विधान प्रश्नोत्तर	श्री पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित	४८
स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी	श्री आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य आयुर्वेदार्य	४९
पाठकों के प्रश्न ...	... ...	५०
समाचार एवं सूचनायें ...	... ...	५१
परिवार नियोजन परिशिष्ट—		
परिवार नियोजन कार्यक्रम की महत्ता	श्री गोविन्द नारायण	५७
परिवार नियोजन समाज कल्याण का अनूठा कार्यक्रम	श्री दीपक भाटिया	६०
परिवार नियोजन में अग्रगण्य महाराष्ट्र के दो जिले		६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिताहितं सुखंदुःखमायुस्तस्य हिताहितम् ।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ।। —चरक सूत्र १—४०

अक्टूबर १९६८ | धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ द्वारा
मात्र चिकित्सकों के लिए प्रकाशित । | भाग ४२ अङ्क १०

धन्वन्तरि-वन्दन

गतिं ज्ञानिनां गीतिका गौरवं, गिरीशार्चितं गौरगीताङ्गणम् ।
गुरुं ज्ञानराशिं गवां वल्लभं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ।। १ ।।

चलच्चन्द्रचञ्चन्मरीचिस्फुरन्, मनोहारिहृद्धीरहारोज्वलम् ।
चराचारचर्याधि सञ्चालकं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ।। २ ।।

तरत्तुङ्गरङ्गाङ्गतीरोल्लस, तारङ्गान्वितांभोधिमध्योद्भवम् ।
तपः पूतवेषं तमालत्विषं, नमामीशमाचार्य धन्वन्तरिम् ।। ३ ।।

परं पूर्णपीयूषशुभ्रोदर,- दरामन्दचक्रारविन्दोत्करम् ।
पराभास–रत्नप्रभाभास्वरं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ।। ४ ।।

वियद्वारिवह्निप्रवातावनि- व्रज व्याधिविध्वंसनालम्बनम् ।
वरं विश्वरूपं विभुं व्यापकं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ।। ५ ।।

मिलन्मन्दरामन्दमन्दारक,-- मदोन्मादमाकन्दमञ्जुस्रजम् ।
मनस्तापसन्तापपापापहं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ।। ६ ।।

लसल्लोकतालोकलीलोज्वल-- विलोलालकोन्नालनीलोत्पलम् ।
ललामं लतोद्दाममन्दानिलं, नमामीशमाचार्य धन्वन्तरिम् ।। ७ ।।

—श्री आचार्य गौरकृष्ण गोस्वामी शास्त्री, काव्य पुराण दर्शनतीर्थ
रा. आयु. चिकि. मुस्तफाबाद, पो. आ. परखम, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति

श्री बल्लभदास बिन्नानी "ब्रजेश" साहित्यरत्न, साहित्यालंकार

भारतीय प्राचीन चिकित्सा के इतिहास का विषय केवल चिकित्साशास्त्रियों के लिये ही नहीं अपितु इस पद्धति से अनजाने व्यक्ति के लिये भी कम आकर्षक नहीं है। एक चिकित्सा छात्र के लिये तो प्राचीन हिन्दुओं के चिकित्सा ज्ञान की जानकारी रखना परम आवश्यक है। उक्त ज्ञान से हमें उन प्राचीन हिन्दुओं की विज्ञान एवं कला के क्षेत्र में अपूर्व गौरवपूर्ण उपलब्धियों का पता चलता है।

यह दुर्भाग्य का ही विषय है कि चिकित्सा इतिहासकारों ने, जिनमें अधिकतर पाश्चात्य विद्वान थे प्राचीन भारत के अनुदान को मान्यता तथा रुचि ही प्रदान नहीं की यद्यपि प्राचीन यूनानी इतिहासकारों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों ने अपने ग्रंथों में हिन्दुओं की उपलब्धियों का गुणानुवाद किया है। इन पाश्चात्य इतिहासकारों ने रोम, मिस्र तथा यूनान के विविध विद्वानों को तो श्रेय प्रदान कर दिया परन्तु प्राचीन भारतीयों के प्रचुर प्रमाण, उपाख्यान भरे रहने पर भी इनके बारे में कुछ कहा ही नहीं। यह रवैया १८ वीं शताब्दी के शेषांश तक बना रहा। भारतीय शास्त्रों की उपेक्षा का एक कारण यह है कि प्राचीन ग्रन्थ पाश्चात्य भाषाओं में नहीं थे तथा दूसरे पश्चिम के वैज्ञानिक तो प्राच्य चिकित्सा पद्धति को नीमहकीमी तथा रहस्यवाद के सांचे में ढली हुई ही माने जा रहे थे। परन्तु मोहञ्जोदड़ो तथा हड़प्पा में हाल ही की गई खुदाई के फलस्वरूप पाश्चात्य विद्वानों को भारतीय चिकित्सा पद्धति के प्रति अपने विचार बदलने पड़े हैं। उस खुदाई से स्पष्ट ज्ञात होता है कि भारतीय सभ्यता तो यूनान तथा मिस्र की सभ्यता से काफी प्राचीन है। जहां तक इन देशों में वैज्ञानिक सम्बन्धों का प्रश्न है यूनान और मिस्र भारत के पथप्रदर्शक नहीं बल्कि अनुगामी ही कहे जा सकते हैं।

सांस्कृतिक परम्परा

प्राचीन काल से ही भारतीय परम्परा अक्षुण्य रहती चली आयी है परन्तु चूं कि यह परम्परा अधिकतर मौखिक रूप से ही चलती आ रही थी इसलिये हमारे पास अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि या सांस्कृतिक परम्परा के प्रमाण अधूरे ही पड़े हैं। हमारे पास कोई पूर्ण लिपिबद्ध प्रमाण ग्रन्थ नहीं है। सम्प्रति अधिकांश ग्रन्थ संस्कृत में ही लिखित हैं तथा हस्तलिखित हैं। और जो मुद्रित हैं वे भी पुनः सम्पादित किये जाने योग्य हैं तथा इन सबों को क्षेत्रीय भाषाओं में अनूदित किया जाना चाहिये ताकि जनसाधारण को इनको समझने में सुगमता मिले। इसके अलावा हमारे प्राचीन चिकित्सा शास्त्र शदियों से ही वैद्य परिवारों में ही रहस्यवत् छिपे रहे क्योंकि वे अपना आयुर्वेद ज्ञान किसी अन्य को देना नहीं चाहते थे। १८ वीं शताब्दी के अन्तिम काल में कुछ अंग्रेज, फ्रांसीसी, जर्मनी विद्वानों ने पश्चिम को प्राचीन भारत के साहित्य भण्डार का ज्ञान कराया। भारतीय चिकित्सा पद्धति के प्रति १६२३ में ज्ञान हुआ जब विनसन शेल, वाइज, स्टेजलर जैसे विद्वानों ने भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति याने आयुर्वेद पर कतिपय पुस्तकें लिखीं। हेसलर ने लैटिन भाषा में सुश्रुत संहिता का अनुवाद कार्य किया तथा वेल्स ने जर्मनी में। और तब से अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति पर कई यूरोपीय भाषाओं में अनेक ग्रन्थ का अनुवाद व सम्पादन कार्य किया। अभी भी आयुर्वेद पर संस्कृत भाषा में लगभग डेढ़ हजार हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जो अप्रकाशित ही हैं। विश्व की प्रमुख भाषाओं में इनका भी अनुवाद किया जाना चाहिए।

आयुर्वेद बनाम पश्चिम

यूरोप में न्यूटन तथा हार्वे का जन्म भी नहीं हुआ था, उससे पहले ही गुरुत्वाकर्षण तथा रक्त संचालन का ज्ञान भारतीयों को था। ईसा के पांच सौ वर्ष पूर्व तथा आइस्टाइन के जन्म से २४०० वर्ष पहले ही गंगा की उपत्यकाओं में भारतीय विद्वानों ने आणविक पद्धति का प्रसार कार्य अपना रखा था। चन्द्रगुप्त के समय में शव परीक्षण (पोस्टमार्टम) किया जाता था। सुश्रुत को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...क्षण का ज्ञान था। क्षयरोग, धनुषटंकार, मलेरिया, ...ठरोग, चेचक, पीलिया आदि रोगों की जानकारी ...चीन भारतीयों को भी थी। ईसा से १ हजार वर्ष पूर्व ...त चमत्कारपूर्ण व विस्मयात्मक शल्यकार्य किया करते ... औषधियों तथा शल्य क्रिया पर सारगर्भित विशद ग्रंथ ...त: चरक तथा सुश्रुत ने ही सर्वप्रथम लिखे थे।

...युर्वेद की पृष्ठभूमि —

भारतीय चिकित्सा पद्धति का आरम्भ कब हुआ इसका ...माण कथन विवादपूर्ण है। किन्तु अधिकांश मान्यता ... तथ्यों को दी जाती है कि दक्ष प्रजापति ने सृष्टिकर्त्ता ...ह्मा से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया। बाद में प्रजा-...ति ने देवताओं के चिकित्सक युगल अश्विनी कुमार को ... शिक्षा दी। इस पद्धति से ही अश्विनी कुमार ने इन्द्र ...था चन्द्रमा के रोग नष्ट किए। अन्य देवताओं का भी ...होंने सफल उपचार किया। महर्षि च्यवन का काया-...ल्प (पुनर्यौवन) भी अश्विनी कुमारों ने ही किया था। ...युर्वेद में एक औषधि का नाम च्यवनप्राश इसीलिए है। ...रत के सन्त साधुओं ने सर्व सम्मत होकर भारद्वाज को ...न्य चिकित्सक द्वय के पास भेजा। फिर भारद्वाज ने ... सन्तों को आयुर्वेद की शिक्षा दी। इन्हीं में अलेप भी ...जो भारतीय औषधियां के जनक कहलाये। अलेप ने ...तुकर्ण, पाराशर, क्षीरपाणि, हारित, भेल आदि को ...चिकित्सा शास्त्र पढ़ाया। आयुर्वेद की, भूमिका के सम्बन्ध ... विभिन्न उपख्यान हैं परन्तु लेदेकर बाद में यही कहा जाता ...कि मानव का चिकित्सा विज्ञान देवराज इन्द्र से मिला। ...स विश्व में जैसी भी चिकित्सा प्रणालियां चल रही हैं उन सब का आधार चरक और सुश्रुत की चिकित्सा नीतियां ही हैं जिनसे अरबी, पारसी, लैटिन, आदि अनेक भाषाओं में ग्रन्थ अनूदित हो गये। थे यूनानी चिकित्सक पद्धति के जनक पिथागोरस तथा आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा के जन्मदाता हिप्पाक्रट्स। पर प्राचीन हिन्दुओं तथा बौद्धों की चिकित्सा प्रणालियों का ही प्रभाव है। पुरातत्व उत्खनन, परम्परा लोकसाहित्य, वेद, उपनिषद् पुराण भारत ये प्राचीन वैद्य ग्रन्थ, प्राचीन चित्रों में चिकित्सा विषय, शिलालेख, मन्दिर मठ कई साधन हैं जिनके द्वारा प्राचीन भारतीय चिकित्सा अर्थात् आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास हम सहज ही जान सकते हैं। आयुर्वेद जगत में भगवान धन्वन्तरि का नाम अमर है। हजारों वर्ष बीत गए परन्तु हमारे देश में अभी आयुर्वेद प्रणाली अमर अवस्था में ही विद्यमान है यद्यपि मुगलों के शासन काल, ब्रिटिश राज्य के समय इस पद्धति को कम आघात नहीं पहुंचाया गया। आज एलोपैथी देश भर में विस्तार पा रही है फिर भी आयुर्वेद का अपना महत्व है जिसे बहुत देर के बाद सरकार ने अनुभव किया है। कई राज्यों में आयुर्वेद के प्रति राजकीय सजगता उत्पन्न हुई है। हम स्वराज्य में ही यदि स्वेदशी पद्धति को उच्च पदासीन न कर सके तो यह लज्जा की बात होगी।

—श्री बल्लभदास बिन्नानी "ब्रजेश"
साहित्य रत्न, साहित्यालंकार
४३, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता—७

धन्वन्तरि कुमार्यासव
यकृत विकार एवं कब्ज़ी के लिये उत्तमोत्तम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सकों के लिये स्पष्टीकरण

श्री प्रेमकुमार स्वन्नी, ए. एम. बी. एस.

चिकित्सकों की सेवा में मैं कुछ रसों का स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझता हूं क्योंकि इनके स्पष्टीकरण के बिना चिकित्सक को भ्रान्ति होती है तथा औषधि फार्मेसी से मंगवाते समय अधिकार और ग्रन्थ का विस्तार से लिखना आवश्यक होता है नहीं तो लाभ की बजाय हानि उठानी पड़ती है।

निम्न रसों का अधिकार और ग्रन्थ के अनुसार विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण इस प्रकार है—

बसन्ततिलक रस (भैषज्य रत्नावली)

प्रमेह अधिकार

लोहभस्म, बङ्गभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, सुवर्णभस्म, अभ्रक भस्म, मूंगाभस्म, मोती भस्म, जावित्री, जायफल, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, प्रत्येक समभाग, इन्हें एकत्र मिलाकर त्रिफला के क्वाथ में मर्दन कर २ रत्ती की वटी बनावें इसमें वैद्य रोगानुसार अनुपानों की कल्पना करें।

बसन्त तिलक रस (भैषज्यरत्नावली)

कास अधिकार

स्वर्ण भस्म १ तोला, अभ्रक भस्म २ तोले, लोह भस्म ३ तोले, पारद ४ तोले, गन्धक ४ तोले, बङ्गभस्म २ तोले, मुक्ताभस्म ४ तोले, मूंगा भस्म ४ तोले, इन्हें गोक्षुर (गोखरू) बासा (अडूसा) तथा ईक्षु (ईख) के रस में मर्दन कर सम्पुट में बन्द करें और जंगली उपलों से ७ बार पुटपाक करें। पश्चात औषधि को निकाल कर कस्तूरी तथा कपूर मिश्रित कर घोट लें। मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक।

विशेष वचन —

(१) बसन्ततिलकरस जो प्रमेहअधिकार का है इसके सेवन से सम्पूर्ण वात रोग, अपस्मार, विशूचिका, क्षय, उन्माद, शरीर स्तम्भन एवं प्रमेह प्रभृति रोग शांत होते हैं। नाड़ी दौर्बल्य तथा नाड़ीशूल में विशेष रूप से कार्य करता है।

(२) बसन्त तिलक रस जो कास अधिकार का है इसके सेवन से कास, श्वास, पित्त, वात, कफ, पांडु, क्षय, शूल, ग्रहणी, विषदोष, प्रमेह, अश्मरी, हृद्रोग तथा ज्वर आदि नष्ट होता है। वृष्य, आयुष्य तथा पुष्टिकर है। यह रस मृत्युञ्जय (शिव) ने कहा है।

श्वास कास चिन्तामणि रस

(श्वास अधिकार)

रस योग सागर

शुद्ध पारद, सुवर्णमाक्षिक भस्म, सुवर्ण भस्म तीनों १-१ तोला, मुक्ता पिष्टी ६ माशे, शुद्ध गन्धक और अभ्रक भस्म २-२ तोले और लोह भस्म ४ तोले लेवें।

पहले पारद गन्धक मिलाकर कज्जली करें। फिर शेष भस्म मिला कटेली रस, बकरी का दूध, मुलहठी

श्वास चिन्तामणि

(हिक्का श्वास अधिकार)

(भैषज्यरत्नावली)

लोह भस्म ४ तोले, गन्धक २ तोले, अभ्रक भस्म ३ तोले, पारद १ तोला, मुक्ता भस्म आधा तोला, सुवर्ण भस्म आधा तोला, इन्हें छोटी कटेरी के रस, अदरख के रस, बकरी के दूध से तथा मुलहठी के क्वाथ से क्रमशः मर्दन कर २ रत्ती की गोली बनावें।

श्वास कास चिन्तामणि

(हिक्का श्वास अधिकार)

रसेन्द्रसार संग्रह

शुद्ध पारद, स्वर्ण माक्षिक भस्म और स्वर्ण भस्म ये तीनों एक-एक भाग, मोती भस्म आधा भाग, शुद्ध गन्धक एक भाग, अभ्रक भस्म दो भाग और लोह भस्म चार भाग लेकर कज्जली करें। फिर सबको एक साथ घोटें। घुट जाने पर कटेरी मुलहठी तथा पान के रस और बकरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का क्वाथ और नागरबेल के पान के रस की क्रमश: ७-७ भावनायें देकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लेवें।

मात्रा—१-२ गोली, दिन में २ या ३ बार, शहद, पीपल या रोगानुसार अनुपान के साथ दें।

अनुपान—बहेड़ा चूर्ण (और मधु)।

के दूध, इनमें अलग अलग सात बार भावना देकर दो-दो रत्ती की गोलियां बनालें।

पिप्पली और मधु में मिलाकर यदि इस रस का सेवन करें तो श्वास और कास दोनों ही निवृत हो जाते हैं।

विशेष वचन—

श्वास चिन्तामणि जो रस० यो० सा० का श्वास अधिकार का है इसके सेवन से कफ स्राव होता है और यह फुफ्फुस जलावर्द्धक, रक्तपौष्टिक और समशीतोष्ण है तथा इसका प्रयोग जीर्णश्वास रोग में जो हर समय रहता है, सफल सिद्ध हुआ है। इसका प्रयोग श्वास चाहे मूलकारण हो, चाहे किसी रोग का उपद्रव स्वरूप हो या अन्य विकृति से हो, यह रस सर्व प्रकार के श्वासरोगों में सफलतापूर्वक प्रयोग कराया जाता है जैसे हृदय की दुर्बलता से, पाण्डु रोग से, विषमज्वर या मन्थरज्वर के दीर्घकाल तक रह जाने से, आमवात से इत्यादि। यह श्वासचिन्तामणि रस श्वास के आक्षेप के समय सेवन नहीं किया जाता क्योंकि इससे उस समय कोई लाभ नहीं होता। इस रस का सफलतापूर्वक प्रयोग धूम्रपान वालों के श्वास में, वृद्धावस्था के श्वास में, वंशागत श्वास और हिक्का सहित श्वास में होता है।

सूचना—श्वास रोगी को मलावरोध हो तो उसे दूर करना चाहिये। श्वास आक्षेप हो तो उस समय आक्षेप शामक उपचार करना चाहिये जैसे श्वासचिंतामणि भैषज्यरत्नावली का श्वास अधिकार का प्रयोग कराना चाहिये अथवा श्वास कुठाररस।

श्वास चिन्तामणि (भैषज्यरत्नावली)—इसमें अदरक के रस की भावना दी गई है और इसका प्रयोग जिस समय दमे का दौरा हो सेवन करना विशेष लाभकारी है। इसके सेवन से श्वास, कास तथा राजयक्ष्मा में बहुत लाभ होता है।

श्वास कासचिन्तामणि नाम से जो योग रसेन्द्रसारसंग्रह में है उसमें स्वर्णभस्म भैषज्यरत्नावली के श्वास चिन्तामणि से दुगनी है और भावना में अदरक के रस के स्थान पर पान के पत्ते का रस है।

—श्री प्रेमकुमार स्वन्नी ए० एम० बी० एस०
राजकीय चिकित्सालय हररायपुर,
पों० मानपुरा (अम्बाला) पंजाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवान पिडका—मुँहासे

श्री वागीशदत्त वैद्य आयुर्वेदाचार्य

आयुर्वेद शास्त्रों में इस रोग का नाम युवान पिडका है। माधव निदान ने क्षुद्र रोग निदान में इसके लक्षण लिखते हुए मधुकोष व्याख्या में (लोके वरण्डका उच्यते) लिखा है। सुश्रुत ने क्षुद्र रोग चिकित्सा में इसका नाम पद्मिनी कण्टके लिखा है। (पद्मिनी कण्टके रोगे छर्दयेन्निम्ब वारिणा)। भाव प्रकाश ने युवान पिडिका तथा मुखदूपिका ये दो नाम लिखे हैं। (युवानपिडका यूनां ज्ञेयस्ताः मुखदूपिकाः)। रस रत्न समुच्चय ने "आनन दूपिका" नाम से संकेत मात्र किया है। उक्त नाम से चिकित्सा प्रदर्शित नहीं की है। चक्रदत्त ने भी चिकित्सा में 'पद्मिना कण्टक' नाम से चिकित्सा मात्र का उल्लेख किया है। (निम्बोदकेन वमनं पद्मिनी कण्टके हितम्)। शार्ङ्गधर ने 'तारुण्य पिडिका' नाम से चिकित्सा ही का निर्देश किया है। (लोध्र धान्य वचालेपस्तारुण्य पिटिकापहः)। वाग्भट्टकृत अष्टांग हृदय मुखदूषिका एवं पद्म कण्टक इन दो नामों का उल्लेख करता है। यथा—

रोध्र कुस्तुम्बुरु वचा प्रलेपो मुखदूषिका।
निम्वाम्बु वांतो निम्बाम्बु साधित पद्मकण्टके॥

चरक इसके सम्बन्ध में मौन ही प्रतीत होता है। यथासम्भव सभी ग्रन्थों से नाम उद्धृत कर दिए हैं। भ्रम का स्थान छोड़ा नहीं गया है।

इसके उपरांत सब ग्रन्थों के अनुसार निदान लिखकर चिकित्सा पर भी प्रकाश डालूंगा जिससे पाठकों को पढ़ने में रुचि हो एवं मेरे किये परिश्रम से लाभान्वित हों। प्रथम माधव निदान के ही लक्षणों पर प्रकाश डालता हूँ।

शाल्मली कण्टक प्रख्याः कफमारुत रक्तजाः।
युवान पिडका यूनां विज्ञेया मुखदूषिकाः।

मा. क्षु. नि.

शाल्मली लोक भाषा में सेमल नाम से प्रसिद्ध है। इस वृक्ष की शाखाओं में गेहूं को समान लम्बे, मूल में स्थूल उर्ध्वांश में कांटों का सूच्याकार होता है। इन्हीं कां[टों से] युवान पिडकाओं की उपमा दी गई हैं। यह रोग म[ाधव] निदानानुसार कफ मारुत रक्तज है प्रायः युवावस्था [में] होता है। युवकों तथा युवतियों को एक समान ही [होता] है। वात से वृद्ध कफ कुपित होकर रक्त को दूषित [करते] हैं क्योंकि (नहि समानस्थो दोषो विकार जनयति) स[मा]वस्था में वात पित्त, कफ कभी दोष नहीं होते। वि[षमा]वस्था प्राप्त कर ही दोष विकार को उत्पन्न करते हैं [दूष]णाद्दोषाः' दूषित होने से दोष बनते हैं अन्यथा शरी[र का] पोषण करते हैं—

विकारो धातु वैषम्यं साम्यं प्रकृतिरुच्यते।
सुख संज्ञकनारोग्यं विकारो दुःख मेवच॥

च. सू.

शरीर के धातु वात, पित्त, कफ की विषमता का ही "विकार" अर्थात् रोग है और धातुओं का [साम्य] अर्थात् अनुकूलता रहने का नाम 'प्रकृति' है। आरो[ग्य] ही सुख है, रोग का होना दुख है—

रोगास्तथा न जायन्ते प्रकृतिस्थेषु धातुषु।
धातवश्चाभिवर्धन्ते जरामांद्यमुपैति च॥

—च. सू.

रस रक्तादि धातुओं के प्रकृतिस्थ होने से श[रीर में] दोषजन्य रोग नहीं होते। धातुयें बढ़ती हैं, बुढ़ापा नहीं आता। वात, पित्त, कफ आदि धातु विपरीत [आहार] विहार से बढ़ घट जाते हैं वे ही अनेक रोगों की [उत्पत्ति] करते हैं। वे ही समानावस्था में शरीर का पालन करते हैं। पित्त एवं कफ स्वयं तो एक लंगड़े के स[मान हैं] कुपित हुआ वायु ही इनको लेजाता है (पित्तं पङ्गु [कफः] पंगु पङ्गवोमल धातवः, वायुनायत्र नीयन्ते तत्र ग[च्छन्ति] मेघवत्) कुपित हुआ वायु, कफ को तथा पित्त को [भी] एक साथ दोनों को लेकर मेघ के समान जहां भी रुकता है (वृष्टि कर देता है) उसी स्थल को [रोगी] कर देता है।

ठीक इसी प्रकार युवावस्था में संयत जीवन न [रहने से,] जिह्वा चापल्य एवं मन चाञ्चल्य से वातादि दू[षित हो] जाते हैं जिससे कि सहसा स्वाभाविकतया मुख पर [यह] रोग उत्पन्न होता है। प्रायः अधिकयेन यह पि[डिकायें] रात्रि में निकलती हैं। प्रातः काल मुख पर हाथ [फेरने से] प्रतीत होती हैं। इनमें इस समय किसी प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होती, दाह एवं कण्डू भी नहीं प्रतीत होती। जैसे जैसे समय निकलता जाता है वृद्धि होती जाती है। दो तीन दिन के उपरान्त इनका मुख श्वेत हो जाता है। एक सप्ताह में मुख पर कांटे के तुल्य अनेकों पिडका निकल आती हैं। इनमें से एक प्रकार का द्रव पदार्थ निकलना प्रारम्भ हो जाता है जो कि प्रत्येक समय ही स्रवता रहता है। स्रवण समय में तोद (सुई चुभने जैसी पीड़ा) होती है। दाह एवं कण्डू भी होने लगती है। इस द्रव पदार्थ को पूय नहीं कह सकते। श्वेत रंग का घनत्व लिये हुए लसीका जैसा पदार्थ होता है। उस समय रोगी अत्यन्त कष्ट का अनुभव करता है। ये सब लक्षण किसी ग्रन्थ में नहीं लिखे हैं। जिस रोगी की मैंने चिकित्सा की थी उसी रोगी के कथित और दृष्टि को प्रत्यक्ष करके लिख रहा हूं इस समय रोगी जो कि नितान्त स्वस्थ है मेरे सम्मुख बैठा है जिसको ६ मास व्यतीत हुये स्वास्थ्य लाभ कर चुका है इसके मुख से निःसृत शब्द अधोलिखित हैं—

प्रश्न—ये फुंसियां आपके कब निकलीं ?

उत्तर—इनको निकले हुए लगभग ८ मास हुए हैं।

प्रश्न—(मैं) आपने आठ मास से चिकित्सा नहीं कराई ?

उत्तर— जब से ये फुंसियां निकली हैं तब ही से चिकित्सा करा रहा हूं किन्तु अभी तक कोई लाभ नहीं हुआ। एलोपैथिक चिकित्सा करवाई, इन्जेक्शन लगवाये, एवं दवायें बहुत खायीं। किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ है। डाक्टरों ने दूध, घी आदि भी बन्द किए हुए थे। दो मास तक उनके बतलाये पथ्य करता रहा हूं किन्तु रोग वृद्धि पर ही है। लाभ लेश मात्र भी नहीं हुआ।

प्रश्न—इनकी प्रारम्भावस्था क्या थी ? इनमें कुछ कष्ट तो नहीं मालूम होता ?

उत्तर—मैंने कुसंग में पड़ने से अण्डे और चाय का अधिक मात्रा में सेवन किया, ग्रीष्म ऋतु में भी सेवन करना नहीं छोड़ा, अब अण्डे तो छोड़ दिए हैं किन्तु चाय तो ४, ५ कप अवश्य ही पीता हूं। लगभग आठ नौ मास व्यतीत हुए एक रात्रि को जागने के उपरांत मुख पर हाथ फेरा तो कुछ उठा उठा सा प्रतीत हुआ। मैंने शीशे में मुख देखा तो बहुत छोटी सी रक्त वर्ण की फुंसी देखी किंतु किसी प्रकार की पीड़ा आदि नहीं थी। मैंने कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया। नित्य प्रातः काल दो चार बढ़ती हुई और कष्ट से बढ़ती हुई तथा उठती हुई प्रतीत होने लगीं जब दोनों कपोलों और नाक पर निकल आयीं तो मुझे कुछ चिन्ता हुई। इस मध्य में कभी किसी के कभी किसी के बतलाये उपाय करता रहा। ज्यों ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता गया यह उक्ति चरितार्थ हुई है। और अब यह अवस्था है जिसे आप देख रहे हैं। प्रत्येक समय रूमाल कपोलों पर ही रहता है अर्थात् निकला हुआ पानी पोंछता ही रहता हूं। अब तो यह दशा है कि निकली हुई फुंसी दूसरे ही दिन सफेद मुख धारण कर फूट जाती है और कांटे के समान अथवा सुइयों जैसी चुभन होती है। देखिये अब तो ये फुंसियां मेरे सिर, गले तथा छाती पर भी निकल आयीं हैं। हां यदि मिर्च खटाई खाना बन्द कर दूं तो इतनी कष्ट दशा प्रतीत नहीं होती। मुझे कभी कभी तीसरे चौथे दिन वीर्यपात भी होता है। ये सब रोगी के कथित प्रश्नोत्तर पाठकों के समक्ष लेख बद्ध कर दिये गये हैं। युवतियों के सम्बन्ध में भी प्रायः यही कारण दृष्टिपथ पर आये हैं। इनके भी इसी प्रकार फुंसियां निकलकर मुख का सौन्दर्य सदा सदा के लिये लुप्त हो जाता है। इनको भी चाट आदि खटाई खाने का स्वभाव होता है। अतः इनको भी कुमार्यावस्था में ही श्वेत व रक्तप्रदर हो जाता है। मुख पर फुंसियां या मुंहासें निकलने प्रारम्भ हो जाते हैं। मैं उपर्युक्त लक्षणों के अनुसार इसमें तीनों ही दोष मानता हूं वात, पित्त, कफ के विषम होने पर स्वयं दूषण बनकर रक्त को भी दूषित कर देते हैं। मैंने इसी को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा प्रारम्भ की थी।

निदान तथा चिकित्सा सुश्रुतानुसार–

शाल्मली कण्टकप्रख्याः कफमारुत शोणितैः।
जायन्ते पिडका यूनां वक्त्रे या मुखदूषिकाः॥
—सु० नि० १३ अ०

इस श्लोक के माधव निदान के तुल्य ही लक्षण हैं अतः पुनरावृत्ति उचित नहीं।

कण्टकैराचितं वृत्तं कण्डूमत् पांडु मंडलम्।
पद्मिनी कण्टक प्रख्यैस्तदाख्यं कफवातजम्॥
—सु० नि० १३ अ०

'यह श्लोक कुछ विशेष ज्ञान कराता है। कण्डू वाला एवं कांटों से व्याप्त, गोल पाण्डु मण्डल कमलिनी के कांटों के सदृश होने से पद्मिनी कण्टक नाम है जो कि कफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वात से उत्पन्न हुआ रोग है। कमलिनी नाल में छोटे छोटे कांटे होते हैं। इसकी उपमा होने से सुश्रुत ने यह नाम भी दिया है। उपर्युक्त श्लोक कफ वात शोणित से पिडकाओं को मानता है किन्तु द्वितीय श्लोक पद्मिनी कण्टक नाम देता है केवल कफ वात से ही मानता है।

चिकित्सा--

यौवनेपिडकास्वेव विशेषाच्छर्दनं हितम्।
लेपनञ्च बचारोध्र सैन्धवैः सर्षपान्वितैः॥
कुस्तुम्बुरुबचालोध्र कुष्ठैर्वालेपनंहितम्।
पद्मिनी कण्टके रोगे छर्दयेन्निम्बवारिणा॥

—सु० चि० अ० २०

युवा अवस्था की पिडकाओं में ही विशेषरूप से वमन हितकारी है। सरसों से युक्त बच, लोध और सैंधव का लेप बना कर लगाना चाहिये। पद्मिनी कण्टक रोग में नीम से निसृत जल से वमन कराना चाहिए। मेरे विचार से नीम के जल का ग्रहण सम्भवतः निम्बत्वक् क्वाथ से प्रतीत होता है क्योंकि यह कदाचित ही नीम से स्रुत हुआ प्राप्त होता है।

तेनैवसिद्धं सक्षौद्रं सर्पिः पानं प्रदापयेत्।

—सु० चि० अ० २०

उस नीम के ही जल से सिद्ध घृत मधु के साथ पीने को देना चाहिये।

वाग्भट्ट कृत अष्टांग हृदय चिकित्सा एवं निदान और लक्षण

शाल्मली कण्टकाराः पिटिकाः सरुजो घनाः।
मेदोगर्भा मुखे यूनां ताभ्यां च मुख दूषिकाः॥
ते पद्मकण्टका ज्ञेयाः यैः पद्ममिव कण्टकैः।
चीयतेनीरुजैःश्वेतैः शरीरं कफवातजैः॥

—वा० क्षुद्र० विज्ञा० अ० ३१

बहुत सी पिडका पीड़ा के सहित सेमल वृक्ष के कांटों के आकार वाली मेद धातु से भरी हुई वात कफ से उत्पन्न हुई युवा पुरुषों के मुख पर निकलती हैं उनको मुख दूषिका कहते हैं।

कफ वात से उत्पन्न हुये श्वेत बिना पीड़ा के जो कांटे कमल के कांटों के सदृश शरीर पर व्याप्त होते हैं वे पद्मकण्टक कहलाते हैं। अष्टांग हृदय के अनुसार निदान और लक्षणों के बाद चिकित्सा भी अधोलिखित देखिये। चिकित्सा भी आविकयेन सुश्रुत के तुल्य ही है जिस प्रकार निदान और लक्षणों में कोई विशेष भेद नहीं है। सुश्रुतरक्तज भी मानता है वाग्भट्ट मेद पूरित मानता है। चिकित्सा में वमन का विधान दोनों ही ने किया है। विरेचन की ओर दोनों ने कोई ध्यान नहीं दिया जबकि वमन के उपरान्त विरेचन मैं अनिवार्य समझता हूं क्योंकि ऊर्ध्वगत श्लेष्मा का शोधन होगया पर अधोगत विकृति कर सकता है अतः मैं अधोगत शोधन के लिए विरेचन अत्युपयुक्त समझता हूं।

रोध्रकुस्तुम्बुरुबचा प्रलेपो मुख दूषिके।
वटपल्लव युक्तावा नारिकेलोत्थशुक्तया॥
अशान्तौ वमनं नस्यं ललाटे च सिराव्यधः।
निम्बाम्बु वांतो निम्बाम्बु साधितं पद्मकण्टके॥
पिबेत्क्षौद्रान्वितं सर्पिर्निम्बारग्वध लेपनम्।

—बा० क्षु० प्रति० अ० ३२

नारियल के जल से लोध्र, धनिया, बच का लेप, अथवा बड़ के पत्तों का लेप करें। यदि शांत न होती हो तो वमन, नस्य और मस्तक की शिरा का वेध करें। चिकित्सा सुश्रुत के सदृश है केवल नस्य और शिरावेध में विशेषता है वाग्भट्ट की। निम्बाम्बु से वमन और लोध्रादि लेप दोनों ही एक समान उल्लेख करते हैं। नीम के जल से सिद्ध घृत का मधु युक्त पानार्थ निर्देश भी विशेष है साथ ही अमलतास का लेप नीम के जल से करने को कहा है। सुश्रुत और अष्टांगहृदय ने सामान्य और विशेष चिकित्सा दोनों का निर्देश पर्याप्त कर दिया है। शार्ङ्गधर ने विशेष चिकित्सा का उल्लेख किया है सामान्य का नहीं। मैं सामान्य चिकित्सा को ही विशेष महत्व देता हूं। चक्रदत्त की चिकित्सा में इस उक्त लेप का उल्लेख है।

शार्ङ्गधर चिकित्सा--

लोध्र धान्यवचालेप स्तारुण्यपिटिका पहः।
तद्वद्गोचनायुक्तं मरिचं मुखलेपनम्॥

—शा० अ० ११ उ० ख०

लोध्रादिलेप उपर्युक्त ग्रन्थों के सदृश है किन्तु गोलोचन और कृष्ण मरिच का लेप विशेष है।

स्वानुभूत चिकित्सा--

प्रथम रोगी को ३ दिन स्नेहन शास्त्र विधि से कराया। मूंग की दाल, चावल, तिल, तीनों द्रव्य सम मात्रा में घृत प्रचुर मात्रा में डलवा खिचड़ी बनवा कर दोनों समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ दिन तक भोजन करवाया। रात्रि में दुग्ध घृत युक्त देता था। इस प्रकार चतुर्थ दिन वमन प्रयोग, किन्तु स्वयं अनुभूत एक वटी प्रातःकाल दी, जिससे ३ घण्टे के उपरांत वमन होना प्रारम्भ होगया। दश वमन के बाद पित्त आने लगा तब स्वयं ही अवरोध होगया। उसके ऊपर पथ्य दुग्ध चावल भोजनार्थ दिया। पुनः कृशरा क्रम तीन दिन चला, उसके पश्चात् रेचक औषधि से रेचन कराये। जब पर्याप्त रूपेण शुद्धि ऊर्ध्वाधः होगई तो पथ्य और लघु भोजन ही चलता रहा। उक्त सामान्य चिकित्सोपरान्त विशेष में नस्य का प्रयोग नित्य प्रातः कटफल से कराता था। एक मास की चिकित्सा में प्रथम वमनादि क्रिया की पुनरावृत्ति ३ बार की गई। किन्तु साथ-साथ सुश्रुत का लोध्रादि लेप, मञ्जिष्ठादि क्वाथ दोनों समय, ३ मात्रा रसमाणिक्य की देता रहा। शार्ङ्गधर का गोरोचन और मिर्च का लेप भी कभी-कभी चलता था। उक्त रोग में मेरी तुच्छ बुद्धयनुसार श्लेष्माधिक्य, पित्तमध्यमावस्था में तथा वातन्यूनावस्था में प्रतीत होता था। इस प्रकार दोषों की अंशांशकल्पना मैंने की थी। इसके अनुसार ही चिकित्सा प्रारम्भ की गई। स्नेहन से वात पित्त का शमन हुआ, और श्लेष्मा का नस्य और वमन से हो गया। मञ्जिष्ठादि क्वाथ में कटुतिक्तादि पांच रसों की तो औषधियां हैं ही वे तीनों दोषों को शान्त करती थीं, केवल लवण रस अवश्य क्वाथ में नहीं है। जिन्होंने अपना पूर्ण प्रभाव दिखाया। रस माणिक्य ने रक्त शोधन का कार्य पूर्णरूपेण किया, मधु अनुपान में चलता रहा। रात्रि को दुग्ध में मधु दो मास तक सतत सेवन कराया गया। दुग्ध में मधु रक्तशोधनार्थ एक सफल रसायन है। यह भयंकर कण्डू में भी मैंने अनुभव किया है। एक कुत्ते की भयंकर खुजली में भी जिसको कि एलोपैथिक के इन्जेक्शन १ मास में समाप्त नहीं कर सके थे उस ही कण्डू को १ सप्ताह में उक्त प्रयोग से सफलता प्राप्त हुई। अतः यह स्वतः सिद्ध प्रयोग है। इस प्रकार रोगी ने पूर्णतया रोग से मुक्ति प्राप्त करली।

अन्त में युवान पिडिका सम्बन्धी निबन्ध समाप्त करते हुए पाठकों से नम्र निवेदन यह है कि इस भयंकर रोग से सुरक्षितार्थ निम्नलिखित पथ्य की चिकित्सा करते हुये ध्यान करना अत्यन्त आवश्यक समझें। चाय, वनस्पति घी, उष्ण रूक्ष द्रव्यों का सेवन, सिगरट, बीड़ी भी छोड़ने का प्रयास करें तो अत्युत्तम होगा। स्वस्थावस्था में जिनअपथ्यों के सेवन का परिणाम विषवत् होता है उन्हें त्याग दें।

—श्री वागीशदत्त शर्मा वैद्य आयुर्वेदाचार्य
गाजियाबाद (उ.प्र.)

भगवान धन्वन्तरि के

नयनाभिराम चित्र

धन्वन्तरि भगवान के सुन्दर बहुरंगी भव्य चित्र अभी अभी छपवाये हैं। उत्तम कागज पर सुन्दर छपे तथा वार्निश किए हुए यह नयनाभिराम चित्र आयुर्वेदिक चिकित्सकों को अपनी डिस्पेन्सरी में अवश्य लगाने चाहिए।

वैद्य सभाओं को चाहिए कि इन चित्रों को अधिक संख्या में मंगाकर अपने सदस्यों में वितरित करें। मूल्य निम्न प्रकार होगा—

१ चित्र का मूल्य	१.२५	पोष्ट व्यय	१.२०
५ चित्रों ,, ,,	५.००	,,	१.६०
२५ चित्रों ,, ,,	२०.००	,,	२.५०

वैद्य सभा २५ चित्रों के लिए २०.०० मनियार्डर से भेजें। चित्र रजिष्टरी से भेज देंगे।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमवात

श्री कविराज डा० प्रभाकर चटर्जी आयुर्वेद वृहस्पति

गतांक से आगे

रस सिद्ध सम्प्रदाय के चिकित्सकों के उपरोक्त भ्रान्ति मूलक बयान ने आत्रेय सम्प्रदाय के पुजारियों के दिमाग में आग लगा देने वाला असर पैदा किया जो आयुर्वेदिक चिकित्सा के मौलिक सिद्धान्त के सम्बन्ध में आदि काल से प्रचलित सिद्धान्त के विरुद्ध संघर्ष था, और वे रससिद्ध सम्प्रदाय के प्रचारकों द्वारा उदघोषित और प्रतिपादित नये सिद्धान्त को शीघ्रता से स्वीकार न कर सके, जो समय बीतने के साथ ही आयुर्वेदिक चिकित्सा के क्षेत्र में आगे आये किन्तु भूतपूर्व कविराज गंगाधरराय के रूप में कुछ ऐसे पुरुष थे जो १९ वीं सदी के अन्त में रस सिद्ध के सिद्धान्तों का विरोध ही नहीं कर सके बल्कि अकेले ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद के संपोषित और समर्थित एलोपैथी की भयंकर बाढ़ की भीषण लहरों से संघर्ष भी किया जो आयुर्वेद, भारतवर्ष के प्राचीन चिकित्सा विज्ञान को अपनी जन्मभूमि से बाहर निकालकर और अपनी चिकित्सा प्रणाली को स्थापित करने पर तुले हुए एवं कटिबद्ध थे। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की प्रिय रानी और सुहागिन होते हुए भी एलोपैथी पूर्णरूप से फैल न सकी और ब्रिटिश, भारत, बर्मा, सिलोन में २० वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक, कविराज गंगाधरराय और उनके शिष्यों तथा शिष्यों के शिष्यों की अथक चेष्टाओं की वजह से जो भारत, बर्मा और सिलोन में बिखरे हुये थे, अपना प्रभाव न डाल सकी। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद की सुहागिन, दीन-हीन हतभाग्य आयुर्वेद की स्थिति दुखजनक, पतित और अपमानजनक अवस्था में अपनी जन्म भूमि में अपने ही लोगों के द्वारा पहुंचायी जा चुकी है।

आयुर्वेद के सम्बन्ध में मैं अपने मनः चक्षु के सामने जो देख रहा हूं वह बहुत ही निराशाजनक है जिससे मैं इस प्रबन्ध (लेख) की मुख्य विषय वस्तु से थोड़ा विषयान्तर हो चुका हूं जिसके लिये क्षमाप्रार्थी हूं।

आजकल गण तंत्र भारतवर्ष के अन्दर आयुर्वेदिक रसायन के द्वारा इलाज या रस चिकित्सा पूर्ण रूप से जम चुकी है। इसकी शुरुआत वैदिक युग के पूर्व से है जब से महेश्वर ने आयुर्वेदिक रस चिकित्सा पर विस्तार से लिखा और जिनकी रचना के कुछ भाग की पाण्डुलिपि अभी भी तंजोर लाईब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की लाईब्रेरी और वाराणसी गवर्नमेंट संस्कृत कालेज लाइब्रेरी कलकत्ता, संस्कृत कालेज लाईब्रेरी और इण्डिया ऑफिस लाईब्रेरी लन्दन, में है। किताबों के नाम हैं, १—आयुर्ग्रन्थ, २—आयुर्वेद, ३—वैद्यराज तंत्र, ४—शैव सिद्धान्त, ५—काम रत्न, ६—रुद्रजमाल। रुद्र जमाल तंत्र बहुत से भागों में-विभाजित है जैसे—

पारद कल्प में-पारद के सभी प्रकार के प्रयोगों और उपयोगों की विवेचना है।

धातु कल्प में—आयुर्वेद रस चिकित्सा के विभिन्न धातुओं से सम्बन्धित विषयों पर विवेचन है।

हरिताल कल्प में—हरिताल या विभिन्न प्राणान्तक विष के सभी पहलुओं का विवेचन है जिसे शिव, (जो भक्तों को ज्ञान देने वाला और कल्याणकारी है) का Seminal Energy समझा जाता है—

धातु क्रिया कल्प में-विशुद्ध धातुओं से घटित औषधियों का विवरण है जैसे-१ अर्द्ध नारीश्वर रस २ मकरध्वज रस ३ पूर्ण चन्द्र रस ४ मृत्युञ्जय रस ५ महामृत्युञ्जयरस ६ अग्निकुमार रस ७ वज्रक्षार ८ सर्व व्याधिहर रस ९ शंकर लोह १० श्री मन्मथ रस ११ वैद्यनाथ वटी १२ बसन्त तिलक रस १३ योगेश्वर रस और बहुत दूसरे भी हैं जो प्राग वैदिक काल से आधुनिक काल तक हम लोगों के पास उपलब्ध हैं।

प्राग वैदिक युग में आयुर्वेदिक रस चिकित्सा के सभी पहलुओं पर विवेचन किया जाता था। और फल स्वरूप वैदिक युग में रस चिकित्सा विज्ञान का आगे विकास का कोई प्रमाण नहीं है सिर्फ अनेकों वैदिक मंत्रों से रुद्र की पूजा व दो दर्जन औषधियों के आविष्कार के अलावा जो वैदिक युग के ऋषियों की नजर में आयीं और जिन्होंने हिन्दू रसायन के क्षेत्र में स्वतंत्र विकास किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक युग के पश्चात और विशेषकर बौद्धकालीन युग में आयुर्वेदिक रस चिकित्सा का नागार्जुन और उनके शिष्यों ने जो भारतवर्ष, बर्मा और लंका द्वीप में रस चिकित्सा का सुसंवाद फैला रहे थे, उनकी अथक चेष्टाओं से प्रचुर उत्थान हुआ और जब धर्माशोक ने कलिंग युद्ध में अत्यधिक रक्तपात से द्रवित होकर आदेश जारी किया कि उसके साम्राज्य में किसी प्रकार का रक्तपात नहीं होगा और इस आदेश के फलस्वरूप अस्पताल के शल्यकक्ष में भी रक्त गिरने का कार्य नहीं होता था यद्यपि इस प्रकार के वातवरण से आयुर्वेदिक शल्य विज्ञान के विकास पर बुरा प्रभाव पड़ा, किन्तु परोक्ष रूप से आयुर्वेदिक रस-चिकित्सा के आविष्कार या अन्वेषण के लिए इसने प्रेरक शक्ति का कार्य किया और बहुत से आयुर्वेदिक चिकित्सक ऐसी दवाओं की खोज करने लगे जिसमें अस्त्रोपचार की उपादेयता नहीं रही और उसके बाद चिकित्सकों ने पारद, गन्धक, प्राणान्तक विष (संको विष), कांच, टीन, जस्ता, मोती, शंख, सुक्ती, कौड़ी, मुक्ता, अभ्रक, लौह आदि का जले घाव के लिये (ulcer) घाव के लिए, Tumour और अन्य अनेक प्रकार के malignent Growth के लिए प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया।

ख्रीष्ट सन् की शुरुआत में चिकित्सकों के द्वारा नागार्जुन का रसार्णव भी व्यवहार किया जाता था। धीरे धीरे दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तकें भी प्रकाश में आयीं। किंतु रस चिकित्सा की अधिकांश पुस्तकें प्राचीन लेखकों के संग्रह हैं जिनमें संग्रहकर्त्ता के नाम और किसी किसी में मूल लेखक के नाम दिये गये हैं। आजकल ३७ रससिद्धों की मौलिक रचनायें हमलोगों को नहीं मिलती हैं। जिनके नाम सोमदेव कृत रसरत्न समुच्चय के परिचय में लिखित हैं क्योंकि मौलिक ग्रन्थ तो काल क्रम से नष्ट हो गये—

भारतवर्ष के चिकित्सकों में चक्रपाणि को ही रस चिकित्सा की रस पर्पटी और ताम्रजोग नामक दो दवायें अपने विश्व विख्यात ग्रन्थ चक्रदत्त संग्रह में एकत्रित करने की विचक्षणता और साहस था। किन्तु अपने ग्रंथ में चक्रपाणि ने उस पुस्तक का नाम नहीं लिखा जिससे रस चिकित्सा की दो विश्वविख्यात दवाओं के मूल सूत्र (formulae) लिये। १३ वीं सदी में बंगाल के गोपाल कृष्ण भट्टाचार्य ने आयुर्वेदिक रसचिकित्सा की "रसेन्द्रसार संग्रह" नामका एक बहुत ही प्रमाणिक संग्रह अपनी टिप्पणी के साथ निकाला। लेखक ने पुस्तक का संकलन बहुत ही ही सरल और स्पष्ट शैली में किया है और उनके ग्रंथ में उनके द्वारा चयन की गयी औषधियां वास्तव में बहुत ही असरदार हैं।

माधवकर जिनका उत्थान ७ वीं सदी में हुआ उनके बाद आयुर्वेदिक रस चिकित्सा में निम्नलिखित पुस्तकों का संकलन हुआ जिनमें आसवाल और उससे युक्त रोगों की चिकित्सा के लिए औषधियां लिखित थीं—

१—सातवीं सदी में माधवकार ने स्वयं आयुर्वेदिक रस चिकित्सा पर 'कूट-मुदगर' नामक ग्रन्थ लिखा।

२—आठवीं सदी में गोविन्द भागवत ने 'रस हृदय, लिखा।

३—नवीं सदी में रविगुप्ता ने "सिद्ध सार" लिखा।

४—१० वीं सदी में सूर्य पण्डित ने "रस भैषज कल्प" लिखा।

५—१२ वीं सदी में अच्युत गणिका पुत्र और उनके शिष्य सोमदेव ने सम्मिलित होकर "रसेश्वर सिद्धान्त" लिखा।

६—१३ वीं सदी में गोपाल भट्ट ने "रसेन्द्र सार संग्रह" लिखा।

७—१४ वीं सदी में काशीनाथ द्विवेदी ने "रस कल्प लता" लिखा।

८—१४ वीं सदी में गोविन्दाचार्य ने "रस सार" लिखा।

९—१५ वीं सदी में बुन्धुका नाथ ने "रसेन्द्र चिन्तामणि" लिखा।

१०—१५ वीं सदी में रामकृष्ण भट्ट ने "रसेन्द्र कल्प द्रुम" लिखा।

११—१५ वीं सदी में रामराय या रामराज ने "रस रत्न प्रदीप" लिखा।

१२—१६ वीं सदी में मालभूस के राजवैद्य माखन सिंह ने "रस नक्षत्र मलिका" लिखा।

१३—१६ वीं सदी में बाकरगंज, बारिसाल के रामचन्द्र गुहा ने '१. रसेन्द्र चिन्तामणि, २. रस रत्नाकर ३. रस पारिजात' लिखे।

१४—१७ वीं सदी में त्रिमल भट्ट ने "रस दर्पण" लिखा।

१५—१८ वीं सदी में माधव उपाध्याय ने "आयुर्वेद प्रकाश" लिखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६—१६ वीं सदी में धनपति ने "दिव्य रसेन्द्रसार" लिखा।

१७—२० वीं सदी में हम लोगों को बहुत ही महत्वपूर्ण संकलन "आयुर्वेदिक रस चिकित्सा" या रस शास्त्र पर मिलता है। और वे सब आमवात और उससे युक्त रोगों की रस चिकित्सा की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी हैं। **उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं—**

१. रस कामधेनु, २.रस हृदय, ३. लोह सर्वस्व, ४. वृहत रसराज-सुन्दरम्, ५. रस-पद्धति, ६. रसेन्द्र पूरन, ७. रस हृदय सुधाकर, ८. रस-जलनिधि, ६. रस योग सागर, १०. रस चिकित्सा, ११. रसामृत, १२. रस तरंगिनी, १३. पारद संहिता, १४. रसोद्धार तंत्र, १५. खनिज विज्ञान, १६. रसायनसार, १७. भारतीय रस शास्त्र।

मेरे पास सीमित स्थान होने की वजह से विस्तृत रूप से ऐसे सैकड़ों रस ग्रंथों के नाम जो भारत के विभिन्न प्रांतों में अलग अलग भाषाओं में संकलित किये गये हैं, लिखना सम्भव नहीं है। भारतवर्ष के हर प्रांत को प्रयोज्य कोष के साथ राष्ट्रीय निधि के संचय और संरक्षण के निमित्त आगे आना चाहिये क्योंकि उनमें से अनेकों कालक्रम से कीड़ों के द्वारा खा लिये जायेंगे और बौद्धिक जगत के लिये वे लुप्त हो जायेंगे।

इस लेख के प्रारम्भ में ही हमने कहा है कि चरक ने आमवात के कारणों के ऊपर कुछ नहीं कहा और न तो ऐसा कोई नाम ही दिया किन्तु इसे चरक की त्रुटि नहीं समझना चाहिए। क्योंकि आयुर्वेद के मौलिक सिद्धांत की चर्चा के समय उन्होंने कहा है कि—

"न हि सर्व विकाराणां नामतोस्ति ध्रुवास्थितिः"

मानव के शरीर में जितने भी प्रकार के रोग हो सकते हैं उसका कोई खास नाम नहीं दिया गया है। जैसे—

**"नास्ति रोगो बिना दोषाय यस्मत तम्मत चिकित्सकः।
अनुक्तामपि दोषाणां लिङ्गो व्याधिमुपाचरेत् ॥"**

क्योंकि बिगड़े हुए दोष के पूर्व लक्षण के बिना कोई रोग नहीं है। रोग की चिकित्सा मकर लक्षण के स्वभाव के अनुसार ही करनी चाहिये जो उस रोग के प्रकार का भेद अवश्य इङ्गित करते हैं जिसे रोगी भुगत रहा है। अतः यह कहना सत्य न होगा कि वृहत्रयी रोग के विषय में कुछ भी नहीं बतलाता है।

अपने अन्वेषण कार्यकाल में महामहोपाध्याय माधवकार ने अपने वर्णित आमवातरोग में कुछ विशेष लक्षण देखा। ऐसा बताया जाता है कि उन्होंने रोग की चिकित्सा के ऊपर भी एक पुस्तक लिखी जिसमें आमवात की चिकित्सा पर एक अध्याय लिखा है। जब हम लोग पाठ्य पुस्तक उपसमिति के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर विचार कर रहे थे तो शुद्ध आयुर्वेद शिक्षा की केन्द्रीय समिति की बैठक में बहस के समय मेरे मित्र और साथी कविराज अनन्त कृष्णा त्रिपाठी, सदस्य लोक सभा आयुर्वेद चक्रवर्ती एम०ए० पी०ओ०एल० से यह खबर मुझे मिली। यह श्री त्रिपाठी जी की एक महत्वपूर्ण और और महान अन्वेषण है किन्तु पुस्तक अभी तक प्रकाश में नहीं आयी है। यह शीघ्र ही प्रकाशित कर देनी चाहिये क्योंकि इससे अन्वेषण कार्य आगे बढ़ सकेगा और हम लोगों का ज्ञान कोष बढ़ सकेगा।

हम लोगों ने कहा है कि वृहत्रयी ने आमवात की चिकित्सा के लिये कोई दवा नहीं सुझाई है यद्यपि उनके द्वारा वायु, पित्त, कफ के सम और निरम वात की अस्वाभाविक अवस्था में चिकित्सा के लिये अनेकों उपाय सुझाये गये हैं। हम लोगों ने देखा है कि आमवात और उससे युक्त रोगों की चिकित्सा के लिये औषधि के बारे में चटगांव (अविभाजित बंगाल) के वृन्दा माधव कुन्द प्रथम लेखक थे। आयुर्वेदिक अन्वेषण शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र इस सर्व प्रथम अन्वेषक द्वारा दी गई दवाओं की पूरी तालिका उद्धृत कर दूं।

आमवात की चिकित्सा के लिये सिद्ध योग में वृन्दा कुन्दम द्वारा अन्वेषित औषधियां जैसाकि माधवकार ने अपने रुग्ण विनिश्चय में वर्णन किया है—

१-रासनादि पंचकम, २-रासनादि सप्तकम ३-वैश्वानर चूर्ण, ४-योगराज, ५-अलाम्बुशाद्यचूर्ण, ६-अजमोदादि वटिका, ७-शुण्ठी घृतम्, ८-गुरुची घृतम्, ९-कंजिका सत्लम घृतम्, १०-रासना पिण्ड, ११-वृहत रासना पिण्ड, १२ अमृत रासना पिण्ड।

हम लोगों ने कहा है कि महामहोपाध्याय चक्रपाणि दत्त, बङ्गसेन, भावमिश्र, कविराज गोविन्द दास विशारद और कविराज चन्द्र किशोर सेन ने आमवात और उससे युक्त रोगों के लिये औषधियां भी सुझायीं और पुस्तकें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखीं। बंगाल के एक दूसरे प्रसिद्ध कविराज स्वर्गीय अमृत लाल गुप्ता नामक व्यक्ति ने "आयुर्वेद शिक्षा" नामकी एक पुस्तक उपन्यास की तरह लिखी जिसमें उन्होंने आमवात को चार भागों में विभक्त किया—

१-प्रमेहाश्रित, २-सूतिकाश्रित, ३-उपादान जनित आमवात, ४-संचित आमवात

उनकी चिकित्सा के लिये खास-खास आयुर्वेदिक दवायें भी सुझाईं तथा जटिल और वायुयुक्त रोगों के लिये भी दवायें सुझाईं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से दो प्रकार के लेप या मलहम बाहरी उपयोग के लिये प्रयोग में लिये १. सत्पुष्पादि लेपनम्, २. अहिश्रादि लेपनम्. बृहत सिंहनाद नामक एक गुग्गुल, तीन प्रकार के और तैल (महाविजय भैरव तैल, नकुल तैल और रासना तैल)। गनोरिया के पूर्व आक्रमण से उत्पन्न आमवात की चिकित्सा के लिये उन्होंने रासना दशमूल का क्वाथ, योगराज गुग्गुल और सिंहनाद गुग्गुल और रासना पिण्ड का सुझाव दिया है। इसके साथ ज्वर की अवस्था में इन्होंने मृत्युञ्जय रस के साथ वृहद पिप्पलादि क्वाथ, मध्यम ज्वरांकुश और वात गजांकुश का सुझाव दिया है। अत्यधिक कब्जियत की दशा में वृहत सिंहनाद गुग्गुल बतलाया है। दीर्घ स्थाई दशा में वृहत रासना पिण्ड और वृहत सैंधवाद्य तैल का सुझाव दिया है। सूतिकाश्रित आमवात की दशा में उन्होंने वातगजांकुश, महावातगजांकुश, जीरकादि मोदक, शुण्ठी मोदक और सैन्धवाद्य तैल का सुझाव दिया है। अत्यधिक वीर्यक्षय से उत्पन्न आमवात की दशा में त्रयोदशांग गुग्गुल, महारासनादि क्वाथ, बृहत शतावरी घृतम् वृहत अश्वगन्धा घृतम्, अमृतप्राश घृतम और मकरध्वज रस का निर्देश दिया है।

उपदंश से उत्पन्न आमवात की दशा में उन्होंने सारिवाद्य लेह, अमृत गुग्गुल, अमृताद्य घृतम्, अनन्ताद्य घृतम् और महायोगराज गुग्गुल का निर्देश दिया है। संधि स्थल में रोग संक्रमण से उत्पन्न आमवात दशा में उन्होंने वैश्वानर चूर्ण, सिंहनाद गुग्गुल, पुनर्नवाद्य चूर्ण, अभयाद्य चूर्ण, महारासना पिण्ड, विजय भैरव तैल, वृद्धाद्रक लोह और आमवात गजसिंह मोदक का निर्देश दिया है।

समग्र भारतवर्ष में २० वीं सदी के सभी संग्रहकार जैसे सी. के. सेन. एण्ड कम्पनी का "आयुर्वेद संग्रह", एन. सेन एन्ड कम्पनी का "कविराज शिक्षा", बी. एल. सेन एण्ड कम्पनी कृत "आयुर्वेद विज्ञान", वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का "आयुर्वेद सार संग्रह" देवदत्त शर्मा कृत "आयुर्वेदिक सिद्ध भैषज मणिमाला"। चतुरसेन शास्त्री कृत आरोग्य शास्त्र, हरिदास वैद्य कृत चिकित्सा चन्द्रोदय, राधावल्लभ पाठक कृत चिकित्सा ज्ञान संग्रह, चिकित्सा तत्त्व प्रदीप, चिकित्सा दर्पण चिकित्सातिलक, चिकित्सा प्रभाकर, चिकित्सा भास्कर, कविराज हरस्वरूप कृत भैषज्य संग्रह, हकीम मंशाराम कृत यूनानी चिकित्सा सागर, हकीम दलजीत सिंह कृत यूनानी सिद्ध योग संग्रह, लक्ष्मीपति कृत योग रत्नाकर. वासवराजीय, सन्यासी चिकित्सा शास्त्र, गङ्गासहाय पाण्डे कृत सिद्ध भेषज संग्रह इन सबों ने आमवात और उससे युक्त रोगों की चिकित्सा के लिए एक ही मार्ग का अनुसरण किया है। यहां मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि झाड़ फानूस या जड़ी बूटी वाली ओषधियों का अनुशरण करने वालों को आमवात की चिकित्सा में कोई फल नहीं प्राप्त हुआ है।

साधारणतः ऐसा कहा जाय कि आमवात और उससे युक्त रोगों की प्रारम्भिक अवस्था में झाड़ फानूस की दवाओं, जड़ी बूटियों और धातु और पारद से घटित या मिश्रित दवाओं दोनों से ही सफलतापूर्वक चिकित्सा की जाती है किन्तु अधिक कठिन, पुराने और हठीले आम वात की दशा में जैसे—१-तीव्र, २-जीर्ण शोथ, ३-संक्रामक शोथ, ४-आमवातिक शोथ, ५-उष्णवातीय शोथ ६-आंतरिक ज्वरीय शोथ, ७-आगन्तुक उपदंशीयशोथ ८-अस्थि शोथ, ९-सन्धियों की क्षय जन्य व्याधियां। और दूसरे अनेकों आमवातीय रोग जो स्रोतबन्ध से या आंतरिक स्रोतों के अवरुद्ध होने से, या शरीर के भीतरी मार्गों के अन्दर रुकावट आ जाने से "या आवृत्त वाय जो आंतरिक स्रोतों से रक्त और वायु के मुक्त मार्ग को अवरोध उत्पन्न होने से, जिसके विषय में पूर्वाचार्यों ने उच्च स्वर से कहा है। —क्रमशः।

—श्री कविराज डा० प्रभाकर चटर्जी एम० ए०
डी०एस०सी०, एफ०आर०ए०एस० (लन्दन)
आयुर्वेद वृहस्पति, रससिद्ध, ज्योतिर्भूषण,
१७२, बहुबाजार स्ट्रीट कलकत्ता—१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष्मा की सफल चिकित्सा

श्री लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता

[सितम्बर १९६८ से आगे]

क्षय में रसवाही स्रोतों का अवरोध अग्नि की कमी और धातुओं का क्षय प्रमुख कारण है। इसीलिए यक्ष्मी किस अवस्था में चिकित्स्य है इसका निर्देश करते हुए आचार्य सुश्रुत ने लिखा है—

ज्वरानुबन्धरहितं बलवन्तं क्रियासहम् ।
उपक्रमेदात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृशंनरम् ।

अधोलक्षणों वाला यक्ष्मी अचिकित्स्य है—

लिंगेष्वऽल्पेष्वपि क्षीणम् ।
महाशनं क्षीयमाणमतिसारानिपीडनम् ।
सूनमुष्कोदरं चैव यक्ष्मिणं परिवर्जयेत् ॥ सुश्रुत ॥

जिन लक्षणों से युक्त क्षयी को चिकित्स्य माना गया है वह क्षय की पूर्वावस्था है। इस अवस्था में चिकित्सा करने से शीघ्र ही स्वास्थ्यलाभ होता है। ऊपर क्षय की जिस अवस्था को अचिकित्स्य माना गया है वह क्षय की द्वितीयावस्था या उत्तरार्धकाल है। परन्तु इस अवस्था में भी निम्न वाक्य के आदेशानुसार चिकित्सा करने पर सफलता प्राप्त होते देखा गया है—

यावद् कंठगताः प्राणाः तावद् भेषज कर्तव्याः

सामान्य चिकित्साक्रम में जो कि अग्निबलवर्धक बृंहण व स्रोतावरोध हर हो ऐसी चिकित्सा करनी चाहिए—

आचार्य चरक ने राजयक्ष्मा की चिकित्सा में बहिः परिमार्जन पर विशेष ध्यान दिया है—

बहिःस्पर्शनमाश्रित्य वक्ष्यतेऽतः परमविधिः ।
स्नेह क्षीराम्बु कोष्ठे तं स्वभ्यक्तमवागहयेत् ॥
स्रोतोविबन्धमोक्षार्थं बलपुष्ट्यर्थमव च ॥
उत्तीर्ण मिश्रकैः स्नेहैः पुनराक्तैः सुखैः करैः ।
मृद्नीयात् सुखमासीनं सुखं चोत्सादयेन्नरम् ॥

क्षय रोग की चरकोक्त चिकित्सा सर्वथा उचित है। चिकित्सा का मात्र उद्देश्य पोषक खाद्य पदार्थ देना और शरीर से रोग विष का उच्छेद करना है। त्वचा और त्वग् निम्नस्थ तन्तुओं में उपस्थित रस धातु अन्य धातुओं का नियंत्रण एवं पोषणकरता है। अतएव मल क्षय का जो प्रमुख कारण ह वह रुक जाता हैं अतएव चिकित्सा क्रम में परिमार्जन आवश्यक है।

जलसिक्तस्य बर्धन्ते यथा मूले-ऽकुंरास्तरैः ।
तथा धातुर्विवृद्धिर्हिस्नेह सिक्तस्य जायते ॥

—सुश्रुत

शरीर के चर्म और केशमूल में तैल मर्दन करने से शरीर तन्तु बढ़ते तथा नवयौवन प्राप्त करते हैं और जीर्ण तन्तु नष्ट होते हैं। आचार्य चरक ने भी चिकित्सा में अभ्यङ्ग उत्सादन अवगाहन का विधान बतलाया है। यह अभ्यङ्ग प्रातःकालीन सूर्य किरणों में करने से अत्यधिक लाभ पहुंचता है। क्योंकि ऋगवेद में सूर्य भगवान को रोगों के शत्रु और मानव जाति के महान मित्र हैं ऐसा वर्णन आया है—

उद्यन्नद्यमित्रमहोरोहन्नुत्तरांदिवम् ।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ॥

अथर्ववेद में भी वर्णन आया है—

यक्ष्माणां सर्षावेम् विर्ष निरवोचमहं त्वत् ।

सूर्य द्वारा यक्ष्मज कीटाणुओं का विनाश होता है इसी को ध्यान में रख कर हमारे पूर्वजों ने दिनचर्या में सूर्य नमस्कार जैसे दिव्य व्यायाम का विधान किया है। साथ में एकाग्रता भी आवश्यक है इसके लिये निम्न मंत्र द्वारा विधान है—

आदित्यस्य नमस्कारान्......अकालमृत्युहरणम् ।

सूर्य नमस्कार को नित्य प्रति करने से यक्ष्माणुओं को पनपने का अवसर नहीं मिलता है क्योंकि इस आसन से सम्पूर्णफुफ्फसों का व्यायाम होता है। कोई भाग निष्क्रिय नहीं रहता है। फुफ्फुसों का सक्रिय होना यक्ष्मा से बचने का मुख्य साधन है।

आधुनिक युग में पराकासनी सूर्य रश्मियों (अल्ट्रा-वायलेट) द्वारा जो चिकित्सा की जाती है प्राचीन युग में इस चिकित्सा पद्धति का पूर्णीकरण सूर्यनमस्कार द्वारा करते थे। यक्ष्मी के लिये सूर्य प्रकाश, स्वच्छवायु, विश्राम तथा पौष्टिक आहार चिकित्सा के साथ ही औषधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा लाभ करती है। इसके बिना क्षय चिकित्सा व्यर्थ है। सूर्य किरणों से स्वास्थ्य बढ़ाने वाले तत्वों की अभिवृद्धि होती है शरीर का रंग साफ होता है विटामिन डी एवं ई (जो कि शरीर पौष्टिकता व प्रजनन संस्थान के लिये आवश्यक है) की प्राप्ति होती है। वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा आज हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि शरीर जब प्रकाश को सोख लेता है तब पाचनशक्ति की वृद्धि होती है। यक्ष्मा में सर्वप्रथम पाचन क्रिया ही बिगड़ती है, इससे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट का पाचन सही ढंग से नहीं होता है। सूर्य रश्मियों के प्रयोग से यह सब क्रियायें ठीक प्रकार से होती हैं।

औषधि चिकित्सा क्रम जो कि अग्निबलवर्धक व बृंहण हो ऐसा करना चाहिये। इसके लिये सुवर्ण, मुक्ता, वंशलोचन, अभ्रक पिप्पली आदि से निर्मित योग प्रयोग कराने चाहिये। चिकित्सा में क्लान्ति, ग्लानि या उत्क्लेशकारक औषधियां प्रयोग न करावें। फुफ्फुसीय क्षय में सितोपलादि चूर्ण के साथ स्वर्ण के योग यथा स्वर्णभस्म. स्वर्णवसन्तमालती रस, मृगांकरस, रत्नगर्भपोटली रस, सर्वाङ्गसुन्दर रस आदि को मधु तथा मक्खन से विषम मात्रा में प्रयोग करावें।

सहअनुपान रूप में भोजनोपरान्त द्राक्षासव पिलावें। आंत्रक्षय में सितोपलादि चूर्ण के साथ स्वर्णपर्पटी, नाड़ीक्षय में चतुर्मुखरस, बृहतवातचिन्तामणि, अस्थिक्षय में लोकनाथ रस, सतत प्रतिश्याय रहने पर नारदीय लक्ष्मीविलास रस, अतिसार होने पर जयमंगल रस, श्वास होने पर हेमगर्भपोटली रस को सितोपलादि चूर्ण के साथ प्रयोग कर चिकित्सक गण आज भी यशोलाभ प्राप्त करते हैं।

स्वर्ण शरीर के रुग्ण प्रदेश में जा कर एक विशेष प्रकार से विलय होने वाली प्रोटीन बनाता है जो कि जीवाणु का विनाश करती है और रोग क्षमता करने वाले संस्थान के कोषाणुओं को सचेत करता है। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में स्वर्ण का प्रयोग सिरा द्वारा करते हैं स्वर्ण के बने योग मायोक्राइसीन आदि आते हैं। प्राचीन काल में स्वर्ण को मुख मार्ग द्वारा भस्म या पारदीय मिश्रणों के साथ प्रयोग करते थे आयुर्वेद में ८–२५ प्रतिशत तक स्वर्ण प्रयोग करते हैं परन्तु एलोपैथी चिकित्सा प्रणाली में ५० प्रतिशत तक मिश्रण कर प्रयोग करते हैं।

उपरोक्त चिकित्सा के अतिरिक्त धातु घटकों को निर्मल कर उनमें उत्पादन शक्ति की वृद्धि करने वाली सिद्धौषधि च्यवनप्राश का सेवन कराना चाहिये। इसमें प्रधान द्रव्य आमलक है जो कि शारीरिक धातुओं को शुद्ध कर उनकी विदग्धता को दूर करता है। इसको यथा शक्ति २-३ तोला प्रतिदिन कई मात्राओं में अजा दुग्ध से लें। यदि साथ में अजीर्ण आध्मान आदि हो तो औषध सेवन काल में भोजनोपरान्त द्राक्षासव लें। क्षय की इसी प्रारम्भिक अवस्था में मौक्तिक, प्रवाल, शंख, शुक्ति का प्रयोग भी च्यवनप्राश के साथ कराया जाय तो शीघ्र लाभ होता है क्योंकि पाचन प्रणाली की क्रिया को ठीककर अस्वाभाविक अम्लता को दूर करना इन भस्मों का प्रधान गुण है। धातुक्षीणावस्था में तरुणास्थि या अस्थियों की संधियों में जो मृदुभाग होता है उसके निष्क्रिय होने पर च्यवनप्राश के साथ शृंगभस्म का प्रयोग करावें।

प्रतिलोम क्षय होने पर च्यवनप्राश के साथ स्वर्णराज वंगेश्वर रस का प्रयोग कराना चाहिए।

स्वेद अत्यधिक आने पर कुलीरास्थि भस्म का प्रयोग च्यवनप्राश के साथ करें।

कुछ ऐसी भी औषधियां हैं जिनका सेवन अकेले ही कुछ काल तक निरन्तर किया जाय तो यक्ष्मी स्थायी रूप से छुटकारा पा सकता हैं। उनमें प्रधान रूप से लशुन व वासा है। आचार्य प्रवर श्री यादव जी त्रिकम जी द्वारा निर्मित सिद्धयोग संग्रह में रसोनक्षीर योग क्षय में लाभ करता है। किंतु पित्त प्रधान क्षय में इससे लाभ नहीं होता है क्योंकि लशुन अपने उष्ण तीक्ष्ण गुण के कारण पित्त प्रकोपक होता है। रक्तष्ठीवन युक्त क्षय में लशुन हानिकारक है।

चरक व काश्यप आदि पुराने समय के श्रेष्ठतम चिकित्सक इसका प्रयोग अपने रोगियों में कर यशोलाभ प्राप्त करते थे। क्योंकि लशुन के तेल की शीघ्र उड़ जाने की तीव्र शक्ति और त्वचा पर लगने से व्रणों में शीघ्र प्रवेश कर जीवाणु नष्ट करने की शक्ति, इसके प्रधान दो गुण हैं। इन्हीं गुणों के कारण क्षयी के फुफ्फुसों में जो व्रण या विदर होजाते हैं उनका शीघ्र रोपण करता है। अपनी तीव्र गंध के कारण उत्तम कृमिनाशक है। अस्थिक्षय में लशुन का प्रलेप करने से आशातीत लाभ होता है।

इसके अतिरिक्त एक अन्य औषधि वासा क्षय के लिए बहुधा प्रचलित है। वैद्य गण उसके योगों व स्वरसादि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग कर यक्ष्मी के लिये स्थायी लाभ पहुंचाते हैं। वासा की कीर्ति में निम्न शब्द प्रमाण स्वरूप हैं—

वासायां विद्यमानायामाशायां किमवसीदति ।
रक्तपित्ती क्षयी कासीकिमर्थमवसीदति ।।

आधुनिक क्षय जीवाणुनाशक एण्टाबायोटिक स्ट्रेप्टोमाइसीन के अकेले सेवन से जीवाणुओं की सहनशीलता बढ़ जाती है और औषध का प्रभाव कम हो जाता है और फिर अन्य औषध लाभ विलम्ब से या कम करती है। अतएव यदि रोगी को स्ट्रेप्टोमाइसीन जैसी जीवाणुनाशक औषधि प्रयोग कराने का विचार बने तो साथ में आइसोटीनिक एसिड हाइजड्रोजाइड या पाराएमीनोसैलीसिलिक एसिड का प्रयोग अवश्य करावें । स्ट्रेप्टोमाईसिन इनके साथ ही स्थायी या पूर्ण लाभ करती हैं । इनके प्रयोग से क्षय कीट दुर्बल होते हैं। चिकित्सा में साधारणतया यह विधान रखें कि पहले तीन सप्ताह स्ट्रेप्टोमाइसीन-पास दें। उसके बाद स्ट्रेप्टोमाइसीन व आइसोटिनिकएसिड मिलाकर दें। उपरोक्त तीनों औषधियों का प्रयोग एक साथ कदापि न करें ।

पथ्य—

विनाऽपि भेषजैर्व्याधि पथ्यादेव विवर्तते ।
न तु पथ्य विहीनानां भेषजानां शतैरपि ।

रोगी यदि पथ्यपूर्वक अपनी दिनचर्या व्यतीत करता है तो बिना औषधि के भी रोग से छुटकारा पाना संभव है परन्तु बिना पथ्य के औषधि सेवन की जाती है तो व्यर्थ ही है चाहे रोगी सैकड़ों औषधियों का प्रयोग भले ही क्यों न करें ।

रोग मुक्ति के लिये औषध की तरह पथ्य व परिचर्या यक्ष्मी के लिये विशेष महत्व रखती है। पथ्य भी चिकित्सा का एक अंग है। रोगी का पथ्य पौष्टिक शुद्ध स्वादिष्ट संतुलित सुसिद्ध एवं पर्याप्त हो। गुरु भोजन से हमेशा बचना चाहिए।

इष्टवर्णं रसस्पर्शं गन्धवत् पानभोजनम् ।
इष्टमिष्टैरुपहितं सुखमत्त् सुखप्रदम् ।।
समातीतानि धान्यानि कल्पनीयानि शुष्यताम् ।
लघून्यहीन वीर्याणि स्वादूनि गंधवन्ति च ।।
यानि प्रहर्षकराणि तानि पथ्यतमानिहि ।

—चरकसंहिता

भोजन में पर्याप्त दूध व मक्खन रहना चाहिए यथा सम्भव टीन या डिब्बों के मक्खन का व्यवहार नहीं करना चाहिए, सदैव ताजा मक्खन ही प्रयोग करें । इससे जीवन शक्ति व भार वृद्धि होती है शरीर में ताजा मक्खन काडलीवर आइल के समान ही कार्य करता है।

चौकरदार आटे की रोटी, पत्ते वाली हरी ताजी सब्जियां, विटामिन सी की पूर्ति के लिए आंवला, नारंगी, कागजी नीबू का प्रयोग करना चाहिए । इससे रोगाक्रांत स्थानों की क्षति पूर्ति शीघ्रता से होती है । मांसाहारियों को रोजाना कम से कम दो अण्डे उबाल कर व हफ्ते में दो बार मछली का प्रयोग करना चाहिये। अण्डे का आमलेट या कटलेट केप्रयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि यह पचनेमें भारी होता है। जिन रोगियों को दूध के सेवन से उदर विकार यथा आध्मान अतिसार आदि हो जाते हों तो उनको खौलते हुये दूध में साबूदाना या बार्ली को मिला कर प्रयोग करना चाहिए। उदर शुद्धि पर रोगी सर्वथा ध्यान रखें। नियमित समय पर भोजन किया करें भोजन न बहुत गर्म और न बहुत ठण्डा हो।

अपथ्य—

अधिक मात्रा में चाय, काफी, सोड़ा, तम्बाकू, मद्य, लाल मिर्च, मसाले, विरेचन, वेगावरोध, स्वेदन, विषम भोजन, रुक्षभोजन, रात्रिजागरण, शक्ति से अधिक परिश्रम और मैथुन करना तो सर्वदा परित्याग ही कर देना चाहिये।

—श्री लक्ष्मीचन्द्र गुप्त
आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेदालंकार रिसर्च वैद्य
फ़ार्मासियूटीकल लैबोरेट्री सर्वयुनिट
रानीखेत (यू. पी.)

आर० जी० लोशन (रजि०)

इस लोशन के लगाने से सब प्रकार के त्वचा रोग, व्युची खुजली, खाज, चमड़ी फटना, शुष्क होना, फुन्सी दाद, छाजन, फोड़ा आदि दूर होते हैं । यह आयुर्वेदिक पेटेन्ट औषधि है। दवा बिक्रेता से खरीद कर लाभ उठावें।

—निर्माता—

आर० एन० गर्ग आयुर्वेद भवन
सोरों गेट कासगंज (एटा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोड़े और व्रण

श्री आचार्य चरणतीर्थ महाराज

फोड़े की पहिचान--

जब किसी भाग में सूजन, दाह होकर वह अंदर से पकता है तब उसे फोड़ा कहते हैं। किसी समय तीक्ष्ण दाह होकर और कभी बिना दर्द के भी सूजन होती है। पकने पर गाढ़ा, हरा, पीला, सफेद, रक्त मिश्रित और कभी पतली पीव निकलती है। दाह होकर जब फोड़ा होता है तब बुखार आती है और उस भाग में पीड़ा होती है। पका न हो तब तक कठिन लगता है। पकने पर शूल (पीड़ा) बढ़ती है। अन्त में पककर पीव निकलती है। यह सारे शरीर में या किसी एक अंग में भी हो सकता है।

गूढ़ फोड़े--शरीर के किसी एक भाग में सूजन होकर पीड़ा के साथ फोड़ा निकलता है। स्वच्छता न रखने वाले बच्चों को ज्यादा होते हैं। आम के सड़े फल खाने से, खट्टे पदार्थ खाने की आदत से, खून बिगड़ने से, मधुमेह से फोड़े हुआ करते हैं। पहले उस स्थान की चमड़ी लाल होकर सूजन होती है, उसमें पीड़ा (शूल) होती है। पीड़ा बढ़ती है, बुखार आता है। निद्रा नहीं आती।

व्रण की पहिचान--

शरीर पर विद्रधि या फोड़े के पककर फूटने के पीछे जो बहुत समय तक रिसता नहीं है छाला पड़ता है उसे व्रण कहते हैं। उसी तरह शरीर का कोई अंग काटने से, घिसने से भी व्रण होता है। जिस फोड़े के अन्दर पकने के बाद समय पर फोड़कर पीव नहीं निकलती तो वह पीव नाड़ियों में उतर कर नाड़ी व्रण उत्पन्न करता है।

गंभीर व्रण--जो व्रण बहुत गहरा हड्डी तक पहुंचा हो, रिसता न हो हड्डी को सड़ाता है वह गंभीर व्रण कहा जाता है।

शैय्या व्रण--बीमारी से रोगी को पीठ में कमर में छाला पड़ता है। पहिले लाल छाला होकर पीछे वह भाग सड़कर क्षीण होता है उसे शैय्या व्रण कहते हैं।

कारबंकल--मधुमेह वालों, मूत्राशय के रोगी को, खून बिगाड़ वाले को, वृद्धों को, कमजोर को, यह एक प्रकार का बड़ा फैला हुआ गहरा फोड़ा है। इसमें पहिले चमड़ी लाल होकर जलन होती है। उसके बीच में कठिन हड्डी जैसी चपटी बड़ी गांठें होती हैं। वह फैलता हुआ बड़ा होता है जामुन के रंग का दिखता है। कूर्म (कछुवा) की पीठ जैसे उठा हुआ शोथ होता है। उसमें फूटने के पीछे छोटे छोटे छिद्र पड़ते हैं। उन छिद्रों के चारों ओर की चमड़ी सड़कर निकल जाती है वहां खड्डा पड़ता है। यह बहुत करके पीठ की ओर गरदन कमर में होता है। कभी कूल्हा के बीच में हाथ, पांव, छाती पेट पर भी होता है।

पथ्यापथ्य--

सब प्रकार के व्रणों में वमन कराना, जुलाब देना, लंघन कराना, आवश्यकता होने पर शस्त्रकर्म (ऑपरेशन) या डाभ (अग्निकर्म) कराना या क्षार का उपयोग कर उसको फोड़ना। चावल, गेहूं, जव, जवारी, मूङ्ग, चना, अरहर, परवल, सहजना की फली, छोटी मूली, तिल का या सरसों का तेल, बेंगन, करेला, सूरण, घी, शहद, दूध हितकारी है। बहुत तीखा, खट्टा अचार आदि का त्याग करें।

व्रण फोड़ने के लिए--हाथी दांत को चंदन की तरह घिसकर व्रण के ऊपर एक इन्च घेरे की टिकिया जैसी लगावें। १५ मिनट में फोड़ा फूट जाता है।

व्रण फोड़ने का मलहम--दन्तीमूल, चित्रक, थूहर, का दूध, आक का दूध, भिलावा की गिरी, कासीस, सेंधा-नमक सब समभाग मिलाकर लगाने से व्रण फूट जाता है।

व्रण की खराबी निकालने की पुल्टिश--व्रण फूटने के पीछे सब बिगाड़ निकालने के लिए नीम के पत्ते को और बेर के पत्ते को पीस गर्म कर पुल्टिश बांधने से यह सब बिगाड़ को खींचकर बाहर निकालती है। ६ दिन करने से व्रण में का सब बिगाड़ निकल जाता है।

बिगाड़ निकालने का लेप--तिल, नमक, हल्दी, निसोथ, नीम के पत्ते सब समभाग कूट कर उसमें घी मधु मिलाय गर्म कर मोटा पुल्टिश जैसा लगाने से बिगाड़ निकल जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रण रोपण के लिये—बड़ के अन्दर की छाल, पीपल (अश्वत्थ) की छाल, गूलर की छाल सब साथ में कूट गाढ़ा लेप करने से लाभ होता है।

व्रण रोपण लेप—पीपल की छाल, नीम की छाल, बबूल की छाल, हरड़, तुलसी के पत्ते, मरुवा के पत्ते सब कूटकर लगाने से रोपण होता है।

व्रण पककर फूटकर रोपण लाने का उपाय—संखिया, नीलाथोथा, कली, चूना समभाग ले प्रत्येक को अलग २ पीसें फिर सबको मिला पानी में सोगठो बना विषैला है ऐसा लेबिल लगा रखें। जरूरत हो तब गौमूत्र में पीस दिन में २ या ३ दफे व्रण पर लगाने से वह पककर फूट जाता है। फूट जाने के पीछे चावल को पकाकर दही में मिलाकर गरमागरम व्रण पर पुल्टिस की तरह बांध पट्टी बाधें। एक दिन में ४ बार दही चावल की पट्टी बांधने से ३-४ दिन में व्रण सूख जाता है। फोड़े, बदगांठ, रसोली, मसा, नहीं पकते हुए व्रण, बवासीर इतने रोगों में जिसको पकाकर फोड़ कर मिटाने की जरूरी है उस पर इसे प्रयोग करें।

व्रण बैठा देने की पुल्टिश—अरणी, देवदारु, सौंठ, भारंगी, रास्ना, छोटी कटेरी के फल, मुलैठी के मूल सब सम भाग कूटकर पानी या दूध में पीस गर्म कर पुल्टिस (लापरी) की तरह लगाकर पट्टी बांधें। ३ या ४ दिन में व्रण बैठ जाता है।

व्रण पकाने की पुल्टिश—तिल, अलसी, कूटकर गेहूं का आटा तीनों सम भाग लेकर उसमें नमक १ तोला डालकर दही में मिला गर्म कर पुल्टिश बना रख पट्टी बांधें। ५ से १० दफे बांधने से व्रण पक जाता है।

व्रण फोड़ने का लेप—करंज के बीज, चित्रक, दंती-मूल, भिलावां की गिरी, कनेर का मूल, कबूतर की विष्ठा सब समान भाग लेकर कूट पानी में मिला गर्म कर लेप कर पट्टी बांधें। इससे व्रण फूट जाता है।

विशेष पट्टी—मोम, राल और घी को साथ मिला गर्मकर कपड़े पर लगा दें। पीछे व्रण पर यह पट्टी लगाने से विशेष लाभ होता है। यह पट्टी वात की पीड़ा को भी शांत करती है।

रोपण मलहम—राल, मोम, हीरादखण, कपीला, बोदार, कायफल प्रत्येक समभाग बारीक कर मिला लें। पीछे उसमें नवसार १ तोला मिलाकर गाय के घी से मलहम बना लें। इसे लगाने से व्रण छाले सूखते हैं।

लाभकारी मलहम—सफेद राल १ सेर, तिल के तेल ४ सेर को गर्म कर पिसी हुई राल डालकर पिघल जाने पर किसी पात्र में भरे हुए ठंडे पानी में डाल दें। मलहम जैसा बन जाता है। यह जखमों, घावों, अग्नि आदि से जले हुए पर लगाने से बहुत उपकार करता है।

जात्यादि मलहम—जुई, नीम, पटोल प्रत्येक के पत्ते, खश, मुलहठी, हलदी, कुटकी, मजीठ, नीलाथोथा, सारिवा, करंज के बीज प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूटकर महीन करें। गाय का घी २॥ सेर गरम कर उसमें मोम १॥ सेर डाल पिघल जाने पर सब चीजें डालकर एकत्र कर आधा घंटा तक हिलाते रहें। पीछे चूल्हे से उतार कर ठण्डा हो तब तक हिलाते ही रहें। सब प्रकार के घाव छाले इत्यादि में लगावें।

जात्यादि तेल—मोम के सिवाय ऊपर लिखे जात्यादि मलहम के सब द्रव्य ५ सेर पानी और २॥ सेर सरसों के तेल में पकाने से जात्यादि तेल बनता है। इसे कपड़े के टुकड़े पर छिटक कर व्रण पर रख किसी वृक्ष का पत्ता बांधकर पट्टी बांध दें। दिन में दो दफे रीठे के पानी या सोहागा के पानी से धोकर लगाते रहने से अच्छा लाभ होता है। जात्यादि मलहम का भी इसी तरह उपयोग करें।

व्रण वज्र तेल—कलिहारी (सफेद बछनाग), कूठ, गिलोय, सिंगिया (काला बछनाग), हींग, दूर्बा, मजीठ, करंज के बीज, ढाक के बीज, ढाक के मूल, असगंध, नागर-मोथा, नीला थोथा, एलुआ, हल्दी, काकड़सिंगी, मैनसील, हरताल, सौंठ, पीपल, कालीमिर्च प्रत्येक द्रव्य चार-चार तोला लेकर गौमूत्र में महीन पीसकर गौमूत्र दो सेर में डाल पकावें। पानी का अंश जल जाये तब ठण्डा होने पर कपड़छन कर रख लें। जात्यादि तेल की तरह इसका उपयोग करें। व्रण, छाले फोड़े आदि मिटते हैं।

व्रण मार्तण्ड रस—पारद ४ तोला, गंधक ८ तोला, लोह भस्म २॥ तोला, ताम्र भस्म, सोंठ, पीपल, काली-मिर्च प्रत्येक दो दो तोला, हरड़, बहेड़ा, आंवला प्रत्येक चार चार तोला, शिलाजीत ६ तोला, गूगल २४ तोला, नागरमोथा, कुटकी, गिलोय, चित्रक, वायविडंग, इन्द्रायण के फल, कुष्ठ, हल्दी, देवदारु प्रत्येक चार चार तोला इन को कूट कपड़छन कर नीम के पत्ते के रस की और अनन्त-मूल के क्वाथ की एक एक भावना देकर छाया में सुखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर घोटकर रख लें। ६ से १० रत्ती पानी या भारंगी गुड़ अथवा श्री बाहुशाल गुड़ अथवा कंटकारी अवलेह के साथ देवें। फोड़े, व्रण, छाले, खून का बिगाड़ आदि में लाभकारी है।

व्रणहर मिश्रण—अष्टामृत पर्पटी १ तोला, अमृता गूगल २ तोला, सिंहनाद गूगल १ तोला, शिलाजीत २ तोला सब साथ पीस ६४ पुड़ियां बना लें। सुबह शाम पानी या महामंजिष्ठादि क्वाथ के साथ १-१ पुड़ियां दें।

व्रणरोपणमलहम—कपास के पत्ते का रस २० तो., शंखजीरा ३ तोला, राल ०॥ तोला, बंग भस्म २ तोला, गाय का घी २० तोला में कपास पत्ते का रस डालकर पकावें। पानी का अंश जल जाए तब राल और मोम डालकर मिल जाने के बाद शंखजीरा और बंग भस्म डाल कर हिलावें। ठण्डा होने पर तांबे के बर्तन में रख लें। और व्रण छाले आदि पर लगावें।

सिंदूरादि रोपण मलहम—सिंदूर २ तोला, बोदार २ तोला, बङ्ग भस्म १ तोला, हिंगुल ४ तोला, मुरगी के अण्डे के छिल्के ॥ तोला, मोम १ तोला, गाय का घी आधा सेर, घी गरम कर मोम डाल मिल जाने पर दूसरी महीन की हुई वस्तुयें डालकर हिलाते रहें। इसे छालों, फोड़ों, व्रणों आदि में लगाने से फायदा होता है।

रोपण मलहम—करंज का तेल ४८ तोला गरम कर उसमें ४ तोला गुड़ डालें। मिल जाने पर सिन्दूर १२ तोला डालकर तैयार कर लें। सब प्रकार के व्रणों पर व्यवहार करें।

व्रण के सादे उपचार

१—खजूर १० तोला और कपड़ा धोने का देशी साबुन ५ तोला महीन पीस मिलाकर पुल्टिस जैसा बना कर फोड़े पर बांधने से फूट जाता है। पीछे रोपण का उपचार करें।

२—गूगल को जलाकर घी में मिलाकर लगाने से व्रण फूट जाता है। चौदह दिन तक लगाते रहने से सब बिगाड़ ठीक हो जाता है।

३—हीरा बोल को पानी में पीस कर लुगदी जैसी बनाकर लगाने से व्रण की गांठ बैठ जाती है।

४—पारद १॥ तोला, कत्था २॥ तोला, राल १० तोला, मोचरस २॥ तोला सब साथ में १२ घंटा पीसकर एक करें। उसमें घी आवश्यकतानुसार मिलाकर फिर १२ घंटा तक घोटें। इसे लगाने से सब प्रकार के व्रण मिटते हैं।

५—दाड़िम की छाल, करंज के बीज, आंवला, ढाक के फूल, मेंहदी, सोरा खार प्रत्येक ढाई तोला सबको कूट घोट कर भेड़ के दूध में पीसकर लगाने से सब प्रकार के व्रण मिटते हैं।

६—बबूल की पत्ती पीसकर मलहम जितना गाढ़ा रख कर व्रण पर बांधें, लाभकारी योग है।

७—कत्था और गूगल दोनों समभाग लेकर पीसकर नीम के पत्ते के पानी में दो दो रुपया भर की टिकियां बनाकर सुखालें। पानी में घिसकर व्रण वगैरह के ऊपर लगावें।

—श्री आचार्य चरणतीर्थ जी महाराज
गौंडल (सौराष्ट्र)

धन्वन्तरि मुफ्त प्राप्त करें

* पुरुषरोगांक में विषय-सूची के बाद प्रकाशित सूचना को ध्यान से पढ़ लीजियेगा।
* ३० नवम्बर से पहिले-पहिले एक बार में कमीशन कम करके १४१ रु. की औषधियां मंगालें, आपको 'धन्वन्तरि' १९६६ में मुफ्त दिया जायगा।
* पुरुषरोगांक में प्रकाशित सूचना की पुश्त पर छपी तालिका १ दिसम्बर से १५ दिसम्बर तक अवश्य भेजदें।
* तालिका भरकर यदि आप न भेजेंगे तो धन्वन्तरि वर्ष १९६६ में आपको मुफ्त नहीं दिया जायगा अतएव तालिका भेजना न भूलें।
* धन्वन्तरि के जो ग्राहक औषधियां मंगा चुके हैं वे तालिका भरकर यथा समय भेजना याद रखें।
* जिन ग्राहकों ने अभी औषधियां नहीं मंगाई हैं या कम मंगाई हैं वे नियमों को पढ़ समझ कर शीघ्र मंगालें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध

श्री डा० पद्मदेव नारायणसिंह एम०बी०बी०एस०

×

मस्तिष्क में रक्तश्राव या सेरेब्रल हेमोरेज (एपोप्लेक्सी)

रोगी को बिस्तरा पर लेटाकर तुरन्त $\frac{1}{4}$ ग्रेन मॉर्फिन सल्फेट का मांसपेशी में इन्जेक्शन देना चाहिए। सिर पर बर्फ की थैली रखनी चाहिए। इसके बाद खून जमाने और रक्तस्राव रोकने वाली औषधियों का प्रयोग करना चाहिए। श्वसन क्रिया रोध या हार्दिक क्रिया लोप होने लगे तो कोरामीन, स्ट्रिक्नीन आदि औषधियों का प्रयोग करना चाहिए। यह बहुत सांघातिक अवस्था होती है, जिससे बहुत कम रोगी बच पाते हैं। जो बचते भी हैं उनमें बहुतों को अर्धाङ्ग या पूर्ण पक्षाघात असर कर जाता है।

नकसीर फूटना या नाक से खून गिरना—रोगी को बैठाकर नाक अगुंलियों के बीच चांपिये। बर्फ मिलने पर उसे नाक पर रगड़िये,नहीं तो ठंडे पानी की पट्टी दीजिए। हाइड्रोजन पेरोक्साइड या उससे भी अच्छा एड्रीनलीन के घोल में रूई का फाहा भिगो कर नाक के अन्दर डालिये। मुखमार्ग से या इन्जेक्शन द्वारा कैल्शियमग्लुकोनेट + विटामिन 'स' और 'के' आदि प्रयोग करना चाहिए।

डायबेटिज या मधुमेह के रोगियों के व्यवहार करने लायक शर्करा रहित मीठा योग

प्रो० गज्जर्स स्टैन्डर्ड केमीकल वर्क्स, बम्बई—स्वीट्नोल (Sveetnol)—यह १०० टिकियों की शीशी में मिलता है और प्रत्येक टिकिया में सोडियम साइक्लेमेट ५० मिलीग्राम + सेकरीन सोडियम ५ मिलीग्राम रहता है। मिठास में एक टिकिया एक चायचम्मच भर चीनी के बराबर होती है।

केम्प कम्पनी—स्वीटिन—१५ सी.सी. की शीशी में।

कैस्टोफीन मैनुफैक्चरिङ्ग कम्पनी—सेक्करीन टेब्लेट १००; २००; और ५०० टिकियों की बोतलों में।

एबौट लैबोरेटरीज—सुकेरील (Sucaryl) टेब्लेट १०० टिकियों की बोतलों में। १ टिकिया १ चाय चम्मच भर चीनी के बराबर मीठी होती है।

कलकत्ता केमीकल कम्पनी—(१) सेकरीन सौल्युबल टेब्लेट (Saccharin Soluble tablet) $\frac{1}{2}$ ग्रेन की १०० १००० तथा $\frac{1}{4}$ ग्रेन की ५०० और ५००० टिकियों की बोतलों में। मात्रा—इच्छानुसार—

(२) साइक्लोसैक (Cyclosac) ५० और २५ टिकियों की बोतलों में। प्रत्येक टिकिया में सोडियम साइक्लोहेक्सिल सल्फमेट १०० एम. जी. + सेकरीन १ एम. जी. रहता है। मात्रा—इच्छानुसार

बङ्गाल केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

सेक्करीन (Saccarin) १३ एम. जी. की १०० और ५०० टिकियों की बोतलों में।

ब्रिटिश ड्रग हाउस—

सेक्करीन टेब्लेट्स—०.२ ग्रेन की २५०,५००, १००० २५०० और ५००० टिकियों की बोतलों में।

यूनीकेम लैबोरेटरीज—

यूनीसाइक्लीम (Unicyclim tablets) टेब्लेट्स—यह १०० टेब्लेटों की बोतलों में मिलता है। जिसकी प्रत्येक टेब्लेट में सोडियम साइक्लेमेट १०० एम.जी. + सोडियम सैक्करीन ३.५ एम. जी. रहता है। मात्रा—इच्छानुसार।

एलेम्बिक केमीकल वर्क्स, बड़ौदा—

एमुरौल (Amurol) १०० और ५०० टिकियों की बोतलों में।

बूट्स कम्पनी—

०.२ ग्रेन की सक्करीन टेब्लेट्स १०० और ५०० टिकियों की बोतलों में।

रक्तष्ठीवन और रक्तवमन

फेफड़ों से या मुख आमाशय-पक्वाशय से खून आना—

अधिक रक्तस्राव होने पर रोगी को बिस्तरा पर आराम करना चाहिए। $\frac{1}{4}$ ग्रेन मोर्फीन + $\frac{1}{100}$ ग्रेन एट्रोपीन सल्फेट का अधस्त्वगीय या मांसपेशी में इन्जेक्शन लगाना चाहिए। सिरामार्ग से या मांस पेशी में १०%

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० सी. सी. कैल्शियम ग्लुकोनेट + विटमिन 'सी' ५०० एम जी का इञ्जेक्शन लगाना चाहिए। मुख से चूसने के लिए रोगी को बर्फ का टुकड़ा देना चाहिए किन्तु उसे मुख ही में गल जाना चाहिए। ठोस आहार २४ घंटों तक नहीं देना चाहिये, और उसके बाद आइसक्रीम, साइट्रेट डाला हुआ दूध और फलों का मीठा रस देना चाहिए। दूसरे-तीसरे दिन से मुलायम किन्तु ठंडा आहार देना चाहिए। उपरोक्त चिकित्सा से खून गिरना नहीं बन्द होने पर कोअगुलेन सिबा—५-१० सी. सी. और विटामिन 'के' का भी एक इञ्जेक्शन रोज मांसपेशी में लगाना चाहिए।

नमकीन योग

जिनके लिये साधारण नमक या सोडियमक्लोराइड का व्यवहार वर्जित माना हो।

कलकत्ता केमि.कल—

पोटैशियम साल्ट या के-साल्ट (K-Salt) २; ४; और ८ औंस की बोतलों में।

बरमन रेमेडीज—

सीट्रोफाइनल-एन (Citrofinal-N)—७५ ग्राम की बोतलों में। प्रयोग—इच्छानुसार।

यूनीकेम लैबोरेटरीज—

यूनी-साल्ट (Uni-salt)—यह ३ औंस और १६ औंस की बोतलों में मिलता है। मात्रा—इच्छानुसार।

करतल व चरण तल दाह

टी. सी. एफ. कम्पनी—

२५ एम. जी. प्रति सी. सी. की शक्ति में कैल्शियम पैन्टोथीनेट २ सी. सी. की ६, ५०, और १०० एम्पुलों के बक्सों में, तथा १० सी. सी. के रबरकैप युत वायलों में। मात्रा २ सी. सी. का मांसपेशी में इञ्जेक्शन आवश्यकतानुसार रोज या १-२ दिनों के अन्तर पर।

यूनीकेम लैबोरेटरी—

यूनी पेन्टोथीन इञ्जेक्शन—५० एम.जी. प्रति सी.सी. की शक्ति में १० सी.सी. के वायल में पेन्टोथिनिक एसिड का योग। मात्रा और प्रयोग पूर्ववत्।

रोश कम्पनी—

बीपैन्थेन मार्का पेन्थेनोल नामक पेन्टोथिनिक एसिड़ का एक योग ५०० एम. जी. शक्ति के २ सी. सी. के ३ और २५ एम्पुलों (मांसपेशी में इञ्जेक्शन के लिए) या १०० एम. जी. शक्ति के लाजेञ्जेज २० और १०० लाजेञ्जों की शीशियों में मुख मार्ग से व्यवहार करने के लिए।

गलगंड या घेंघा

मुख मार्ग से सेवन के लिये थायरायड या चुल्लिका ग्रन्थि तथा आयोडीन के योग—

भंडू कम्पनी—

(१) थायरायड टैब्लेट्स—३० एम० जी० शक्ति की १००; २५०; और १००० टिकियों की बोतलों में। मात्रा—१ टिकिया मुख से आवश्यकतानुसार १-३ बार रोज।

ग्लैक्सो कम्पनी—

एल्ट्रौक्सीनमार्का थायरौक्सीन या चुल्लिका ग्रंथि रस—०.०५ और ०.१ एम० जी० थाइरौक्सीन सोडियम की १०० टिकियों की बोतलों में मात्रा १-२ टिकिया मुख से २-३ बार रोज।

लुगल्स आयडीन शोल्यूशन—

ऊपर या बाहर से घेघा पर मालिश के लिए आयडीन का मलहम।

बूट्स कम्पनी—

आयोसान मार्का आयडीन का मलहम ३० ग्राम की शीशी में। घेघा पर २-३ बार रोज मालिश की जाती है।

भंडू कम्पनी—

आयडीन आयन्टमेन्ट—४५० ग्राम की बौतल में। व्यवहार—उपरोक्त योग के समान ही।

दांतों की बीमारियों पर

बङ्गाल केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

डेन्टल टूथएक् ड्राप्स (Dental toothache drops) ६ सी. सी. की शीशियों में रुई के फाहा से लगाया या भर दिया जाता है।

हैदराबाद केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

टूथएक् ड्राप्स (Toothache drops)—१२ सी.सी. की शीशियों में। रुई के फाहा से जिस दांत में दर्द हो वहां लगाया जाता है।

कैस्टोफिन मैनु. कम्पनी—

टूथएक् ड्राप्स (Toothache drops)—रुई के फाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से दांत में लगाया जाता है।

केम्प एएड कम्पनी—

टूथएक् रेमेडी (Tootache Remdy) या दांत दर्द के लिये उपाय।

नासूर या फिशर और बवासीर

(१) फ्रैङ्को इण्डियन फार्मास्युटिकल्स, बम्बई—

प्रोक्टोसेडील वायन्टमेंट—२-३ बार रोज बवासीर के मस्सों पर लगाया जाता है।

(२) बङ्गाल केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

पीलोवायन्ट (Piloint)—मस्सों में ३-४ बार रोज लगाया जाता है।

(३) ईस्ट इण्डिया फार्मास्युटिकल वर्क्स—

१. "प्रोक्टोसोन (Ptoctosone)" वायन्टमेन्ट—लगाने के लिए एक विशेष Applicator युत यह पीड़ाहर मलहम ५ ग्राम के ट्यूब में मिलता है, जिसमें हाइड्रोकोर्टिसन (शोथहर) ०.५%+आयडोक्लोरोहाइड्रोक्सीक्वीनोलीन (एन्टीसेप्टिक) ४% और बेन्जोकेन (पीड़ाहर) ५% रहता है। ३-४ बार रोज लगाया जाता है।

२. प्रोक्टो-क्वीनोल (Procto quinol)—बवासीर, नासूर, तथा मलद्वार के सभी तरह के पीड़ायुक्त या कष्टदायक रोगों में व्यवहार करने के लिये यह मलहम २५ ग्राम के ट्यूब में मिलता है। प्रयोग उपरोक्त योग के समान ही है, केवल इसमें हाइड्रोकोर्टिसन नहीं रहता।

(४) बूट्स कम्पनी—

एच. पी. वायन्टमेन्ट (H. P. ointment)—बवासीर के मस्सों या नासूर वा फिशर में ३-४ बार रोज लगाया जाता है। लगाने के लिये नोज्ल (Nozzle) युत कोलैप्सीब्ल ट्यूब में मिलता है।

(५) स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट—

(१) बैलीन्स (Ballins ointment) वायण्टमेन्ट या मलहम २-३ बार रोज मस्सों पर लगाया जाता है। मुख-मार्ग से व्यवहार करने के लिये—(२) बैलीन्स टैब्लेट्स २५ टिकियों की शीशियों में। मात्रा—१ टिकिया ३ बार रोज मुख से भोजन के बाद।

मृगी चिकित्सा

मे एण्ड बेकर कम्पनी—

(१) "गारवायन Garoin" टैब्लेट्स ५० टिकियों की बोतलों में। प्रत्येक टिकिया में फेनिनट्वायनसोडियम १½ ग्रेन+फेनोबार्बिटोनम् सोडियम ¾ ग्रेन रहता है। मात्रा—१-२ टिकिया तीन बार रोज भोजन के बाद। चिकित्साक्रम प्रायः ३-५ वर्षों तक चलाना चाहिये।

(२) रूटोनल (Rutonal)—प्रशामक औषधियों का प्रकरण देखिये।

बूट्स कम्पनी—

"एप्ट्वायन (Eptoin)" मार्का फेनीनट्व्यायन सोडियम (Phenyntoin Sodium) ०.१ ग्राम के टैब्लेट १०० टिकियों की बोतलों में। मात्रा १-३ टिकिया रोज।

सैन्डोज कम्पनी—

"मेसेन्ट्वायन" टेबलेट, २०; १००; और १००० टिकियों की बोतलों में। मात्रा ½ टिकिया से आरम्भ कर सप्ताह में ½ टिकिया की मात्रा में बढ़ाते हुए ३ टिकिया से ६ टिकिया रोज (बहुत धीरे धीरे मात्रा बढ़ाते हुये) ले जाना चाहिये, और फिर कम से कम मात्रा जिससे रोगाक्रमण रुका रहे उस मात्रा से ६-१२ महीनों तक प्रयोग करना चाहिए।

ए. वांडर कम्पनी—

(१) ऐन्टीसासेर (Antisacer) मार्का फेनीनट्वायन सोडियम के ०.१ ग्राम शक्ति की ३० और १०० टिकियों की बोतलों में। मात्रा—१-६ टिकिया रोज तक। प्रयोग-पूर्ववत्। (२) ऐन्टीसासेर कम्पोजिटम—इसमें फेनीनट्वायन के अतिरिक्त ब्रोमाइडफेनोबार्बिटोन, कैफीन साइट्रेट, और एट्रोपीन आदि दवायें भी रहती हैं इसलिए सभी तरह की मृगियों की चिकित्सा के लिये यह बहुत उत्तम योग है। मात्रा—१-३ टिकिया रोज। दो शक्तियों में मिलता है—(क) बच्चों के लिये, और (ख) वयस्कों के लिये २० और १०० टिकियों की बोतलों में मिलता है।

—श्री डा० पद्मदेव नारायणसिंह एम. बी. बी. एस.
बंगला नं० F/४०, पो० सिंदरी (धनबाद)

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद् के आहार-विहार

श्री गोपाल जी द्विवेदी वैद्य

महर्षि भगवान् आत्रेय के मतानुसार जगत विख्यात सूर्य, पवन और चन्द्रमा ये तीनों, काल स्वभाव और गति में रहने के कारण काल, संवत्सर, उत्तरायण और दक्षिणायन नामक ऋतु रस, दोष, वातादि दोषजनक और शारीरिक बल के कारण रूप अधिष्ठाता माने जाते हैं।

ऋतु विभाग के कारण सम्वत्सर ६ समझे जाते हैं। इन अंगों में शिशिर, बसन्त तथा ग्रीष्म नामक ऋतुओं में सूर्य उत्तर की ओर रहता है। अतः इसे उत्तारायण या आदान भी कहते हैं। वर्षा, शरद् तथा हेमन्त इन तीनों ऋतुओं में सूर्य दक्षिण की ओर रहता है अतः इसे दक्षिणायन या विसर्ग काल कहते हैं।

इस प्रकार वर्षा, शरद् और हेमन्त में सूर्य का दक्षिण दिशा की ओर चले जाने से वर्षा, शरद् और हेमन्त ऋतु मेघ, वायु और वर्षा के कारण सूर्य के प्रताप, आतप के क्षीण होने से तथा चन्द्रमा के सबल हो जाने से और वर्षा के पानी से संसार की उष्णता दूर होने से संसार में रूक्षता रहित, अम्ल, लवण और मधुर यह तीनों रस यथा क्रम बढ़ते हैं इसलिए इन तीनों ऋतुओं में पुरुषों का अग्नि बल अधिक बढ़ जाता है।

प्रायः शरद् काल में पुरुषों का बल मध्यम हो जाता है। शीत काल में ठण्डी हवा के साथ शरीर में ही रुक कर बलशाली पुरुषों की जठराग्नि प्रबल होजाती है। इसी कारण शीत काल में जठराग्नि गुरू द्रव्य तथा अधिक मात्रा वाले भोजन के पचाने में समर्थ हो जाती है अतः अग्नि के प्रदीप्त होने पर आहार न मिलने पर जठराग्नि शरीरगत धातु को ही जलाने लगती है। अतएव शीतल वायु शीतकाल में शीत गुण विशिष्ट वायु साम्य के कारण बढ़ कर कुपित हो जाती है। अस्तु शीत काल में चारों ओर से ढके हुए यान, घोड़ों, तांगों, रथ आदि की सवारी, शैया तथा आसन कम्बल, व्याघ्र, चर्म, रेशमी कपड़े, सन के कपड़े तथा अन्य विचित्र कम्बलों से निर्मित होने चाहिए। शीत काल में भारी तथा गर्म वस्त्र पहिनना तथा अन्य प्रमाण प्रलेप करना अच्छा है। इस समय लघु हल्के तथा वातल, वातजनक, अन्न पान का उपयोग सर्वथा वर्जनीय है।

दिन में सूर्य की किरणों द्वारा गर्म होकर और रात्रि के समय चन्द्रमा की किरणों से शीतल होकर समय के प्रभाव से जो जल दोषरहित हो जाता है तथा अगस्त्य नामक तारे के उदय से जो जल विषरहित हो जाता है उसे हंसोदक कहते हैं। यह शरद् ऋतु का जल सर्वथा दोष रहित, निर्मल तथा अत्यन्त पवित्र होता है। स्नान पान तथा अवगाहन, तैरने के लिये यह जल अमृत के समान गुणकारी है। ये तो रहा ऋतु परिचय। अब आप स्वतंत्र आहार विहार तथा अन्य वर्जनीय कर्मों का अवलोकन निम्न प्रकरणों से करें—

हमारे प्राचीन आयुर्वेद आचार्यों का भी मत है कि—

वर्षा शीतो चितांगानां,
सह सैवार्क रश्मि भि।

तप्तानां संचित वृष्टौ,
पित्तं शरदि कुप्यति॥

अर्थात् मनुष्य के शरीर में व्याप्त वर्षाकालीन शीत शरद् ऋतु में नवीन सूर्य किरणों से सहसा गर्म हो जाता है जिससे वर्षा में संचित पित्त शरद् में कुपित हो उठता है।

उस पित्त को जीतने के लिए तिक्त घृतों का पान कराना तथा विरेचन एवं जलौका द्वारा रक्तमोक्षण कराना हितकारक होता है। क्योंकि कहा भी है कि—

'विरेचन पित्तहराणां' तथापि इसकी शांति और शरीर को स्निग्ध करने के लिए नीम, कुटकी, परवल, दारु हल्दी, पाठा, धमासा, शाहतारा, त्रायमाणा, आदि औषधियों के क्वाथ, काढ़ा से सिद्ध तिक्त घृत का सेवन भी हितकारक है। तथा शरद् में पित्त को शमन करने के लिए भूख लगने पर तिक्त, मधुर, कषाय रस प्रधान पदार्थों का सेवन करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद् के आहार

तिक्त स्वादु कषायं च, क्षुधितोअन्न भजेल्लघु ।
शक्तिमुद्गसिता धात्री, पटोलमधु जांगलम् ॥

अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के लिए ऋतु के अनुकूल अपने आहार-विहारों में पूर्व ऋतुओं की अपेक्षा कुछ संशोधन यानि भिन्नता करनी चाहिए जिसमें साठी चावल, मूङ्ग, चीनी, आंवला, परवल, मधु और जंगली पशुओं के मांस को प्रधानता देनी चाहिए। तथा साथ में विटामिन युक्त गेहूं तथा पौष्टिक, तिक्त, मधुर कषाय एवं शीघ्र पचने वाले पदार्थों का सेवन परम लाभप्रद होता है। पित्त की शांति के लिए नीबू का सेवन भी हितकर है। चन्द्रकिरणों की स्निग्धता और गुणकारिता के ही कारण प्रायः अक्टूबर मास में शरद् पूर्णिमा को हमारे यहां बहुत महत्व प्रदान किया गया है। शरद् पूर्णिमा की रात में चन्द्र किरणों में रखकर ठण्डी की हुई खीर खाना बहुत उत्तम समझा जाता है। इसे आयुर्वेद भी मानता है। प्रातः शरद् ऋतु में मधुर तिक्त कषाय रस के सेवन के अलावा शीतल पदार्थों का सेवन करना हितकर है। अर्थात् शीतल स्वभाव वाले अन्न पान का सेवन करना चाहिए। प्रायः नित्य प्रति मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय छयों रसों का अभ्यास करना चाहिए परन्तु उपर्युक्त कहे अनुसार मधुर अम्ल रसों का सेवन विशेष लाभप्रद होता है। इसके अतिरिक्त हर व्यक्ति के स्वभाव का विचार कर दोष धातुओं को साम्यावस्था में रखने के लिये प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति के विपरीत पदार्थ इस ऋतु में सेवन करने चाहिए। जैसे वात प्रधान को स्निग्ध, पित्त प्रधान को शीत और कफ प्रधान को उष्ण पदार्थों का सेवन करना चाहिये। इस ऋतु में प्रातः काल जलपान इत्यादि में भिगोया चना, गर्म जलेबी, दूध, चाय इत्यादि लेने चाहिये। तथा भोजन के दो घन्टे पूर्व ही उपर्युक्त कर्म समाप्त हो जाने चाहिए। अपने आहार में रोटी, साग, सूजी इत्यादि के हलुए तथा अन्य मधुर जैसे—केला, मौसम्मी, नारंगी, अमरूद, किसमिस, बादाम तथा पिस्तों का सेवन ही विशेष रूप से करना चाहिए। रसीले फल भोजनोत्तर केवल दिन के लिए आवश्यक हैं।

पर याद रहे भोजन करने के पहले नमक युक्त अदरख के २-३ टुकड़े खाकर ही अनन्तर मधुर, चिकने तथा हितकारी पदार्थ, मूंग, चावल, घृत युक्त रोटी, उक्त शाक पत्रादि के साथ शान्तिपूर्वक खाकर और तब बाद में मिश्री युक्त दूध पीकर नियमानुसार रहने से व्यक्ति सुखी रह सकता है। क्यों कि ये आवश्यक भी हैं।

शरद के विहार

यह बरसात के बाद की ऋतु है। इस समय मच्छर इत्यादि लोगों को अधिक परेशान करते हैं इसलिये मच्छरों को भगाने के लिये शाम के समय साधारण घास-फूस इत्यादि जलाकर धुआं कर देना चाहिये। इससे मच्छर भाग जायेंगे। मच्छरों से बचने के लिये मच्छरदानी के भीतर सोना अच्छा होता है। इसके अभाव में कपड़े से अङ्ग ढक कर सोना चाहिये।

प्रायः इस मौसम में शरीर में कड़ुआ सरसों का तैल लगाना अच्छा है। इसकी मालिस से मच्छर नहीं काटते।

शरीर को उबटन इत्यादि से स्वच्छ कर तदनुसार व्यायाम, कुश्ती, दण्ड, बैठक, मलखम्भ, आदि कसरत करनी चाहिये क्योंकि व्यायाम भी इस ऋतु के लिये अत्यन्त सुन्दर है। व्यायाम में नियम का पालन करना जरूरी है। ऐसा नहीं कि जब कभी या कम ज्यादा कर लिया क्योंकि:—

अंतरे चौथे दण्ड करै ।
कई न मारे आपुने मरै ॥

यह उक्ति इस सम्बन्ध में बड़ी ही लोकप्रिय है। शरद ऋतु में चन्दन, खस, कपूर आदि का सेवन, सुगंधित पुष्पों के हार और श्वेत उज्जवल वस्त्रों का धारण ताम्बूल इत्यादि को चन्द्रमा की स्वच्छ चांदनी में सायंकाल मकान की छत या बगीचों इत्यादि में सेवन लाभप्रद एवं आनन्ददायक होता है। पुष्पों के प्राकृतिक सौन्दर्य का दिग्दर्शन एवं शीतल मन्द सुगन्ध पवन इत्यादि मन को प्रसन्न करने वाले सामयिक दृश्यों का अवलोकन करना चाहिए।

इस मास में मैथुन इत्यादि करना भी उचित है। किन्तु पूर्वोत्तर गौ तथा भैंस का औटाया या दुहा मिश्री युक्त दूध का सेवन हितकारक है।

मित्रों के साथ बैठकर विश्राम करना, मधुर वचनों का सेवन करना, सरोवरों में क्रीड़ा, मनुष्यों का सिरा मोक्षण करके खून निकालना बड़ा ही पथ्यकर है। चन्द्रमा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरणों से अमृत की वर्षा होती है। और बरसात के बाद आकाश स्वच्छ निर्मल हो जाने से इस अमृत वर्षा को ग्रहण करने के लिए यह ऋतु सर्वोत्तम है। प्रायः इस महीने में खून ज्यादातर दूषित होते हैं। इसलिए जुलाब इत्यादि लेकर पहले शरीर को पित्त से शुद्ध कर लेना चाहिए। तदुपरांत रक्तशोधक दवाओं का सेवन करके शरीर को ठीक रखना चाहिए। बरसात का दूषित जल पिये होने के कारण ज्यादा दिन बुखार रहने से इस मौसम में तिल्ली बढ़ जाती है। इसलिए इसके विनाश का भी प्रबन्ध करना चाहिए। अक्टूबर से शरद ऋतु के प्रारम्भ के कारण भी पित्त का प्रकोप होता है। इससे शरीर में क्रमशः प्रमाद की मात्रा बढ़ती जाती है। इसको उपर्युक्त कथित आहार विहारों के माध्यम से अनुकूल कर लेना चाहिए। उसके लिए प्राकृतिक दृश्यों का परिभ्रमण करना, नयनाभिराम वस्तुओं का दर्शन एवं कुछ यौगिक क्रियाओं को करना चाहिए। आलस्य प्रायः उदर में मलाधिक्य होने से होता है। अस्तु इसके लिए विरेचन, जुलाब इत्यादि का आश्रय सर्वथा श्रेयस्कर है। वास्तव में आलस्य का यही एक मात्र कारण है। इस मौसम में प्रसन्न चित्त एवं मनोनुकूल तथा रसोत्पादक कविता, जीवन चरित्र, उपन्यास का अध्ययन करना चाहिए। मन की एकाग्रता लाने के लिए गीता, रामायण, दुर्गा सप्तसती इत्यादि की आराधना करनी चाहिए। क्योंकि इसी ऋतु में दुर्गा पूजा तथा नवरात्रि दीपावली ऐसे त्यौहार जो प्रत्येक प्राणी के लिए लोकप्रिय हैं मनाये जाते हैं।

शरद् की अपथ्यकर वस्तुयें

शरद् में रात्रि की अवश्याय (ओस) का सेवन नहीं करना चाहिए। ओस, यवक्षारादि क्षार, अधिक तृप्त हो कर भोजन, दही, तेल, चर्बी, सूर्य की धूप, तीक्ष्ण मद्य, दिन में सोना, पूर्व की वायु का सेवन अर्थात् सामने से आने वाली वायु के झोकों का सर्वथा परित्याग कर देना चाहिये। इस मौसम में समयानुकूल वस्त्र धारण करना चाहिये। गन्दे जल को जो गड्ढे इत्यादि में एकत्रित हों इन को सड़ने नहीं देना चाहिये। उपर्युक्त ये सभी कर्म-शरद् में असेवनीय हैं।

शरद में सेवनीय आयुर्वेदिक औषधियां

इस ऋतु में पित्त को शान्त करने के लिए पहले विरेचन, इत्यादि से शरीर को शुद्ध करने के बाद ही पौष्टिक तथा अन्य योगों का सेवन करना चाहिए। पित्त नाशक निम्न योग ये हैं—

धमासा, निसोथ, नागर मोथा, उत्तम सफेद चन्दन और मुलहठी इन सबका चूर्ण करके दाख, मुनक्का के पानी में मिलाकर शरद में सेवन करें। इससे शुद्ध दस्त हो जाया करेगा।

प्रवाल भस्म 'चन्द्र पुटित'—यह पित्तशान्ति के लिए उत्तम है। इसका सेवन मधु के साथ करें।

इच्छा भेदी रस—यह तेज जुलाब है।

कामदुधा रस—पित्तविकार नाशक एवं रक्त पित्त में भी इसका प्रयोग करने से लाभ होता है।

मोती पिष्टी—पित्त शान्ति तथा दिल दिमाग की ताकत के लिये विशेष लाभदायक है।

इस मास में मच्छरों के काटने से मलेरिया भी लोगों को विशेष परेशान करता है। उसके लिए प्राणदा तथा मलेरिया नाशक योगों का सेवन करना चाहिए क्योंकि यह खून में मिले रोगों के कीटाणुओं का नाश तथा कब्जियत अरुचि एवं रक्त विकार को दूर करता है। इस ऋतु में रोज गर्म जल में एक नीबू निचोड़ कर पीना, तथा मधु का सेवन करने से भी पित्त का विनाश होता है। रोगानुसार तैल मालिश से भी बड़ा हित होता है। इस ऋतु में शरीर में मालिश करने के लिए कड़वे तैल के अलावा कोई तैल का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। यह तैल इस मास के लिए बड़ा ही हितकर है। इसके अलावा च्यवनप्राश इत्यादि अष्टवर्ग की औषधियां भी हैं जिनका उपयोग करके स्वस्थ रहा जा सकता है।

उक्त आहार-विहार के नियमानुसार रहने से ऋतु जन्य व्याधियों का भय नहीं रहता। लोगों को चाहिए कि इन नियमों को निभावें तथा उक्त नियमों का सहारा लेकर उचित कर्म करें। यदि पूरी ऋतु नहीं कर सकते तो कम से कम ७ दिन पर्यन्त तो अवश्य ही निबाहें और आठवें दिन ऋतु चर्या के आहार विहारों पर ध्यान देकर बर्ताव करें तो व्यक्ति सदैव रोग रहित ऋतु जन्य व्याधियों के चक्र से विमुक्त रह सकता है।

—श्री वैद्य गोपाल जी द्विवेदी
नरहन कलां, पो० मैढ़ी चन्दौली, (वाराणसी) उ० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिलाजीत

श्री अम्बिकाप्रसाद अवस्थी

हेमाद्याः सूर्य सन्तप्ताः स्रवन्ति गिरि धातवः।
जत्वाभं मृदु मृत्स्नाच्छं यन्मलं तच्छिलाजतु ॥
—च. चि. स्थान ५५

सूर्य के ताप से तपी हुई पर्वत शिलायें लाख के आभा वाले नरम, पिच्छिल, स्वच्छ मल को चुआती हैं। उसे ही शिलाजीत कहते हैं यह चार प्रकार का होता है। जिस शिला में स्वर्ण कण मिश्रित होते हैं, उससे निकलने वाले को स्वर्ण शिलाजीत, जिसमें चांदी के कण होते हैं उसे रजत शिलाजित, तांबे के कण वाले को ताम्र शिलाजीत और जिसमें लौह कण मिश्रित होते हैं उसे लौह शिलाजीत कहते हैं।

गोमूत्र गन्धयः सर्वे सर्वं कर्म सु यौगिका :।
रसायन प्रयोगेषु पश्चिमस्तु विशिष्यते ॥
—च. चि. स्थान ५६

सब (चारों प्रकार के) शिलाजीतों में गौमूत्र के सदृश गन्ध होती हैं। ये सब सभी कर्मों में प्रयुक्त होते हैं, परन्तु रसायन के प्रयोग में अंतिम अर्थात् लौह शिलाजीत ही अधिक लाभकारी है—

नाम—

संस्कृत में—शिलाजतु, शैल निर्यास, शैलेय आदि, शेष भारतीत भाषाओं में शिलाजीत ही अधिक प्रचलित है, तामिल में उरग्यम और अंग्रेजी में आस्फल्ट (Asphalt) कहते हैं।

प्राप्ति स्थान—यह हरिद्वार, शिमला, नैपाल आदि में प्राप्त होता है।

शोधन—

शिलाजीत में उत्पत्ति के समय अनेक मल, रेतकण, पत्थर, पत्ते, कीट, पतंग आदि मिल जाते हैं, इस कारण सर्व प्रथम इसको शुद्ध जल से धो लेना चाहिए। पश्चात् नीम, गिलोय और घृत की अलग-अलग भावना देने से शिलाजीत शुद्ध हो जाता है।

अथवा—

गरमी के दिनों में जब कड़ी धूप निकले आकाश स्वच्छ वायुवेग रहित होवे तब समतल भूमि पर लोहे के चार पात्र स्थापित करे। उनमें से प्रथम पात्र में शिलाजीत के टुकड़े करके डाल देवे। पश्चात् शिलाजीत से दूना शुद्ध जल और आधा गरम जल डालकर धीरे-धीरे हाथ से मलकर वस्त्र से छान डालें, उस छने हुए जल को लोह पात्र में भर कर रख देवे। धूपमें जब उस पर मलाई जम जावे तब उसको उतार कर दूसरे पात्र में रखता जाय। जब मलाई जमना बंद हो जावे तब जिस पात्र में मलाई जम है उसमें गरम पानी डाल धूप में रखदें। उसमें जो मलाई जमे उसको तीसरे पात्र में रखता जावे। पीछे उसमें गरम पानी डाल पूर्वानुसार धूप में मलाई उतार चौथे पात्र में रखे फिर उसमें जो मलाई पड़े उसे पहले पात्र में रखे। इस प्रकार तब तक करे जब तक कि ऊपर पात्र में साफ पानी न हो जाय। जब साफ पानी हो जाय तब पानी को फेंक कर शिलाजीत निकाल ले। यही शुद्ध शिलाजीत है।

अथवा—

जिस पत्थर से शिलाजीत निकलता है उस पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े कर दुगने अत्यन्त गरम पानी में एक प्रहर तक उन्हें रख छोड़े। फिर हाथों से मसल कर वस्त्र से छानदेवे और धूप में रखे लोहपात्र में डाल दे, फिर उसकी मलाई उतार कर तीसरे पात्र में डाल दें, इस प्रकार जब पात्र के तल भाग में मैल जमना बन्द हो जावे, तब समझे कि शिलाजीत शुद्ध हो गया।

शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा—

शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा चार प्रकार से की जाती है—

१—शिलाजीत को जरा सा लेकर अग्नि पर डालने से अगर धुंआ न उठे।

२—शिलाजीत के जरा से टुकड़े को अंगारे पर डालने से अगर वह लिंग के समान खड़ा हो जावे।

३—शिलाजीत के सूखने पर अगर गोमूत्र की सी गंध आवे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—शिलाजीत को जल भरे पात्र में एक तिनके की नोक में लगाकर डाले। अगर वह तार-तार होकर जल में नीचे बैठ जाये तो समझना चाहिये कि यह शिलाजीत असली है कहा भी है—

श्रेष्ठं शिलाजतु ज्ञेयं यत्तु क्षिप्तं न शीर्यते।
तोय पर्णे यदा पात्रेऽप्रताप्येव विरुध्यते ।।

शिलाजीत के गुण—

रसराज सुन्दर नामक ग्रंथ में लिखा है कि रस, उपरस, पारद, रत्न और सुवर्णादिक अष्ट लोहों में जो गुण हैं वे शिलाजीत में विद्यमान हैं। यह तीखा, कड़वा, गरम और रसायन है। प्रमेह, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षयी, श्वास, बादी, बवासीर, पांडुरोग, मृगी, उन्माद, सूजन, कुष्ठ और कृमि रोग आदि को नष्ट करने में समर्थ है। अन्त में तो यह भी कह दिया गया है कि ऐसा कोई असाध्य रोग पृथ्वी पर नहीं है जो शिलाजीत के खाने से न जाय।

शिलाजीत के अनुपान—

१—छोटी इलायची और पीपल के साथ आधा से एक तोला शुद्ध शिलाजीत को एक महीने तक खानेसे मूत्र कृच्छ्र, मूत्रावरोध, प्रमेह, क्षयी रोग का नाश करता है।

२—पंचमूल क्वाथ में दूध डालकर ८ रत्ती शिलाजीत मिलाकर पीने से वात गुल्म मिटता है।

३—शुद्ध शिलाजीत को त्रिफला और शहद के साथ खाने से प्रमेह मिटता है।

४—वमन, विरेचन से शुद्ध होकर गिलोय के क्वाथ के साथ शुद्ध शिलाजीत का सेवन करने से वात रक्त तथा कुष्ठ में लाभ होता है।

५—शुद्ध शिलाजीत के मिश्रण से कई चमत्कारी औषधियां निर्मित होती हैं। जिन्हें ग्रन्थों में देखा जा सकता है—जैसे—चन्द्रप्रभावटी, शिलाजीत वटी आदि—

६—महर्षि वाग्भट कहते हैं—

मधुमेहत्वमापन्नो भिषग्भिः परिवर्जितः।
शिलाजतु तुलानद्यात् प्रमेहार्तः पुनर्नवः ।।

वैद्यों के द्वारा त्यागा हुआ असाध्य मधुमेह का रोगी भी अगर उचित मात्रा में नियमपूर्वक ४०० तोले शिलाजीत खावे तो उसका सारा चोला ही नया हो जाय।

७—अब हम उस प्रयोग को बतला रहे हैं जो हमारे पूर्वजों द्वारा उन व्यक्तियों को बनाकर दिया जाता था जो अपने को पुरुषत्वहीन समझते थे। मैंने भी इसे एक व्यक्ति पर प्रयोग किया है और सफल पाया है। इसकी पहली पत्नी हीनत्व का दोष लगाकर चली गई थी और दवा करने पर इसने दूसरी शादी की। जिससे २–३ सन्तानें हैं—

दवा का नुस्खा यह है—अकलकरा, कंकोल मिरच, जायपत्री, जायफल, मुलहठी, मलयागिरि चन्दन, लौंग, कलमीतज, पीपल, उरद की दाल ये सब एक एक तोला, केशर, गुरच का सत, कपूर आधा आधा तोला, शुद्ध भांग शुद्ध शिलाजीत और खशखश प्रत्येक २॥ तोला, मिश्री १० तोला सब को कूट पीस मिला कर इतना शहद मिला लेवें जिससे कि गोली बन सके। पश्चात् बेर के बराबर गोली बना चन्दन के चुरा में लपेट कर किसी अच्छे पात्र में रख ले।

प्रतिदिन प्रातः सायं एक एक गोली खाकर दूध पीवे, इसके कुछ दिनों तक लगातार सेवन से धातु पुष्ट हो वाजीकरण हो, स्तंभन हो, सुस्ती प्रमेह जाय तथा मन प्रसन्न हो। इस वटी का नाम आनन्द विहार वटिका है। इसके साथ मालिश हेतु एक तेल भी बनाया था परन्तु उसका शिलाजीत से सम्बन्ध न होने के कारण यहां नहीं दिया गया।

शिलाजीत की मात्रा—प्राचीन काल में इसकी मात्रा ४ तोले की थी। परन्तु आज का व्यक्ति इस मात्रा को पचाने में असमर्थ है अस्तु मेरी समझ से आजकल अधिक से अधिक ३ माशा तक की मात्रा में इसका प्रयोग किया जा सकता है। साधारणतः १ या १½ माशा देना चाहिए।

अशुद्ध शिलाजीत—अशुद्ध शिलाजीत के सेवन से दाह, मूर्च्छा, भ्रम, रक्त पित्त, रुधिर विकार, मंदाग्नि, मलावरोध आदि उपद्रव हो जाते हैं। इनके निवारण के लिये काली मिरच घी के साथ सात दिनों तक सेवन करना चाहिए। कहा है—

मरिचं घृत संयुक्तं सेवयेद्दिन सप्तकम्।
शिलाजतु भवं दोषं शांतिमाप्नोति निश्चतम् ।।

शिलाजीत की भस्म—शिलाजीत में गंधक और हरताल मिलाकर बिजौरे नीबू के रस में पुट देकर आठ उपलों

—शेषांश पृष्ठ ३६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष और आयुर्वेद

विद्यावाचस्पति श्री गणेशदत्त शर्मा "इन्द्र"

ज्योतिष और आयुर्वेद का घनिष्ट सम्बन्ध है। आयुर्वेद मनुष्य के स्वास्थ्य सुधार और रोग निवारण के उपाय और क्रियायें बताता है तो ज्योतिष शास्त्र स्वास्थ्य विषयक सूचनायें देता है। ज्योतिष के दो अङ्ग हैं; एक गणित तथा दूसरा फलित। गणित तो ध्रुव सत्य है, किन्तु दूसरे अङ्ग (फलित) के सम्बन्ध में विचारकों, शोधकों और ज्योतिर्विदों में मतभेद हैं। विभिन्न आचार्यों के अलग अलग मत हैं। इतना तो फिर भी माना जा सकता है कि जननी के उदर-गुहा से शिशु के बाहर आते ही बालक का माता से पृथकत्व होता है। उसका जो भविष्य या वर्त्तमान माता से जुड़ा हुआ था वह अलग होजाता है। उसका अस्तित्व ही पृथक हो जाता है। शिशु गर्भ से बाहर आने पर प्रथम सांस के समय, जो भी आकाश में ग्रहों की स्थिति होती है, उसका जातक पर स्थाई प्रभाव होता है। यह बुद्धि ग्राह्य है कि आकाश के ग्रह नक्षत्रादि तारक पुंज तथा पृथ्वी और उस पर के जड़ चेतनादि का एक ऐसा सम्बन्ध है जिसे देखा नहीं जासकता और सहज ही अनुभव भी नहीं होता। सूर्य चन्द्र का अनेक वृक्ष बनस्पतियों से सीधा सम्बन्ध हम रात दिन देखते हैं। अनेक वृक्ष सूर्यास्त के समय सिमट जाते हैं फूल बन्द हो जाते हैं और सूर्योदय के समय वे यथावत् विकसित होते हैं। ऐसे सैकड़ों वृक्ष बनस्पति आदि हैं जो रसराज चन्द्र से सम्बन्धित हैं। अस्तु मनुष्य पर भी जन्म-काल के ग्रहों की स्थिति का प्रभाव हुए बिना नहीं रह सकता।

रेलगाड़ी को यथावत् संचालनार्थ जैसे सिग्नल और रेल-पट्टी के सांदें (Points) आवश्यक, मार्गदर्शक तथा सुरक्षाहेतु अपेक्षित हैं, उसी तरह मनुष्य को ग्रहों की गति को देखते हुये अपने जीवन का निर्वहन करना हितकर है। ग्रहों से भयभीत होने या आशा निराशा में पड़ने की जरूरत नहीं है। ये तो जीवनगाड़ी को ठीक ठीक चलाने के लिये सिग्नल (संकेत) हैं जो लोग ग्रहों के फलों को अनिवार्य मानते हैं, वे भीरु हैं। ग्रहों के कुफलों को निवारण किया जासकता है। यह मेरा मत ही नहीं ज्योतिषाचार्यों का भी कथन है कि "ग्रहों के प्रभाव को साहस, दृढ़ मनोबल, पुरुषार्थ और धैर्य के साथ मिटाया जा सकता है।" खान पान, रहन सहन, आचार विचारों में परिवर्तन कर देने तथा सावधानी बरतने से ग्रहों का निग्रह किया जासकता है। ग्रहों के कुफलों से बचने के विस्तृत विवरण को प्रस्तुत करना इस लेख का विषय न होने से अधिक लिखना उचित नहीं जान पड़ता। अब हम जन्म के समय ग्रह स्थिति के अनुसार कुछ कुंडलियां दे रहे हैं, जिनसे ज्योतिष का सामान्य ज्ञान करके व्यक्ति भी कुछ जान सकते हैं। ज्योतिष और आयुर्वेद का जहां एक ही स्थान पर पूर्ण अस्तित्व है वह वैद्य और ज्योतिषी धन्य है। उभयाश्रयी विषयों के आधार पर यदि रोगी की चिकित्सा की जाय तो रोगी और चिकित्सक दोनों सफलता पावेंगे ऐसा मेरा मत है। कतिपय रोगों के सूचक जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति को हम वैद्यों तथा रोगियों के उपयोगार्थ यहां लिख रहे हैं—

यह है अर्श रोग सूचक जन्म कुण्डली

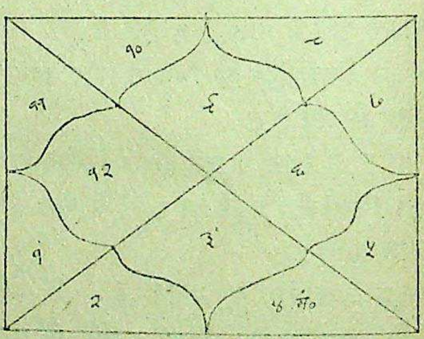

जातक के अष्टम स्थान में मंगल ग्रह की स्थिति अर्श (बबासीर) रोग की सूचक है। अन्य पाप ग्रहों की दृष्टि से रोग के सम्बन्ध में अधिक कहा जा सकता है। इसी प्रकार शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्टय हो तो रोग का बल कम होजायगा।

आगे की कुण्डली चर्म रोग तथा रक्त विकार वाले व्यक्ति की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

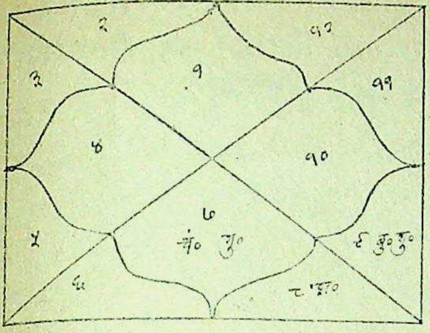

जिस मनुष्य के जन्म समय कुंडली में जन्म से अष्टम स्थान में शनि और शुभ ग्रहों की उस पर दृष्टि न हो तो उस व्यक्ति को दाद, खाज, कुष्ठ आदि चर्मरोग होते हैं।

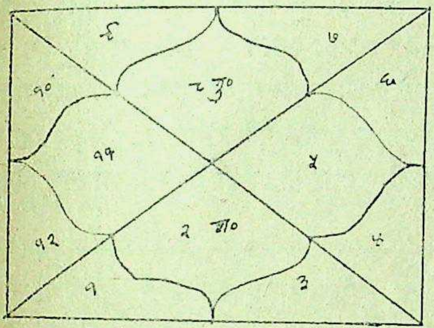

यह वात रोग योग कारक कुण्डली है—

जिस व्यक्ति के जन्म समय लग्न में गुरु और सप्तम स्थान में शनि बैठा हो तो वह व्यक्ति वायु विकार से पीड़ित रहता है। इन ग्रहों की महा दशा में अथवा अन्तर्दशा में यह योग प्रबल बन जाता है।

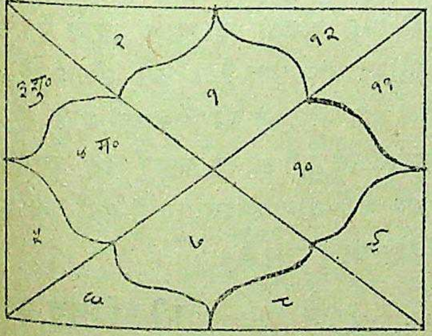

यह कुण्डली कृश-शरीर कारक है

जिस व्यक्ति के जन्म समय लग्न से तीसरे भाग में शुक्र और चौथे में मंगल हो उस व्यक्ति का शरीर बलवान और सुदृढ़ नहीं होता। ऐसा मनुष्य विशेषतः दुबला पतला होता है। निर्बलता के कुछ न कुछ लक्षण बनते रहते हैं।

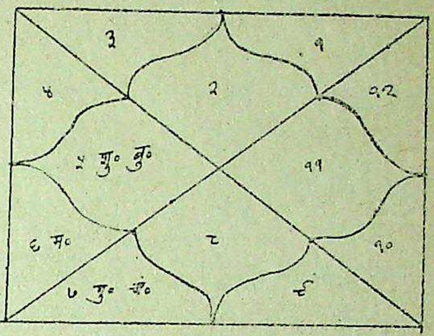

यह वात कफ विकार वाले मनुष्य की जन्म कुंडली है।

इस कुंडली में लग्न से पांचवे स्थान परम मंगल है। यह योग जातक को वात कफ जन्य रोगों से पीड़ित करता है। यदि इस स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो मंगल का प्रभाव यथा समय कम हो जाता है। मंगल की महादशा अथवा अन्तर्दशा में रोग की प्रबलता स्वाभाविक है।

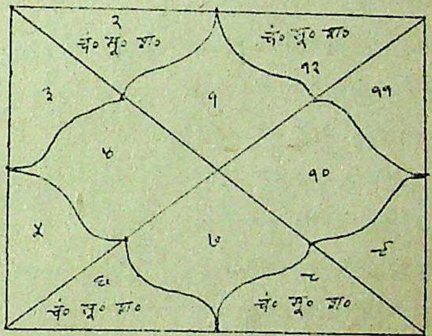

यह दृष्टिमान्द्य योग सूचक जन्म कुण्डली है।

जिस व्यक्ति के जन्म समय, दूसरे, छठें, आठवें अथवा बारहवें स्थान में चन्द्र, सूर्य और शनि तीनों ग्रह, चार स्थानों में से किसी में भी हों, उस मनुष्य की आंखों की ज्योति कम होती है। कम दिखाई पड़ता है। साथ ही शरीर में वायु की प्रबलता रहती है। ग्रहों की महादशा और अन्तर्दशा में ग्रहों का फल उग्र हो जाता है।

आगे की कुंडली श्वास, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोग की सूचक है।

जन्म के समय लग्न में चन्द्र हो और पाप ग्रहों से घिरा हो और सप्तम स्थान में शनि चन्द्र को पाप दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

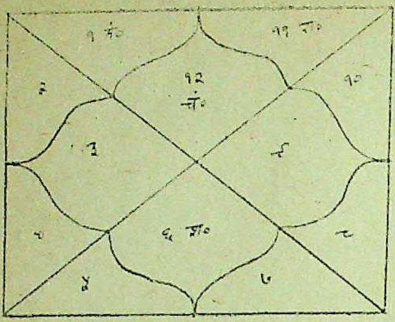

देख रहा हो तो जातक दमा, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोग आदि से समय समय पर पीड़ित रहता है। ग्रहों की महादशा और अन्तर्दशा में विशेष रोग वृद्धि होती है।

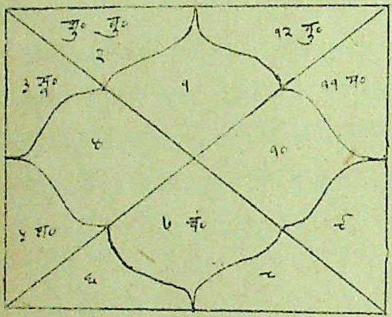

इस कुण्डली में ग्रहों की स्थिति कर्ण पीड़ा कारक है।

जन्म के समय जिसके तृतीय, पंचम और एकादश भाव में पापग्रह पड़े हों और उन्हें शुभ ग्रहों की दृष्टि प्राप्त न हो तो जातक को किसी भी प्रकार की कर्णपीड़ा होती है। श्रवण शक्ति कमजोर हो जाती है। ग्रहों की महादशा तथा अन्तर्दशा में रोग में प्रबलता आजाती है।

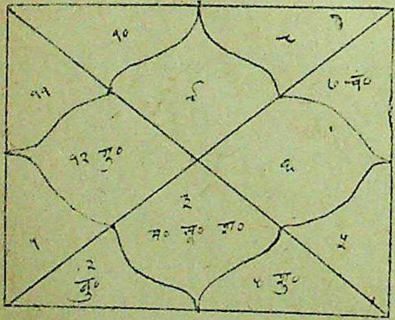

जन्म के समय ग्रहों की यह स्थिति बहरापन सूचित करती है।

जिसकी कुंडली में सप्तम स्थान पर तीन पाप ग्रह बैठे हों और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो जातक बहरा होता है उसे सुनाई नहीं देता है। ग्रहों की महादशा अथवा अन्तर्दशा में रोग में वृद्धि होती है।

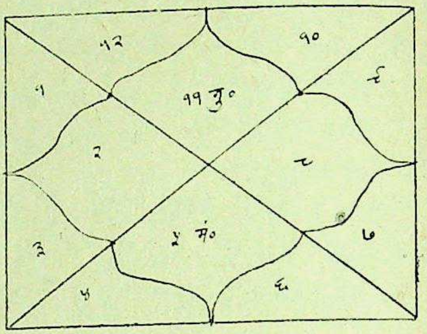

जिस जातक के जन्म समय जन्मकुंडली के लग्न में में गुरु हो और सप्तम स्थान में मंगल हो तो ऐसे व्यक्ति को वीर्य विकार और तत्सम्बन्धी कष्टों का सामना करना पड़ता है। अर्थात् गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित रहता है। ग्रहों की महादशा तथा अन्तर्दशा में रोग प्राबल्य होता है।

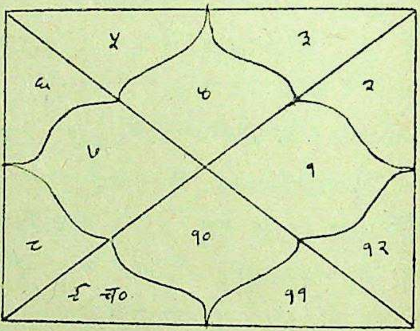

जिसकी जन्म कुंडली के छटवे स्थान में चन्द्र हो तो उसे मन्दाग्नि रोग होता है। उसे भोजन शीघ्र नहीं पचता हमेशा भूख न लगने की शिकायत बनी रहती है।

हम पाठकों को पुनः स्मरण करादें कि पुरुषार्थ उपचार, प्रयत्न, धैर्य और अध्यवसाय से ग्रहों के कुप्रभाव को कम किया जा सकता है।

—श्री गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'
विद्यावाचस्पति
शांति कुटीर, पो० आगर मालवा
(म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोखरू

श्री वैद्य चन्द्रशेखर मिश्र

—×—

पापन के अरि राम जिमि अन्धकार के भानु।
मूत्रकृच्छ्र तव जगत में अरि गोक्षुर हि मानु।।

मूत्राघात एवं मूत्रकृच्छ्र कोई नवीन व्याधि नहीं है। चरक संहिता में इसका वर्णन प्रादुर्भाव कारण सूत्रस्थान के सप्तम अध्याय में वर्णित है—

बस्ति मेहनयो शूलं मूत्रकृच्छ्र शिरोरुजा।
विनामो वङ्क्षणानाह स्याल्लिङ्गं मूत्र निग्रहे।।

प्रायशः इस रोग से ग्रस्त रोगी ज्ञात अज्ञात में कार्य की व्यस्तता के कारण मूत्रवेग को रोक लेते हैं। तब उन व्यक्तियों पर मूत्राघात या मूत्रकृच्छ्र रोग का प्रकोप हो जाता है। वह इन लक्षणों से लक्षित होता है कि बस्ति एवं कोषों में शूल का चलना, मूत्र की अल्पतम् प्रवृति या बिल्कुल न होना, अण्ड कोषों पर सूजन का होना आदि अस्तु।

तब डाक्टर लोगों के पास तो सीधा सा उपाय है। "कैथेटर त्वं शरणम्:" उनका तो ब्रह्मास्त्र कैथेटर है और डाक्टरों की शरण में जाने वाले रोगी पर तो कैथेटर रूपी ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कुशल ब्रह्मास्त्र वेत्ता डाक्टर करते ही हैं। दो-चार बार में भाग्यवश रोगी स्वस्थ हो जाता है तो ठीक है अन्यथा समय एवं धन का व्यय कर रोगी पश्चात् वैद्य की शरण में आता है तब हमारा सुदर्शन चक्र गोखरू "त्रिकण्टक" स्वादु कण्टक, श्वदंष्ट्रा ब्रह्मास्त्र रूपी कैथेटर पर क्या विजय प्राप्त नहीं करेगा? करेगा अवश्य करेगा हमने ऐसे कई डाक्टरों द्वारा छोड़े गये रोगियों को देखा है एवं पूर्ण स्वस्थ भी सुदर्शन चक्र रूपी गोखरू से किया है।

सफल चिकित्सा विधि

प्रथम उदाहरण—एक जाट था मूत्राघात का रोगी चला गया सीधा कैथेटर रूपी ब्रह्मास्त्र वेत्ता डाक्टरों के पास जनरल हास्पिटल में और दाखिल कर लिया गया इनडोर पेसेन्ट में। दिन में २-३ बार ब्रह्मास्त्र कैथेटर का प्रयोग किया जाने लगा उस पर किन्तु पन्द्रह दिन तक भी हालात यथापूर्व चलती रही। तब उसी का एक मित्र उसको हमारे यहां पर ले आया। किन्तु उसने दवा लेने से इन्कार कर दिया कारण यदि दवा से मूत्र नहीं आवे तो फिर डाक्टर भी ब्रह्मास्त्र का प्रयोग न करें और मुझे मरना पड़े। फिर भी उसको विश्वास दिलाकर एवं सन्तोष बंधाकर गोखरू पञ्चाङ्गार्क, गोक्षुरादि गुग्गुल, शुभ्र पर्पटी की मात्रा एक उसी वक्त दी गई ४ गोली देकर २-२ गोली रात्रि में दो घन्टे के अन्तर से देने को कहा गया। विश्वास करिए रोगी उसी रात्रि में अपने को स्वस्थ महसूस करने लगा अपने आप दूसरे रोज प्रातः काल आकर पैर पकड़ने लगा। उसको पूर्ण आराम मिल गया था फिर उसे २-३ दिन अल्प मात्रा में औषधि सेवन करायी गई और वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। आज तक पुनः रोगाक्रान्त भी नहीं हुआ।

इस रोग में शिरः शूल भयंकर हो तो जवाहर मोहरा, प्रवाल पंचामृत, खताई आदि भी दी जानी चाहिये। अण्डकोषों पर सूजन हो तो तमाखू के पत्ते बांधना अच्छा रहता है। असह्य जलन हो तो इलायची, चन्दन, दूर्बा, मिसरी भी गोखरू के साथ सम्मिलित की जानी चाहिए जो तुरन्त आराम करती है।

द्वितीय उदाहरण—इसी रोग का दूसरा उदाहरण भी मैं एक रोगी का आपके समक्ष पेश करता हूं। वर्तमान में जहां पर मैं रहता हूं रात्रि को १२ बजे मुझे मूत्राघात के रोगी को देखने जाना पड़ा। यहां पर भी डाक्टर विथ कैथेटर की कृपा ६-७ रोज हो चुकी थी। किन्तु हमारा अव्यर्थ सुदर्शन गोखरू काम आया। मैं वहीं रुक गया तथा आधा तोला गोक्षुरादि चूर्ण, आधा तोला शतावरी चूर्ण दूध में उबालकर शक्कर मिला पिलाया। एक घण्टे बाद रोगी को मूत्र आगया। २-३ मात्रा उसको और दी गईं बस, आज भी वह रोगी पूर्ण स्वस्थ है।

डाक्टर मूत्रकृच्छ्र की भयानक व्याधि को कैथेटर साध्य मानते हैं जिसमें अश्मरी ग्रन्थि या मूत्रकृच्छ्र आदि की बातें बनाते हैं पर वास्तव में मूत्रकृच्छ्र रोग पर चाहे वह बालक, युवा, वृद्ध कोई भी क्यों न हो गोखरू मूत्रकृच्छ्र

—शेषांश पृष्ठ ३६ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रक या चीता

श्री मक्खनलाल वैद्य भूषण

—×—

इसका वृक्ष भारतवर्ष में प्रत्येक स्थान पर मिलता है। इसके पत्ते बेल के पत्तों से मिलते जुलते हैं आपस में तीन-तीन कभी जोड़ पर कभी नीचे ऊपर डंठल में लगे रहते हैं। यह डंठल छोटा होता है। ग्रामीण मनुष्य इसके पत्तों का शाक बनाकर खाते हैं। इसकी जड़ों और टहनियों में गाँठें होती हैं।

जाति भेद--

चित्रक कई जातियों का होता है, जैसे श्वेत, रक्त, कृष्ण, पीत और धूसर आदि अनेक जातियों का वर्णन पुस्तकों में मिलता है। किन्तु हमें केवल रक्त और श्वेत जाति का ही चीता उपलब्ध होता है। इन दोनों की रचना में अंतर केवल इतना है कि लाल चीते के फूल, पत्ते, टहनी आदि रक्ताभ होते हैं तथा श्वेत के फूल, पत्ते और टहनी आदि सब सफेद होते हैं।

इसके पुष्प चमेली के समान तथा डंठल लम्बे होते हैं। इन्हीं लम्बे डंठल में पुष्प कोष लगे रहते हैं। इन पुष्पों पर छोटे छोटे रोम जो शहद के समान एक तरल वस्तु से सने रहते हैं प्रायः मधुमक्खी उन पुष्प कोषों पर मड़राती रहती हैं तथा हाथ से छूने पर चिपचिपे महसूस होते हैं। डंठल पर रेशों के कारण से यह ऐंठी हुई सी प्रतीत होती हैं, पुष्प गुच्छों के रूप में लगते हैं। रक्तवर्ण का चीता औषधि के काम में लाया जाता है। श्वेत की अपेक्षा गुणों में यह उत्कृष्ट भी है।

काले चीते का वर्णन निम्न प्रकार से है—

काले चीते के सेवन करने से बाल काले हो जाते हैं, यदि इसको गौ सूंघ ले अथवा इसकी जड़ दूध में डाल दी जाये तो दूध काला हो जाता है।

गुण धर्म--

चीता—पाचक, रूक्ष, हल्का, अग्निवर्द्धक, पाक में कटु, ग्राही, कड़ुवा, गर्म, रुचिकारक, अग्नि के समान तीक्ष्ण, शोथ, कुष्ठ, अर्श, कास, वातोदर, कण्डू, यकृत के रोग, ग्रहणी, आम, उदर रोग को नाश करता है और रसायन है। ज्वर में अद्भुत चमत्कारिक प्रभाव करता है।

प्रयोग--

चित्रक मद्यासव (टिंचर)—चित्रकमूल छाल एक भाग, पीपरामूल एक भाग, संतरे का छिलका एक भाग, कुटकी एक भाग, मद्य सोलह भाग।

संधान विधि—७ दिन, मात्रा—२ से ४ माशा।

गुण—अरुचि और अग्निमांद्य के लिये अत्यन्त लाभदायक है। यकृत, संग्रहणी और शोथ में लाभ देता है। यदि किसी बच्चे को अन्न न पचता हो तो इस टिंचर की २ से ५ बूंद दीजिए। भोजन पचने लगेगा और शौच साफ आयेगा।

चीते को घिसकर फूली हुई ग्रंथि पर व शोथ पर लगाना चाहिए। चीते की हरी जड़ से दूध के समान तरल पदार्थ निकलता है। इसको नेत्र रोगों जैसे-लालिमा, सूजन, जलन आदि पर लगाना उपयोगी है। चीते की छाल पीस कर वैसलीन या घृत में मिलाकर लेप करने से दाद नष्ट हो जाता है। चीते के गरम पत्ते पीसकर व्रण पर लगाने चाहिए। चीते की जड़ व देवदारु को पीसकर लेप करने से श्लीपद नष्ट होजाता है। चीते की जड़ को पीस कर घड़े के भीतर लेपित कर जमाये हुए दही का तक्र पीने से अर्श रोग समाप्त हो जाता है।

चीते का तेल—चीता का स्वरस १ सेर, अमलतास के पत्तों का रस १ पांव, हल्दी, बावची, त्रिफला, अंजीर की छाल २-२ तोला और तिल का तेल १ सेर। सबको मिलाकर तैल पाक विधि से तेल तैयार कर लीजिये।

गुण—यह तेल श्वेत कुष्ठ, दाद, चर्मदल कुष्ठ को नष्ट करता है। चीते की जड़ को मलकर के स्वरस निकाल लें। इसे कच्चे नारियल के जल में उक्त तेल मिला कर तीनों को अग्नि द्वारा पुनः पाक करें जो तेल प्राप्त हो वह कंडू, व्रण, फोड़ों पर लगायें। शरीर में कण्डू जोर से चलती हो तो इसकी जड़ की छाल का क्वाथ पिलावें।

अर्श के मस्सों पर—चीते की जड़ का चूर्ण, सौभाग्य, हल्दी ६-६ माशा, अफीम ३ माशा पीसकर मस्सों पर लेप करें। इससे शांति होगी।

चीते का चूर्ण—चीते की जड़ का चूर्ण, सेंधा नमक, इन्द्रजौ, करञ्ज, बकायन १-१ तोला चूर्ण तैयार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१-२ माशा तक्र में मिला कर ७ दिन तक सेवन करना चाहिए। इससे अर्श जल्द नष्ट हो जाता है।

चित्रकादि लोह—चीता, सोंठ, वासामूल, गिलोय, शालपर्णी, अपामार्ग क्षार, लालजटा क्षार, मानकन्द ६-६ माशा, लौह भस्म, अभ्रक, पिप्पली, ताम्र भस्म, यवक्षार और पांचों नमक २-२ तोला, गोमूत्र ८ प्रस्थ मृदु अग्नि द्वारा पाक विधि से सिद्ध करें। तैयार होने पर उतार कर शीतल होने के बाद ८ तोला शहद मिला दीजिये। यह यकृत, प्लीहा, शोथ, कामला, पांडु आदि रोगों में लाभदायक है।

चित्रकादि तैल—चीते की जड़, अजवायन, चव्य, कटेरी छोटी, करंजबीज, सेंधा नमक, आक की जड़, प्रत्येक ३ तोला, तेल १ सेर, गोमूत्र ४ सेर, तैल सिद्ध कर लीजिए।

गुण—नासिका द्वारा सूंघने पर नासार्श को समाप्त कर देता है।

चित्रकादि क्षार—चीता, पीपल, सेंधा नमक, बच ४-४ तोला सबको ४ तोला घृत में मिलाकर लघुपुट देकर शीतल होने पर निकाल लें। यह क्षार तैयार है। इसको मधु या गर्म जल से सेवन करने पर तिल्ली, यकृत, गुल्मशूल नष्ट होते हैं। चित्रक को शहद के साथ चाटने पर नकसीर बन्द हो जाती है।

चित्रकादि चूर्ण—चीता, पीपल, हींग, गजपीपल, पोहकरमूल, अनारदाना, स्याहजीरा, बाय बिडंग, धनियां, हाऊबेर, सोया, हिंगुपत्री, अम्लवेत, अजवाइन, कचूर, अजमोद, काला नमक, तुम्बरु १-१ तोला, सबके बराबर सोंठ, बिजौरे नीबू के स्वरस में भावना देकर सुखा रखें।

गुण—आमवात, गुल्म, तिल्ली, जिगर की खराबी, पेट में उत्पन्न सभी प्रकार के शूलों के लिए अद्वितीय है।

चित्रकादि मोदक—चित्रक, निशोथ, दन्तीमूल, वायबिडंग, सोंठ, मिर्च, पीपल, समभाग चूर्ण करके गुड़ की चाशनी में डालकर लड्डू बना लीजिये। १-१ तोला गर्म जल के साथ लेने पर परिणामशूल को नष्ट करता है।

—श्री पं. मक्खनलाल वैद्य भूषण
श्री पारीक आयुर्वेद भवन
सहजनवां (गोरखपुर)

पृष्ठ ३३ का शेषांश

की अग्नि देवे इस प्रकार आठ पुट देवे तो शिलाजीत की भस्म होवे।

शिलाजीत की यह भस्म, कांत लौह भस्म और वैक्रांत मणि भस्म तीनों सम भाग लेकर उसे त्रिफला, सोंठ, मिर्च, पीपर और घृत मिलाकर बलाबल देख कर देने से पांडु रोग, राजयक्ष्मा, मंदाग्नि, प्रमेह, गोला, तिल्ली, उदर के घोर विकार और योनि विकार नाश होते हैं।

पथ्यापथ्य—

शिलाजीत खाने वाले को दंड, कसरत, धूप, पवन, पित्त संतापक एवं दाहक वस्तुओं को त्याग देना चाहिए। जितने दिन औषधि सेवन करे उससे दूने दिनों तक पथ्य से रहना चाहिये। पथ्य में पुराने चावल, दूध, घृत का अधिकतर सेवन करे। पर उपरोक्त अपथ्यकर वस्तुओं का तो बिलकुल ही त्याग रखे।

—श्री अम्बिकाप्रसाद अवस्थी
पुरवा, गढ़ा, जबलपुर (म. प्र.)

पृष्ठ ३७ का शेषांश

की अत्युत्तम औषधि है। चरकोक्त दस मूत्र विरेचक औषधियों में गोक्षुर की प्रधानता सर्वसोपादेयता एवं सर्व सुलभता है। मूत्रकृच्छ्र में मैं Surgery एवं कैथेटर की आवश्यकता नहीं समझता तथा सभी प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इसका वर्णन भी मूत्राघात अश्मरी आदि के प्रबलतम शत्रु के रूप में मिलता है जैसे—

त्रिकण्टकस्य बीजानां चूर्ण माक्षिक संयुतम्।
अविक्षीरेण सप्ताहम् पीतमश्मरी पातनम्॥
—सु॰सं॰

घृतं श्वदंष्ट्रा स्वर सेन सिद्धं।
क्षीरेण चौवाष्ट गुणेन पेयम्॥ —च॰ सं॰

गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृत बस्ति शोधनः।
मधुरो दीपनो वृष्योः पुष्टिदः चाश्मरी हरः॥
प्रमेह श्वास कासार्श कृच्छ्र हृद्रोग वात नुत्॥
—भा॰प्र॰

इसी प्रकार शोढ़ल राज निघण्टु आदि में गोखरु का वर्णन मूत्राघात एवं तत्सम्बन्धी रोगों पर अव्यर्थ बताया गया है जो प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा स्पष्ट भी हो चुका है।

—श्री चन्द्रशेखर वैद्य
राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय
सरगांव (भीलवाड़ा) राज॰

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी सफल चिकित्सा-विधि

शीर्ष सौषुम्न की एक केस हिष्ट्री

श्री वैद्य हरिमोहन शर्मा

सन् १९६० की वर्षा ऋतु की बात है । मैं सवाई माधोपुर जिले के राजकीय आयुर्वेदीय औषधालय मोरां जो नादोती तहसील का एक प्रसिद्ध कस्बा है में चिकित्सक था। वहां से ४ मील दूर एक गांव है गढ़खेड़ा । वहां मुख्य आबादी मीणा किसानों की है । दोपहर के लगभग २ बजे थे । गढ़खेड़े का समृद्ध किसान लालाजी पटेल मेरे पास आया । मैंने हालचाल वहीं पूछे तो ज्ञात हुआ लड़का १५ दिन से बीमार है । ३ बार बामनबास के डाक्टर को, दो बार गौतम को २-३ बार नादौती और सपावद के चिकित्सकों (वैद्यों) को भी दिखा दिया गया है पर निदान के संबंध में भी वे लोग एक मत नहीं हैं । वैद्यों की जैसी कि गांवों में साधारण आदत है विभिन्न प्रकार की १०-१२ सूईयां लगा चुके हैं । डा० की दवा भी ७ दिन से है। परन्तु अब तक कोई फायदा नहीं है । लड़के का बचना मुश्किल है आदि । ये सभी लोग उस क्षेत्र के स्थानीय निवासी व प्रसिद्ध चिकित्सक माने जाते थे। निदान जो रोगी के घर वालों को बताये गये थे बिगड़ा-मन्थर ज्वर, पुराना विषमज्वर (मलेरिया) श्वसनक ज्वर आदि । बड़े बड़े रोगों और चिकित्सकों के नाम का प्रभाव मुझ पर यह पड़ा कि मैं रोगी देखने रवाना होने से पूर्व ही हताश सा हो गया । खैर रोगी देखने अपनी भेषज मंजूषा के साथ साईकिल पर सवार हो गढ़खेड़ा पहुंचा । गांवों के अंधेरे, सीलन, बदबू और घुटन-युक्त नीची छप्पर वाले एक ओवरे में टूटी सी पुरानी खाट पर अत्यन्त गंदे और मैले बिछौने पर एक १०-१२ वर्ष का बालक अचेत व सन्निपात ग्रस्त हालत में पड़ा था। वह इतना कृश था और अन्धकार इतना था कि लालटेन के टिमटिमाते प्रकाश में इस चारपाई पर कोई लेटा है यह आभास नहीं होता था। चारों ओर १०-१२ स्त्रियां बैठी थीं और ५-६ पुरुष भी बैठे चिलमें पी रहे थे । एक सयाना कुछ झाड़ फूंक कर रहा था । मैंने किवाड़ खोलने के लिए कहा ताकि प्रकाश बढ़े । लोगों ने विरोध किया । पर मैंने दृढ़ता पूर्वक वहां से सभी स्त्री पुरुषों को चले जाने व किवाड़ खोलने को कह दिया । ४-५ मिनट के व्यवधान व कहा सुनी के बाद मैं इस स्थिति में हुआ कि उस अंधेरे ओवरे में कुछ देख सकूं । तंबाकू का धुंआ भी साफ हो गया । वहीं मैंने बच्चे की मां, तहसीलदार जी व लाला जी को बुलाया । बच्चे की परीक्षा की । गले में घरघराहट, अत्यन्त कृष्णवर्ण कृश शरीर १०५ डिग्री ज्वर, प्रलाप बार'बार उठ कर भागने की स्थिति, मूर्च्छावस्था में ही हाथों से कुछ पकड़ने व नोचने की चेष्टा, अबंध, बड़बड़ाहट, नाड़ी गति १०० से ऊपर, हृदय की धकधकाहट अतितीव्र, पहले ऐसा रोगी देखा न था । वायु-पित्त, कफ दोषों का पूरा समूह ही विकृत ७ दिन से पूर्ण मूर्छित व बिना कुछ भोजन किये था। बलपूर्वक पानी अवश्य मुंह में डाल दिया जाता था । अस्तु लगभग १० मिनट तक नाड़ी, नख, हृदय, फुफ्फुस, उदर, नेत्र व जिह्वा की परीक्षा की । नख रक्तहीन शुक्ल, जिह्वा मलपूर्ण व दुर्गन्धयुक्त, नेत्र श्वेत, उदर जलता हुआ व कठोर सुद्दोयुक्त था । सन्निपात ज्वर है पर श्वसनक है, आंत्रिक है या अन्य किसी कारण से यह तलाश करना बाकी था । उठकर बाहर आया । विचार करता रहा पर प्रकाश रेखा अनुपस्थित थी ।

अब रोगी का इतिहास पूछना शुरु किया । मालूम हुआ लगभग २५ दिन पूर्व लड़का गायें चराने गया था। वहां भरे पानी में किसी संपोलेने उसके पांव की छोटी उंगली को डस लिया । जब शाम घर आया तो वह सो गया । दूसरे दिन अपने घर वालों को उसने पिछले दिन की बात कही । घर वालों ने गढ़खेड़ा के रामू सुनार जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो चिकित्सा भी करता था को जाकर कहा उसने बिना कुछ पूछे परीक्षा किये ही उसकी अंगुली अपनी सोने-चांदी काटने की कैंची से काट दी ताकि सर्प विष निकल जाये। २-३ दिन लड़का उसी अंगुली पर गंदा कपड़ा लपेटे, गाय चराने जाता ही रहा। उस कटी अंगुली के क्षत पर कीचड़ मल मूत्र सना पानी लगता रहा, वह वर्षा में भीगता भी रहा, साथ ही रोजाना जंगल में आने जाने व घूमने फिरने पर उसे घायल अवस्था में ही श्रम करना पड़ा ज्वर बना। एकाध दिन निभाया गया। इसके बाद गौतम जी को बुलाया। उन्होंने ३ दिन तक इन्जेक्शन पेनिसिलीन दिये। पर लाभ न होने पर क्रमशः सलावद व नादों के वैद्यों को बुलाया। दोनों ने ही टाइफाइड बताकर क्लोरोमाईसिटीन दी। इधर ज्वर बढ़ता गया ही जाता देख बामनावास के डा० की ३ बिजिट कराई गई। अब बच्चा पिछले दिन से मूर्छित है। उठ-उठकर भागता है कपड़े फाड़ता है, अंट-शंट बकता है। प्रकाश से डरता है। अचानक ही मुझे शीर्ष सौसुष्न ज्वर का ध्यान आया। लक्षण मिलाये भी तो मिलते थे। काफी सोच विचार के पश्चात् जो व्यवस्था की गई वह निम्न है—

आधा रत्ती पुटपक्व विषम ज्वरांतकलौह, आधार सी ब्राह्मी वटी, $\frac{1}{8}$ रत्ती शुद्ध कस्तूरी, $\frac{1}{8}$ रत्ती भीमसैनी कपूर, शृंगभस्म एक रत्ती, $\frac{1}{8}$ रत्ती मुक्ता पिष्टी—इन सबकी १ मात्रा प्रति ३-३ घंटे बाद निरन्तर औषधि चालू रखी गई। इसे तुलसी पत्र व ब्राह्मी के साथ पिसवाकर दिलाई। ग्लीसरीन की बत्ती लगाकर मल त्याग कराया और वापस चला आया। दूसरे दिन जब पुनः गया तो मुझे स्वयं स्थिति में सुधार लगा घर वालों को नहीं। अतः आज मात्रा ८ के बजाय ६ बार ही दिलाई। रोगी के घर वालों को सूचीवेध पर विश्वास ज्यादा था अतः कैम्फर मुश्क इन ईथर का एक सूचीवेध तथा एक सूचीवेध एड्रीनलीन का दिया। तीसरे दिन रिपोर्ट मिली, कि रोगी का बहकना कम है। आंखें अभी खोली नहीं हैं। इस बीच दिन में ४-५ बार ग्लूकोज मिला गो दुग्ध नली द्वारा पिलाया जाता रहा था। तीसरे दिन से औषधि ४ बार चालू रखी। पांचवे दिन तक निरन्तर गया। दवा भी पूर्ववत् चालू रखी। मुझे संशय तो था, पर रोगी की जीवन शक्ति तथा औषधियों के कारण चालू प्रगति से आशान्वित भी था।

पांच दिन बाद कोई खबर नहीं मिली। कोई बुलाने या समाचार कहने भी नहीं आया। दवा अवश्य पांचवे दिन देखने के बाद ३ दिन की बनादी थी। इस बीच तापमान कभी कम तो कभी बढ़ता रहा था। एक बार फिर ग्लीसरीन एनिया द्वारा मलत्याग भी करवाया था। कोई खबर न मिलने के कारण मैंने सोचा रोगी मर गया है। ३-४ मास बाद उधर एक स्थानीय मेला था। मैं सपरिवार वहां गया था। ५-७ मित्र और २-४ इधर उधर के वैद्य बन्धु भी थे। अचानक लालजी मिल गया नमस्कार की। मैंने हाल चाल पूछा। उसी समय उस लड़के की मां जो वहां आयी हुई थी आई और मेरे पांव पकड़ कर बैठ गई तब तक मुझे वस्तु स्थिति का पता न था। मैं गले से सांत्वना के कुछ शब्द कहने वाला ही था कि लालजी ने पास ही खड़े एक १२-१३ साल के लड़के को मेरे पांवों में लिटा दिया। मैंने पूछा पटेल जी यह कौन है? वैद्य जी महाराज यही किशोर है जिसको आपने जीवन दिया है।

—श्री वैद्य हरिमोहन शर्मा भिषगाचार्य
४०५४, जौहरी बाजार, जयपुर-३ (राजस्थान)

प्राकृतिक चिकित्सा मुफ्त सीखें

प्राकृतिक चिकित्सा से रोग का मुख्य कारण स्थायी रूप से दूर होकर स्वास्थ्य बनता है। इसका आधार लेकर सभी वैद्य हकीम डाक्टर व पाठक लाभ उठा सकते हैं।

गांधी जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में प्राकृतिक चिकित्सा के ज्ञान की निःशुल्क प्रचार के हेतु मेरे निर्देशन में व्यवस्था की गई है। साधारण ज्ञान के लिये २०.०० तथा उच्च ज्ञान के लिये ५०.०० की पुस्तकें पर्याप्त हैं।

इस समय १५ वैद्य महानुभाव इसे सीख चुके हैं। प्रा० चि० की देशी विदेशी २०० पुस्तकों का सूचीपत्र मुफ्त मंगायें।

—श्री डा० हरिकिशन दास श्रीमाली M. Sc. N. D.
आइडियल हेल्थ स्टूडिओ, कटरा अबूतराब, यहियागंज, लखनऊ-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष्मा पर अजापञ्चक घृत की सफलता

दि० ५ जनवरी १९६८ को श्री कालू सुथार मेरे चिकित्सालय पहुना में चिकित्सा कराने आया, उस समय उस रोगी में यक्ष्मा रोग के पूर्ण लक्षण थे। उसके कथनानुसार मालुम हुआ कि बड़े हास्पीटल में उसका प्रवेश हो गया था परन्तु वह दो दिन बाद वहां से लौट आया और कुछ दिन बाद मेरे पास आया। मैंने स्पष्टविधिवत् परीक्षा की तब उसे निम्नाङ्कित लक्षण थे—

कासोऽसतापो वैस्वर्यज्वरः पार्श्वशिरोरुजा ।
छर्दनं रक्तकफयोः श्वास वर्चोगदोऽरुचिः ॥

फिर भी पूर्ण परीक्षा हेतु उसे मेहताएक्स–रे क्लीनिक भीलवाड़ा ले गया। वहां एक्स–रे रिपोर्ट से स्पष्ट हो गया कि इसका बायें फुफ्फुस का करीब १/२ भाग यक्ष्मा रोग से आक्रान्त है। इसके बाद इस रोगी का E.S.R. करवाया इससे भी यक्ष्मा रोग का स्पष्टीकरण हो गया। चिकित्सा व्यवस्था शुरू की जो इस प्रकार है—

सितोपलादि चूर्ण ३ माशा, अभ्रकभस्म, प्रवालभस्म २-२ रत्ती, गिलोय सत्, चौंसठ प्रहरीपीपल ४-४ रत्ती।

उपरोक्त औषधि २ मात्रा है दिन में दो बार शहद से चटाई गई। अजापञ्चक घृत दिन में तीन बार १-१ तोला बकरी के दूध के साथ दिया एवं उसे सोने बैठने के लिए बकरियों के झुण्ड में रहने का आदेश दिया। यह क्रम चलता रहा। १५ दिन तक कोई परिवर्तन नजर नहीं आया तब रोगी चिकित्सा व्यवस्था से उपेक्षा करने लगा परन्तु मैंने धैर्य दिला कर १५ दिन और चलाने का आदेश दिया ४-५ दिन बाद ही उसकी हालत में सुधार होता गया। चिकित्सा क्रम उसी प्रकार चलता रहा। एक माह बाद रोगी को आशातीत लाभ हुआ।

इस चिकित्सा से रोगी को काफी विश्वास हो गया अतः १ माह तक और उसी प्रकार चिकित्सा व्यवस्था चलती रही। रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो गया। इस समय रोगी का स्वास्थ्य काफी अच्छा है। कोई भी क्षय रोग का लक्षण नहीं है।

—श्री वैद्य मदनलाल श्रोत्रिय भिषगाचार्य, आयुर्वेदाचार्य
चिकित्सालय–पहुना, जिला चित्तौड़गढ़

गोमांस न खाने का वैज्ञानिक रहस्य

जिन कर्मों का आचरण करने या न करने के लिये वेदों ने कहा, उनके पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक कारण रहा है। किन्तु वैदिक काल में धर्म पर अधिक विश्वास था अतः वेदों ने धर्म का सहारा लिया। हमें देखना है कि गोमांस भक्षण के वर्जन के पीछे कौन सा वैज्ञानिक कारण है? जिस प्रकार मलेरिया के कीटाणु मच्छर और मनुष्य में अपना जीवन चक्र पूरा करते हैं, उसी प्रकार एक कीटाणु है जो गाय और मनुष्य में अपना जीवन चक्र पूरा करता है। इस कीटाणु का नाम टेपवार्म है। वह गाय की मांसपेशियों में रहता है। गोमांस को चाहे जितना उबालें वह कीटाणु मरता नहीं। इस प्रकार इसके कीटाणु आसानी से मनुष्य के पेट में पहुंच जाते हैं। पेट में पहुंचते ही अपने अनुकूल वातावरण पाकर ये कीटाणु बढ़ने लगते हैं और कई फीट लम्बे हो जाते हैं। यह कीटाणु उभय लिङ्गी होते हैं। रोज लाखों की संख्या में अण्डे देते हैं। इस प्रकार मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। भारत के लिये यह गौरव की बात है कि जिस तथ्य को दुनिया के वैज्ञानिक अब समझने की कोशिश करते हैं या समझते हैं, उसे भारत में वैदिक काल के पूर्व ही लोगों ने जान लिया था।

—श्री बल्लभदास बिन्नानी, 'ब्रजेश' साहित्यरत्न, साहित्यालंकार
४३, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षित प्रयोग

रोगनिवारक सरल प्रयोग—

श्वासरोग नाशक चूर्ण—सोंठ, मिरच, पीपल इन्हें समान भाग ले चूर्ण करें। उसके समान गुड़ और दूना घी मिलाकर चाटने से श्वास का रोग बहुत शीघ्र नष्ट होता है।

ज्वर पर पीपर चूर्ण—पीपर को कूट पीसकर शहद के साथ चाटे तो ज्वर, कास, श्वास, हिचकी, कंठशोथ, प्लीहा आदि रोग नाश हों।

संग्रहणी नाशक पानक—सोंठ, धनियां, सौंफ समान ले पीसकर शाम को २ तोला चूर्ण पाव भरपानी में डाल दें। इसे मसल कर छान लें तथा १ नीबू का रस और तीन चम्मच शहद मिलाकर ५ बजे सुबह पीलें।

इससे पेट साफ रहता है, आंव का बनना बन्द होता है, भूख खुलकर लगती है, खाया हुआ भोजन ठीक से हजम होता है तथा पेट की जलन भी शांत होती है।

अंड शोथ नाशक योग—बड़ी पीपर, सोंठ समान ले चूर्ण करें तथा दोनों के बराबर गुड़ मिलाकर ½ तोला की मात्रा दिन में तीन बार सेवन करें। इससे फोतों में पानी उतर आना (हाईड्रोसील) तथा मसूढ़ों की सूजन शीघ्र नष्ट होती है।

पिष्ट प्रमेह हर योग—एक दिन का उपवास कर हल्दी तथा दारूहल्दी का क्वाथ शहद से लें तथा कुछ दिनों को दाल खाना छोड़ दें केवल रोटी और हरी सब्जी प्रयोग करें। निश्चय ही सफलता मिलेगी।

पेचिस हर योग—आधी कच्ची तथा आधी भुनी सौंफ को पीस बराबर भाग की मिश्री मिलाकर मट्ठे के अनुपान से १-१ तोला दिन में ३-४ बार खायें। शीघ्र ही आंव का नाशकर आपकी व्यथा को तत्काल फायदा मिलेगा।

अरुचि नाशक योग—सुबह भोजन के एक घंटा पूर्व कालानमक तथा अदरख खायें। भूख खुलकर लगेगी।

अनन्तवात शिरो रोग नाशक योग—शहद का मालपुआ खायें तो अनन्तवात (शिर का रोग) दूर हो।

तेल आदि से जले का यत्न—(१) तिल का तेल एक पावभर और खाने का चूना गीला पुराना ४ पैसे भर दोनों को हाथ से एक पहर मसल राब सा कर रुई के फाहा से जले पर लगावें।

(२) पुराना गीला खाने का चूना दही के पानी में पीस जले पर लगावें तो वह अच्छा हो। तेल का जला हो तो उसके फफोले भी दूर होंगे।

अस्थि सन्धि टूट गई हो—सौ बार के धोये घृत में साठी चावल पीस कर लेप करें।

फूले को दूर करने का अञ्जन—चीनिया कपूर का बड़ के दूध में २ माशे तक अञ्जन करे तो फूला दूर हो।

दुखते नेत्रों पर लेप—लोहे के पात्र में नीबू का रस डालें उसको कुछ गाढ़ा करें। बाद में नेत्रों के ऊपर लगावें तो दुखती आंख अच्छी हो।

कर्णशूल पर—बकरे के मूत्र में सेंधा नमक डाल थोड़ा गर्म करें और कान में डालें तो कान का शूल दूर होता है।

कर्ण रोग पर—अदरख का रस, शहद, सेंधानमक, तेल ये सब इकट्ठा कर, इन्हें गर्म कर कान में डालें तो कान की पीड़ा, कर्णनाद, बधिरता और कर्णक्ष्वेड ये सब रोग दूर होते हैं।

पीनस होने पर—कालीमिरच, गुड़, हींग ये तीनों मिलाकर अनुमान मुवाफिक खायें तो पीनस का रोग जाता है।

कृमि दन्त पर—हींग को थोड़ा गरम कर दांतों के बीच में दें तो दातों के कृमि नष्ट होते हैं।

बालक का मूत्र बन्द हो गया हो—तो पीपल, मिरच, छोटी इलायची, सेंधा नमक इन्हें पीस मिश्री और शहद से चटावें तो मूत्र अच्छी तरह से उतरेगा।

नींद नाशक अञ्जन—काली मिर्चे को महीन पीस शहद से अञ्जन करे तो नींद नहीं आती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांख में वास आती है—नीम के पत्तों के रस का लेप करें तो कांख की दुर्गन्धि दूर हो।

सिर दर्द पर—तुलसी के पत्तों का रस और थोड़ा सा कपूर पत्थर पर चन्दन सा घिसें। उसके बाद सिर पर मालिश करने से गर्मी से होने वाला सिर दर्द नष्ट हो जाता है।

प्रतिश्याय पर—तुलसी पत्र ११, काली मिर्च ५ और थोड़ी सोंठ मिलाकर बनाई हुई चाय मिश्री मिलाकर पीने से प्रतिश्याय, खांसी तथा अङ्गों की ऐंठन दूर होती है।

अजीर्ण पर—हींग घी में भुनी हुई, मिर्चकाली, पिपरमेंट का फूल तीनों बराबर मात्रा में लें। पहले हींग कालीमिर्च पीसकर एकत्र करलें। बाद में इन्हीं में पिपरमेंट का फूल भी घोदें घोटने से द्रव जैसा बन जायेगा। इसे शीशी में भर कर कार्क लगादें। अजीर्ण, अफरा, जी मचलाना, वमन, पेट दर्द, शूल, बार-बार दस्त आना तथा शिरः शूल में हितकर है।

कफ में—पानी में शहद मिलाकर खाने से कफ कम हो जाती है।

हाथ पैर के दर्द पर—दूध में सोंठ उबाल कर पीने से आराम मिलता है।

दाद में—नींबू काटकर लगाने के बाद स्प्रिट से साफ कर लें।

चेहरे के दाग पर—पीली सरसों को पानी में पीसकर लेप करने से चेहरे के दाग मिट जाते हैं।

अण्ड वृद्धि और श्वास पर—अदरख का रस और शहद पियें तो वाताण्डवृद्धि पचें, तथा श्वास, खांसी, अरुचि और नाक बहना भी बन्द हो।

विषम ज्वर पर—तुलसी का रस, मिरच का चूर्ण साथ पियें तो विषम ज्वर दूर हो।

अतिसार पर—बबूल की छाल का रस शहद में मिलाकर पिलावें तो सात तरह का अतिसार जाय।

तिल्ली पर—घीकुवार का रस हल्दी चूर्ण युक्त पियें तो तिल्ली, अपची और पेट की गांठ निःसन्देह नष्ट होती है।

कण्डूपर—ग्वार पत्र का रस और हल्दी का कल्क सरसों के तेल में पकाकर लगाने से खुजली, दाद, विचर्चिका आदि सब रोग दूर होते हैं।

नेत्रों की सूजन पर—सौंठ, नीम के पत्ते इनमें थोड़ा सेंधा नोन मिलाकर महीन पीस इनकी पिण्डी नेत्रों ऊपर बांधें। नेत्रों की सूजन और खाज नष्ट करती है।

—श्री डा० हरिश्चन्द्र त्रिपाठी एच०एम०डी०
आयुर्वेद विशारद
श्री त्रिपाठी मेडिकल स्टोर, असलनापुर
सिकन्द्रा, कानपुर (यू०पी०)

गठिया बात नाशक—

(१) सोंठ, हल्दी समभाग वस्त्रपूत करके हल्दी के वजन के बराबर मिश्री मिलाकर एक शीशी में रख लेवें। प्रातः सायं नीम गर्म पानी (गुनगुने जल) से कम सेकम ४१ दिन सेवन करें। ३०। ४० वर्ष के पुराने वात रोगियों पर परीक्षित है।

(२) कम सुनने या ऊंचा सुनने वालों के लिए लहसुन को तिल तैल में जला दें। तेल को निथार कर अथवा छान कर शीशी में भर लें। २ से ५ बूंद तक कानों में तब तक व्यवहार करना चाहिये जब तक रोग समाप्त हो। लाभ दो हफ्ते बाद ज्ञात होगा।

(३) फसलीबुखार,जुखाम, सर्दी में लौंग,कालीमिर्च सोंठ, छोटी इलायची, दालचीनी और तुलसी पत्र को चाय के पानी की तरह उबालें। उसमें रुचि अनुसार चाय, चीनी दूध मिलाकर व्यवहार करें, परीक्षित है।

—श्री रामरतन गुप्त वैद्य
घघली (गोरखपुर)

बहु परीक्षित दो प्रयोग

शिवमोदकम्—हर्रा, भूम्रांवला, सुलफा, हल्दी, दारुहरिद्रा, केवांच बीज, आंवला, बेलगिरी, लौंग, मुरामांसी, भौरी, जटामांसी (बालछड़), मुनक्का, कूष्माण्ड, सोंठ, अनन्तमूल, आमलकी, नागेश्वर, मधु, चन्द्रसुर, श्यामलता, ब्रह्मभाटी, गजपीपली, गुड़च, तेजपत्र, इलायची, कालाजीरा, अजवायन, चन्दन, लाल चन्दन, मूसली, असगन्ध, गोखरू बीज—इन सब द्रव्यों को समभाग में तौल कर खरल में अच्छी तरह कूट के कपड़छन चूर्ण करलें। चूर्ण जितना हो उतनी ही मिश्री और चीनी मिला लें। तत्पश्चात् खरल में डालकर खूब पीस कर कांच के जार में रखिये। इसकी मात्रा १ महीने के शिशु के लिये १ रत्ती, इस प्रकार हर महीना १-१ रत्ती बढ़ाकर १ वर्ष के शिशु को १ माशा मात्रा में सबेरे शाम को दूध या जल के साथ देवें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग—बालशोष, कास, श्वास, मंदाग्नि, कब्ज, दुबलापन, अतिसार, रोगों के बाद की दुर्बलता, बुद्धिहीनता, इत्यादि बालरोगों पर अमृत तुल्य दवा है। इस औषधि को नवजात बच्चों को नियमित सेवन कराने से बच्चे रोगरहित होकर तन्दुरुस्त सबल तथा धीमान् बनते हैं।

बालामृत वटी—रस सिन्दूर, अभ्रक भस्म, घुड़बच, इलायची, नागेश्वर, जायफल, सोंठ, पीपली, काली मिर्च, जीरा, जायपत्री, तेजपत्र, लौंग, विडङ्ग, कूठ, काकड़ाशृङ्गी, असगन्ध, अजमोदा, हर चीज को समभाग में लेकर कूट कपड़छन चूर्ण कर लेवें। उसके बाद चूर्ण का अर्ध भाग रसपर्पटी दें। तत् पश्चात् खरल में डालकर शीतल जल डालकर खूब पीसकर मूंग के बराबर वटी प्रस्तुत कर लें।

प्रयोग—वमन, अतिसार, वातरोग, कास, श्वास, हिक्का, कण्ठरोग, तृष्णा, छर्दि, अरोचक, मंदाग्नि, ग्रहदोष, सर्व रोग, क्षीर दोष, इत्यादि रोगों में विविध अनुपान के साथ प्रयोग करें। शिशुओं को पतला मल होने पर इस वटी को भुने काला जीरे चूर्ण अनुपान से थोड़ा मधु मिलाकर सेवन कराने से १-२ मात्रा में आरोग्य मिलता है। नवजात शिशु को नियमित मातृ दुग्ध में सेवन कराने से बालक हृष्ट पुष्ट सबल तथा निरोग रहता है।

—कविराज श्री जीवानन्द साहु
कवि आश्रम सेवाश्रम, भातबिड़ा
लेविड़ी (सोहेला) जिला सम्बलपुर

और प्रयोग

मूर्छा रोग—ब्राह्मी की ताजी पत्ती का रस ६ माशे, वच का चूर्ण १ माशा, कुलंजन का चूर्ण १ माशा, शहद ३ माशा, घी ६ माशा सबको मिलाकर चटावें, यह १ मात्रा है। दिन में ऐसी दो मात्रा दें। एक प्रातः एक सायंकाल।

गुण—इसके प्रयोग से मूर्छा, अपस्मार, चित्त भ्रम, दिमाग की कमजोरी दूर होती है तथा बुद्धि बढ़ती है। अगर इस प्रयोग के साथ निम्न तेल का प्रयोग करें तो और शीघ्र लाभ होगा—

ब्राह्मी तेल—ब्राह्मी की ताजी पत्ती का रस १० तोला, काले तिल का तेल १० तोला, पिसी हुई ब्राह्मी की सूखी पत्ती २ तोला, गाय का दूध २० तोला, जल २० तोला सब मिलाकर पकावें। तेल मात्र शेष रहने पर छान कर शीशी में भर लें। इस तेल की मस्तक पर मालिश करें।

गुण—मूर्छा, दौरे आना, वात विकार तथा बालकों का सूखा रोग भी दूर होता है।

अपस्मार रोग—ब्रह्म दंडी का स्वरस मिश्री मिला कर पीवें तो अपस्मार रोग दूर होता है। अथवा—

ब्रह्म दंडी को घोटकर खांड़ तथा दूध मिलाकर पीने से अपस्मार रोग दूर होता है।

शीतपित्त—(१) शुद्ध गंधक को भांगरे के रस से सात भावना देकर २ रत्ती की मात्रा में शहद से सेवन करें तो शीतपित्त दूर हो।

(२) बादाम के छिलके का धुंआं देने से भी शीतपित्त ठीक हो जाता है।

मुख रोग—मीठे बादाम के छिलके की भस्म, जली सुपारी, बबूल का गोंद समान भाग लेकर कूट पीस कर चूर्ण करें फिर दालचीनी का तेल भी समान भाग डाल दें। इस मंजन के करने से दांतों के सब प्रकार के रोग, दांतों से खून बहना, मसूढ़ों की सूजन, पायरिया आदि रोग दूर होते हैं।

शिरो रोग—बादाम की गिरी तथा खशखश (पोस्त के दाने) समान भाग लेकर दोनों के बराबर खांड मिला कर कूट कर रख लें। आवश्यकतानुसार दूध में सेवन करें, यह दिमाग के कफ (रेशे) को सुखाकर बल देता है, बुद्धि को बढ़ाता है तथा पुराने सिर दर्द को ठीक करता है।

बालआध्मान पर—बादाम गिरी दस ग्राम, शुद्ध जयपाल तीन ग्राम, सड़ा खोपरा तीन ग्राम तीनों को पीस कर बाजरे प्रमाण की गोलियां बना लें। एक गोली ताजी पानी में घोलकर पिलावें।

इससे बालक को वमन विरेचन होकर उदर की शुद्धी होगी। इसके बाद एक-दो बताशे थोड़े पानी में घोल कर पिला दें। इससे चित्त की घबराहट व तृषा आदि उपद्रव शांत होंगे। इसके प्रयोग से बालक का पसली रोग, भयंकर डबल निमोनियां भी तुरन्त शान्त होता है।

वीर्य स्तम्भक—बादाम की गिरी व खशखस (पोस्त के दाने) के बीज समान भाग लेकर बड़ के दूध की भावना देकर गोलियां बना लें और दूध से सेवन करें।

—श्री डा० गेबी अली आर. एम. पी. आयुर्वेदरत्न
शरीफ मोहम्मदी दवाखाना, आकली दीवान
पोस्ट—खजूरी पंथ (मंदसौर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यालोचन

रामानुभव मंजूषा (सिद्ध भेषज संग्रह)

यह पुस्तक श्री पण्डित रामप्रसाद जी दीक्षित वैद्य द्वारा लिखी गई है जिसे श्री धन्वन्तरि आयुर्वेद फार्मेसी प्रकाशन सरदार शहर (राजस्थान) ने प्रकाशित कर मूल्य ५.०० रखा है जो कि उचित जान पड़ता है।

लगभग २०० पृष्ठ की इस पुस्तक में लेखक ने अपने घराने के परम्परागत् और अपने स्वयं के अनुभव सिद्ध अनुभूत योगों को अकारादि क्रम से बड़े सुन्दर ढङ्ग से दिया है।

मैंने अधिकांश योगों का मनन कर पाया कि वे जिस रोग पर लिखे गये हैं निश्चय ही प्रभावकारी हैं क्योंकि उन योगों में जिन द्रव्यों को लिया गया है वे सब उस रोग के विनाश के लिए स्वयं सिद्ध हैं। ऐसे उत्तमोत्तम परम्परागत गुप्त सिद्ध योगों को जनता के लाभार्थ प्रकाशित कर देने के लिए मैं लेखक महोदय को श्रद्धा के साथ धन्यवाद देते हुये इस पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार हो ऐसी कामना करता हूं।

मद्य निषेध विशेषांक

यह उक्त विशेषांक 'आरोग्य' मासिक अगस्त ६८ माह का अङ्क है जो श्री बिठ्ठलदास मोदी के संपादकत्व में आरोग्य मन्दिर गोरखपुर से प्रकाशित हुआ है। इस मासिक का वार्षिक मूल्य ६.०० और एक प्रति का ०.५० पैसे है।

इस उक्त अंक में मद्य (शराब) के सेवन से क्या-क्या हानियां, दुष्परिणाम होते देखे गये हैं और हो सकते हैं इस पर देश विदेश के मान्य कर्णधारों, विद्वानों,सन्त महात्माओं के लेखों व बचनों का अतिसुन्दर मननीय और प्रभावशाली सङ्कलन प्रकाशित किया गया है।

चूंकि हमारी राष्ट्रीय नीति मद्य-निषेध के प्रबल पक्ष में है। अस्तु इस अङ्क का राष्ट्र में अधिक से अधिक प्रसार व प्रचार होना अत्यन्त लाभकारी होगा। मंगाने का पता है—

—व्यवस्थापक, आरोग्य मन्दिर गोरखपुर (उ० प्र०)

हम ऐसे सामयिक, राष्ट्रीय नीति प्रतिपादि जन समाजहितकारी प्रकाशन के के लिये श्रद्धा के साथ सम्पादक महोदय का अभिनन्दन करते हैं और चाहते हैं इस अङ्क का अधिक से अधिक प्रसार हो।

हिंगु या हींग

यह उक्त पुस्तक आचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी भूतपूर्व 'आयुर्वेद निदेशक' मध्य प्रदेश द्वारा प्रणीत होकर फर्म श्री भजनलाल कुंजलाल हींग वाले लोहट बाजार हाथरस यू०पी० द्वारा प्रकाशित हुई है। मूल्य ०.२५ पैसे रखा गया है जोकि उचित है।

इस पुस्तक में आचार्य श्रेष्ठ ने हींग के विभिन्न भाषाओं के नाम, उसके भेद, प्राप्ति स्थल, प्राप्त करने की रीति, उसके गुण, धर्म और शोधन आदि पर उपयोगी प्रकाश डाला है।

अन्त में मात्रा प्रयोगादि देकर इस पुस्तक को केवल वैद्यों के लिये ही नहीं बल्कि सद् ग्रहस्थों के लिये भी उपकारी बना दिया है। आशा है कि वैद्यों के साथ ही साथ साधारण जनता भी इस पुस्तक को अपना कर उचित लाभ प्राप्त करेगी क्योंकि इसमें उत्तम शुद्ध हींग प्राप्त करने के स्थल के साथ ही साथ उसके उपयोग भी यथा क्रम उत्तम ढंग से वर्णित है। हम इस सद् प्रयास की सफलता चाहते हैं।

—श्री अम्बिका प्रसाद अवस्थी
विजयगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधान प्रश्नोत्तर

"धन्वन्तरि" के पाठकों के द्वारा अनेक प्रश्न विधि-विधान विषयक हमसे किये जाते हैं लेकिन हम उन प्रश्नों का समुचित उत्तर नहीं दे पाते। अब पाक्षिक 'आयुर्वेद-संदेश' के प्रधान सम्पादक एवं अखिल भारतीय पत्रकार संघ के सभापति तथा आयुर्वेद जगत के जाने माने विद्वान राजवैद्य पं० सुरेन्द्रनाथ जी दीक्षित ने इन प्रश्नों का उत्तर देना स्वीकार कर लिया है। अब ऐसे प्रश्नों को जिनके उत्तर अन्य पाठकों के लिये भी ज्ञानवर्धक समझे जायेंगे हम श्री दीक्षित जी की सेवा में प्रेषित करते रहेंगे तथा उनके द्वारा जो उत्तर हमको मिलेंगे धन्वन्तरि में प्रकाशित करेंगे। इस प्रकार धन्वन्तरि के पाठकों की समस्याओं का समाधान हो सकेगा।

—सम्पादक।

प्रश्न नं० १—उ०प्र० भारतीय चिकित्सा परिषद की नियमावली कहां से मिल सकती है? यदि इसका हिन्दी अनुवाद मिल सके तो सर्वोत्तम होगा।

उत्तर— उ० प्र० भारतीय चिकित्सा परिषद की नियमावली कोई नहीं है। इण्डियन मेडिसिन एक्ट १० सन् १९३९ संशोधित सन् १९५६ के द्वारा बोर्ड का संचालन होता है। इसका हिन्दी अनुवाद सन् १९३९ में गवर्नमेंट प्रेस में छपा था जोकि समाप्त होगया। उसके बाद सन् १९५६ तक कई बार इस कानून में संशोधन हुये। संशोधित कानून का हिन्दी अनुवाद सरकार ने छपाया नहीं। सुपरिटेण्डेण्ट गवर्नमेण्ट प्रेस (बिक्रय विभाग) इलाहाबाद को १.२० भेजकर अंग्रेजी भाषा में कानून की पुस्तक उपलब्ध हो सकती है। यदि हिन्दी की आवश्यकता हो तो "आयुर्वेद सन्देश" नामक पाक्षिक पत्र का विशेषांक "विधि विधानांक प्रथम भाग" सम्पादक आयुर्वेद संदेश लखनऊ—३ को पत्र लिखकर मंगा लेना चाहिये। इसमें टिप्पणी सहित इण्डियन मेडिसिन एक्ट का हिन्दी अनुवाद तथा उससे सम्बन्धित वैद्य समाज के लिये उपयोगी सरकारी आदेश भी प्रकाशित किये गये हैं।

प्रश्न नं० २—अन्य प्रांत के रजिस्टर्ड वैद्य उ०प्र० में चिकित्सा करना चाहें तो उन्हें उ० प्र० से रजिस्ट्री करानी होगी या नहीं? अन्य प्रांतों में जिनका रजिस्ट्रेशन अनुभव के आधार पर किया गया है तो यहां उनका रजिस्ट्रेशन हो सकेगा या नहीं। हो सकेगा तो किस प्रकार?

उत्तर—किसी प्रांत से रजिस्टर्ड वैद्य को दूसरे प्रांत में जाने पर उसे उस प्रांत में रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य है। यदि बिहार या राजस्थान अथवा पंजाब का रजिस्टर्ड वैद्य उ. प्र. में चिकित्सा करता है अथवा उ० प्र० का रजिस्टर्ड वैद्य राजस्थान या बिहार चला जाता है तो पता चलने पर रजिस्ट्रार को अधिकार है कि वह उसका नाम रजिस्टर्ड वैद्यों की सूची से पृथक कर दे। साथ ही उस प्रदेश में तो वह जब तक रजिस्ट्रेशन नहीं करा लेता है तब तक उस प्रदेश के अधिकारों का उपयोग करने का उसको अधिकार ही क्या है? जैसे बिहार-राजस्थान या पंजाब के रजिस्टर्ड वैद्य यदि उ० प्र० में चिकित्सा करते हैं तो पहिला प्रश्न उपस्थित होता है कि आपने यदि उन प्रदेशों को छोड़ दिया है तो क्या आपने वहां के रजिस्ट्रार को सूचित कर दिया है, यदि नहीं तो क्यों? और यदि सूचित कर दिया है तो फिर आप अपने को रजिस्टर्ड कैसे कहते हैं? क्योंकि नियमानुसार तो रजिस्टर से आपका नाम खारिज कर दिया गया होगा।

दूसरी बात यह है कि उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन एक्ट द्वारा अथवा उ० प्र० सरकार द्वारा जो भी अधिकार रजिस्टर्ड वैद्य-हकीमों को दिये गये हैं वह केवल उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा रजिस्टर्ड वैद्यों के लिये ही हैं न कि समस्त प्रांतों के रजिस्टर्ड वैद्यों के लिये हैं। ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति में दूसरे प्रदेश के रजिस्टर्ड वैद्य यदि एलोपैथी की औषधियां और ड्रग्स का उपयोग करते हैं तो उनका चालान ड्रग्स एक्ट के अनुसार हो सकता है। साथ ही यदि ऐसे व्यक्ति मेडिकल या फिटनैस् प्रमाण पत्र देते हैं तो धारा ४२० के अन्तर्गत दर्ज करके जालसाजी का मुकद्दमा उन पर आसानी से चलाया जा सकता है।

तीसरी बात है ऐसे लोगों के इस प्रदेश में रजिस्ट्रेशन की ? इस दशा में यह स्मरणीय है कि उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन एक्ट में संशोधन कर १३ फरवरी सन् १९५६ से सरकार ने कानून से धारा ४ (जिसमें प्राचीन अनुभवी वैद्यों का रजिस्ट्रेशन होता था) एकदम निकाल दी है, तो फिर अब उसके खुलने बन्द होने अथवा उसमें रजिस्टर्ड होजाने या कर लेने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता है।

वर्तमान में शिड्यूल का पैरा १-२-३ रजिष्ट्रेशन के लिए लागू है। पैरा १ किसी विश्वविद्यालय की आयुर्वेदिक फ़ेकल्टी के स्नातक अथवा गवर्नमेन्ट आयुर्वेदिक कालेज जिनका संचालन सरकार स्वयं करती हो और परीक्षा लेने तथा उपाधि देने की भी व्यवस्था करती है। ऐसे स्नातकों का रजिस्ट्रेशन पैरा १ में होता है।

पैरा २—इसमें केवल उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड से सम्बन्धित आयुर्वेद एवं यूनानी के कालेजों से उत्तीर्ण छात्रों का ही रजिस्ट्रेशन होता है।

पैरा ३—नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ देहली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय ज्वालापुर तथा उ० प्र० के बाहर किसी भी आयुर्वेदिक कालेज से निकले हुए छात्र जिन्हें उस प्रदेश के इण्डियन मेडिसिन बोर्ड या फेकल्टी ने मान्यता दी हो, इस प्रदेश में पैरा ३ में रजिस्ट्रेशन किए जाते हैं।

प्रश्न नं० ३—रजिस्ट्रेशन के लिए किस किस संस्था की कौन कौन सी उपाधियां मान्य हैं ?

उत्तर—नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ देहली से आयुर्वेद भिषग, वैद्य विशारद, आयुर्वेद विशारद; तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन से वैद्य विशारद परीक्षा पास स्नातक परीक्षा पास करने के दो साल बाद किसी वैद्य का कार्याभ्यास सम्बन्धी प्रमाण पत्र उपस्थित करने पर तथा २१ वर्ष की आयु पूर्ण होजाने पर रजिस्टर्ड किये जाते हैं। साथ ही नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ देहली की आयुर्वेदाचार्य व वैद्याचार्य परीक्षा पास एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन की आयुर्वेदरत्न परीक्षा पास होने का प्रमाणपत्र उपस्थित करने पर २०.०० फीस देकर अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय ज्वालापुर की आयुर्वेद भास्कर जिसमें B. A. M. S. न लिखा हो। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन जि. मथुरा की आयुर्वेद शिरोमणि जिसमें B. O. M. S. या अन्य कोई अंग्रेजी अक्षर न लिखे गए हों तो पैरा ३ में रजिस्टर्ड हो सकते हैं। उक्त संस्थाओं की जिन उपाधियों में अंग्रेजी अक्षर लिख दिये गये हैं वे उपाधियां उक्त संस्थाओं की उ० प्र० इंडियन मेडिसिन बोर्ड से मान्य नहीं हैं।

बाकी वे समस्त उपाधियां जिन्हें किसी भी प्रदेश के इण्डियन मेडिसिन बोर्ड या आयुर्वेदिक यूनानी फेकल्टियों ने दिया हो वे सब पैरा ३ के अन्तर्गत रजिस्ट्रेशन के लिये मान्य हैं।

आवश्यक सूचना—नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेद भिषग या वैद्य विशारद तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओं का अधिक दिनों तक मान्य रहना संभव नहीं है, इसलिए जिसको परीक्षा पास किए दो साल पूरे होगए हैं अथवा धारा ४ में रजिस्टर्ड वैद्यों ने यदि कोई उपर्युक्त उपाधियां प्राप्त करली हों तो उन्हें शीघ्रातिशीघ्र २०.५० भेजकर अपना रजिस्ट्रेशन करा लेना चाहिए।

उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड ने निश्चय किया है कि जिनकी प्रवेश योग्यता हाईस्कूल नहीं होगी, या जिन संस्थाओं का पाठ्यक्रम ४ वर्षों का नहीं होगा अथवा जिन संस्थाओं में विधिवत् क्रियात्मक शिक्षा नहीं दी जाती होगी भविष्य में उनके स्नातकों का रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ करेगा। इस निश्चय के क्रियान्वित होते ही उन संस्थाओं के स्नातकों का रजिस्ट्रेशन बन्द कर दिया जायगा।

नोट—उ० उ० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड से रजिस्ट्रेशन का आवेदन पत्र मांगने के लिए रजिस्ट्रार उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड धन्वन्तरि भवन, लालबाग लखनऊ के पते से लिखा पढ़ी करनी चाहिये।

—श्री पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित सभापति
अ० भा० आयुर्वेद प्रचार सिंध
त्रिवेणीगंज (मौवस्ता) लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी

श्री आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य आयुर्वेदाचार्य एच.पी.ए. मेडिसिन (जाम.)

प्रश्न—एक रुग्णा, उम्र ५० वर्ष गत दो वर्षों से पीड़ित है, डाक्टरों की राय से 'हाईब्लड प्रेशर' है सभी प्रकार की चिकित्सा कराकर थक चुके हैं अब निम्न लक्षण हैं—चक्कर आते हैं, नेत्रों के सामने सब कुछ घूमता एवं धुंधला नजर आता है, तुरन्त पश्चात् तीव्र वमन होती १५-२० तक, इससे दो दिन तक थकावट बनी रहती है। इस अवस्था में सुनना भी कम होजाता है। बीमारी की यह स्थिति १५-२० दिन के अन्तर से बनती है। एक दो दिन पूर्व से लक्षणों का आभास होने लग जाता है, दौरे के समय सर्वाङ्ग शरीर से तीव्र वेदना तथा पसीना निकलता है। कृपया बीमारी का नाम एवं कोई सफल सहज औषधि चिकित्सा लिखें ?

—लाला चरनलाल वैद्य ध. ग्रा. १५५४२
पो० मदनपुर (नरसिंहपुर) म. प्र.

उत्तर—इस रुग्णा के लक्षण मिले जुले हैं, आपने शरीरसौष्ठव तथा निद्रा, क्षुधा तथा पारवारिक स्थिति के विषय में कोई जिक्र नहीं किया है फिर भी सामान्यतया देखने पर यह 'अपस्मार' नामक रोग ही सम्भव है लक्षण इसके अपस्मार से मिलते जुलते हैं (हृत्कम्पः शून्यता स्वेदो ध्यानं मूर्च्छा प्रमूढता। निद्रानाशश्च तस्मिन्दम भविष्यति भवत्यथ ।।) इन लक्षणों के साथ साथ वातिक लक्षण भी दृष्टिगत आते हैं। इस प्रकार की चिकित्सा लाभप्रद साबित हो सकेगी—धन्वन्तरि स्मृति सागर २ रत्ती, धन्वन्तरि सूतशेखर रस २ रत्ती, धन्वन्तरि मुक्ता भस्म १/२ रत्ती (यह एक मात्रा है) ऐसी तीन मात्रा प्रातः ८ बजे, दोपहर में ४ बजे और रात्रि में १० बजे। ब्राह्मी रसायन १½ तोला, द्राक्षावलेह १½ तोला के साथ दीजिये, भोजन से पूर्व द्राक्षारिष्ट २ तोला जल मिला कर दीजिये। नारायण तैल का अभ्यङ्ग भी शिर पर, हस्ततल, पादतल पर कीजिये, मौसम के फलों का रस या फल भी दीजिये जिस कारण से दौरा होता है, उससे रोगी को बचाने का प्रयास कीजिये।

प्रश्न—मेरा लड़का जो लगभग १५ वर्ष का है, हकलाना (स्टैमरिङ्ग) रोग से पीड़ित है। बात करने में उसे कठिनाई होती है। किसी शब्द पर जबान रुकी तो कठिनता से आगे बढ़ पाती है, औषधियां वी.पी. पी. से सभी मंगवा सकता हूं कृपया उपचार लिखें ?

नरेन्द्रनाथ वसु, चीफ केमिस्ट, सिसवा बाजार
(गोरखपुर) यू० पी०

उत्तर—औषधियां आप चाहें तो धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़) से मंगा सकते हैं, स्मृति सागर २ रत्ती, वाक्शुद्धि कर चूर्ण १ माशा (वचा, ब्राह्मी, धान्यक, कुष्ठ, शुण्ठी सभी को बराबर लेकर पीसकर चूर्ण बनालें) वृहत् वात चिन्तामणि रस ½ रत्ती, ऐसी दो मात्रा द्राक्षावलेह अथवा घृत+मिश्री के अनुपान से प्रातः तथा सायं दीजिये। दोपहर में वाक् शुद्धिकर चूर्ण शहद में मिलाकर जिह्वा पर लगा दीजिये। इससे जिह्वा पर असर होगा। अल्प औषधियां भी नाड़ी मण्डल को शक्ति प्रदान करेंगीं। औषधि सेवन लम्बे समय तक यानी कई मास तक चलेगी। बादाम भी खिला सकते हैं।

प्रश्न—मेरे एक साथी की शादी हुए १० वर्ष हो चुके हैं, अभी तक कोई बाल बच्चा नहीं हुआ है। तंदु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थी अच्छी है, अधिक गर्मी तथा गर्म पदार्थों के सेवन से मूत्र में जलन होती है, और कोई दुःख दर्द नहीं है, डाक्टर की सलाह से दवाई ली, लाभ नहीं हैं, कृपया ऐसा योग बतलाइये, जिससे गर्भ धारण हो जावे ?

—कादर बख्श यासीन मोहम्मद मंसूरी,
भालता (झालावाड़) राज०

उत्तर—आपने प्रश्न में बातों को स्पष्ट ही नहीं किया–उम्र, शरीर की बनावट, खान-पान, व्यसन, स्त्री-पुरुष की शारीरिक शक्ति पर कोई बात नहीं लिखी। निकट के किसी वैद्य से सलाह लीजिए अथवा आपके मित्र को ६ मास तक च्यवनप्राशावलेह २ तोला प्रातः सायम्, दो मात्रा लेकर ऊपर से दूध पीना चाहिए। मादक पदार्थों का यदि सेवन करते हों तो छोड़ने का प्रयास कीजिए। मित्र की पत्नी को ६ मास तक फलघृत १½ तोला प्रातःसायम् दो मात्रा, दूध के साथ या भोजन में दीजिये, स्त्री पुरुष औषधि सेवन काल में संयम से रहने का प्रयास करें। आप चाहें तो पूर्ण विवरण मुझे भेज सकते हैं।

प्रश्न—मेरे पिताजी की उम्र ६३ वर्ष है। गत वर्ष माघ मास में उन्हें सन्निपात हुआ ठीक होने पर उन्हें पुनः ठंडक लगकर दायें फेफड़े में शोथ हो गया, उन्हें एलोपैथिक दवा से लाभ हुआ, उपरान्त उन्हें चलने में चक्कर आता है सायं चक्कर अधिक आते हैं–कभी कभी कब्ज रहती है, डाक्टरों की अलग अलग राय हैं, सम्प्रति चश्मा और कुछ आयुर्वेदिक औषधियां चल रही हैं, जो प्रायः लाभ भी कर रही हैं, दस वर्ष पूर्व भी उन्हें एक बार ऐसा ही रोग हुआ था, उचित उत्तर देकर अनुग्रहीत कीजिए ?

—रामनरेशकुमार मिश्र वैद्य, पो० चन्दा (गया)

उत्तर—आप जो औषधियां दे रहे हैं तथा लाभ भी प्रतीत होता है, तब क्यों नहीं इसी औषधि को ही सेवन कराते रहिएगा। मेरी दृष्टि से, यदि आपको जंचे तो इस व्यवस्था को प्रारम्भ कर दीजिए–बृहत्वातचिन्तामणि रस १ रत्ती, अश्वगंधा चूर्ण १ माशा—ऐसी दो मात्रा च्यवनप्राशावलेह+ब्राह्मरसायन २ तोला के साथ सेवन कराइए। दूध या चाय जो प्रकृति के अनुकूल हो ऊपर से ले सकते हैं। नारायण तैल की मालिश शरीर पर, विशेष कर तालु प्रदेश पर कीजिये, कब्ज के लिए भोजनोत्तर द्राक्षारिष्ट २॥ तोला, समान जल मिलाकर अथवा चित्रकादि वटी ४ चूसने के लिए दीजिए। स्वास्थ्य यदि ठीक है, तो इच्छानुसार तथा शक्ति के अनुसार प्रातः घूमकर भी आ सकते हैं।

—आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य
पो० गणेशगढ़
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

पाठकों के प्रश्न

१—उड़ीसा में होने वाली (हिंगुचा) बूटी तथा काश्मीर में होने वाली (मुदुरा बूटी) के विषय में पूरी जानकारी देते हुए यह भी बतायें कि ये कहां से कैसे प्राप्त हो सकेंगी ?

२—जुलाई ६७ के कल्याण में श्री स्वामी चिदानन्द सरस्वती के अवसान के विवरण में यह उल्लेख है कि मृत्यु के कुछ समय पूर्व उनके मल मूत्र में चन्दन की सुवास आती थी ?

कृपया शारीरिक विज्ञान की दृष्टि से यह कैसे संभव हो सकता है इसे कोई सज्जन प्रमाणित करने की कृपा करें।

—संपादक

भूल–सुधार

माह जुलाई ६८ के अङ्क में विषधर सर्प की सफल चिकित्सा नामक लेख में एक औषधि धन्वन्तरि वनौषधि विशेषांक चतुर्थ भाग की दी गई है। जिसमें पृष्ठ नम्बर २६० के स्थान में ४६० छप गया है। कृपया ग्राहक गण सुधार कर पढ़ें।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार एवं सूचनाएं

आयुर्वेद भवन में आयुर्वेद निदेशालय

उ० प्रदेश आयुर्वेद सेवा निदेशक आयुर्वेदाचार्य श्री मुकन्दीलाल जी द्विवेदी का आयुर्वेद निदेशालय विक्रमादित्य मार्ग बंदरिया बाग से हटकर दिनांक २ सितम्बर से उत्तर प्रदेश इण्डियन मेडीसिन बोर्ड के आयुर्वेद भवन सरोजनी नायडू रोड पर गोपाल खेड़ा हाउस में स्थापित होगया है। अतः वैद्यगण भविष्य में विक्रमादित्य मार्ग के पते पर पत्र व्यवहार न करके "निदेशक आयुर्वेद, उत्तर प्रदेश, आयुर्वेद भवन, ३२–सरोजनी नायडू रोड, लखनऊ–१" के पते से ही पत्र व्यवहार करें।

आयुर्वेद को प्रोत्साहन

बंगीय आयुर्वेदिक चिकित्सक महासम्मेलन का इसी तारीख १९ अगस्त को उद्‌घाटन करते हुए राज्यपाल श्री धर्मवीर के इस कथन का स्वागत किया जाना चाहिए कि राज्य सरकार आयुर्वेदिक चिकित्सालय खोलने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोगियों के मुफ्त इलाज के लिए चिकित्सकों को राजवृत्ति देने पर विचार कर रही है। राज्यपाल ने चिकित्सा की इस प्राचीन प्रणाली के विकास की आवश्यकता पर ठीक ही जोर दिया है लेकिन साथ ही साथ विशुद्ध आयुर्वेदिक खाद्यों को तैयार करने की भी व्यवस्था होनी चाहिये। इसमें सन्देह नहीं कि आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली ही हमारे देश और काल के अनुकूल है लेकिन नीम हकीमी से इस प्रणाली का समुचित लाभ नहीं उठाया जा सकता। आधुनिकतम वैज्ञानिक पद्धति अपनायी जाय तो आयुर्वेद अन्य किसी भी प्रणाली से ज्यादा कारगर होगा। —श्री बल्लभदास बिन्नानी 'व्रजेश'

श्री द्वारकानाथजी सेन की जयन्ती

सरदारशहर-दिनांक ३१-८-६८ को भारत के यशस्वी प्राणाचार्य महामहोपाध्याय श्री द्वारकानाथ जी सेन की १२५ वीं जन्म तिथि के अवसर पर श्री भंवरलाल दूगड़ आयुर्वेद विश्वभारती के सभी अध्यापकों, कार्यकर्ताओं एवं छात्रों ने जयन्ती समारोह बड़े उल्लास के साथ मनाया।

महामहोपाध्याय जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए विद्वान वक्ताओं एवं इतिहास वेता छात्रों में उनके विशिष्ट गुणों का दिग्दर्शन कराते हुए भारतीय वैद्यसमाज को उनका अनुकरण करने की मांग की।

संस्था के प्राचार्य वैद्य श्री सोहनलाल शर्मा ने बताया कि आयुर्वेदीय इतिहास में भूतपूर्व विद्वानों की जयन्तियों के मनाने का श्रीगणेश होना आयुर्वेद के हित में एक शुभारम्भ है। —प्राचार्य

आयुर्वेद रत्न का चिकित्सक संघ

रायपुर–वैद्य ब्रजमोहन शर्मा आयुर्वेदरत्न के संयोजन में "म. प्र. आयुर्वेदरत्न स्नातक चिकित्सा संघ" का गठन किया गया है। मध्यप्रदेश के समस्त आयुर्वेदरत्न चिकित्सकों से निवेदन है कि अपने हितों की रक्षा हेतु संगठित हों। निम्नलिखित पते पर सम्पर्क स्थापित करें—

—श्री वैद्य बृजमोहन शर्मा संयोजक
मध्यप्रदेश आयुर्वेदरत्न स्नातक चिकित्सा संघ
मालवीय रोड, रायपुर (म. प्र.)

सूचना

अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन आयुर्वेद स्नातक संघ उत्तर प्रदेश शाखा की ओर से सूचित किया जाता है कि इस उत्तर प्रादेशिक शाखा की त्रिदिवसीय बैठक प्रसिद्ध कस्बा सराय आकिल में दिसम्बर मास के आखिरी सप्ताह में यानी दिनांक २७, २८, २९ सन् १९६८ को होने जा रही है। सभी उत्तर प्रदेश जिला संगठन सचिवों व आयुर्वेदीय प्रेमियों को सूचित किया जा रहा है कि उक्त तिथि पर आकर सम्मेलन की कार्यवाही का स्वागत करें और प्रदेश शाखा की कार्य प्रणाली की रूपरेखा पर विचार विमर्श करें। —संगठन सचिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० छांगाणी का स्वागत

निखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ के महामंत्री वैद्यराज पं० शिवकरण जी छांगाणी आयुर्वेदाचार्य के उज्जैन आगमन पर श्री अवन्तिका देशी चिकित्सक मंडल द्वारा दिनांक २५-८-६८ को स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। श्री अवन्तिका देशी चिकित्सक मंडल म० प्र० आयुर्वेदिक मंडल, श्री अवन्तिका आयुर्वेद महाविद्यालय फार्मेसी, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, श्री कल्याण आयुर्वेद भवन आदि संस्थाओं के द्वारा पुष्प मालायें पहिनायीं गयीं।

प्रान्तीय मंडल के अध्यक्ष प्राचार्य पं० वासुदेव शास्त्री ने परिचयात्मक भाषण दिया। पं० छांगाणी जी ने आयुर्वेदिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तावित क्रांतिकारी परिवर्तनों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सभा की कार्यवाही डा० कमलसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। डा० पिन्डावाला द्वारा अन्त में आभार प्रदर्शन किया गया।

—प्रचार मंत्री

लोअर बाजार सावड़ा

दिनांक ८-९-६८ को आयुर्वेद मंडल अपर महासू की बैठक सावड़ामें डा अमरसिंह थापा नैपाली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें स्वास्थ्य मंत्री की सेवा में एक पत्र भेजना जिसमें रजिस्ट्रेशन बिल पास होने की प्रसन्नता प्रकट करने का स्वीकृत हुआ और शीघ्र ही रजिस्ट्रेशन बोर्ड बठाने की मांग की गई। इसी प्रकार का एक पत्र हैल्थ डाइरेक्टर हिमाचल प्रदेश की सेवा में भी भेजना स्वीकृत हुआ।

—प्रधान

विश्वनाथ द्विवेदी वाराणसी में

आयुर्वेद शास्त्राचार्य पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी जामनगर के स्नातकोत्तर प्रशिक्षण केन्द्र एवं आयुर्वेदिक अनुसंधानशाला के डाइरेक्टर के पद से रिटायर्ड होगए। प्रसन्नता की बात है कि वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय में वे प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किए गए हैं और इसी ७ सितम्बर को वे अपने नवीन पद का भार ग्रहण कर लेंगे।

समाचार-सार संग्रह

कविराज पुरुषोत्तमदेव मुलतानी

उत्तर-प्रदेश के राज्यपाल ने आन्ध्र-प्रदेश राजकीय आयुर्वेद रसायनशाला के अधीक्षक कविराज पुरुषोत्तम देव मुलतानी को ३ वर्ष के लिए उत्तर प्रदेश राजकीय आयुर्वेद यूनानी भेषजशाला लखनऊ की विशेषज्ञ समिति का सदस्य नामजद किया है। कविराज पुरुषोत्तमदेव मुलतानी मद्रास की इन्डियन मैडिकल कोआपरेटिव फार्मेसी लिमिटेड के आन्ध्र प्रदेश राज्य की ओर से मनोनीत डाइरेक्टर भी हैं।

केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान परिषद की कार्य समिति गठित

भारत सरकार के स्वास्थ्य परिवार नियोजन एवं नगर विकास मन्त्रालय ने केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान परिषद की सिफारिश पर परिषद की एक कार्य-समिति गठित की है जिसके अध्यक्ष इस विभाग के सचिव श्री गोविन्द नारायण हैं और सचिव स्वास्थ्य मन्त्रालय के देशी चिकित्सा विभाग के परामर्शदाता डा. श्री पी. एन. वी. कुरुप हैं। संसद सदस्य पं० शिव शर्मा (बम्बई), कविराज आशुतोष मजूमदार (दिल्ली), योजना आयोग के स्वास्थ्यपरामर्श दाता—डा० ए. एस. सेन तथा स्वास्थ्य परिवार एवं नगर विभाग मन्त्रालय के अतिरिक्त वित्तीय सलाहकार श्री जी. ए. सम्पत कार्यसमिति के सदस्य मनोनीत किये गये हैं।

हिमाचल प्रदेश में वैद्यों और हकीमों का रजिस्ट्रेशन

ज्ञात हुआ है कि हिमाचल सरकार आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सकों के रजिस्ट्रेशन के लिये एक बिल तैयार करने जा रही है। ऐसी सूचना सरकार के हेल्थ विभाग के डाइरेक्टर ने एक आयुर्वेदिक संस्था को पत्र नं० ४-१-६७ एम. आई. डी. एच. द्वारा दी है।

विहार में वैद्यों का रजिस्ट्रेशन

पता चला है कि विहार राज्य में वैद्यों का रजिस्ट्रेशन चालू हैं। बिना उपाधि प्राप्त जो वैद्य १० वर्षों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा करते हैं अपनी चिकित्सा ख्याति एवं चिकित्सा कौशल का प्रमाण-पत्र किसी विधायक, राजमन्त्रित कर्मचारी, आयुर्वेदिक यूनानी चिकित्सा परिषद या अधिकाय के सदस्य अथवा वैद्य सम्मेलन के पदाधिकारियों से प्राप्त करते हैं। और वे १५ रु० रजिस्ट्रेशन शुल्क के साथ विहित रीति से आवेदन पत्र भर रजिस्ट्रार, बिहार राज्य आयुर्वेद यूनानी, चिकित्सा परिषद पटना–३ के पते पर भेजते हैं, उनका रजिस्ट्रेशन हो जाता है। यह रजिस्ट्रेशन केवल बिहार में चिकित्सा कार्य करने वाले वैद्यों का ही होता है। बिहार से बाहर रहने वाले वैद्यों को यहां रजिस्ट्रेशन कराने का प्रयास नहीं करना चाहिये।

वैद्य की डिप्टी हेल्थअफसर-पद पर नियुक्ति

दिल्ली नगर निगम में वैद्यों और डाक्टरों के वेतन समान

दिल्ली नगरनिगम की स्टैंडिंग कमेटी ने प्रथम अप्रैल १९६६ की प्रस्ताव संख्या १४३५, विषय नं० १५ के अन्तर्गत वैद्यों एवं हकीमों के वेतन स्तर केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवा (पी. एच. एस.) के डाक्टरों के समान कर दिया गया है। स्वीकृत डिग्री प्राप्त वैद्यों के वेतन का स्तर रु० ३२५-२५-५०० ई० बी० ३०-८०० तथा चिकित्सा कार्य न करने का अतिरिक्त स्वीकृत भत्ता।

स्वीकृत डिप्लोमा प्राप्त वैद्यों का वेतन स्तर, रु० १५०-१०-२५० ई. बी. १०-२९०-१५-३३५ ई. बी. १५-३८० तथा एन. पी. ए.। इन वैद्यों को दस वर्ष के बाद रु० ३२५-८०० वाला ग्रेड दे दिया जाएगा।

इसके अतिरिक्त दिल्ली नगर निगम के इतिहास में प्रथम बार एक वैद्य की डिप्टी हेल्थ आफिसर के स्थान पर नियुक्ति की जा चुकी है। वर्तमान अधीक्षक महोदय को ही इस स्थान पर विभूषित किया गया है। उनका वेतन स्तर रु० ६७५-३५-८५०-४०-१०५०-५०-१३०० तथा एन. पी. ए. तथा २०० प्रति मास कार एलाउन्स दिया जायगा। फार्मेसी एवं स्टोर के अफसर इन्चार्ज वैद्य का वेतन स्तर रु० ४२५-२५-४५०-३०-६००-३५-७०५ ई. बी. ३५-९५० तथा एन. पी. ए. दिया जायगा।

आयुर्वेदिक अस्पताल बल्लीमारान के अधीक्षक महोदय का वेतन रु० ४२५-२५-४५०-३०-६००-३५-७०५ ई. बी. ३५-९५० तथा एन. पी. ए. हो जायगा।

—सचित्र आयुर्वेद से साभार

● जयपुर दिनांक २२, २३ अगस्त सन् ६८ को राजस्थान इण्डियन मेडिसिन बोर्ड की बैठक महन्त मुरली मनोहर शरण वैद्य उदयपुर की अध्यक्षता में हुई, जिसमें निर्णय हुआ कि अनुभव के आधार पर वैद्य हकीमों का रजिस्ट्रेशन एव सूचीबद्धता का कार्य केवल १५ सितम्बर सन् १९६८ तक ही जारी रहेगा, इसके बाद इसे स्थगित कर दिया जायगा।

इस सप्ताह अनुभव के आधार पर लगभग चारसौ अभ्यर्थियों का रजिस्ट्रेशन हेतु साक्षात्कार किया गया। बोर्ड ने एक प्रस्ताव द्वारा आयुर्वेद का एक बृहत् पुस्तकालय खोले जाने की योजना भी स्वीकार की, साथ ही यह भी निर्णय लिया कि बोर्ड के सदस्यों का भी शीघ्रातिशीघ्र निर्वाचन कराया जाय। बोर्ड के पार्ट टाइम रजिस्ट्रार श्री रामपाल शास्त्री के स्थान पर शीघ्र पूर्णकालीन रजिस्ट्रार की नियुक्ति के लिये भी विचार किया गया।

● पता चला है कि राजस्थान में अब तक १२ हजार वैद्य, हकीम, धात्री तथा सूचीबद्ध किये चिकित्सकों की संख्या है। बोर्ड के स्थाई कोष में इस समय ९० लाख रुपया है।

● पता चला है कि राजस्थान सरकार ने राणावत् आयोग की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए आयुर्वेद विभाग के कर्मचारियों के लिये निम्नांकित वेतन मान निर्धारित किया है—

आयुर्वेद निदेशक १ हजार से १५ सौ तक, फिलासिफर २७५) से ६५०) तक, प्रथम श्रेणी के वैद्य का वेतन २००) से ८००) तक, द्वितीय श्रेणी के वैद्य हकीमों के के लिये १८०) से ४२५) तक, भिषगाचार्य से नीचे स्तर के वैद्य हकीमों के लिये १५०) से ३२०) तक, सेलेक्शन ग्रेड के कम्पाउण्डरों तथा नर्सों के लिये ११०) से २३०) तक, द्वितीय श्रेणी के कम्पाउण्डरों तथा नर्सों के लिये ७०) से ११०) तक देना स्वीकार किया है। इसके पूर्व वेतन आयोग ने निदेशक आयुर्वेद ११५०) से १५००), प्रोफेसर २५०) से ६२५) प्रथम श्रेणी के वैद्यों के लिये २७५) से ६५०), द्वितीय श्रेणी के लिये १७०) से ३९०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने की रिफारिश की थी।

● विदित हुआ है कि राजस्थान प्रदेश के ख्याति प्राप्त चिकित्सक आयुर्वेदाचार्य पं० सीता राम मिश्र पुनः राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन के निर्विरोध सभापति चुन लिये गए हैं। श्री मिश्र जी लगातार पांच साल से प्रदेश वैद्य सम्मेलन के सभापति हैं। इसके पूर्व ११ साल तक नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ के प्रधान मन्त्री रहे हैं। वर्त्तमान में अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन के उपाध्यक्ष हैं।

शोक प्रस्ताव

दिनांक ३१-८-६८ को उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध विद्वान लखनऊ आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य श्री शिवदत्त शुक्ल के आकस्मिक निधन पर श्री भंवरलाल दूगड़ आयुर्वेद विश्व भारती सरदारशहर के छात्र एवं अध्यापकों ने पांच मिनट मौन रखकर निम्नलिखित प्रस्ताव पारित कर श्रद्धांजलि अर्पित की–

पुस्तक चाहिए

श्री प्यारेलाल गुप्त द्वारा लिखित 'इन्जेक्शन विज्ञान' की एक प्रति उचित मूल्य या नवीन संस्करण के परिवर्तन में चाहिये।

प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ (अलीगढ़)

विष विज्ञान

इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने प्राच्य पाश्चात्य पद्धति से सभी विषों का वर्णन बहुत श्रम के साथ किया है। सर्प विष के विषय में तो अत्युत्तम रीति से वर्णन किया गया है। इस पुस्तक को लेखक ने ग्यारह अध्यायों में विभाजित किया है। परिचय, निदान, चिकित्सा के उपरांत दाहक विष, क्षोभक विष, क्षोभक ऐन्द्रिय विष, मस्तिष्क प्रभावी विष, मूर्छोत्पादक विष, विषैली गैस, चिरकारी विष एवं जान्तव विष नामक अध्याय हैं। मूल्य ५) मात्र।

आयुर्वेद-प्रकाश

भारतीय रसशास्त्र के ज्ञाता उपाध्याय माधव द्वारा रचित आयुर्वेद प्रकाश अथवा रसमाधव एक अद्वितीय रस ग्रन्थ है। इसकी टीका प्रसिद्ध साहित्य मनीषी, अनेक वर्षों से शिक्षण कार्यों में संलग्न पं० सोमदेव जी सारस्वत रसशास्त्री द्वारा की गई है। यह पुस्तक कई पाठ्य क्रमों में भी निर्धारित हैं। विद्यार्थियों के हितार्थ ही यह टीका की गई है। ६५० पृष्ठों की अमूल्य पुस्तक का मूल्य ६) है।

नोट---विद्यार्थी यदि उपरोक्त तीनों पुस्तकें एक साथ मंगावेंगे तो २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। पोस्टेज पृथक होगा।

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

बिजली की मशीन

रियायती मूल्य से मगायें

	पूरा मूल्य	रियायती मूल्य
बिजली की मशीन	३५.००	३०.००
बिजली की मशीन रेडियोनुमा रैगूलेटर सहित	४५.००	४०.००
बिजली की मशीन डायनुमायुक्त	६०.००	५२.००

पोस्टादि व्यय पृथक्, पूरा विवरण सितम्बर अङ्क में देखें।

पता----दाऊ मैडीकल स्टोर्स विजयगढ़ (अलीगढ़) यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक तथा ऐलोपैथिक इंजेक्शन एवं अन्य ऐलोपैथिक औषधियां हमसे मंगावें

हमारे पास हमारे अनेक ग्राहकों के पत्र ऐलोपैथिक औषधियां, इञ्जेक्शन, आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों को भेजने के लिए आते रहते हैं। अब हमने उनकी सप्लाई का समुचित प्रबन्ध कर लिया है। आशा है हमारे सहृदय पाठक हमें सेवा का अवसर प्रदान करते रहेंगे—

इञ्जेक्शन—

एम्बिस्टिन (स्क्वब्ब)	०.७५
एक्रोमाइसिन १०० एम जी.	२.५०
एविल (होस्ट)	०.९०
एण्टिस्टिन (सिबा)	१.१५
बेरिन १० सी.सी. (ग्लैक्सो)	२.९८
बाराफोल १० सी. सी.	४.१५
क्लोडेन १० सी. सी.	२.९०
कोरामीन	०.५५
कोरामीन इफेड्रिन	१.०५
कैल्शियम सैन्ड्रोज विटामिन सी १० सी. सी.	१.६०
डाइक्रिस्टिसिन (स्क्वब्ब)	०.८५
डाइक्रिस्टिसिन फोर्ट (स्क्वब्ब)	१.२५
इफेड्रिन १ सी. सी.	०.२५
ग्लूकोज २५ सी. सी.	०.४०
हेपाफोलिन १० सी. सी.	७.३९
इरगापायरिन ३ सी. सी.	१.४०
इरगापायरिन ५ सी. सी.	१.८०
कैपलिन (ग्लैक्सो)	०.७०
ल्यूटोसाइक्लिन १० एम.जी.	१.४५
ल्यूटोसाइक्लीन २५ एम.जी.	२.६०
लिवर एक्सट्रेक्ट १० सी. सी. (टी. सी. एफ.)	३.५०
लिवर एक्सट्रेक्ट फोर्ट १० सी.सी. (टी.सी.एफ.)	७.१३
मैकलविट १५ सी. सी. (सैन्डोज)	६.६५
मैक्राबिन ५ सी. सी. (ग्लैक्सो)	५.२८
मिल्क (दुग्ध) ५ सी. सी.	०.३०
नैप्टाल २ सी. सी.	०.७०
नोवलजिन	१.३०
नोवोकेन	०.५०
नार्मल सैलाइन २५ सी.सी.	०.४५
ओम्नोमाइसिन (होस्ट)	२.००
पैन्सलीन २ लाख	०.६०
,, ४ लाख	०.७०
,, १० लाख	१.२५
,, २० लाख	२.२५
स्पाज्मिण्डन २ सी.सी.	१.७५
टैरामाइसिन २ सी. सी. (ड्यूमैक्स)	२.२५

टेबलेट प्रति १००

एमाइनोफिलीन	१.८०
ए. पी. सी.	१.२०
एण्टिस्टिन टेबलेट	२०.००
एविल २५ एम. जी.	१२.००
अवेदन	७.५०
एस्प्रो	६.००
एनासिन	६.००
एवोमिन	२३.००
बैरिन ५० एम. जी.	६.९०
,, १०० एम. जी.	१३.८०
ब्यूटाकार्टिण्डण्न	३४.५०
ब्यूटाजोलिडिन २०० एम. जी.	३२.००
डैल्टाब्यूटाजोलिडिन	३०.००
बाइकोलेट	६.२५
बीकाडैक्स	६.००
विटामिन बी कम्प्लैक्स	१.५०
,, ,, फोर्ट (ग्लैक्सो)	१०.९०
वैलरगल	१८.४०
बैरलगन	२७.००
कोर्टेज्मा	२०.००
सिलिन १०० एम. जी.	३.००
,, ५०० एम. जी.	१४.५०
कोसाविल	१४.५०
क्लोडेन	१८.५०
सिबाजोल	४.५०
कोडोपायरिन	८.००
दारजिन	२३.००
दारजिन नियोमाइसिन	४५.००
एन्ट्रोवायोफार्म	१२.००
एबाजाइड	३.५०
ग्लैक्सैना	७.५०
होस्टाकोर्टिन	२३.५०
आइसोनैक्स १०० एम. जी.	२.५०
इन्टेस्टोपैन	१८.००
इर्गापायरिन	२७.००
कैपलिन	३.००
ल्यूटोसाइक्लिन ५ एम. जी.	३४.००
,, २५ एम. जी.	१२०.००
ल्यूमीनोल	९.५०
मैक्साफोर्म	१८.००
एम. बी. ६९३	१०.००
नोवलजिन	२०.००
नीवाक्विन	११.००
आस्टोकैल्शियम	४.५०
औरीसूल	१८.००
पैन्टिड (२ लाख)	२४.००
पैन्टिड सल्फा	३५.००
पैन्सलीन लोजेन्जेज	३.२५
पैप्स	१.७५
सेरीडान	१३.००
सोडामिन्ट	०.२५
सल्फाडाइजिन	५.००
सल्फाग्वानिडिन	१.५०
टैन्टैक्स फोर्ट	४४.००

नोट--मार्तण्ड के सभी आयुर्वेदिक इञ्जेक्शन हमसे कम्पनी दर पर कमीशन लेकर मंगावें।

नियम--(१) उपरोक्त सभी दर नैट हैं किसी को किसी प्रकार का कमीशन नहीं दिया जायेगा।
(२) पैकिंग पोस्ट व्यय पृथक होगा। (३) कम से कम ५.०० एडवांस भेजें।
(४) केवल वैद्यों को भेजे जायेंगे इसलिए अपना रजिस्ट्रेशन नम्बर अवश्य लिखें।

पता--दाऊ मैडीकल स्टोर्स, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद-ऋतु में—

मकरध्वज वटी व्यवहार करें

'पहले परीक्षा करें' योजना से लाभ उठावें

मकरध्वज वटी आयुर्वेदिक सर्वोपयोगी प्रसिद्ध आयुर्वेदिक 'टॉनिक' है। ४१ गोली की एक शीशी का मूल्य ३.५० है। ३१ दिसम्बर तक "पहले परीक्षा करें" योजना के अन्तर्गत आप १०.०० मनियार्डर से भेज दें हम आपको रजिस्ट्री पार्सल से ४१-४१ गोलियों की तीन शीशी का सील बन्द पैकिट तथा साथ में २१ गोली का १ पैकट भेजेंगे। पहले आप २१ गोली वाला पैकट खोलकर व्यवहार करें इसके सेवन से आपको मकरध्वज वटी के गुणों से संतोष प्राप्त हो तो सीलबन्द पैकट को खोल कर व्यवहार करें। यदि आपको सन्तोष न हो (जिसकी सम्भावना कम है) तो आप तीन शीशी का शील बन्द पैकट उसी पार्सल में पैक करके रजिस्ट्री से हमको वापस कर दें, हम पोस्ट पैकिङ्ग व्यय २.०० काट कर ८.०० आपको मनियार्डर से वापस कर देंगे।

शक्ति संचय के लिए यह सर्वोत्तम ऋतु है
आप भी 'मकरध्वज वटी' मंगाकर व्यवहार करें।

एक बार की परीक्षा आपको 'मकरध्वज वटी' को भक्त बना देगी

नोट—यह रियायत केवल धन्वन्तरि के ग्राहकों को केवल एक बार ही दी जायगी।

धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार-नियोजन परिशिष्ट

परिवार नियोजन कार्यक्रम की महत्ता

श्री गोविन्दनारायण
सचिव-स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और नगर विकास मंत्रालय

भारत की आबादी की समस्या अनेक समस्याओं की जड़ है, स्वयं एक बड़ी समस्या है जो देश को कभी संकट में डाल सकती है। हमारी प्रधान मंत्री का कहना है कि जनसंख्या बढ़ने का अर्थ है कम तरक्की और अधिक समस्यायें। यदि हम इस समस्या को हल कर लेते हैं तो हमारी योजनायें भी सफल होंगी और हम अपने राष्ट्र के भविष्य को भी सुनिश्चित कर सकेंगे।

हमारी आबादी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। राष्ट्र के साधनों में इस गति से वृद्धि नहीं हो रही है और इस कारण हर व्यक्ति को मिलने वाली जीवन की सुख-सुविधाओं में कमी होती जाएगी। लेकिन भारत के परिवार नियोजन कार्यक्रम पर केवल साधनों के परिप्रेक्ष्य में ही नहीं, बल्कि देश की सामाजिक, सांस्कृतिक व प्रशासनिक स्थिति और प्रचार साधनों को ध्यान में रखकर विचार किया जाना चाहिए।

देश की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति को देखते हुए परिवार नियोजन कार्यक्रम का स्वीकार किया जाना और उसके लिए अपने व्यवहार में तदनुकूल परिवर्तन करना लोगों की इच्छा पर निर्भर है। इसलिए समाज में ऐसी तबदीली आनी चाहिए कि लोग छोटे परिवार को ही पसंद करें और व्यवहारिक रूप से इस पर अमल करने लगें। इस प्रकार इतिहास में पहली बार हमारे देश में व्यक्ति के व्यवहार पर खुले रूप से विचार हो रहा है। और लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि व्यक्तिगत व्यवहार का समाज पर क्या असर पड़ता है?

परिवार नियोजन कार्यक्रम से यह बात स्पष्ट हो गई है कि स्वास्थ्य और समाज कल्याण का व्यापक कार्यक्रम न केवल जरूरी है, बल्कि सम्भव और व्यवहारिक भी है।

इसका पता इस बात से भी चलता है कि पहले रोगी को चिकित्सा सुविधाओं की खोज में जाना पड़ता था, लेकिन आधुनिक चिकित्सा-व्यवस्था का लक्ष्य जहां कहीं भी बीमार हो, उसकी चिकित्सा करना और उसे स्वस्थ रखना है और इसे वह सामाजिक आवश्यकता और दायित्व समझता है। दूर-दराज क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध करके यह संभव हो सकता है। इस प्रकार चिकित्सा और जनस्वास्थ्य सेवाओं की प्रणाली और नीति में काफी परिवर्तन हुआ है।

जन-शिक्षा और प्रचार

परिवार नियोजन कार्यक्रम का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह कार्यक्रम जनता की भावनाओं को ध्यान में रखकर चलाया जाना चाहिए। अतः कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जनता को तैयार करना जरूरी है और इस प्रकार जन शिक्षा और प्रचार समूचे कार्यालय का आवश्यक अंग होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस कार्यक्रम का सम्बन्ध जनता की भावनाओं से हो, उसे चलाने के लिये अनेक प्रकार के कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है। एक ओर इस कार्यक्रम को चलाने के लिए आवश्यक संख्या में डाक्टर, कम्पाउन्डर और नर्सें चाहिए तो दूसरी ओर समाज शास्त्री चाहिए, जिससे कार्यक्रम को लोगों की भावनाओं और उनकी मान्यताओं को ध्यान में रखकर चलाया जा सके। कार्यक्रम में डाक्टरों और समाज शास्त्रियों को आपस में मिलकर और एक दूसरे के सहयोग से काम करना पड़ता है। इस प्रकार परिवार नियोजन कार्यक्रम आपसी सहयोग से काम करने वाले कार्यकर्ताओं की एक टोली तैयार करने में सफल हुआ है, जो भारत के सार्वजनिक जीवन में एक नई चीज है।

जन-सम्पर्क के नए साधन

सब जानते हैं कि जन-सम्पर्क के आधुनिक साधनों के जरिये केवल २० प्रतिशत लोगों तक ही पहुंचा जा सकता है। देश के अनेक हिस्सों में अभी भी रेल और सड़क यातायात की सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन परिवार नियोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था की जा रही है, जिससे देश के ६ लाख गांवों और ३ हजार नगरों के कोने कोने में रहने वाले लोगों से सम्पर्क किया जा सके।

परिवार नियोजन का संदेश देश के कोने-कोने में पहुंचाने के लिए लोक कला और लोक संगीत के अनेक उपायों का सहारा लिया गया है। फलस्वरूप देश भर में संगीत, कठपुतली के खेल और नाटकों की प्राचीन परम्परा फिर से सजीव हो उठी है। हम उन्हीं साधनों का ही सहारा लेते हैं, जिनकी लोगों में दिलचस्पी है। इसके अलावा लोगों को तैयार करने के लिये अन्य उपाय भी अपनाये जा रहे हैं।

इस प्रकार परिवार नियोजन कार्यक्रम के जरिए लोक कलाओं को राज्य का संरक्षण प्राप्त हुआ है, जो देश की संस्कृति और कला के विकास में काफी सहायक होगा।

आर्थिक लाभ

यह दुख की बात है कि स्वास्थ्य और समाज कल्याण कार्यक्रमों से होने वाले आर्थिक लाभ के आंकड़े प्रशासकों और योजना-निर्माताओं को नहीं भेजे जा सके। लेकिन परिवार नियोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत ऐसी कोशिश की जा रही है कि इसके लक्ष्य निर्धारित समयके अन्दर पूरे हों तथा कार्यक्रम के जरिये श्रमिकों और उद्योग-मालिकों को होने वाले लाभ को प्रचारित करने के लिए अध्ययन किए जायें। यदि हम ऐसा कर सके तो यह एक ऐतिहासिक घटना होगी।

परिवार नियोजन कार्यक्रम देश का अत्यधिक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है, क्योंकि इस पर सब लोगों के लिए खुशहाल जिन्दगी की आशा टिकी है। यद्यपि कार्यक्रम का लक्ष्य साधनों का समान वितरण करके देश के औद्योगिक और कृषि उत्पादन की गति को तेज करना है, लेकिन हम इस लक्ष्य को तत्काल प्राप्त नहीं कर सकते। हमें यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए। जन-भावनाओं से संबंधित कार्यक्रमों को जादू की तरह नहीं चलाया जा सकता। इसमें जनता को प्रेरित करने में कई वर्ष लग जाते हैं। हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि समूचे साधनों के उपयोग के बावजूद हम जन्म-दर को आधा कर देने के लक्ष्य को १० वर्ष से पहले पूरा न कर सकेंगे। लेकिन हमें ऐसा सूचक अङ्क अवश्य तैयार करना चाहिये जिसके आधार पर हम समय-समय पर कार्यक्रम की सफलता का मूल्यांकन कर सकें।

एक चुनौती—

परिवार नियोजन कार्यक्रम हमारे लिए एक चुनौती है। इसकी सफलता पर ही हम एक समृद्ध और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे और कार्यक्रम के विफल होने पर हम निरंतर संकटों का ही सामना करेंगे। मुझे कार्यक्रम से संबंधित कर्मचारियों और जनता पर पूरा विश्वास है, जिनके परिश्रम और सहयोग के बल पर हम इस कार्यक्रमको सफल बना सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस दो या तीन बच्चे
होते हैं घर में अच्छे

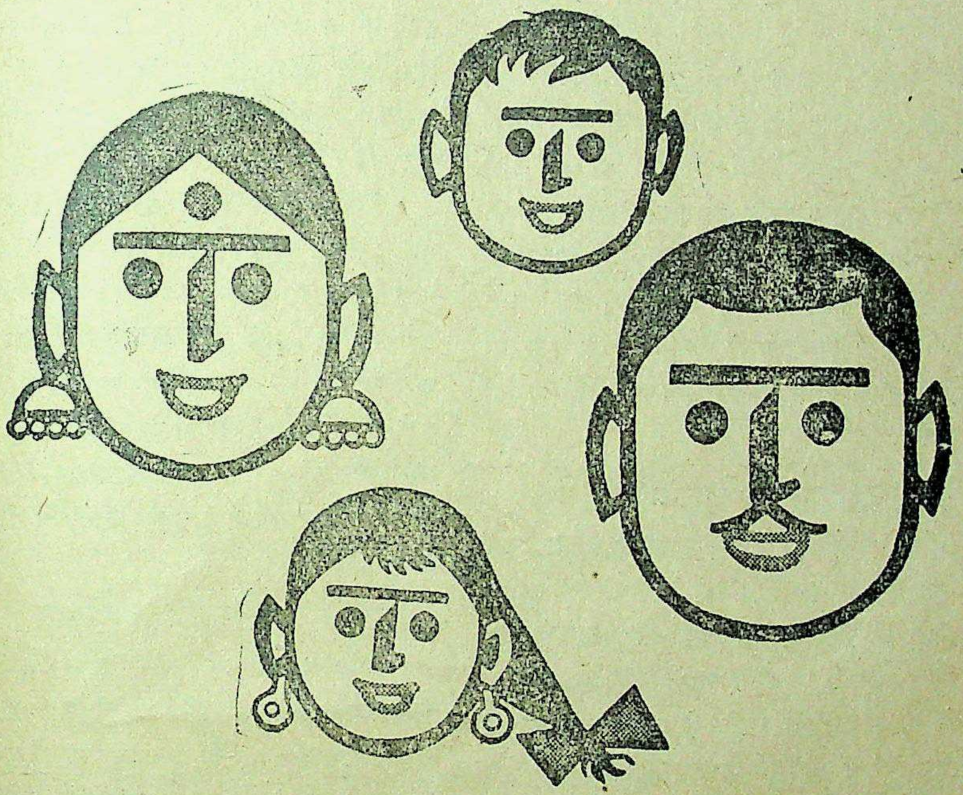

परिवार नियोजन केन्द्र की पहचान लाल तिकोन

davp 68/278

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार नियोजन समाज कल्याण का अनूठा कार्यक्रम

श्री दीपक भाटिया, परिवार नियोजन आयुक्त

भारत का परिवार नियोजन कार्यक्रम समाज कल्याण के इतिहास में अनूठा है। समाज में परिवर्तन लाने तथा चिकित्सा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को नया अर्थ और दिशा देने में इस कार्यक्रम का अपना स्थान हो गया है। योजना बनाने वाले भलीभांति जानते हैं कि आयोजन की बुनियादी जरूरतें क्या हैं ? वे हैं वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन और आवश्यकताओं, साधनों, लक्ष्य समुदायों कार्यान्वियन की अवधि तथा मध्यकालीन व अन्तिम लक्ष्यों का निर्धारण।

कार्यक्रम की जटिलता

हमारे परिवार नियोजन कार्यक्रम को बच्चा पैदा कर सकने वाले दस करोड़ दम्पतियों की जरूरतें पूरी करनी हैं। दस करोड़ दम्पतियों का अर्थ हुआ, बीस करोड़ व्यक्ति जो संयुक्त राज्य अमरीका की जनसंख्या के बराबर है।

कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में अनेक कठिनाइयां हैं। जो समुदाय हमारे कार्यक्रम के लक्ष्य हैं वे देश के तीन हजार नगरों व कस्बों तथा पांच लाख साठ हजार गांवों में बिखरे हैं अस्सी प्रतिशत जनसंख्या जन सम्पर्क माध्यमों की पहुंच से बाहर है। तेज तथा आधुनिक परिवहन साधन पर्याप्त नहीं हैं। देश के बहुत कम लोग साक्षर हैं। देश के लोगों में तरह तरह की रीति रिवाज प्रचलित हैं। यहां अनेक भाषायें बोलने वाले लोग रहते हैं। इन्हीं कारणों से जटिलतायें पैदा हुई हैं। इन कठिनाइयों को सामने रखते हुए कार्यक्रम को चलाने के लिए बांछित संगठन का विकास करना पड़ा।

छोटी उपलब्धि नहीं

इसलिये यह छोटी उपलब्धि नहीं है कि इतना बड़ा कार्यक्रम तैयार किया गया और इसका कार्यान्वियन शुरू हुआ। इसके लिए निर्णय लेने तथा तेजी से कार्यान्वियन करने में सक्षम एक प्रशासन व्यवस्था का विकास किया गया ताकि लोगों की उनकी अपनी सामाजिक स्थिति के अनुकूल व्यवस्था की जा सके तथा सेवायें स्वीकार करने के लिए लोगों को प्रेरित किया जा सके। संगठन का काफी व्यापक होना जरूरी था ताकि यह प्रभावी हो और इसमें अधिक से अधिक लोग भाग ले सकें। लोगों की सेवा के लिए कार्यक्रम में जनता, उनके प्रतिनिधियों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं की गहरी दिलचस्पी अपेक्षित थी इससे लोगों तक सहज रूप से पहुंच सम्भव हो सकी और उनमें कार्यक्रम में भाग लेने तथा उसके प्रति अपनत्व की भावना पैदा हुई।

कार्यक्रम के प्रति इन संस्थाओं की केवल रुचि बढ़ाना ही आवश्यक नहीं, बल्कि कार्यक्रम का आयोजन करने तथा उसके कार्यान्वियन में उनका सा क्रिया सहयोग लेना महत्वपूर्ण है। यह कहा जा सकता है कि परिवार नियोजन कार्यक्रम को बनाने और चलाने का काम सरकारी कर्मचारियों ने नहीं बल्कि एक ऐसे संगठन ने किया है जो लोगों की जरूरतों के प्रति जागरूक है, लोगों के लिए योजना तैयार करता है तथा लोगों के ही लिए इसे लागू करता है।

अनूठा कार्यक्रम

कार्यक्रम की एक और उपलब्धि यह है कि इससे पहले कभी शिक्षा और प्रेरणा देने का इतना बड़ा और समन्वित कार्यक्रम नहीं चलाया गया। कृषि और उद्योग के क्षेत्र में बड़े अभियान चलाये गये हैं किन्तु वे उत्पादन बढ़ाने के लिये थे। फिर भी, हमारा कार्यक्रम निजी मामलों में व्यक्तिगत आचरण और दृष्टिकोण बदलने से सम्बन्धित है। इसी में इसका अनूठापन है।

उल्लेखनीय परिवर्तन

इतने बड़े प्रयास का ही यह परिणाम है कि भारत की जनता अब पहले की अपेक्षा अधिक मुक्त और निस्संकोच रूप से परिवार नियोजन तथा यौन विषयों के बारे में बात करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा प्राचीन समाज व्यक्तिगत और सामाजिक संगठन व सामाजिक जीवन पर उसके प्रभाव का महत्व समझने लगा है। आज का वातावरण देखकर इस पर सहसा विश्वास नहीं होता कि हमारे समाज में यौन या निजी आचरण के बारे में खुलकर बात करना वर्जित था। पूरे देश में इस सम्बन्ध में निश्चित परिवर्तन हुआ है और आज परिवार नियोजन के बारे में बात करते हैं तो वह दिन भी दूर नहीं जब लोग इस पर बात करें कि किसी को कितने बच्चे पैदा करने चाहिये। सामाजिक वातावरण में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है और शीघ्र ही व्यक्ति को छोटे परिवार के लिए अनुमोदन स्वयं समाज से मिलने लगेगा।

जोखिम नहीं

सामाजिक महत्व का यह इतना बड़ा कार्यक्रम है कि कोई जोखिम नहीं उठाया जासकता। तदनुसार, केवल ऐसे तरीके लागू किए जा सकें, जिनके कारगर होने पर कोई विवाद नहीं था और ऐसा लम्बे समय के प्रयोग और वैज्ञानिक परीक्षण से सिद्ध हो चुका था। लोगों को आपरेशन, लूप, निरोध (कण्डोम) और अब खाने की गोली जैसे कारगर गर्भनिरोधक तरीकों में किसी एक को चुनने का अवसर देना पड़ा। ४३ लाख गर्भनिरोधक आपरेशन किए गए तथा २८ लाख लूप लगाए गए। लोग खाने की गोलियों के कारगर तरीके को किस हद तक स्वीकार करते हैं, इसका पता लगाने के लिए ३१२ आजमाइशी योजनायें शुरू की जारही हैं।

तरीके का चुनाव

इस प्रकार लोगों को एकओर गर्भनिरोध के विभिन्न तरीकों में से किसी एक को चुनने की छूट दी जारही है लेकिन किसी एक को उन पर लादा नहीं जा रहा है। इसके साथ ही, लोगों को अपनी जरूरत के अनुसार विभिन्न प्रभावी तरीकों में से एक को चुनने का संतोष है। निरोध (कण्डोम) को छोड़कर यह कहा जासकता है कि अगर अधिकांश लोग आपरेशन, लूप या खाने की गोली को स्वीकार करें तो परिणाम संतोषजनक होगा तथा किसी एक कारगर तरीके के जोरदार प्रचार की अपेक्षा अधिक अच्छा होगा।

समय का महत्व

परिवार नियोजन कार्यक्रम में जन्म-दर में कमी करने का लक्ष्य १९७६-७७ तक पूरा करना है। समयावधि के महत्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती है क्योंकि इसका ख्याल नहीं रखने से हमारी अर्थव्यवस्था की तथा प्रगति के लिए हमारे कार्यक्रमों की अपूरणीय क्षति हो सकती है। चूंकि जनसंख्या के एक विशेष वर्ग में निर्धारित अवधि में लक्ष्य पूरा करना है, इसलिए देश की जनता में सामाजिक परिवर्तन लाने का यह सुविचारित और अनूठा प्रयास है। इतिहास बताता है कि ऐसे परिवर्तन साधारणतया धीरे-धीरे, सहज रूप से लम्बी अवधि में होते हैं।

ऐसे कार्यक्रम के लिए सामग्री की पूर्ति की योजना निश्चित और प्रभावी ढंग से बनायी जाती है। सप्लाई और सेवाओं की व्यवस्था खराब हो जाने से बड़ी हानि हो सकती है तथा लोगों का विश्वास कम हो सकता है। इसलिए परिवार नियोजन संबंधी टोलियों के आवागमन और लगातार सप्लाई की उचित व्यवस्था बनाये रखना जरूरी है ताकि लोगों को जो चाहिए और जहां चाहिए, मिल सके। इसे संभव बनाने के लिए जनसम्पर्क और बिक्री की ऐसी विधियां अपनायी जा रही हैं, जो अबतक बड़े व्यापारिक और औद्योगिक प्रतिष्ठान ही अपनाते थे। हमने चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्य के क्षेत्र में नए कामों और नई विधियों की शुरुआत की है।

मजबूरियां

उपलब्धियों के अलावा, प्रशिक्षण, अनुसंधान और मूल्यांकन के क्षेत्रों में मुख्य रूप से कार्यक्रम की कुछ मजबूरियां हैं। सवा लाख प्रशिक्षित कर्मचारियों की जरूरत होने के कारण प्रशिक्षित कार्यक्रम पूरा होने तक रुका नहीं रह सकता था। दोनों बातों को साथ-साथ चलना था प्रशिक्षण के क्षेत्र में हमारी प्रगति धीमी होने के कारण मुख्यतया प्रशिक्षण संस्थायें बनाने और उनके लिए आवश्यक कर्मचारी भर्ती करने में लगने वाला समय था। अब चूंकि प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के ४६ केन्द्र हो गये, कार्यक्रम तेजी से चलेगा।

अनुसंधान

इसी प्रकार, अनुसंधान के क्षेत्र में २१ केन्द्रों के परिणाम अब मिल रहे हैं। इन परिणामों को कार्यक्रम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशलता बनाये रखने में लगाना है तथा आगे अनुसंधान करने के लिए नयी समस्याओं का पता लगाना है।

मूल्यांकन कार्यक्रम की कमजोर कड़ी है। मूल्यांकन से तात्पर्य संगठन, तौर तरीकों और क्षेत्रीय कार्यों के मूल्यांकन से है। इसके अलावा रिपोर्ट भेजने तथा रिकार्ड रखने की ऐसी प्रणाली बनानी होगी, जिससे समय पर निर्धारित केन्द्रों में हुए काम का पता चल सके।

कार्यक्रम के कार्यान्वियन के परिणामस्वरूप जनसंख्या में २० लाख की वृद्धि रोकी गयी है और अगर इसी दर पर प्रगति होती रही तो १९७६-७७ तक हम हर वर्ष जनसंख्या में एक करोड़ २५ लाख की वृद्धि रोक सकेंगे। इस समय जनसंख्या में प्रतिवर्ष १•करोड़ ३० लाख की वृद्धि होती है। इस प्रकार जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि में काफी कमी आ जायगी। तब हम अपनी जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने में सफलता का दावा कर सकेंगे और सर्वांगीण प्रगति के युग में प्रवेश करेंगे।

आगामी कार्यक्रम

हमें इस समय जो कार्य करना है वह अब तक की प्रगति को सुदृढ़ करना है। हमें कार्यक्रम के प्रशिक्षण और मूल्यांकन कार्यों को बढ़ाना है और आंकड़ों के संग्रह की व्यवस्था में सुधार करना है। यह और महत्वपूर्ण है क्योंकि इस कार्यक्रम के कार्यान्वियन के परिणामस्वरूप जनसंख्या की घटबढ़ का ध्यान रखना होगा। यद्यपि लक्ष्य १९७६-७७ का रखा गया है, सुप्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं, प्राप्त अनुभव तथा प्रशासन के सुधार के कारण हम इस कार्य में तेजी ला सकते हैं। और लक्ष्य की तिथि से पहले जन्मदर में कमी कर सकते हैं।

पूरी कोशिश भी पर्याप्त नहीं

हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। किन्तु पूरी कोशिश भी पर्याप्त नहीं है। हमें अपनी कोशिशों में दोगुनी चौगुनी वृद्धि करनी है। निर्धारित लक्ष्यों को यथासमय पूरा करना है। असफलता के लिये कोई बहाना नहीं हो सकता क्योंकि न तो धन और न जनशक्ति या सामग्री का अभाव है।

इसके अलावा, लोगों को शिक्षा और प्रेरणा देने का जोरदार अभियान चलाया जा रहा है। इसे स्वयं पूरित होना है। तभी हम कह सकते हैं कि छोटे परिवार को स्वीकार करने और अपनाने का वातावरण तैयार हो गया है। कार्यक्रम की सबसे बड़ी गारंटी इस बात में है कि लोग किस अंश तक सहयोग करते हैं और इसमें भाग लेते हैं। इसी में सर्वोत्कृष्ट जन शिक्षा भी निहित है।

मेरा विश्वास है कि साधनों के होने पर तथा अबतक की प्रगति तथा चालू कार्यक्रम से हम निश्चय ही जनसंख्या की समस्या सुलझा सकेंगे।

सोयाबीन

कुछ मास पूर्व धन्वन्तरि में एक लेख सोयाबीन के विषय में प्रकाशित किया गया था जिससे उसको मंगाने के लिये हमें अनेक पत्र प्राप्त हुए थे। लेकिन हम उस समय आपकी आवश्यकता पूर्ति नहीं कर सके थे। अब हमने इसका पूरा प्रबन्ध कर लिया है आप अपनी आवश्यकतानुसार सोयाबीन हमसे मंगा सकते हैं—

मूल्य—१० रुपया प्रति किलो।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि लक्ष्य
ार्यकर्त्ताओं,
ा हम इस
थि से पहले

ी कोशिश
में दोगुनी
यथासमय
ा नहीं हो
सामग्री का

ने का जोर
ूरित होना
को स्वीकार
ाया है।
कि लोग
ा लेते हैं।

था अबतक
जनसंख्या

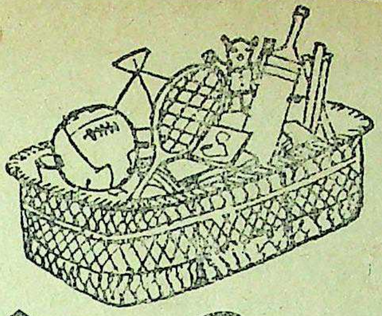

पालने की छुट्टी

पप्पू तीन साल का है और उसका यह पालना? बस, उससे एक दिन छोटा। वे भी दिन थे, जबकि पप्पू के बिना पालना और पालने के बिना पप्पू नहीं था। धीरे-धीरे पप्पू बड़ा हुआ। वह घुटने के बल चलने लगा। अब पालने में झूलना उसे अच्छा न लगता। पालने की छुट्टी कर दी गई। लेकिन, पालने का क्या हो? पप्पू सोचता रहा और उसने एक मज़ेदार तरकीब सोच निकाली। उसने रंग-बिरंगी किताबें, गुड़ियां और बल्ले को पालने में रख दिया और फिर खुश........मां तो जैसे फूली ही न समाई,'बोली—"ज़रा देखिये तो अपने लाडले को। कितना खुश है।" पिता ने एक नज़र पप्पू पर डाली। फिर, हंसते हुए पत्नी से बोला—"पालने को हमने खूब लम्बी छुट्टी दी... ठीक ही किया था न?"

जी हां, इन्होंने ठीक किया।

समझदार मां-बाप हमेशा परिवार नियोजन करते हैं। परिवार नियोजन का मतलब सिर्फ यही नहीं है कि बच्चे कम हों। बल्कि, इसका मतलब यह भी है कि बच्चे तभी हों, जबकि माता-पिता चाहते हों और उनकी परवरिश के लिये हर तरह से तैयार भी हों। बच्चे का जन्म अब एकदम संयोग की बात नहीं। बच्चे का जन्म अब आपके बस में है।

इसका श्रेय परिवार नियोजन को जाता है।

गुप्त सलाह और सामान के लिये निकटतम परिवार नियोजन केन्द्र में जाइये।

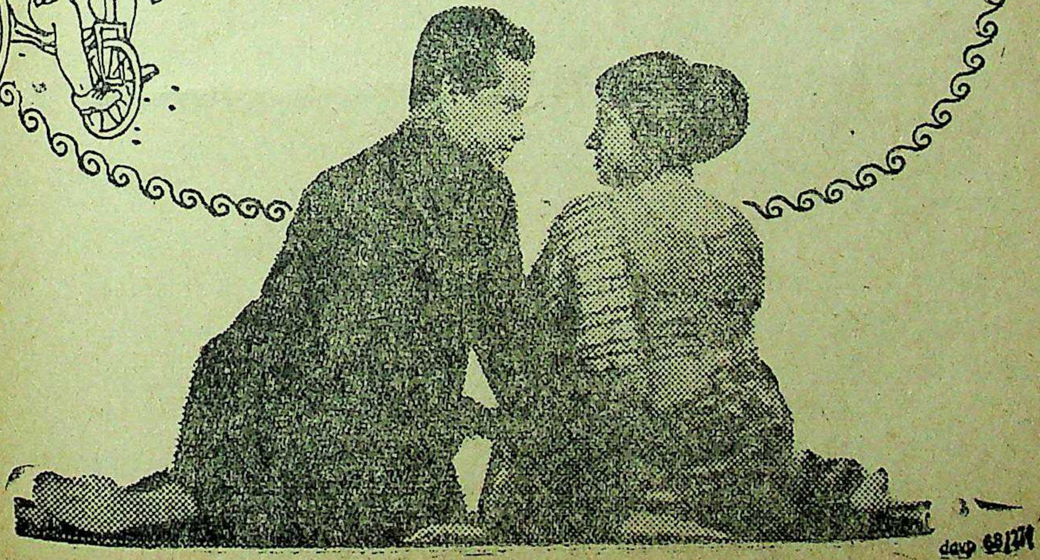

davp 68/171

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार नियोजन में अग्रगण्य महाराष्ट्र के दो जिले

महाराष्ट्र के उस्मानाबाद और बीड़ जिले कई बातों में लगभग एक से हैं। ये दोनों जिले एक दूसरे से मिले हैं और इनका सामाजिक एवं आर्थिक जीवन लगभग एक सा है। दोनों जिले महाराष्ट्र के भीतरी हिस्से में स्थित हैं और रेल लाइनों से दूर पड़ते हैं। इस क्षेत्र में कुछ तेल मिले हैं। वनस्पति तैयार करने वाली एक बड़ी मिल को छोड़कर शेष छोटी मिलें हैं। इस क्षेत्र के लोगों का मुख्य उद्यम खेती है और यहां की अधिकांश जनता भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की है।

ये दोनों जिले अब तक पिछड़े समझे जाते थे, किन्तु दो वर्षों तक लगातार राज्य में परिवार नियोजन में पहला और दूसरा स्थान प्राप्त कर इन्होंने यह साबित कर दिया है कि ये अधिकांश जिलों से आगे हैं। पिछले वर्ष इन्होंने लूप पहनाने के अभियान की ओर विशेष ध्यान दिया। उस्मानाबाद जिले में सबसे अधिक लूप पहनाए गए और इस जिले को १९६६-६७ का कर्वे पुरस्कार दिया गया। बीड़ का स्थान दूसरा था और उसे प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

१९६७-६८ में जब महाराष्ट्र ने गर्भनिरोध आपरेशनों पर अधिक जोर देने का निश्चय किया, तो स्थिति इन दोनों जिलों के अनुकूल न थी। फरवरी १९६८ तक उस्मानाबाद और बीड़ जिले धूलिया तथा नासिक जैसे जिलों से बहुत पीछे थे। केवल एक महीना शेष था और इतने कम समय में ये दोनों जिले उल्लेखनीय काम कर पायेंगे, इसकी संभावना कम थी। लेकिन उस्मानाबाद के जिला स्वास्थ्य अधिकारी डा. के. एस. लोहोकरे निराश होने वाले व्यक्ति नहीं हैं। उन्होंने एक महीने के अन्दर क्षेत्र के सभी प्रारंभिक स्वास्थ्य केन्द्रों का दौरा किया और चिकित्सा अधिकारियों को अतिरिक्त मेहनत की प्रेरणा दी।

मार्च के महीने भर उस्मानाबाद और बीड़ के चिकित्सा अधिकारी व्यक्तिगत आराम को तिलांजलि देकर रात दिन गर्भनिरोध आपरेशन करने में जुटे रहे। गाड़ियों की कमी थी अतः चिकित्सा अधिकारी गांव गांव आपरेशन करने के लिये मीलों पैदल अथवा साइकिल पर गए। अधिकतर इन डाक्टरों और इनके सहयोगियों को नस बंदी आपरेशन करने के लिये काफी दिनों तक अपने घरों से दूर रहना पड़ा और ऐसी जगहों पर आपरेशन करने पड़े जहां आपरेशन कक्ष की व्यवस्था करना असंभव था।

बीड़ में डाक्टरों तथा उनके दल को दौरे पर ले जाने के लिये एक गाड़ी थी। जल्दी से इस गाड़ी में ही आपरेशन कक्ष बनाया गया। प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्रों के कर्मचारियों को आपरेशन के समय डाक्टर की सहायता करने के दौरान अतिरिक्त प्रशिक्षण दिया गया।

मार्च के अन्त तक उस्मानाबाद में इतने अधिक आपरेशन किए जा चुके थे, जो न केवल पिछले महीनों के औसत से अधिक थे, वरन् जिनकी वजह से उसको महाराष्ट्र में पहला स्थान मिला। बीड़ में भी यही हाल था।

उस्माबाद की जनसंख्या १७, ५०, ००० है। १९६७-६८ में यहां १२, ५०० आपरेशन करने का लक्ष्य था जब अन्तिम आंकड़े इकट्ठे किये, तो पता चला कि उस्मानाबाद में १९, ७७८ नसबन्दी और ३७१ महिलाओं के आपरेशन किए गए हैं। इस प्रकार उस्मानाबाद में कुल २०, १४९ अर्थात् लक्ष्य के १६४ प्रतिशत आपरेशन किये गए। यहां लूप पहनाने का भी अच्छा काम हुआ। यहां ४, ८२३ अर्थात् हजार महिलाओं के पीछे २७७ महिलाओं को लूप पहनाये गये। बीड़ की जनसंख्या ११, ८३, ००० है। यहां ८, २८१ आपरेशन करने का लक्ष्य था। यहां कुल १३, १६१ गर्भ निरोध आपरेशन किए गये। इनमें से १२, ७८४ नसबन्दी और ३७७ महिलाओं के थे इस प्रकार बीड में लक्ष्य के १५८,९३ प्रतिशत अथवा हजार व्यक्तियों के पीछे ११७२ आपरेशन किए गये।

उस्मानाबाद और बीड़ की सफलता का श्रेय यहां की जागरूक जनता तथा परिश्रमी डाक्टरों को है। इसके अलावा इसका श्रेय उन प्रचारकों को भी है जिन्होंने घर घर जा कर लोगों को आपरेशन कराने की प्रेरणा दी। ऐसे लोगों में पराली गाव के शाहबुद्दीन का नाम उल्लेखनीय है, जो लगभग एक हजार लोगों को आपरेशन के लिए लाये। निःसन्देह उन्हें लाए गये हर आदमी के लिए पुरस्कार दिया गया।

यह नहीं कहा जा सकता कि महाराष्ट्र के ये दोनों जिले परिवार नियोजन के काम में आगे भी चोटी पर ही रहेंगे। किन्तु इस बात पर विश्वास किया जा सकता है कि इनके काम में कभी ढील नहीं होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर रेलवे

सूचना

दिनांक १।१०।६८ से समय सारिणी में सामान्य परिवर्तन किये जा रहे हैं। कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन नीचे दिये जा रहे हैं।

१. **नई गाड़ियां चालू की गई—**

गाजियाबाद तथा नई दिल्ली के बीच में एक नई गाड़ी चालू की गई है जो कि निम्न समयों पर चला करेगी—

अ—८.४५ जाना	गाजियाबाद	आना	११.५०
९.३७ आना— / ९.४० जाना—	दहली	(Via Gal)	
९.५० आना	नई दहली	जाना	९.५२

सादुलपुर तथा हनुमानगढ़ के बीच एक अन्य नई गाड़ी चालू की गई है जो कि निम्न समयों पर चला करेगी—

ब—१७.२० जाना	सादुलपुर	आना	६.५०
२२.०० आना	हनुमानगढ़	जाना	१.१५

२. **गाड़ियों की चाल बढ़ाई गई—**

२६ गाड़ियों की ५ से लेकर ६० मिनट तक चाल बढ़ाई गई है।

३. **रुकने के नये स्थान—**

गाड़ी नं०	स्टेशन
१. ३ ए० एफ०/४ ए० एफ०	रामगंज
२. ३५६ अप	सूरामूसी
३. २ डी जे पी	गंघरा
४. १ वी डी एफ/४ वी डी एफ	बसई धनकोट
५. १ वी डी एस	जटौला जोरी सम्पका
६. ९८ डाउन	ऊटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	सादाबाद मोहम्मदपुर
७. १ वी डी एफ	अमोसी
८. २ एल सी	रामचन्द्रपुर
९. १ आर सी	साहिबाबाद
१०. ३ एम डी	

४. गाड़ियों के रुकने के स्थान बंद किये गये—

गाड़ी नं०	स्टेशन
१. ५१ अप/५२ डाउन	जाफराबाद
२. ४ ए के/५ ए के; ७ ए के/१० ए के	दुखनावरन
३. १ ए ए/३ ए ए, ६ ए ए/ ८ ए ए	गुरसर सुतलानी
४. २ ए एफ/५ ए एफ	रामगंज
५. ३४४ डाउन	गंवरा

५. गाड़ियों के समयों में महत्वपूर्ण परिवर्तन—

अ—ब्रोड गेज

१ आर सी	३.४५	जाना	रायबरेली	२ आर सी	आना	२३.४०
	१०.२०	आना	कानपुर		जाना	१७.०५
१ सी सी एम	२.४५	जाना	चोपन	२ सी सी एम	आना	२१.४५
	८.१०	आना	मिर्जापुर		जाना	१६.४०
१ सी सी जी	११.४५	आना	चुनार	२ सी सी जी	जाना	१४.३५
२ टी एफ	५.३०	जाना	टूंडला			
	१०.४५	आना	फरुखाबाद			
३३१ अप	५.४५	जाना	नई दहली			
१३ अप	११.१५	आना	दहली			

ब—मीटर गेज

२०७ अप	२१.५०	जाना	फुलेरा	२०८ डाउन	आना	६.३५
	६.३०	आना	जयपुर			
९६ डाउन	४.००	जाना	मेरता रोड			
	८.२०	आना	बीकानेर			
९५ अप	८.००	जाना	जोधपुर			
	१०.४५	आना	मारवार			
२०९ अप	१०.००	जाना	फुलेरा	२१० डाउन	आना	१७.१५
	१९.५५	आना	जोधपुर		जाना	८.१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	२०.५५	जाना	जोधपुर		आना	७.२०
	००.३५	आना	मारवार		जाना	३.४५
१ जे डी पी	३.५०	जाना	फुलेरा	२ जे डी पी	आना	२२.३०
			दिगाना		जाना	१८.००
१ जे जे वी	८.४०	जाना	जोधपुर	२जे जे वी	आना	१२.५५
	१५.४५	आना	बारमेड़		जाना	६.१०
२ जेएस वी	३.०५	जाना	जोधपुर			
	६.५०	आना	मारवाड़			
१जे आर एम	१७.४५	जाना	रतनगढ़	२ जे आर एम	आना	१०.००
	००.१५	आना	मेरतारोड		जाना	३.३०
१ जे पी जे	१८.२०	जाना	जैसलमेर	२ जे पी जे	आना	१०.५०
	२२.३५	आना	पोकरन		जाना	६.४०
४ जे एम एम	१०.००	जाना	मेरतारोड	३जे एम एम	आना	११.१७
	१०.३२	आना	मेरता सिटी		जाना	११.०५
२ जे पी वी	४.४५	जाना	पीपर रोड	३जे पी वी	आना	६.२०
	६.४५	आना	बिलारा		जाना	७.२५
४ जे वी पी	१३.१०	जाना	बालोतरा	३ जे वी पी	आना	१९.००
	१५.३०	आना	पचपाडसाल्टडिपो		जाना	१७.१०

६—वातानुकूलित कोच

वातानुकूलित कोचों की सुविधा

अ—४१ अप/४२ डाउन मंसूरी एक्सप्रेस दहली से चलने वाली में १६-१०-६८ से तथा देहरादून से चलने वाली में १७-१०-६८ से समाप्त की जायगी।

ब—वातानुकूलित कोच ६३ अप/६४ डाउन जोधपुर मेल में हफ्ते में दो बार (हफ्ते में तीन बार के बजाय) दहली से सोमवार और शुक्रवार को तथा जोधपुर से शनिवार और बृहस्पतिवार को चला करेगा।

७—सीधे/आंशिक जाने वाले डिब्बे—

१ अप/२ डाउन मेल में दहली और कालका के मध्य चलने वाले एक प्रथम श्रेणी के डिब्बे के स्थान पर एक तृतीय श्रेणी का डिब्बा होगा।

गाड़ियों के समय, सीधे जाने वाले खण्डीय डिब्बे चलाने और बन्द करने, गाड़ियों में स्थान के वर्गीकरण के फेर बदल आदि के सम्बन्ध में पूरी-पूरी जानकारी के लिये कृपया अक्टूबर १९६८ की समय सारिणी रेलवे टिकट घर, आरक्षण, पूछताछ कार्यालयों तथा प्रमुख स्टेशनों के बुकस्टालों पर बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

—प्रमुख परिचालन अधीक्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

मकर ध्वज वटी

[विशुद्ध आयुर्वेदिक]

किसी कारण से उत्पन्न अशक्ति निर्बलता, सुस्ती, खून की कमी उत्साह व स्फूर्ति का अभाव आदि अनेक विकार शीघ्र नष्ट होते हैं और शरीर पुष्ट शक्ति सम्पन्न व कान्तिमय हो जाता है ताजा खून पैदा होता, बजन बढता व खूब भूख लगती है कुछ ही दिनों में शरीर में नवीन शक्ति, उत्साह व फुर्ति उत्पन्न होती है ।

★

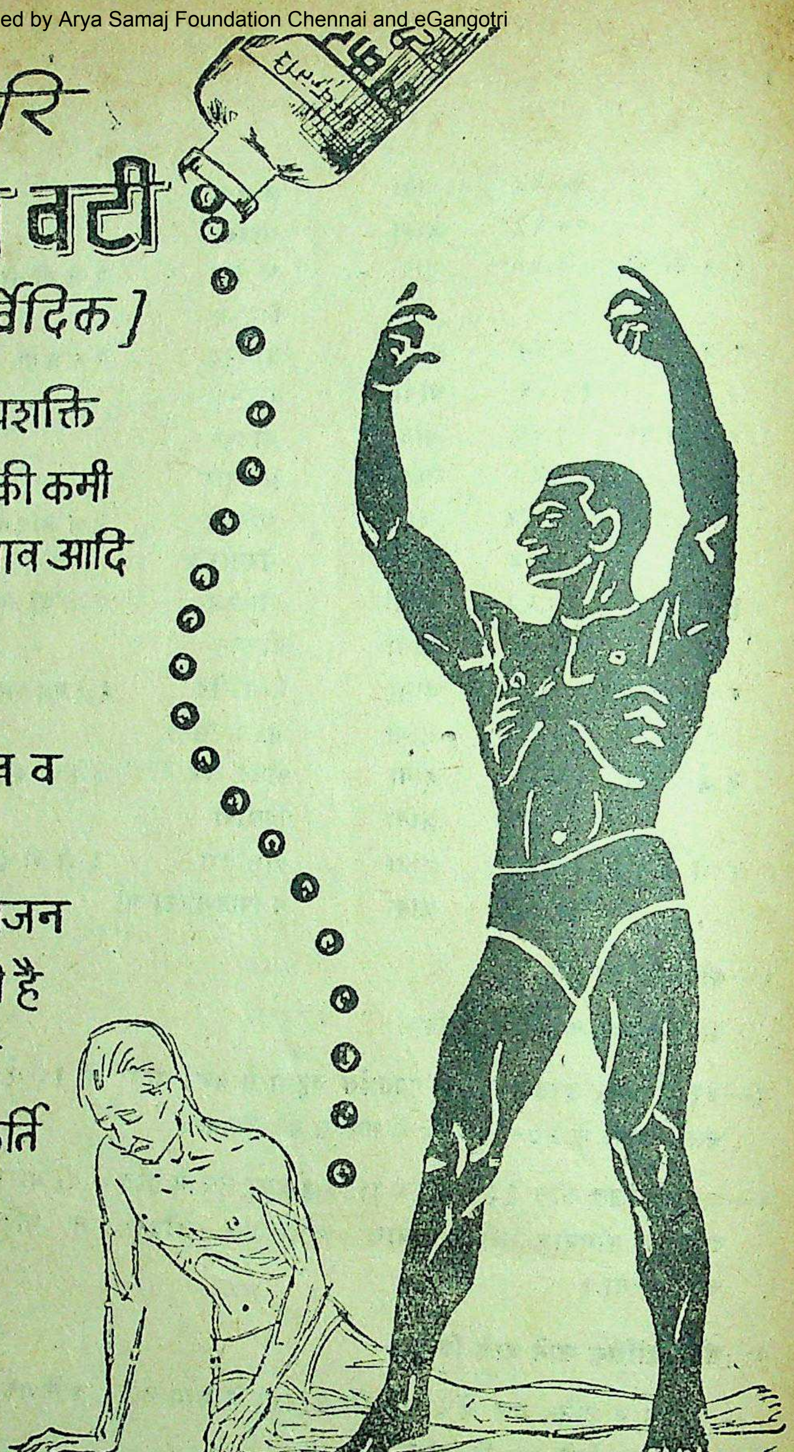

नि. मा. ता. धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐलोपैथी का मान मर्दन करने वाली—

कुछ चमत्कारी वनस्पतियाँ

बावलीघास-चूर्ण—यह रक्त रोकने वाली अव्यर्थ महौषधि है। अर्श का, रक्तप्रदर का, रक्तपित्त या नाक से खून जाता हो तो इसकी ३-४ मात्रा सेवन से ही रुक जाता है। बहुत बार एलोपैथी के इन्जेक्शनों के निष्फल हो जाने पर इसने तत्काल कार्य किया है। १॥ माशा चूर्ण और ५ काली मिर्च लेकर सिल पर पीसकर पानी में घोल कर ६ माशा मिश्री मिलाकर सुबह शाम पिलाना चाहिये। शुद्धतापूर्वक मंगाकर, छाया में सुखाकर चूर्ण बनाया गया है। मूल्य १ किलो ८.०० और ५० ग्राम का डिब्बा ६० पैसा।

रास्ना चूर्ण--अभी हाल में हुए विद्वानों के परीक्षण से यह सिद्ध होगया है कि यह सभी वात रोगों की अव्यर्थ महौषधि है। कुछ चिकित्सकों का तो कहना है कि पक्षाघात की इससे उत्तम दूसरी औषधि नहीं है। विशेषतः पक्षाघात पर और अन्य समस्त वातरोगों पर इसके १ तोले चूर्ण का क्वाथ बनाकर दिन में दो बार पिलाना चाहिये। मूल्य १ किलो चूर्ण ७.०० और ५० ग्राम का डिब्बा ५० पैसा।

पलास पत्र चूर्ण--बार बार हो जाने वाले गर्भश्राव और गर्भपात की अव्यर्थ महौषधि है। जिन स्त्रियों का १०-१० बार गर्भ गिर चुका था वह इसके व्यवहार से सन्तानवती हुई हैं यदि गर्भ स्थिति का पता लगते ही इसका व्यवहार प्रारम्भ करा दिया जाय और जब तक बच्चा न हो प्रतिदिन व्यवहार कराया जाय तो हम गारंटी के साथ कह सकते हैं कि गर्भ में किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं होगी और स्वस्थ और सबल बच्चा उत्पन्न होगा। गर्भावस्था में होने वाले प्रदर के लिये भी यह बहुत ही लाभप्रद है। इससे प्रदर भी ठीक होजाता है और गर्भ भी सुरक्षित रहता है। ३ माशे की मात्रा को प्रातःकाल गाय के पाव भर दूध में डालकर और पाव भर पानी डालकर औटाना चाहिये जब दूध मात्र शेष रह जाय तब मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये। मूल्य १ किलो ७.०० और ५० ग्राम का डिब्बा ५० पैसा।

उदुम्बर पत्र चूर्ण--यह मधुमेह की अव्यर्थ महौषधि है। इसके निरन्तर सेवन से पुराने मधुमेह और बहुमूत्र में शीघ्र लाभ होता है। १ तोले चूर्ण को पाव भर पानी में औटा कर चौथाई शेष रहने पर पिलाया जाय। यदि इसमें १ माशा शुद्ध शिला जीत भी घोलकर पिलाया जाय तो और भी उत्तम है। मधुमेह की यह अल्प मूल्य की औषधि मूल्यवान औषधियों से अधिक गुणकारी है आप मधुमेह रोगी को कोई भी औषधि सेवन करायें साथ में इसे भी अवश्य सेवन करायें। मूल्य १ किलो चूर्ण ७.०० और ५० ग्राम का डिब्बा ५० पैसा।

सत्यानाशी के बीज--छाजन की अव्यर्थ महौषधि। अब तक यह समझा जाता रहा है कि छाजन असाध्य रोग है किन्तु इस औषधि के व्यवहार से निश्चित लाभ होता है। अनेक छाजन के रोगी इससे ठीक हो चुके हैं। सरसों का शुद्ध तेल लेकर उसे आग पर गरम करना चाहिए और इन बीजों को डालकर नीम की लकड़ी से घोंटना चाहिए। जब मलहम जैसा बन जाय तब ठंडा करके शीशी में भर लेना चाहिये। सत्यानाशी के पंचांग का पानी बनाकर उससे धोकर यह मलहम लगानी चाहिए। पाव भर तेल के लिये आवश्यक ५० ग्राम बीजों का मूल्य २.००

सत्यानाशी पंचांग चूर्ण--इसमें से २५ ग्राम चूर्ण आध सेर जल में डालकर खूब खौलाना चाहिए। खौलने पर ठंडा होने पर छानकर छाजन को खूब धोकर मलहम लगानी चाहिये। मूल्य ५० ग्राम का ४० पैसा।

गर्ग वनौषधि भंडार विजयगढ़ (अलीगढ़)

मुद्रक—वैद्य देवीशरण गर्ग, धन्वन्तरि प्रेस विजयगढ़, प्रकाशक—वैद्य देवीशरण गर्ग, धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़
सम्पादक—वैद्य [illegible] A., M. B. S.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजि० नं० एल० २८५ Regd. No. L. 285
For the use of Registered Medical Practitioners, Hospitals and Laboratories only
Registered with the Registrar of Newspapers for India under R. N. 2197/57
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ की
प्रामाणिक शास्त्रोक्त एवं सफल पेटेंट औषधियां
निम्न--स्थानों
से प्राप्त कर समय और खर्च की बचत करें

अलीगढ़—बिक्रीकेन्द्र मामू भांजा रोड
हाथरस— „ „ लोहट बाजार,
आगरा—सुगनचन्द राजकुमार जैन रावतपाड़ा
कर्वी—वैद्य बिन्दा प्रसाद गुप्ता, नइ बाजार
जरवल बाजार (बहिराइच)—श्री राम आसरे रामगोपाल
कानपुर—वैद्य श्यामाचरण सक्सैना ११८/१५७ कौशलपुरी
गनाई (अलमोड़ा)—मनराल औषधालय, गनाई
राठ (हमीरपुर)—श्री नारायण आयुर्वेदिक कार्यालय
बांदा—१. श्री भगवानदास कुंजबिहारी लाल
२. श्री भास्कर ब्रादर्स
गुना—श्री कस्तूरचन्द माण्डल, सदर बाजार
पेण्ड्रा रोड—श्री चांदमल राठी
किशुनपुर (फतेहपुर)—वैद्यरामगोपाल भगवानदास
मुरादाबाद—पं० मुकन्दराम भरोसेलाल अमरोहा गेट
सीतापुर—पं० प्रभुदयाल वैद्य आयुर्वेदाचार्य
चौमुहा (मथुरा)—गुप्ता एण्ड कम्पनी
टूण्डला (आगरा)—श्री मूलचन्द इन्द्रसैन जैन
महोली (सीतापुर)—श्री भगवान दीन बाबूराम
घुंघली (गोरखपुर)—श्री रामरतन गुप्ता, शिव आयुर्वेदिक फार्मेसी
सिकन्दरपुर (फरुखाबाद) श्री जमुनाप्रसाद रामशरणलाल
कागारौल (आगरा)—श्री लक्ष्मीनारायण गोइल
बरौत (इलाहाबाद)—श्री हीरालाल सीताराम
मैनपुरी—श्री शिव भंडार
छिबरामऊ (फरुखाबाद)—डा० गुरुदयालसिंह जी
बिलासपुर—श्री हरीराम भीखमशाह, सदरबाजार
सिकंदरपुर (कानपुर)—श्री अक्षय मैडीकल स्टोर्स
मऊरानीपुर (झांसी)—श्री पुरुषोत्तम बघेले
फखरपुर (बहराइच)—श्री राजकरन सिंह जी
बबेरु (बांदा)—डा. सूर्यभान गुप्ता B. A. M. S.
कटनी—श्री सुरेश मैडीकल स्टोर्स, कमानिया गेट
पौड़ी (गढ़वाल)—मै. मोहम्मद इस्माइल एण्ड सन्स
अतर्रा (बांदा)—मै० शंकर मैडीकल स्टोर्स
„ „ —मै० तिवारी जनरल स्टोर्स
हिंडौन सिटी—श्री चिम्मनराम पीरूराम
सिवनी मालवा (होशंगाबाद)—कैलाश औषधि भण्डार
आरोन (गुना)—श्री कल्याण चिकित्सालय
श्री मुन्नीलाल उर्फ जगन्नाथ प्रसाद
दूरा (आगरा)—श्री ठाकुरदास अग्रवाल
फफूंद (इटावा)—श्री रमानिवास औषधालय
गोला का बास (गौंड़ा)—श्री रामकिशोर हरिकृष्ण
करनैलगंज (गौंड़ा)—श्रीरवीन्द्र मैडीकल स्टोर्स
शेवा अहरौरा (मिर्जापुर)—अशोक मैडीकल हाल
अगवानपुर (मुरादाबाद)—वैद्य महेशचन्द गुप्त
बांसगांव (गोरखपुर)—श्री रामदास शिवनाथ प्रसाद
झांसी—श्री हरीराम सुन्दरानी, अन्दर सैयर गेट
खागा (फतेहपुर)—डा. मदनमोहन अग्निहोत्री
मोरावां (उन्नाव)—श्री बिन्दा प्रसाद श्रीराम गुप्ता चन्दनगंज
जगनेर (आगरा)—श्री मुरारीलाल अग्रवाल
कुरावली (मैनपुरी)—श्री ओ३म औषधि भण्डार
सहता (आगरा)—डा० डालचन्द जी शर्मा
खुरहंड (बांदा)—डा० रामकुमार पाण्डेय
समरिया (वाराणसी)—श्री वरणवाल औषधि भण्डार
बांसडीह (बलिया)—श्री दिनेश मैडीकल स्टोर्स

जिन स्थानों पर हमारे एजेंट नहीं है वहां के औषध
विक्रेता नियम व सूचीपत्र मंगाकर शीघ्र एजेंसी ले लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

आयुर्वेद का सर्वोत्तम सचित्र हिन्दी मासिक

FOR REGISTERED MEDICAL PRACTITIONERS ONLY

अक्टूबर
१९६८

प्रकाशक - धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सफल सैट

निम्नलिखित औषधियों के सैट सैकड़ों-हजारों रोगियों पर सफल प्रमाणित होने के बाद वैद्य समाज के समक्ष प्रस्तुत किये गये थे और अब तो इनकी पर्याप्त प्रसिद्धि है। अनेक चिकित्सक इन्हें मंगाकर अपने रोगियों पर व्यवहार करते हैं, यदि आपकी चिकित्सा में इन रोगोंसे पीड़ित रोगी हों तो उन्हें निःसंकोच सेवन करावें। अवश्य लाभ होगा।

(१) श्वेतकुष्ठहर सैट—सफेद दागों को नष्ट करने की सुपरीक्षित तीन दवायें। समय कुछ अधिक लगेगा लेकिन सफेद दाग अवश्य नष्ट होंगे। आंतरिक रक्त-विकार को दूर करती हुई स्थाई लाभ करने वाली औषधियां है। तीनों औषधियां १५ दिन के लिये—८.००

श्वेतकुष्ठहर वटी—३२ गोली की शीशी ३.००

श्वेतकुष्ठहर घृत—१ औंस (२७ मि लि.) २.५०

श्वेतकुष्ठहर अवलेह—३० तोला (३५० ग्राम) ४.००

(२) स्त्री रोगहर सैट—इसमें दो औषधियां हैं--१. स्त्री सुधा २. मधुकाद्यवलेह। इनके सेवन करने से स्त्रियों के सभी विशेष रोग नष्ट होते हैं। निर्बलता, आलस्य एवं अनियमितता नष्ट होकर उत्साह, स्फूर्ति एवं नीरोगता शीघ्र मिलती है। १५ दिन के सेवन योग्य औषधियां ८.००

स्त्री सुधा—१ बोतल (६२६ मि. लि.) ५.५०, ८ औंस (२२७ मि. लि.) कार्डबोर्ड पैकिंग २.५०

मधुकाद्यवलेह--१५ तो. (१७५ ग्रा.) की शीशी ४.००

३—हिस्टेरियाहर (हिस्टोजित) सैट-स्त्रियों को दौरे से होने वाले इस रोग के लिए आशुलाभप्रद तीन औषधियों का व्यवहार अवश्य करावें। १५ दिन की तीन दवाओं का मूल्य १०.००

हिस्टेरियाहर आसव--२२ औंस (६२६ मि.लि.) ५.५०

हिस्टेरिया हर क्षार--आध औंस (१४ मि. लि.) २.५०

हिस्टेरियाहर वटी—३० गोली की शीशी २.५०

(४) निर्बलता नाशक सैट—अनुत्साह एवं निर्बलता से जीवन का आनन्द ही चला जाता है, गृहस्थी भारस्वरूप हो जाती है। इसके लिये निम्न तीन औषधियों का व्यवहार कर अपनी खोई हुई जवानी को फिर से प्राप्त करें।

मकरध्वज वटी—४१ गोलियों की शीशी ३.५०

धन्वन्तरि तैल—मुर्दार नसों पर मालिश के लिए १ शीशी आधी औंस (१४ मि लि.) की २.५०

धन्वन्तरि पोटली-सिकाई करने को एक डिब्बा २.५०

तीनों औषधियों का सैट--मूल्य ८.०० पो व्यय २.००

(५) रक्तशोधहर सैट--इसमें धन्वन्तरि आयुर्वेदीय सालसा परेला, तालकेश्वर रस, इन्द्रवारुणादि क्वाथ तीन औषधियां हैं। इनके विधिवत् प्रयोग करने से सब प्रकार के रक्तविकार दूर होते हैं। फोड़े, फुन्सी, चकत्ता, खुजली आदि नष्ट होकर शरीर का रक्त-रूप निखर जाता है। १५ दिन की तीनों औषधियों का मूल्य ८.००, पोस्ट व्यय ५.२५

धन्वन्तरि मालसा परेला—६२६ मि.लि. (१ बो) ५.००

तालकेश्वर रस—५.८६ ग्राम (६ माशा) ४.००

इन्द्रवारुणादि क्वाथ—१२ मात्रा—१.५०

(६) अर्शान्तिक सैट-वटी, मलहम, चूर्ण यह तीनों औषधियां दोनों प्रकार के अर्श नष्ट करने के लिए सफल प्रमाणित हुई हैं। १५ दिन की दवाओं का मूल्य ६.००, पोस्ट व्यय १.००

अर्शान्तिक वटी—३० गोली की १ शीशी ३.००

अर्शान्तिक मलहम—१४ मि. लि. (आध औंस) १ शीशी १.५०

अर्शान्तिक चूर्ण--८७ ग्राम (७॥ तो.) १ शीशी २.५०

(७) वातरोगहर सैट, वात रोग हर तैल--रस एवं अवलेह तीनों औषधियों का सेवन करने से जोड़ों का दर्द, सूजन, अङ्ग विशेष की पीड़ा, पक्षाघात तथा सभी वात व्याधियों में अवश्य लाभ होता है। १५ दिन की तीनों दवाओं का मूल्य १०.००

वात रोग हर तैल—११४ मि. लि. (४ औंस) ३.००

वातरोगहर अवलेह—२९ ग्राम (२॥ तोला) ४.००

वातरोगहर रस—३.९० ग्राम (४ माशा) ५.००

नोट—वात रोगी यदि साथ में बिजली की मशीन का व्यवहार भी करें तो शीघ्र लाभ होगा, इसमें संदेह नहीं। बिजली की मशीन का मूल्य ३५.०० है। पोस्ट व्यय एवं सेलटैक्स आदि पृथक।

निर्माता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि त्रयोदशी के उपलक्ष में

(२० अक्टूबर से २० दिसम्बर सन् १९६८ तक)

विशेषांक रियायती मूल्य में

धन्वन्तरि के विशेषांक कितने उपयोगी होते हैं इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। जिसने धन्वन्तरि का एक भी विशेषांक देखा है वह धन्वन्तरि के उपलब्ध सभी विशेषांक प्राप्त न करना चाहे यह हो नहीं सकता। इस अवसर से आप भी लाभ उठायें। निम्न प्राप्य विशेषांकों में से जो विशेषांक आपके पास न हों उनको उस अवधि के अन्दर रियायती मूल्य से अवश्य मंगालें।

नाम विशेषांक	पूरा मू०	रियायती मू०
पुरुष रोगांक (राज संस्करण)	८.५०	५.५०
नारीरोगांक (नवीन संस्करण)	१०.००	६.५०
प्राकृतिक चिकित्सांक	८.५०	४ ५०
यूनानी चिकित्सांक	८.५०	४.५०
यूनानी चिकित्सांक (राजसंस्करण)	८.५०	५.५०
वनौषधि विशेषांक प्र.भाग.(रा.सं.)	१०.००	६.५०
वनौषधि विशे. द्वितीय भाग (रा.सं)	८.५०	५.५०
वनौषधि विशेषांक तृतीय भाग	८.५०	४.५०
,, ,, (राजसंस्करण)	८.५०	५.५०
वनौषधि विशेषांक चतुर्थ भाग	८.५०	४.५०
,, ,, ,, (राज. सं.)	८.५०	५.५०
शिशुरोगांक (राजसंस्करण)	८.५०	५ ५०
कायचिकित्सांक (राजसंस्करण)	८.५०	५.५०
संक्रामक रोगांक	४.००	२.००
,, ,, परिशिष्टांक	१.००	०.५०
कल्प एवं पंचकर्म चिकित्सांक	४.००	२.००
चिकित्सा समन्वयांक प्रथम भाग	समाप्त	
,, द्वि. भाग	२.००	१.००
श्वास अङ्क (थीसिस)	१.५०	०.९०
श्वास अङ्क	१.००	०.६०
विषि विधानांक	२.००	१.००

नाम विशेषांक	पूरा मू०	रियायती म०
पायरिया अङ्क	१.००	०.६०
कासरोगांक	१.००	०.६०
शूलरोगांक	१.००	०.६०
इञ्जेक्शन विज्ञानांक (प्र.भा.) द्वि.सं	३.००	१.५०
आयुर्वेद-शिक्षणांक	१.५०	०.९०
पक्षाघात अङ्क प्रथम-खण्ड	२.००	१.१०
पक्षाघात अङ्क-द्वितीय-खण्ड	२.००	१.१०
पंच कर्म विज्ञानांक	१.५०	०.९०

नियम—

१—यह रियायती मूल्य २० अक्टूबर से २० दिसम्बर १९६८ तक रहेगा, बाद में नहीं।

२—पोस्ट व्यय, पैकिङ्ग व्यय या रेल व्यय पृथक देना होगा।

३—अधिक विशेषांक रेल द्वारा मंगावें। स्टेशन का नाम लिखें तथा ५.०० एडवांस अवश्य भेजें। विशेषांक वजनी होते हैं। इस वर्ष काफी पोस्ट व्यय बढ़ गया है। यदि रेलवे स्टेशन आपके पास में है तथा स्टेशन से पार्सल छुड़ाने में आप कष्ट अनुभव न करें तो रेल गाड़ी से ही मंगावें।

४—इस रियायती मूल्य पर किसी प्रकार का कमीशन किसी को नहीं दिया जायगा।

५—विशेषांक के साथ अन्य पुस्तकें या अन्य कोई वस्तु पोस्ट द्वारा नहीं भेजी जा सकेंगी।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्तण्ड के आयुर्वेदिक इंजेक्शन तथा पेटेंट औषधियां

गत २० वर्षों से सहस्रों वैद्यों द्वारा लाखों रोगियों पर अनुभूत और विश्वसनीय इन चमत्कारी आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों और पेटेण्ट दवाओं से आप भी प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा और जनता का विश्वास प्राप्त कीजिये।

मार्तण्ड फार्मेस्युटिकल्स, बड़ौत लाखों रुपये के वैज्ञानिक यन्त्रों और आटोमेटिक मशीनों से परिपूर्ण एयर कन्डीशन्ड लेबोरेट्री है। जिसमें औषध कानून के अन्तर्गत फार्मेस्युटिकल इञ्जनियरों और कैमिस्टों के उत्तरदायित्व में विटामिन्स, हार्मोन, एन्टीबायोटिक्स, सल्फाड्रग्स दवाओं तथा एलोपैथिक और आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों का निर्माण होता है।

मार्तण्ड आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों के फार्मूलों में आयुर्वेद की युगों से अनुभूत और प्रसिद्ध जड़ी-बूटियों के क्रियाशील तत्वों के साथ साथ एलोपैथी की आधुनिक और प्रभावशाली औषधियां भी मिलाई गई हैं। इसलिये ये आयुर्वेदिक इञ्जेशन तत्काल लाभ करते हैं। ऐलोपैथिक इञ्जेक्शनों से भी ये अधिक गुणकारी होते हैं। पहले एक छोटा सा आर्डर भेजकर इनकी परीक्षा कीजिये। निश्चय ही आपको अपने आयुर्वेदिक इञ्जेक्शनों पर गर्व होगा।

(१) **सोमा इञ्जेक्शन**:—दम्मा और श्वांस के दौरे में तुरन्त लाभ करता है।	६ × १ मि. लि. बक्स	३–३०
(२) **शूलान्तक इंजेक्शन**–उदर शूल, पार्श्व शूल, संधि शूल, सब वातिक शूलों के लिए रामबाण है।	६ × १ „ „	२–४८
(३) **स्मृतिदा इंजेक्शन**:—मिर्गी, उन्माद, हिस्टीरिया, बच्चों के कमेड़े (आक्षेप) में	६ × १ „ „	५–५०
(४) **शरपुंखा इंजेक्शन**:–पाण्डु रोग, कामला, जिगर, तिल्ली, कमजोरी में लाभप्रद	६ × २ „ „	३–००
(५) **तापीकर इंजेक्शन**:–निमोनिया, नजला, जुकाम, इंफ्लुएञ्जा के लिए।	६ × १ „ „	३–३०
(६) **रासोन इंजेक्शन**:–गठिया वायु, संधि शोथ, सन्धि शूल, गृध्रसी में रामबाण	६ × २ „ „	३–००
(७) **प्रदरारी इंजेक्शन**:–रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, गर्भाशय शोथ, रजः विकारों में,	६ × २ „ „	३–००
(८) **प्रवाल इंजेक्शन**:–कमजोरी, कैलशियम की कमी, रक्तस्राव, रक्तपित के लिए	६ × २ „ „	२–२०
(९) **पुनर्नोल इंजेक्शन**:–हृदय शूल, हृदयावरोध, तथा लगातार दमकशी में	६ × २ „ „	२–५०
(१०) **पुनर्नवा इंजेक्शन**:–मूत्रल (पेशाब लाने वाला) इंजेक्शन है।	६ × २ „ „	३–००
(११) **मारुताशी इञ्जेक्शन**:–गठिया का दर्द, पुराना संधिशोथ, जोड़ों की सूजन में,	६ × २ „ „	३–००
(१२) **निडोरीन इञ्जेक्शन**:–मिचली, उन्माद, प्रलाप, मनोविभ्रम में आशुगुणकारी	६ × २ „ „	२–५०
(१३) **क्लीवांतक इंजेक्शन**:–नपुंसकता, ध्वज भंग, जननेन्द्रिय की कमजोरी दूर करता है	६ × १ „ „	६–६०
(१४) **कुर्चीनम इंजेक्शन**:–सब प्रकार के अतिसार, खूनी पेचीस में आशुगुणकारी है	६ × १ „ „	६–००
(१५) **हिरण्य इंजेक्शन**:—दम्मे के दौरे में फौरन लाभ करता है।	६ × १ „ „	२–७५
(१६) **गिरपार इंजेक्शन**:—वमन, हिक्का, स्वप्न दोष, बलगमी खांसी, उदर शूल, तथा सब प्रकार के शूलों के लिए रामबाण।	६ × १ बक्स „	२–५०
(१७) **दुग्ध प्रोटीन इंजेक्शन**:–गर्भाशय शोथ और फोड़े फुंसियों के लिये।	६ × २ बक्स „	१–६५
(१८) **हृदयामृत इंजेक्शन**:—दिल का दौरा, घबराहट सदमा, हृदय और फेफड़ों को उत्तेजित करता है, दिल को ताकत देता है।	६ × १ बक्स „	१–३०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१९) **कार्डीनोल इञ्जेक्शन**—दिल का दौरा, हृदय बैठना, श्वास और [illegible] की मन्द गति को ठीक करता है। हृदयोत्तेजक है। ६×१ बक्स ३–५०

(२०) **विटामिन बी. १२ इंजेक्शन**—रक्ताल्पता, पांडु रोग, कमजोरीके लिये प्रसिद्ध। ५ मि. लि. २–००

(२१) **पैरामोल टेबलेट**—पार्श्व शूल, सिर दर्द, कमर दर्द, दन्त दर्द तथा वर्षा, सर्दी से उत्पन्न बुखार को उतारने की सुरक्षित दवा है। स्ट्रिप १० टेबलेट १–५०

(२२) **पुनर्नोल टेबलेट**:—जलोदर और शोथनाशक है तथा मूत्र लाती है। २५ टेबलेट २–७४

(२३) **सल्फाआयोबेल टेबलेट**:—पेट में आंव, मरोड़ और खूनी पेचिश के लिए। २० टेबलेट ३–७५

(२४) **सर्पेन्थिन टेबलेट**:—कमेड़े, प्रलाप, उन्माद, मिर्गी, नींद लाने के लिए। २५ टेबलेट १–१२

(२५) **बजरंग तिला**:—नपुंसकता, जनेन्द्रिय की कमजोरी और शिथिलता के लिए। १ औंस ३–००

(२६) **अर्थाफाइरीन कैप्शूल**:—गठियाबाय, संधि शोथ और दर्द के लिए रामबाण १०० टेबलेट ५–००

(२७) **कोनोमाइसीन कैपशूल**:—टायफाइड ज्वर, (म्याद्दी बुखार) की रामवाण दवा १२ कैप्सूल ३–५०

(२८) **क्लोरोकील स्ट्रेप्टो कैपशूल**:—पेचिस और टाइफायड के लिए अचूक दवा है। १२ कैप्सूल ४–५०

(२९) **सोमा टेबलेट**:—दम्मे में, श्वांस-प्रश्वांस और हृदय गति को नियमित करके नींद लाता है, श्वांस दम्मे की अनुपम औषधि है। २५ कैप्सूल ४–५०

(३०) **सोमा टेबलेट**:—श्वांस, कास, दम्मा, बलगमी खांसी की प्रसिद्ध दवा है। १०० टेबलेट ३–५०

(३१) **ल्यूकोरीन टेबलेट**:—प्रदर और अनियमित रक्त स्राव की अचूक दवा है। १०० टेबलेट ३–००

(३२) **सैप्टीनाल**:—फोड़ा, फुन्सी, घाव जलन, त्वचा रोग कीट दंश के लिए, २० ग्राम टयूब १–५०

(३३) **कोडोपिल**:—सर्दी, बुखार, जुकाम, सिर दर्द, दन्त दर्द, कान दर्द, में आशुगुणकारी १० टेबलेट १–००

(३४) **एडकाल** (विटामिन ए. डी. ड्राप्सः)—जुकाम, दुर्बलता, कृमि दन्त में लाभप्रद १५ मि. लि. १–५०

(३५) **सिटामाइडोल**:—रोहें, गुहेरी निकलना, नेत्रशोथ, लालिमा के लिए। १० प्रतिशत मि. लि. १–२५

(३६) **प्रोमाइजीन**:—अलर्जी, खुजली, जी मिचलना, वमन में अचूक। २५ टेबलेट २–८२

(३७) **इप्रोनिल**:—मस्तिष्क के तनाव से उत्पन्न सिर दर्द, दिल की धड़कन, घबराहट में २५टेबलेट ३–२५

(३८) **इक्वीब्रीयम**:—मानसिक उत्तेजना, मनोविभ्रम, प्रलाप, निद्रानाश, उन्माद, मिर्गी अनेक रोगों में रामबाण है। १० टेबलेट स्ट्रिप १–२०

(३९) **प्रोमेक्टिल**:—मिचली, वमन, उन्माद, मनोविभ्रम, प्रलाप में अचूक। २५ टेबलेट १–६०

(४०) **रिंगकिल** (मरहम)–दाद, चमला तथा चर्म रोगों के लिए आदर्श एक शीशी •–६०

(४१) **विटामिन बी १** (Vit. B_1 100 mg) टेबलेटः—वातरोगों में आशुगुणकारी १०० टेबलेट ३–५०

दीपावली उपहारः—प्रत्येक २५ रु० नैट के माल पर ६ प्रतिशत वैद्यकीय कमीशन के अतिरिक्त एक मानव शरीर क्रिया विज्ञान का २०×३० इञ्ची बड़ा रंगीन चित्र अथवा पैरामोल १० टेबलेट का एक स्ट्रिप पैकिंग मूल्य १ रु० ५० पैसे माल के साथ मुफ्त भेजा जावेगा। १०० रु० नैट का आर्डर देने पर कमीशन १२ प्रतिशत मिलेगा, विभिन्न ४ चित्र अथवा ४ पैरामोल स्ट्रिप उपहार में दिए जावेंगे तथा आपके नजदीक के रेलवे स्टेशन तक का मालगाड़ी का रेल भाड़ा भी हम सहन करेंगे। २ प्रतिशत सेल्स टैक्स और डाक खर्च पृथक लगेगा।

अपना शानदार जीवन बनाने के लिये इन भरोसे की चमत्कारी दवाओं का सहारा लीजिये।

प्रसिद्धि और नाम कमाइये।

मार्तण्ड फार्मेस्यूटिकल्स, बड़ौत (दिल्ली के निकट) उ० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रियायती मूल्य से शीघ्र मंगा लें—

बनौषधि-विशेषांक

(बनौषधि-विश्व कोष)

स्वर्गीय श्री पं. कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी ने लगभग १५ वर्ष पूर्व बनौषधि विषयक विशाल साहित्य लिखना प्रारम्भ किया था। उस साहित्य को हम पुस्तक रूप में प्रकाशित करना चाहते थे। लेकिन कतिपय कारणों से हम उसे पुस्तक रूप में प्रकाशित करने में असमर्थ रहे और उस अलभ्य साहित्य को धन्वन्तरि के विशेषांकों के रूप में प्रकाशित किया। इसके ४ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। पांचवा भाग वर्ष १९६९ मे प्रकाशित किया जा रहा है। जो ४ भाग प्रकाशित हो गये हैं उनका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

प्रथम भाग—	पृष्ठ ५५२	बनौषधि--संख्या--१५१	अ से 'औ' तक की।
द्वितीय भाग—	पृष्ठ ५२८	,, ,, --२३१	क वर्ग सम्पूर्ण
तृतीय भाग—	पृष्ठ ५४४	,, ,, --२१४	च से ध तक
चतुर्थ भाग—	पृष्ठ ५००	,, ,, --१७४	न से ब तक

कुल चार भागों में २१२४ पृष्ठ, ७१५ बनौषधियों का विस्तृत विवरण तथा हजारों प्रयोगों का संग्रह है

मूल्य—प्रथम भाग (द्वितीय संस्करण)	१०.००	रियायती	मूल्य	६.५०
द्वितीय भाग	८.५०	,,	,,	५.५०
तृतीय भाग	८.५०	,,	,,	५.५०
चतुर्थ भाग	८.५०	,,	,,	५.५०
				२३.००

नोट—प्रथम भाग (द्वितीय संस्करण) की थोड़ी प्रति शेष हैं। तृतीय संस्करण छप रहा है।

पोस्ट-व्यय—१ भाग (कोई सा) मंगाने पर	१.५०
२ भाग ,, ,,	२.३०
३ भाग ,, ,,	३.२०
४ भाग ,, ,,	४.००

नोट—चारों भाग मंगाने के लिये पोस्ट व्यय सहित २७.०० मनियार्डर से भेजें। प्रथम भाग समाप्त हो गया था, पुनः छपाया गया वह भी थोड़ा बचा है, अन्य भाग भी समाप्त होने वाले हैं। अस्तु ग्राहकों को जो भाग उनके पास न हों इस समय रियायती मूल्य से मंगा लेने चाहिये।

पांचवां भाग वर्ष १९६९ में प्रकाशित होगा

इस भाग का लगभग ३/४ भाग स्वर्गीय त्रिवेदी जी द्वारा लिखा रखा है शेष १/४ भाग को वैद्याचार्य श्री उदयलाल जी महात्मा बहुत परिश्रम तथा मनोयोगपूर्वक लिख रहे हैं। हमारा विश्वास है कि ग्राहक पूर्व के चार भागों के समान ही इस पांचवें भाग को भी अवश्य पसंद करेंगे।

आपके पास जो भाग न हों इस समय रियायती मूल्य से मंगा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की सबसे सस्ती हिन्दी की एलोपैथिक पुस्तक— 'चिकित्सा आलोक'

पुस्तक की कुछ महत्वपूर्ण विशेषतायें :—

● सन् १९६८ में छपी इस पुस्तक में कई सौ रोगों की एलोपैथिक पेटेण्ट "टेब्लेटों" "कैप्सूलों" पेटेण्ट "पेयों", "बूंदों" तथा "इन्जेक्शनों" द्वारा सफल चिकित्सा चार्टों में दी हैं। ● विश्वविख्यात डाक्टरों के कई सौ "अनुभव" दिए हैं। ● "बच्चों" के सौ के लगभग रोगों की "सरल एलोपैथिक चिकित्सा" चार्टों में दी है। ● कई सौ पेटेण्ट औषधियों की "मैटेरिया मेडिका" दी है। ● बैटरी के सैलों से चलने वाली 'बिजली की मशीन" से इलाज करना बताया है। "बैटरी वाली बिजली की मशीन" से इलाज करके आप अपनी आमदनी कई गुणा बढ़ा सकेंगे। ● कई सौ रोगों की 'विटामिन चिकित्सा" दी है। आप अपनी "आयुर्वेदिक" या "यूनानी" औषधियों के साथ साथ इन "विटामिनी औषधियों" को भी दीजिए, आपके रोगी शीघ्र "स्वस्थ" होंगे। ● दिसम्बर १९६७ तक की "काम विज्ञान" की "एशिया", "अफ्रीका" और "यूरोप" में हुई कई सौ नई नई खोजें दी हैं। ● "लूप" के बारे में नई से नई जानकारी देकर, "लूप" के दुरुपयोग से होने वाले विकारों की चिकित्सा भी दी है। ● "पुरुषों" तथा "स्त्रियों" के "गुप्त" रोगों की "एलोपैथिक चिकित्सा" चार्टों में दी है।

● १९६८ में छपी यह "चिकित्सा आलोक" नामक पुस्तक एलोपैथी की हिन्दी की, संसार की सबसे सस्ती और उत्तम पुस्तक है। सौ के लगभग चार्टों और चित्रों वाली पुस्तक का मूल्य केवल एक रुपया।

एक रुपये का मनियार्डर भेज देने पर 'डाक खर्च माफ' करके यह पुस्तक आपकी सेवा में भेज दी जायेगी।

स्वर्णपदक प्राप्त डा० "कोकचा" की मशहूर मैडिकल पुस्तकों की एक झलक

१—एलोपैथिक पेटेण्ट चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा एलोपैथिक पेटेंट चिकित्सा विश्वकोषः १३०० के लगभग चार्टों चित्रों वाली पुस्तक का मूल्य केवल दस रुपये।

२—अनुभव के मोती—डाक्टरों के अनुभव तथा अनुभव विश्वकोष : छः सौ बहत्तर पृष्ठों वाली पुस्तक का मूल्य ६ रुपये।

३—इंजेक्शन चिकित्सा नवनीत चार्टसः सात सौ के लगभग चार्ट चित्रों से सजी पुस्तक का मूल्य ८ रुपये

४—निदान नवनीत चार्टस तथा निदान विश्वकोषः कई सौ चार्टों-चित्रों से सजी पुस्तक का मूल्य ८ रुपये।

५—काम विज्ञान विश्वकोष तथा आधुनिक काम विज्ञान : सन् १९६८ में छपी इस पुस्तक का मूल्य ८ रुपये।

६—परिवार नियोजनः सुख का आयोजनः २०० के लगभग चार्टों-चित्रों वाली पुस्तक का मूल्य ६ रुपये।

७—गुप्तरोग चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा गुप्तरोग विश्वकोष (बिजली की चिकित्सा सहित): मूल्य ३ रुपये।

८—पुरुष गुप्तरोग चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा पुरुष गुप्तरोग विश्वकोषः (विद्युच्चिकित्सा सहित): मूल्य २.५०

९—स्त्री रोग चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा स्त्री रोग विश्वकोष (बाल रोग परिशिष्ट सहित) मूल्य २.५०

१०—कामसूत्र नवनीत चार्टस (१६ परिशिष्टों सहित) (संस्कृत के कामसूत्र का चार्टों-चित्रों में अनुवाद) मूल्य ५.००

११—महर्षि वात्स्यायन के पत्र वयस्कों के नाम (परिवार नियोजन नवनीत सहित): मूल्य ५ रुपये।

१२—सरल चिकित्सा नवनीत चार्टस तथा सरल चिकित्सा विश्वकोष (सितम्बर १९६८ में छपी हुई) मूल्य ३ रुपये

१३—अपटूडेट एलोपैथिक टेबलेट गाइड चार्टस तथा टेबलेट विश्वकोष—एक हजार के लगभग चार्टों-चित्रों वाली पुस्तक-रत्न का मूल्य केवल आठ रुपये। यह फरवरी १९६९ के आस-पास तैयार होगी।

नम्र निवेदन— ● "चिकित्सा आलोक" पुस्तक को छोड़ कर सभी पुस्तकों का डाक खर्च अलग होगा। ● केवल चिकित्सकों को दो आने रुपया कमीशन दिया जाता है। ● एक साथ दस रुपया से अधिक की पुस्तकें मंगाने पर "चिकित्सा आलोक" नामक पुस्तक बिना मूल्य (मुफ्त) भेजी जाएगी।

हिन्दी की मैडिकल पुस्तकें मंगवाने का एकमात्र विश्वस्त स्थान—

साधना प्रकाशन (रजिस्टर्ड) १७/१११ रोहतक रोड, नई दिल्ली-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति	श्री बल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश'	८
चिकित्सकों के लिये स्पष्टीकरण	श्री प्रेम कुमार स्वन्नी ए. एम. बी. एस.	१०
युवानी पिड़का —मुहांसे	श्री वैद्य वागीशदत्त आयुर्वेदाचार्य	१२
आमवात	श्री डा० प्रभाकर चटर्जी आयुर्वेद वृहस्पति	१६
यक्ष्मा की सफल चिकित्सा	श्री लक्ष्मीचन्द्र गुप्त	२०
फोड़े और व्रण	आचार्य श्री चरणतीर्थ महाराज	२३
विविध इञ्जेक्शन	श्री डा० पद्मदेव नारायण सिंह एम. बी. बी. एस.	२६
शरद के आहार विहार	श्री गोपाल जी द्विवेदी वैद्य	२६
शिलाजीत	श्री अम्बिका प्रसाद अवस्थी	३२
ज्योतिष और आयुर्वेद	विद्या वाचस्पति श्री गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'	३४
गोखरू	श्री वैद्य चन्द्रशेखर मिश्र	३७
चित्रक या चीता	श्री मक्खनलाल वैद्य भूषण	३८
मेरी सफल चिकित्सा विधि	श्री वैद्य हरिमोहन शर्मा	४०
यक्ष्मा पर अजा पंचक घृत	श्री वैद्य मदनलाल श्रोत्रिय	४२
गो मांस न खाने का वैज्ञानिक रहस्य	श्री बल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश'	४२
परीक्षित प्रयोग	श्री डा० हरिश्चन्द्र त्रिपाठी	४४
	श्री रामरतन वैद्य	४४
	श्री कवि० जीवानन्द साहू	४४
	श्री डा० गेबी अली आयुर्वेद रत्न	४५
साहित्यालोचन	श्री अम्बिका प्रसाद अवस्थी	४६
विधि विधान प्रश्नोत्तर	श्री पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित	४८
स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी	श्री आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य आयुर्वेदार्य	४६
पाठकों के प्रश्न ...	... ...	५०
समाचार एवं सूचनायें ...	... ...	५१
परिवार नियोजन परिशिष्ट—		
परिवार नियोजन कार्यक्रम की महत्ता	श्री गोविन्द नारायण	५७
परिवार नियोजन समाज कल्याण का अनूठा कार्यक्रम	श्री दीपक भाटिया	६०
परिवार नियोजन में अग्रगण्य महाराष्ट्र के दो जिले		६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

हिताहितं सुखंदुःखमायुस्तस्य हिताहितम् ।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ॥ —चरक सूत्र १—४०

अक्टूबर १९६८ | धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ द्वारा मात्र चिकित्सकों के लिए प्रकाशित । | भाग ४२ अङ्क १०

धन्वन्तरि-वन्दन

गतिं ज्ञानिनां गीतिका गौरवं, गिरीशार्चितं गौरगीताङ्गणम् ।
गुरुं ज्ञानराशिं गवां वल्लभं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ॥ १ ॥

चलच्चन्द्रचञ्चन्मरीचिस्फुरन्, मनोहारिहृद्धीरहारोज्वलम् ।
चराचारचर्याधि सञ्चालकं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ॥ २ ॥

तरत्तुङ्गरङ्गाङ्गतीरोल्लस, तारङ्गान्विताम्भोधिमध्योद्भवम् ।
तपः पूतवेषं तमालत्विषं, नमामीशमाचार्यं धन्वन्तरिम् ॥ ३ ॥

परं पूर्णपीयूषशुभ्रोदर,- दरामन्दचक्रारविन्दोत्करम् ।
पराभास-रत्नप्रभाभास्वरं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ॥ ४ ॥

वियद्वारिवह्निप्रवातावनि- व्रज व्याधिविध्वंसनालम्बनम् ।
वरं विश्वरूपं विभुं व्यापकं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ॥ ५ ॥

मिलन्मन्दरामन्दमन्दारक,-- मदोन्मादमाकन्दमञ्जुस्रजम् ।
मनस्तापसन्तापपापापहं, नमामीशमाचार्यधन्वन्तरिम् ॥ ६ ॥

लसल्लोकतालोकलीलोज्वल-- विलोलालकोन्नालनीलोत्पलम् ।
ललामं लतोद्दाममन्दानिलं, नमामीशमाचार्यं धन्वन्तरिम् ॥ ७ ॥

—श्री आचार्य गौरकृष्ण गोस्वामी शास्त्री, काव्य पुराण दर्शनतीर्थ
रा. आयु. चिकि. मुस्तफाबाद, पो. आ. परखम, मथुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति

श्री बल्लभदास बिन्नानी "व्रजेश" साहित्यरत्न, साहित्यालंकार

भारतीय प्राचीन चिकित्सा के इतिहास का विषय केवल चिकित्साशास्त्रियों के लिये ही नहीं अपितु इस पद्धति से अनजाने व्यक्ति के लिये भी कम आकर्षक नहीं है। एक चिकित्सा छात्र के लिये तो प्राचीन हिन्दुओं के चिकित्सा ज्ञान की जानकारी रखना परम आवश्यक है। उक्त ज्ञान से हमें उन प्राचीन हिन्दुओं की विज्ञान एवं कला के क्षेत्र में अपूर्व गौरवपूर्ण उपलब्धियों का पता चलता है।

यह दुर्भाग्य का ही विषय है कि चिकित्सा इतिहासकारों ने, जिनमें अधिकतर पाश्चात्य विद्वान थे प्राचीन भारत के अनुदान को मान्यता तथा रुचि ही प्रदान नहीं की यद्यपि प्राचीन यूनानी इतिहासकारों, दार्शनिकों, वैज्ञानिकों ने अपने ग्रंथों में हिन्दुओं की उपलब्धियों का गुणानुवाद किया है। इन पाश्चात्य इतिहासकारों ने रोम, मिस्र तथा यूनान के विविध विद्वानों को तो श्रेय प्रदान कर दिया परन्तु प्राचीन भारतीयों के प्रचुर प्रमाण, उपाख्यान भरे रहने पर भी इनके बारे में कुछ कहा ही नहीं। यह रवैया १८ वीं शताब्दी के शेषांश तक बना रहा। भारतीय शास्त्रों की उपेक्षा का एक कारण यह है कि प्राचीन ग्रन्थ पाश्चात्य भाषाओं में नहीं थे तथा दूसरे पश्चिम के वैज्ञानिक तो प्राच्य चिकित्सा पद्धति को नीमहकीमी तथा रहस्यवाद के सांचे में ढली हुई ही माने जा रहे थे। परन्तु मोहन्जोदड़ो तथा हड़प्पा में हाल ही की गई खुदाई के फलस्वरूप पाश्चात्य विद्वानों को भारतीय चिकित्सा पद्धति के प्रति अपने विचार बदलने पड़े हैं। उस खुदाई से स्पष्ट ज्ञात होता है कि भारतीय सभ्यता तो यूनान तथा मिस्र की सभ्यता से काफी प्राचीन है। जहां तक इन देशों में वैज्ञानिक सम्बन्धों का प्रश्न है यूनान और मिस्र भारत के पथप्रदर्शक नहीं बल्कि अनुगामी ही कहे जा सकते हैं।

सांस्कृतिक परम्परा

प्राचीन काल से ही भारतीय परम्परा अक्षुण्य रहती चली आयी है परन्तु चूंकि यह परम्परा अधिकतर मौखिक रूप से ही चलती आ रही थी इसलिये हमारे पास अपनी गौरवपूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि या सांस्कृतिक परम्परा के प्रमाण अधूरे ही पड़े हैं। हमारे पास कोई पूर्ण लिपिबद्ध प्रमाण ग्रन्थ नहीं है। सम्प्रति अधिकांश ग्रन्थ संस्कृत में ही लिखित हैं तथा हस्तलिखित हैं। और जो मुद्रित हैं वे भी पुनः सम्पादित किये जाने योग्य हैं तथा इन सबों को क्षेत्रीय भाषाओं में अनूदित किया जाना चाहिये ताकि जनसाधारण को इनको समझने में सुगमता मिले। इसके अलावा हमारे प्राचीन चिकित्सा शास्त्र शदियों से ही वैद्य परिवारों में ही रहस्यवत् छिपे रहे क्योंकि वे अपना आयुर्वेद ज्ञान किसी अन्य को देना नहीं चाहते थे। १८ वीं शताब्दी के अन्तिम काल में कुछ अंग्रेज, फ्रांसीसी, जर्मनी विद्वानों ने पश्चिम को प्राचीन भारत के साहित्य भण्डार का ज्ञान कराया। भारतीय चिकित्सा पद्धति के प्रति १८२३ में ज्ञान हुआ जब विलसन शेल, वाइज, स्टेजलर जैसे विद्वानों ने भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति याने आयुर्वेद पर कतिपय पुस्तकें लिखीं। हेसलर ने लैटिन भाषा में सुश्रुत संहिता का अनुवाद कार्य किया तथा वेल्स ने जर्मनी में। और तब से अनेक भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति पर कई यूरोपीय भाषाओं में अनेक ग्रन्थों का अनुवाद व सम्पादन कार्य किया। अभी भी आयुर्वेद पर संस्कृत भाषा में लगभग डेढ़ हजार हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जो अप्रकाशित ही हैं। विश्व की प्रमुख भाषाओं में इनका भी अनुवाद किया जाना चाहिए।

आयुर्वेद बनाम पश्चिम

यूरोप में न्यूटन तथा हार्वे का जन्म भी नहीं हुआ था, उससे पहले ही गुरुत्वाकर्षण तथा रक्त संचालन का ज्ञान भारतीयों को था। ईसा के पांच सौ वर्ष पूर्व तथा आइस्टाइन के जन्म से २४०० वर्ष पहले ही गंगावर्ती उपत्यकाओं में भारतीय विद्वानों ने आणविक पद्धति का प्रसार कार्य अपना रखा था। चन्द्रगुप्त के समय में शव परीक्षण (पोस्टमार्टम) किया जाता था। सुश्रुत को शव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षण का ज्ञान था। क्षयरोग, धनुषटंकार, मलेरिया, कुष्ठरोग, चेचक, पीलिया आदि रोगों की जानकारी प्राचीन भारतीयों को भी थी। ईसा से १ हजार वर्ष पूर्व सुश्रुत चमत्कारपूर्ण व विस्मयात्मक शल्यकार्य किया करते थे। औषधियों तथा शल्य क्रिया पर सारगर्भित विशद ग्रंथ क्रमशः चरक तथा सुश्रुत ने ही सर्वप्रथम लिखे थे।

आयुर्वेद की पृष्ठभूमि —

भारतीय चिकित्सा पद्धति का आरम्भ कब हुआ इसका सप्रमाण कथन विवादपूर्ण है। किन्तु अधिकांश मान्यता इन तथ्यों को दी जाती है कि दक्ष प्रजापति ने सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया। बाद में प्रजापति ने देवताओं के चिकित्सक युगल अश्विनी कुमार को यह शिक्षा दी। इस पद्धति से ही अश्विनी कुमार ने इन्द्र तथा चन्द्रमा के रोग नष्ट किए। अन्य देवताओं का भी इन्होंने सफल उपचार किया। महर्षि च्यवन का कायाकल्प (पुनर्यौवन) भी अश्विनी कुमारों ने ही किया था। आयुर्वेद में एक औषधि का नाम च्यवनप्राश इसीलिए है। भारत के सन्त साधुओं ने सर्व सम्मत होकर भारद्वाज को दिव्य चिकित्सक द्वय के पास भेजा। फिर भारद्वाज ने कई सन्तों को आयुर्वेद की शिक्षा दी। इन्हीं में अलेप भी थे जो भारतीय औषधियों के जनक कहलाये। अलेप ने जतुकर्ण, पाराशर, क्षीरपाणि, हारित, भेल आदि को चिकित्सा शास्त्र पढ़ाया। आयुर्वेद की, भूमिका के सम्बन्ध में विभिन्न उपाख्यान हैं परन्तु ले देकर बाद में यही कहा जाता है कि मानव का चिकित्सा विज्ञान देवराज इन्द्र से मिला। आज विश्व में जैसी भी चिकित्सा प्रणालियां चल रही हैं उन सब का आधार चरक और सुश्रुत की चिकित्सा नीतियां ही हैं जिनसे अरबी, पारसी, लैटिन, आदि अनेक भाषाओं में ग्रन्थ अनूदित हो गये। ये यूनानी चिकित्सक पद्धति के जनक पिथागोरस तथा आधुनिक वैज्ञानिक चिकित्सा के जन्मदाता हिपाक्रेट्स। पर प्राचीन हिन्दुओं तथा बौद्धों की चिकित्सा प्रणालियों का ही प्रभाव है। पुरातत्व उत्खनन, परम्परा लोकसाहित्य, वेद, उपनिषद् पुराण भारत के प्राचीन वैद्य ग्रन्थ, प्राचीन चित्रों में चिकित्सा विषय, शिलालेख, मन्दिर मठ कई साधन हैं जिनके द्वारा प्राचीन भारतीय चिकित्सा अर्थात् आयुर्वेद शास्त्र का इतिहास हम सहज ही जान सकते हैं। आयुर्वेद जगत में भगवान धन्वन्तरि का नाम अमर है। हजारों वर्ष बीत गए परन्तु हमारे देश में अभी आयुर्वेद प्रणाली अमर अवस्था में ही विद्यमान है यद्यपि मुगलों के शासन काल, ब्रिटिश राज्य के समय इस पद्धति को कम आघात नहीं पहुंचाया गया। आज एलोपैथी देश भर में विस्तार पा रही है फिर भी आयुर्वेद का अपना महत्व है जिसे बहुत देर के बाद सरकार ने अनुभव किया है। कई राज्यों में आयुर्वेद के प्रति राजकीय सजगता उत्पन्न हुई है। हम स्वराज्य में ही यदि स्वदेशी पद्धति को उच्च पदासीन न कर सके तो यह लज्जा की बात होगी।

—श्री बल्लभदास बिन्नानी "ब्रजेश"
साहित्य रत्न, साहित्यालंकार
४३, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता—७

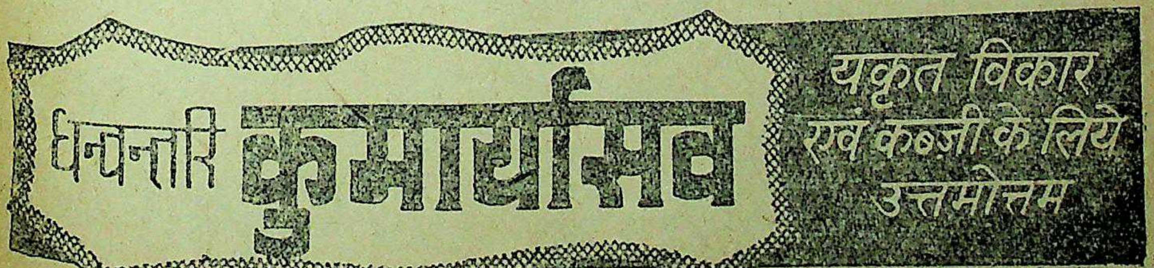

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सकों के लिये स्पष्टीकरण

श्री प्रेमकुमार स्वन्नी, ए. एम. बी. एस.

चिकित्सकों की सेवा में मैं कुछ रसों का स्पष्टीकरण करना आवश्यक समझता हूं क्योंकि इनके स्पष्टीकरण के बिना चिकित्सक को भ्रान्ति होती है तथा औषधि फार्मेसी से मंगवाते समय अधिकार और ग्रन्थ का विस्तार से लिखना आवश्यक होता है नहीं तो लाभ की बजाय हानि उठानी पड़ती है।

निम्न रसों का अधिकार और ग्रन्थ के अनुसार विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण इस प्रकार है—

बसन्ततिलक रस (भैषज्य रत्नावली)

प्रमेह अधिकार

लोहभस्म, बङ्गभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, सुवर्णभस्म, अभ्रक भस्म, मूंगाभस्म, मोती भस्म, जावित्री, जायफल, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपत्र, नागकेशर, प्रत्येक समभाग, इन्हें एकत्र मिलाकर त्रिफला के क्वाथ में मर्दन कर २ रत्ती की वटी बनावें इसमें वैद्य रोगानुसार अनुपानों की कल्पना करें।

बसन्त तिलक रस (भैषज्यरत्नावली)

कास अधिकार

स्वर्ण भस्म १ तोला, अभ्रक भस्म २ तोले, लोह भस्म ३ तोले, पारद ४ तोले, गन्धक ४ तोले, बङ्गभस्म २ तोले, मुक्ताभस्म ४ तोले, मूंगा भस्म ४ तोले, इन्हें गोक्षुर (गोखरू) बासा (अडूसा) तथा ईक्षु (ईख) के रस में मर्दन कर सम्पुट में बन्द करें और जंगली उपलों से ७ बार पुटपाक करें। पश्चात औषधि को निकाल कर कस्तूरी तथा कपूर मिश्रित कर घोट लें। मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक।

विशेष वचन—

(१) बसन्ततिलकरस जो प्रमेहअधिकार का है इसके सेवन से सम्पूर्ण वात रोग, अपस्मार, विचूचिका, क्षय, उन्माद, शरीर स्तम्भन एवं प्रमेह प्रभृति रोग शांत होते हैं। नाड़ी दौर्बल्य तथा नाड़ीशूल में विशेष रूप से कार्य करता है।

(२) बसन्त तिलक रस जो कास अधिकार का है इसके सेवन से कास, श्वास, पित्त, वात, कफ, पांडु, क्षय, शूल, ग्रहणी, विषदोष, प्रमेह, अश्मरी, हृद्रोग तथा ज्वर आदि नष्ट होता है। वृष्य, आयुष्य तथा पुष्टिकर है। यह रस मृत्युञ्जय (शिव) ने कहा है।

श्वास कास चिन्तामणि रस

(श्वास अधिकार)

रस योग सागर

शुद्ध पारद, सुवर्णमाक्षिक भस्म, सुवर्ण भस्म तीनों १–१ तोला, मुक्ता पिष्टी ६ माशे, शुद्ध गन्धक और अभ्रक भस्म २–२ तोले और लोह भस्म ४ तोले लेवें।

पहले पारद गन्धक मिलाकर कज्जली करें। फिर शेष भस्म मिला कटेली रस, बकरी का दूध, मुलहठी

श्वास चिन्तामणि

(हिक्का श्वास अधिकार)

(भैषज्यरत्नावली)

लोह भस्म ४ तोले, गन्धक २ तोले, अभ्रक भस्म ३ तोले, पारद १ तोला, मुक्ता भस्म आधा तोला, सुवर्ण भस्म आधा तोला, इन्हें छोटी कटेरी के रस, अदरख के रस, बकरी के दूध से तथा मुलहठी के क्वाथ से क्रमशः मर्दन कर २ रत्ती की गोली बनावें।

श्वास कास चिन्तामणि

(हिक्का श्वास अधिकार)

रसेन्द्रसार संग्रह

शुद्ध पारद, स्वर्ण माक्षिक भस्म और स्वर्ण भस्म ये तीनों एक-एक भाग, मोती भस्म आधा भाग, शुद्ध गन्धक एक भाग, अभ्रक भस्म दो भाग और लोह भस्म चार भाग ले कर कज्जली करें। फिर सबको एक साथ घोटें। घुट जाने पर कटेरी, मुलहठी तथा पान के रस और बकरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का क्वाथ और नागरवेल के पान के रस की क्रमशः ७–७ भावनायें देकर १–१ रत्ती की गोलियां बना लेवें।

मात्रा—१–२ गोली, दिन में २ या ३ बार, शहद, पीपल या रोगानुसार अनुपान के साथ दें।

अनुपान—बहेड़ा चूर्ण (और मधु)।

के दूध, इनमें अलग अलग सात बार भावना देकर दो-दो रत्ती की गोलियां बनालें।

पिप्पली और मधु में मिलाकर यदि इस रस का सेवन करें तो श्वास और कास दोनों ही निवृत्त हो जाते हैं।

विशेष वचन—

श्वास चिन्तामणि जो रस० यो० सा० का श्वास अधिकार का है इसके सेवन से कफ स्राव होता है और यह फुफ्फुस जलावर्द्धक, रक्तपौष्टिक और समशीतोष्ण है तथा इसका प्रयोग जीर्णश्वास रोग में जो हर समय रहता है, सफल सिद्ध हुआ है। इसका प्रयोग श्वास चाहे मूलकारण हो, चाहे किसी रोग का उपद्रव स्वरूप हो या अन्य विकृति से हो, यह रस सर्व प्रकार के श्वासरोगों में सफलतापूर्वक प्रयोग कराया जाता है जैसे हृदय की दुर्बलता से, पाण्डु रोग से, विषमज्वर या मन्थरज्वर के दीर्घकाल तक रह जाने से, आमवात से इत्यादि। यह श्वासचिन्तामणि रस श्वास के आक्षेप के समय सेवन नहीं किया जाता क्योंकि इससे उस समय कोई लाभ नहीं होता। इस रस का सफलतापूर्वक प्रयोग धूम्रपान वालों के श्वास में, वृद्धावस्था के श्वास में, वंशागत श्वास और हिक्का सहित श्वास में होता है।

सूचना—श्वास रोगी को मलावरोध हो तो उसे दूर करना चाहिये। श्वास आक्षेप हो तो उस समय आक्षेप शामक उपचार करना चाहिये जैसे श्वासचिंतामणि भैषज्यरत्नावली का श्वास अधिकार का प्रयोग कराना चाहिये अथवा श्वास कुठार रस।

श्वास चिन्तामणि (भैषज्यरत्नावली)—इसमें अदरक के रस की भावना दी गई है और इसका प्रयोग जिस समय दमे का दौरा हो सेवन करना विशेष लाभकारी है। इसके सेवन सेश्वास, कास तथा राजयक्ष्मा में बहुत लाभ होता है।

श्वास कासचिन्तामणि नाम से जो योग रसेन्द्रसारसंग्रह में है उसमें स्वर्णभस्म भैषज्यरत्नावली के श्वास चिन्तामणि से दुगनी है और भावना में अदरक के रस के स्थान पर पान के पत्ते का रस है।

—श्री प्रेमकुमार स्वन्ती ए० एम० बी० एस०
राजकीय चिकित्सालय हररायपुर,
पो० मानपुरा (अम्बाला) पंजाब

नेत्र बिन्दु
दुखती आँखों के लिये अत्युपयोगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवान पिडका—मुँहासे

श्री वागीशदत्त वैद्य आयुर्वेदाचार्य

आयुर्वेद शास्त्रों में इस रोग का नाम युवान पिडका है। माधव निदान ने क्षुद्र रोग निदान में इसके लक्षण लिखते हुए मधुकोष व्याख्या में (लोके वरण्डका उच्यते) लिखा है। सुश्रुत ने क्षुद्र रोग चिकित्सा में इसका नाम पद्मिनी कण्टके लिखा है। (पद्मिनी कण्टके रोगे छर्दयेन्निम्ब वारिणा)। भाव प्रकाश ने युवान पिडिका तथा मुखदूषिका ये दो नाम लिखे हैं। (युवानपिडका यूनां ज्ञेयस्ता: मुखदूषिका:)। रस रत्न समुच्चय ने "आनन दूषिका" नाम से संकेत मात्र किया है। उक्त नाम से चिकित्सा प्रदर्शित नहीं की है। चक्रदत्त ने भी चिकित्सा में 'पद्मिना कण्टक' नाम से चिकित्सा मात्र का उल्लेख किया है। (निम्बोदकेन वमनं पद्मिनी कण्टके हितम्)। शार्ङ्गधर ने 'तारुण्य पिडिका' नाम से चिकित्सा ही का निर्देश किया है। (लोध्र धान्य वचालेपस्तारुण्य पिटिकापहः)। वाग्भट्टकृत अष्टांग हृदय मुखदूषिका एवं पद्म कण्टक इन दो नामों का उल्लेख करता है। यथा—

रोध्र कुस्तुम्बुरु वचा प्रलेपो मुखदूषिका।
निम्बाम्बु वांतो निम्बाम्बु साधित पद्मकण्टके॥

चरक इसके सम्बन्ध में मौन ही प्रतीत होता है। यथासम्भव सभी ग्रन्थों से नाम उद्धृत कर दिए हैं। भ्रम का स्थान छोड़ा नहीं गया है।

इसके उपरांत सब ग्रन्थों के अनुसार निदान लिखकर चिकित्सा पर भी प्रकाश डालूंगा जिससे पाठकों को पढ़ने में रुचि हो एवं मेरे किये परिश्रम से लाभान्वित हों। प्रथम माधव निदान के ही लक्षणों पर प्रकाश डालता हूं।

शाल्मली कण्टक प्रख्या: कफमारुत रक्तजा:।
युवान पिडका यूनां विज्ञेया मुखदूषिका:।

मा. क्षु. नि.

शाल्मली लोक भाषा में सेमल नाम से प्रसिद्ध है। इस वृक्ष की शाखाओं में गेहूं के समान लम्बे, मूल में स्थूल उपर्यंश में कांटों का सूच्याकार होता है। इन्हीं कांटों से युवान पिडकाओं की उपमा दी गई हैं। यह रोग माधव निदानानुसार कफ मारुत रक्तज है प्राय: युवावस्था में ही होता है। युवकों तथा युवतियों को एक समान ही होता है। वात से वृद्ध कफ कुपित होकर रक्त को दूषित करता हैं क्योंकि (नहि समानस्थो दोषो विकार जनयति) समानावस्था में वात पित्त, कफ कभी दोष नहीं होते। विषमावस्था प्राप्त कर ही दोष विकार को उत्पन्न करते हैं 'दूषणाद्दोषा:' दूषित होने से दोष बनते हैं अन्यथा शरीर का पोषण करते हैं—

विकारो धातु वैषम्यं साम्यं प्रकृतिरुच्यते।
सुख संज्ञकमारोग्यं विकारो दु:ख मेवच॥

च. सू. अ. ९

शरीर के धातु वात, पित्त, कफ की विषमता का नाम ही "विकार" अर्थात् रोग है और धातुओं का 'साम्य' अर्थात् अनुकूलता रहने का नाम 'प्रकृति' है। आरोग्यता ही सुख है, रोग का होना दुख है—

रोगास्तथा न जायन्ते प्रकृतिस्थेषु धातुषु।
धातवश्चाभिवर्धन्ते जरामांद्यमुपैति च॥

—च. सू. अ. ७

रस रक्तादि धातुओं के प्रकृतिस्थ होने से शरीर में दोषजन्य रोग नहीं होते। धातुयें बढ़ती हैं, बुढ़ापा शीघ्र नहीं आता। वात, पित्त, कफ आदि धातु विपरीत आहार विहार से बढ़ घट जाते हैं वे ही अनेक रोगों की उत्पत्ति करते हैं। वे ही समानावस्था में शरीर का पालन पोषण करते हैं। पित्त एवं कफ स्वयं तो एक लंगड़े के समान हैं कुपित हुआ वायु ही इनको लेजाता है (पित्तं पङ्गु: कफ: पंगु पङ्गवोमल धातव:, वायुनायत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत्) कुपित हुआ वायु, कफ को तथा पित्त को अथवा एक साथ दोनों को लेकर मेघ के समान जहां भी जाकर रुकता है (वृष्टि कर देता है) उसी स्थल को रोगग्रस्त कर देता है।

ठीक इसी प्रकार युवावस्था में संयत जीवन न रहने, जिह्वा चापल्य एवं मन चाञ्चल्य से वातादि दूषित हो जाते हैं जिससे कि सहसा स्वाभाविकतया मुख पर उक्त रोग उत्पन्न होता है। प्राय: अधिक्येन यह पिटिकायें रात्रि में निकलती हैं। प्रात: काल मुख पर हाथ फेरने से प्रतीत होती हैं। इनमें इस समय किसी प्रकार की पीड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होतीं, दाह एवं कण्डू भी नहीं प्रतीत होती। जैसे जैसे समय निकलता जाता है वृद्धि होती जाती है। दो तीन दिन के उपरान्त इनका मुख श्वेत हो जाता है। एक सप्ताह में मुख पर कांटे के तुल्य अनेकों पिडका निकल आती हैं। इनमें से एक प्रकार का द्रव पदार्थ निकलना प्रारम्भ हो जाता है जो कि प्रत्येक समय ही स्रवता रहता है। स्रवण समय में तोद (सुई चुभने जैसी पीड़ा) होती है। दाह एवं कण्डू भी होने लगती है। इस द्रव पदार्थ को पूय नहीं कह सकते। श्वेत रंग का चमत्व लिये हुए लसीका जैसा पदार्थ होता है। उस समय रोगी अत्यन्त कष्ट का अनुभव करता है। ये सब लक्षण किसी ग्रन्थ में नहीं लिखे हैं। जिस रोगी की मैंने चिकित्सा की थी उसी रोगी के कथित और दृष्टि को प्रत्यक्ष करके लिख रहा हूं इस समय रोगी जो कि नितान्त स्वस्थ है मेरे सन्मुख बैठा है जिसको ६ मास व्यतीत हुये स्वास्थ्य लाभ कर चुका है इसके मुख से निस्सृत शब्द अधोलिखित हैं—

प्रश्न—ये फुंसियां आपके कब निकलीं ?

उत्तर—इनको निकले हुए लगभग ८ मास हुए हैं।

प्रश्न—(मैं) आपने आठ मास से चिकित्सा नहीं कराई ?

उत्तर— जब से ये फुंसियां निकली हैं तब ही से चिकित्सा करा रहा हूं किन्तु अभी तक कोई लाभ नहीं हुआ। एलोपैथिक चिकित्सा करवाई, इन्जेक्शन लगवाये, एवं दवायें बहुत खायीं। किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ है। डाक्टरों ने दूध, घी आदि भी बन्द किए हुए थे। दो मास तक उनके बतलाये पथ्य करता रहा हूं किन्तु रोग वृद्धि पर ही है। लाभ लेश मात्र भी नहीं हुआ।

प्रश्न—इनकी प्रारम्भावस्था क्या थी ? इनमें कुछ कष्ट तो नहीं मालूम होता ?

उत्तर—मैंने कुसंग में पड़ने से अण्डे और चाय का अधिक मात्रा में सेवन किया, ग्रीष्म ऋतु में भी सेवन करना नहीं छोड़ा, अब अण्डे तो छोड़ दिए हैं किन्तु चाय तो ४, ५ कप अवश्य ही पीता हूं। लगभग आठ नौ मास व्यतीत हुए एक रात्रि को जागने के उपरांत मुख पर हाथ फेरा तो कुछ उठा उठा सा प्रतीत हुआ। मैंने शीशे में मुख देखा तो बहुत छोटी सी रक्त वर्ण की फुंसी देखी किंतु किसी प्रकार की पीड़ा आदि नहीं थी। मैंने कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया। नित्य प्रातः काल दो चार बढ़ती हुई और क्रम से बढ़ती हुई तथा उठती हुई प्रतीत होने लगीं जब दोनों कपोलों और नाक पर निकल आयीं तो मुझे कुछ चिन्ता हुई। इस मध्य में कभी किसी के कभी किसी के बतलाये उपाय करता रहा। ज्यों ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता गया यह उक्ति चरितार्थ हुई है। और अब यह अवस्था है जिसे आप देख रहे हैं। प्रत्येक समय रूमाल कपोलों पर ही रहता है अर्थात् निकला हुआ पानी पोंछता ही रहता हूं। अब तो यह दशा है कि निकली हुई फुंसी दूसरे ही दिन सफेद मुख धारण कर फूट जाती है और कांटे के समान अथवा सुइयों जैसी चुभन होती है। देखिये अब तो ये फुंसियां मेरे शिर, गले तथा छाती पर भी निकल आयीं हैं। हां यदि मिर्च खटाई खाना बन्द कर दूं तो इतनी कष्ट दशा प्रतीत नहीं होती। मुझे कभी कभी तीसरे चौथे दिन वीर्यपात भी होता है। ये सब रोगी के कथित प्रश्नोत्तर पाठकों के समक्ष लेख बद्ध कर दिये गये हैं। युवतियों के सम्बन्ध में भी प्रायः यही कारण दृष्टिपथ पर आये हैं। इनके भी इसी प्रकार फुंसियां निकलकर मुख का सौन्दर्य सदा सदा के लिये लुप्त हो जाता है। इनको भी चाट आदि खटाई खाने का स्वभाव होता है। अतः इनको भी कुमार्यावस्था में ही श्वेत व रक्तप्रदर हो जाता है। मुख पर फुंसियां या मुंहासे निकलने प्रारम्भ हो जाते हैं। मैं उपर्युक्त लक्षणों के अनुसार इसमें तीनों ही दोष मानता हूं वात, पित्त, कफ के विषम होने पर स्वयं दूषण बनकर रक्त को भी दूषित कर देते हैं। मैंने इसी को ध्यान में रखते हुए चिकित्सा प्रारम्भ की थी।

निदान तथा चिकित्सा सुश्रुतानुसार—

शाल्मली कण्टकप्रख्या कफमारुत शोणितैः।
जायन्ते पिडका यूनां वक्त्रे या मुखदूषिकाः॥
—सु० नि० १३ अ०

इस श्लोक के माधव निदान के तुल्य ही लक्षण हैं अतः पुनरावृत्ति उचित नहीं।

कण्टकैराचितं वृत्तं कण्डूमत् पांडु मंडलम्।
पद्मिनी कण्टक प्रख्यैस्तदाख्यं कफवातजम्॥
—सु० नि० १३ अ०

यह श्लोक कुछ विशेष ज्ञान कराता है। कण्डू वाला एवं कांटों से व्याप्त, गोल,पाण्डु मण्डल कमलिनी के कांटों के सदृश होने से पद्मिनी कण्टक नाम है जो कि कफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वात से उत्पन्न हुआ रोग है। कमलिनी नाल में छोटे छोटे कांटे होते हैं। इसकी उपमा होने से सुश्रुत ने यह नाम भी दिया है। उपर्युक्त श्लोक कफ वात शोणित से पिडकाओं को मानता है किन्तु द्वितीय श्लोक पद्मिनी कण्टक नाम देता है केवल कफ वात से ही मानता है।

चिकित्सा--

यौवनेपिडकास्वेव विशेषाच्छर्दनं हितम्।
लेपनञ्च वचारोध्र सैन्धवैः सर्षपान्वितैः॥
कुस्तुम्बुरुवचालोध्र कुष्ठैर्वालेपनंहितम्।
पद्मिनी कण्टके रोगे छर्दयेन्निम्बवारिणा॥
—सु० चि० अ० २०

युवा अवस्था की पिडकाओं में ही विशेषरूप से वमन हितकारी है। सरसों से युक्त वच, लोध और सैंधव का लेप बना कर लगाना चाहिये। पद्मिनी कण्टक रोग में नीम से निसृत जल से वमन कराना चाहिए। मेरे विचार से नीम के जल का ग्रहण सम्भवतः निम्बत्वक् क्वाथ से प्रतीत होता है क्योंकि यह कदाचित ही नीम से स्रुत हुआ प्राप्त होता है।

तेनैवसिद्धं सक्षौद्रं सर्पिः पानं प्रदापयेत्।
—सु० चि० अ० २०

उस नीम के ही जल से सिद्ध घृत मधु के साथ पीने को देना चाहिये।

वाग्भट्ट कृत अष्टांग हृदय चिकित्सा एवं निदान और लक्षण

शाल्मली कण्टकाराः पिटिकाः सरुजो घनाः।
मेदोगर्भा मुखे यूनां ताभ्यां च मुख दूषिकाः॥
ते पद्मकण्टका ज्ञेयाः यैः पद्ममिव कण्टकैः।
चीयतेनीरुजैःश्वेतैः शरीरं कफवातजैः॥
—वा० क्षुद्र० निदा० अ० ३१

बहुत सी पिडका पीड़ा के सहित सेमल वृक्ष के कांटों के आकार वाली मेद धातु से भरीहुई वात कफ से उत्पन्न हुई युवा पुरुषों के मुख पर निकलती हैं उनको मुख दूषिका कहते हैं।

कफ वात से उत्पन्न हुये श्वेत बिना पीड़ा के जो कांटेकमल के कांटों के सदृश शरीर पर व्याप्त होते हैं वे पद्मकण्टक कहलाते हैं। अष्टांग हृदय के अनुसार निदान और लक्षणों के बाद चिकित्सा भी अधोलिखित देखिये। चिकित्सा भी आधिक्येन सुश्रुत के तुल्य ही है जिस प्रकार निदान और लक्षणों में कोई विशेष भेद नहीं है। सुश्रुतरक्तज भी मानता है वाग्भट्ट मेद पूरित मानता है। चिकित्सा में वमन का विधान दोनों ही ने किया है। विरेचन की ओर दोनों ने कोई ध्यान नहीं दिया जबकि वमन के उपरान्त विरेचन मैं अनिवार्य समझता हूं क्योंकि ऊर्ध्वगत श्लेष्मा का शोधन होगया पर अधोगत विकृति कर सकता है अतः मैं अधोगत शोधन के लिए विरेचन अत्युपयुक्त समझता हूं।

रोध्रकुस्तुम्बुरुवचा प्रलेपो मुख दूषिके।
वटपल्लव युक्तावा नारिकेलोत्थशुक्तयः॥
अशान्तौ वमनं नस्यं ललाटे च सिराव्यधः।
निम्बाम्बु वांतो निम्बाम्बु साधितं पद्मकण्टके॥
विवेत्क्षौद्रान्वितं सर्पिर्निम्बारग्वध लेपनम्।
—वा० क्षु० प्रति० अ० ३२

नारियल के जल से लोध्र, धनिया, वच का लेप, अथवा बड़ के पत्तों का लेप करें। यदि शांत न होती हो तो वमन, नस्य और मस्तक की शिरा का वेध करें। चिकित्सा सुश्रुत के सदृश है केवल नस्य और शिरावेध में विशेषता है वाग्भट्ट की। निम्बाम्बु से वमन और लोध्रादि लेप दोनों ही एक समान उल्लेख करते हैं। नीम के जल से सिद्ध घृत का मधु युक्त पानार्थ निर्देश भी विशेष है साथ ही अमलतास का लेप नीम के जल से करने को कहा है। सुश्रुत और अष्टांगहृदय ने सामान्य और विशेष चिकित्सा दोनों का निर्देश पर्याप्त कर दिया है। शार्ङ्गधर ने विशेष चिकित्सा का उल्लेख किया है सामान्य का नहीं। मैं सामान्य चिकित्सा को ही विशेष महत्व देता हूं। चक्रदत्त की चिकित्सा में इस उक्त लेप का उल्लेख है।

शार्ङ्गधर चिकित्सा--

लोध्र धान्यवचालेप स्तारुण्यपिटिका पहः।
तद्वद्गोचनायुक्तं मरिचं मुखलेपनम्॥
—शा० अ० ११ उ० ख०

लोध्रादिलेप उपर्युक्त ग्रन्थों के सदृश है किन्तु गोलोचन और कृष्ण मरिच का लेप विशेष है।

स्वानुभूत चिकित्सा--

प्रथम रोगी को ३ दिन स्नेहन शास्त्र विधि से कराया। मूंग की दाल, चावल, तिल, तीनों द्रव्य सम मात्रा में घृत प्रचुर मात्रा में डलवा खिचड़ी बनवा कर दोनों समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ दिन तक भोजन करवाया । रात्रि में दुग्ध घृत युक्त देता था । इस प्रकार चतुर्थ दिन वमन प्रयोग, किन्तु स्वयं अनुभूत एक वटी प्रातःकाल दी, जिससे ३ घण्टे के उपरांत वमन होना प्रारम्भ होगया । दश वमन के बाद पित्त आने लगा तब स्वयं ही अवरोध होगया । उसके ऊपर पथ्य दुग्ध चावल भोजनार्थ दिया । पुनः कृशरा क्रम तीन दिन चला, उसके पश्चात् रेचक औषधि से रेचन कराये । जब पर्याप्त रूपेण शुद्धि ऊर्ध्वाधः होगई तो पथ्य और लघु भोजन ही चलता रहा । उक्त सामान्य चिकित्सोपरान्त विशेष में नस्य का प्रयोग नित्य प्रातः कटफल से कराता था । एक मास की चिकित्सा में प्रथम वमनादि क्रिया की पुनरावृत्ति ३ बार की गई । किन्तु साथ-साथ सुश्रुत का लोध्रादि लेप, मञ्जिष्ठादि क्वाथ दोनों समय, ३ मात्रा रसमाणिक्य की देता रहा । शार्ङ्गधर का गोरोचन और मिर्च का लेप भी कभी-कभी चलता था । उक्त रोग में मेरी तुच्छ बुद्ध्यनुसार श्लेष्माधिक्य,पित्तमध्यमावस्था में तथा वातन्यूनावस्था में प्रतीत होता था । इस प्रकार दोषों की अंशांशकल्पना मैंने की थी । इसके अनुसार ही चिकित्सा प्रारम्भ की गई । स्नेहन से वात पित्त का शमन हुआ, और श्लेष्मा का नस्य और वमन से हो गया । मञ्जिष्ठादि क्वाथ में कटुतिक्तादि पांच रसों की तो औषधियां हैं ही वे तीनों दोषों को शान्त करती थीं, केवल लवण रस अवश्य क्वाथ में नहीं है । जिन्होंने अपना पूर्ण प्रभाव दिखाया । रस माणिक्य ने रक्त शोधन का कार्य पूर्णरूपेण किया, मधु अनुपान में चलता रहा । रात्रि को दुग्ध में मधु दो मास तक सतत सेवन कराया गया । दुग्ध में मधु रक्तशोधनार्थ एक सफल रसायन है । यह भयंकर कण्डू में भी मैंने अनुभव किया है । एक कुत्ते की भयंकर खुजली में भी जिसको कि एलोपैथिक के इन्जेक्शन १ मास में समाप्त नहीं कर सके थे उस ही कण्डू को १ सप्ताह में उक्त प्रयोग से सफलता प्राप्त हुई । अतः यह स्वतः सिद्ध प्रयोग है । इस प्रकार रोगी ने पूर्णतया रोग से मुक्ति प्राप्त करली ।

अन्त में युवान पिडिका सम्बन्धी निबन्ध समाप्त करते हुए पाठकों से नम्र निवेदन यह है कि इस भयंकर रोग से सुरक्षितार्थ निम्नलिखित पथ्य की चिकित्सा करते हुये ध्यान करना अत्यन्त आवश्यक समझें । चाय,वनस्पति घी, उष्ण रूक्ष द्रव्यों का सेवन, सिगरट, बीड़ी भी छोड़ने का प्रयास करें तो अत्युत्तम होगा । स्वस्थावस्था में जिनअपथ्यों के सेवन का परिणाम विषवत् होता है उन्हें त्याग दें ।

—श्री वागीशदत्त शर्मा वैद्य आयुर्वेदाचार्य
गाजियाबाद (उ.प्र.)

भगवान धन्वन्तरि के

नयनाभिराम चित्र

धन्वन्तरि भगवान के सुन्दर बहुरंगी भव्य चित्र अभी अभी छपवाये हैं । उत्तम कागज पर सुन्दर छपे तथा वार्निश किए हुए यह नयनाभिराम चित्र आयुर्वेदिक चिकित्सकों को अपनी डिस्पेन्सरी में अवश्य लगाने चाहिए ।

वैद्य सभाओं को चाहिए कि इन चित्रों को अधिक संख्या में मंगाकर अपने सदस्यों में वितरित करें । मूल्य निम्न प्रकार होगा—

१ चित्र का मूल्य	१.२५	पोष्ट व्यय	१.२०
५ चित्रों ,, ,,	५.००	,,	१.६०
२५ चित्रों ,, ,,	२०.००	,,	२.५०

वैद्य सभा २५ चित्रों के लिए २०.०० मनियार्डर से भेजें । चित्र रजिष्टरी से भेज देंगे ।

पता--धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमवात

श्री कविराज डा० प्रभाकर चटर्जी आयुर्वेद वृहस्पति

गतांक से आगे

रस सिद्ध सम्प्रदाय के चिकित्सकों के उपरोक्त भ्रान्ति मूलक बयान ने आत्रेय सम्प्रदाय के पुजारियों के दिमाग में आग लगा देने वाला असर पैदा किया जो आयुर्वेदिक चिकित्सा के मौलिक सिद्धान्त के सम्बन्ध में आदि काल से प्रचलित सिद्धान्त के विरुद्ध संघर्ष था, और वे रससिद्ध सम्प्रदाय के प्रचारकों द्वारा उदघोषित और प्रतिपादित नये सिद्धान्त को शीघ्रता से स्वीकार न कर सके, जो समय बीतने के साथ ही आयुर्वेदिक चिकित्सा के क्षेत्र में आगे आये किन्तु भूतपूर्व कविराज गंगाधरराय के रूप में कुछ ऐसे पुरुष थे जो १६ वीं सदी के अन्त में रस सिद्ध के सिद्धान्तों का विरोध ही नहीं कर सके बल्कि अकेले ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद के संपोषित और समर्थित एलोपैथी की भयंकर बाढ़ की भीषण लहरों से संघर्ष भी किया जो आयुर्वेद, भारतवर्ष के प्राचीन चिकित्सा विज्ञान को अपनी जन्मभूमि से बाहर निकालकर और अपनी चिकित्सा प्रणाली को स्थापित करने पर तुले हुए एवं कटिबद्ध थे। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की प्रिय रानी और सुहागिन होते हुए भी एलोपैथी पूर्णरूप से फैल न सकी और ब्रिटिश, भारत, वर्मा, सिलोन में २० वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक, कविराज गंगाधरराय और उनके शिष्यों तथा शिष्यों के शिष्यों की अथक चेष्टाओं की वजह से जो भारत, वर्मा और सिलोन में विखरे हुये थे, अपना प्रभाव न डाल सकी। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद की सुहागिन, दीन-हीन हतभाग्य आयुर्वेद की स्थिति दुखजनक, पतित और अपमानजनक अवस्था में अपनी जन्म भूमि में अपने ही लोगों के द्वारा पहुंचायी जा चुकी है।

आयुर्वेद के सम्बन्ध में मैं अपने मनः चक्षु के सामने जो देख रहा हूं वह बहुत ही निराशाजनक है जिससे मैं इस प्रबन्ध (लेख) की मुख्य विषय वस्तु से थोड़ा विषयान्तर हो चुका हूं जिसके लिये क्षमाप्रार्थी हूं।

आजकल गण तंत्र भारतवर्ष के अन्दर आयुर्वेदिक रसायन के द्वारा इलाज या रस चिकित्सा पूर्ण रूप से जम चुकी है। इसकी शुरूआत वैदिक युग के पूर्व से है जब से महेश्वर ने आयुर्वेदिक रस चिकित्सा पर विस्तार से लिखा और जिनकी रचना के कुछ भाग की पाण्डुलिपि अभी भी तंजोर लाईब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की लाईब्रेरी और वाराणसी गवर्नमेंट संस्कृत कालेज लाइब्रेरी कलकत्ता, संस्कृत कालेज लाईब्रेरी और इण्डिया ओफिस लाईब्रेरी लन्दन, में है। किताबों के नाम हैं, १—आयुर्ग्रन्थ, २—आयुर्वेद, ३—वैद्य राज तंत्र, ४—शैव सिद्धान्त, ५—काम रत्न, ६—रुद्रजमाल। रुद्र जमाल तंत्र बहुत से भागों में विभाजित है जैसे—

पारद कल्प में—पारद के सभी प्रकार के प्रयोगों और उपयोगों की विवेचना है।

धातु कल्प में—आयुर्वेद रस चिकित्सा के विभिन्न धातुओं से सम्बन्धित विषयों पर विवेचन है।

हरिताल कल्प में—हरिताल या विभिन्न प्राणान्तक विष के सभी पहलुओं का विवेचन है जिसे शिव, (जो भक्तों को ज्ञान देने वाला और कल्याणकारी है) का Seminal Energy समझा जाता है—

धातु क्रिया कल्प में—विशुद्ध धातुओं से घटित औषधियों का विवरण है जैसे—१ अर्द्ध नारीश्वर रस २ मकरध्वज रस ३ पूर्ण चन्द्र रस ४ मृत्युञ्जय रस ५ महामृत्युञ्जयरस ६ अग्निकुमार रस ७ वज्रक्षार ८ सर्व व्याधिहर रस ९ शंकर लोह १० श्री मन्मथ रस ११ वैद्यनाथ वटी १२ वसन्त तिलक रस १३ योगेश्वर रस और बहुत दूसरे भी हैं जो प्राग वैदिक काल से आधुनिक काल तक हम लोगों के पास उपलब्ध हैं।

प्राग वैदिक युग में आयुर्वेदिक रस चिकित्सा के सभी पहलुओं पर विवेचन किया जाता था। और फल स्वरूप वैदिक युग में रस चिकित्सा विज्ञान का आगे विकास का कोई प्रमाण नहीं है सिर्फ अनेकों वैदिक मंत्रों से रुद्र की पूजा व दो दर्जन औषधियों के आविष्कार के अलावा जो वैदिक युग के ऋषियों की नजर में आयीं और जिन्होंने हिन्दू रसायन के क्षेत्र में स्वतंत्र विकास किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक युग के पश्चात और विशेषकर बौद्धकालीन युग में आयुर्वेदिक रस चिकित्सा का नागार्जुन और उनके शिष्यों ने जो भारतवर्ष, वर्मा और लंका द्वीप में रस चिकित्सा का सुसंवाद फैला रहे थे, उनकी अथक चेष्टाओं से प्रचुर उत्थान हुआ और जब धर्माशोक ने कलिंग युद्धमें अत्यधिक रक्तपात से द्रवित होकर आदेश जारी किया कि उसके साम्राज्य में किसी प्रकार का रक्तपात नहीं होगा और इस आदेश के फलस्वरूप अस्पताल के शल्यकक्ष में भी रक्त गिरने का कार्य नहीं होता था यद्यपि इस प्रकार के वातवरण से आयुर्वेदिक शल्य विज्ञान के विकास पर बुरा प्रभाव पड़ा, किन्तु परोक्ष रूप से आयुर्वेदिक रस-चिकित्सा के आविष्कार या अन्वेषण के लिए इसने प्रेरक शक्ति का कार्य किया और बहुत से आयुर्वेदिक चिकित्सक ऐसी दवाओं की खोज करने लगे जिसमें अस्त्रोपचार की उपादेयता नहीं रही और उसके वाद चिकित्सकों ने पारद, गन्धक, प्राणान्तक विष (संको विष), कांच, टीन, जस्ता, मोती, शंख, सुक्ती, कौड़ी, मुक्ता, अभ्रक, लौह आदि का जले घाव के लिये (ulcer) घाव के लिए, Tumour और अन्य अनेक प्रकार के malignent Growth के लिए प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया।

ख्रीष्ट सन् की शुरुआत में चिकित्सकों के द्वारा नागार्जुन का रसार्णव भी व्यवहार किया जाता था। धीरे धीरे दूसरी महत्वपूर्ण पुस्तकें भी प्रकाश में आयीं। किंतु रस चिकित्सा की अधिकांश पुस्तकें प्राचीन लेखकों के संग्रह हैं जिनमें संग्रहकर्त्ता के नाम और किसी किसी में मूल लेखक के नाम दिये गये हैं। आजकल ३७ रससिद्धों की मौलिक रचनायें हमलोगों को नहीं मिलती हैं। जिनके नाम सोमदेव कृत रसरत्न समुच्चय के परिचय में लिखित हैं क्योंकि मौलिक ग्रन्थ तो काल क्रम से नष्ट हो गये—

भारतवर्ष के चिकित्सकों में चक्रपाणि को ही रस चिकित्सा की रस पर्पटी और ताम्रजोग नामक दो दवायें अपने विश्व विख्यात, ग्रन्थ चक्रदत्त संग्रह में एकत्रित करने की विचक्षणता और साहस था। किन्तु अपने ग्रंथ में चक्रपाणि ने उस पुस्तक का नाम नहीं लिखा जिससे रस चिकित्सा की दो विश्वविख्यात दवाओं के मूल सूत्र (formulae) लिये। १३ वीं सदी में बंगाल के गोपाल कृष्ण भट्टाचार्य ने आयुर्वेदिक रसचिकित्सा की "रसेन्द्रसार संग्रह" नामका एक बहुत ही प्रमाणिक संग्रह अपनी टिप्पणी के साथ निकाला। लेखक ने पुस्तक का संकलन बहुत ही ही सरल और स्पष्ट शैली में किया है और उनके ग्रंथ में उनके द्वारा चयन की गयी औषधियां वास्तव में बहुत ही असरदार हैं।

माधवकर जिनका उत्थान ७ वीं सदी में हुआ उनके बाद आयुर्वेदिक रस चिकित्सा में निम्नलिखित पुस्तकों का संकलन हुआ जिनमें आमवात और उससे युक्त रोगों की चिकित्सा के लिए औषधियां लिखित थीं—

१—सातवीं सदी में माधवकार ने स्वयं आयुर्वेदिक रस चिकित्सा पर 'कूट-मुदगर' नामक ग्रन्थ लिखा।

२—आठवीं सदी में गोविन्द भागवत ने 'रस हृदय, लिखा।

३—नवीं सदी में रविगुप्ता ने "सिद्ध सार" लिखा।

४—१० वीं सदी में सूर्य पण्डित ने "रस भैषज कल्प" लिखा।

५—१२ वीं सदी में अच्युत गणिका पुत्र और उनके शिष्य सोमदेव ने सम्मिलित होकर "रसेश्वर सिद्धान्त" लिखा।

६—१३ वीं सदी में गोपाल भट्ट ने "रसेन्द्र सार संग्रह" लिखा।

७—१४ वीं सदी में काशीनाथ द्विवेदी ने "रस कल्प लता" लिखा।

८—१४ वीं सदी में गोविन्दाचार्य ने "रस सार" लिखा।

९—१५ वीं सदी में धुन्धुका नाथ ने "रसेन्द्र चिन्तामणि" लिखा।

१०—१५ वीं सदी में रामकृष्ण भट्ट ने "रसेन्द्र कल्प द्रुम" लिखा।

११—१५ वीं सदी में रामराय या रामराज ने "रस रत्न प्रदीप" लिखा।

१२—१६ वीं सदी में मालभूस के राजवैद्य माखन सिंह ने "रस नक्षत्र मलिका" लिखा।

१३—१६ वीं सदी में बाकरगंज, वारिसाल के रामचन्द्र गुहा ने '१. रसेन्द्र चिन्तामणि, २. रस रत्नाकर ३. रस पारिजात' लिखे।

१४—१७ वीं सदी में त्रिमल भट्ट ने "रस दर्पण" लिखा।

१५—१८ वीं सदी में माधव उपाध्याय ने "आयुर्वेद प्रकाश" लिखा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६—१९ वीं सदी में धनपति ने "दिव्य रसेन्द्रसार" लिखा ।

१७—२० वीं सदी में हम लोगों को बहुत ही महत्वपूर्ण संकलन "आयुर्वेदिक रस चिकित्सा" या रस शास्त्र पर मिलता है । और वे सब आमवात और उससे युक्त रोगों की रस चिकित्सा की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी हैं । उनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं—

१. रस कामधेनु, २. रस हृदय, ३. लोह सर्वस्व, ४. बृहत रसराज-सुन्दरम्, ५. रस-पद्धति, ६. रसेन्द्र पूरन, ७. रस हृदय सुधाकर, ८. रस-जलनिधि, ९. रस योग सागर, १०. रस चिकित्सा, ११. रसामृत, १२. रस तरंगिनी, १३. पारद संहिता, १४. रसोद्धार तंत्र, १५. खनिज विज्ञान, १६. रसायनसार, १७. भारतीय रस शास्त्र ।

मेरे पास सीमित स्थान होने की वजह से विस्तृत रूप से ऐसे सैकड़ों रस ग्रंथों के नाम जो भारत के विभिन्न प्रांतों में अलग अलग भाषाओं में संकलित किये गये हैं, लिखना सम्भव नहीं है । भारतवर्ष के हर प्रांत को प्रयोज्य कोष के साथ राष्ट्रीय निधि के संचय और संरक्षण के निमित्त आगे आना चाहिये क्योंकि उनमें से अनेकों कालक्रम से कीड़ों के द्वारा खा लिये जायेंगे और बौद्धिक जगत के लिये वे लुप्त हो जायेंगे ।

इस लेख के प्रारम्भ में ही हमने कहा है कि चरक ने आमवात के कारणों के ऊपर कुछ नहीं कहा और न तो ऐसा कोई नाम ही दिया किन्तु इसे चरक की त्रुटि नहीं समझना चाहिए । क्योंकि आयुर्वेद के मौलिक सिद्धांत की चर्चा के समय उन्होंने कहा है कि—

"न हि सर्व विकाराणां नामतोऽस्ति ध्रुवास्थितिः"

मानव के शरीर में जितने भी प्रकार के रोग हो सकते हैं उसका कोई खास नाम नहीं दिया गया है । जैसे—

"नास्ति रोगो बिना दोषाय यस्मत तस्मत चिकित्सकः ।
अनुक्तामपि दोषाणां लिङ्गो व्याधिमुपाचरेत् ।।"

क्योंकि बिगड़े हुए दोष के पूर्व लक्षण के बिना कोई रोग नहीं है । रोग की चिकित्सा मकर लक्षण के स्वभाव के अनुसार ही करनी चाहिये जो उस रोग के प्रकार का भेद अवश्य इङ्गित करते हैं जिसे रोगी भुगत रहा है । अतः यह कहना सत्य न होगा कि वृहत्रयी रोग के विषय में कुछ भी नहीं बतलाता है ।

अपने अन्वेषण कार्यकाल में महामहोपाध्याय माधवकार ने अपने वर्णित आमवातरोग में कुछ विशेष लक्षण देखा । ऐसा बताया जाता है कि उन्होंने रोग की चिकित्सा के ऊपर भी एक पुस्तक लिखी जिसमें आमवात की चिकित्सा पर एक अध्याय लिखा है । जब हम लोग पाठ्य पुस्तक उपसमिति के सदस्यों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर विचार कर रहे थे तो शुद्ध आयुर्वेद शिक्षा की केन्द्रीय समिति की बैठक में बहस के समय मेरे मित्र और साथी कविराज अनन्त कृष्णा त्रिपाठी, सदस्य लोक सभा आयुर्वेद चक्रवर्त्ती एम०ए० पी०ओ०एल० से यह खबर मुझे मिली । यह श्री त्रिपाठी जी की एक महत्वपूर्ण और और महान अन्वेषण है किन्तु पुस्तक अभी तक प्रकाश में नहीं आयी है । यह शीघ्र ही प्रकाशित कर देनी चाहिये क्योंकि इससे अन्वेषण कार्य आगे बढ़ सकेगा और हम लोगों का ज्ञान कोष बढ़ सकेगा ।

हम लोगों ने कहा है कि वृहत्रयी ने आमवात की चिकित्सा के लिये कोई दवा नहीं सुझाई है यद्यपि उनके द्वारा वायु, पित्त, कफ के सम और निरम वात की अस्वाभाविक अवस्था में चिकित्सा के लिये अनेकों उपाय सुझाये गये हैं । हम लोगों ने देखा है कि आमवात और उससे युक्त रोगों की चिकित्सा के लिये औषधि के बारे में चटगांव (अविभाजित बंगाल) के वृन्दा माधव कुन्दा प्रथम लेखक थे । आयुर्वेदिक अन्वेषण शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र इस सर्व प्रथम अन्वेषक द्वारा दी गई दवाओं की पूरी तालिका उद्धृत कर दूं ।

आमवात की चिकित्सा के लिये सिद्ध योग में वृन्दा कुन्दम द्वारा अन्वेषित औषधियां जैसाकि माधवकार ने अपने रुग्ण विनिश्चय में वर्णन किया है—

१-रासनादि पंचकम, २-रासनादि सप्तकम ३-वैश्वानर चूर्ण, ४-योगराज, ५-अलाम्बुशाद्यचूर्ण, ६-अजमोदादि वटिका, ७-शुण्ठी घृतम्, ८-गुरुची घृतम्, ९-कांजिका सत्पलम घृतम्, १०-रासना पिण्ड, ११-वृहत रासना पिण्ड, १२ अमृत रासना पिण्ड ।

हम लोगों ने कहा है कि महामहोपाध्याय चक्रपाणि दत्त, बङ्गसेन, भावमिश्र, कविराज गोविन्द दास विशारद और कविराज चन्द्र किशोर सेन ने आमवात और उससे युक्त रोगों के लिये औषधियां भी सुझायीं और पुस्तकें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखी। बंगाल के एक दूसरे प्रसिद्ध कविराज स्वर्गीय अमृत लाल गुप्ता नामक व्यक्ति ने "आयुर्वेद शिक्षा" नामकी एक पुस्तक उपन्यास की तरह लिखी जिसमें उन्होंने आमवात को चार भागों में विभक्त किया—

१-प्रमेहाश्रित, २-सूतिकाश्रित, ३-उपादान जनित आमवात, ४-संधिगत आमवात

उनकी चिकित्सा के लिये खास-खास आयुर्वेदिक दवायें भी सुझाईं तथा जटिल और वायुयुक्त रोगों के लिये भी दवायें सुझाईं। उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभव से दो प्रकार के लेप या मलहम बाहरी उपयोग के लिये प्रयोग में लिये १. सत्पुष्पादि लेपनम्, २. अहिश्रादि लेपनम्, बृहत सिंहनाद नामक एक गुग्गुल, तीन प्रकार के और तैल (महाविजय भैरव तैल, नकुल तैल और रासना तैल)। गनोरिया के पूर्व आक्रमण से उत्पन्न आमवात की चिकित्सा के लिये उन्होंने रासना दशमूल का क्वाथ, योगराज गुग्गुल और सिंहनाद गुग्गुल और रासना पिण्ड का सुझाव दिया है। इसके साथ ज्वर की अवस्था में इन्होंने मृत्युञ्जय रस के साथ वृहद पिप्पलादि क्वाथ, मध्यम ज्वरांकुश और वात गजांकुश का सुझाव दिया है। अत्यधिक कब्जियत की दशा में बृहत सिंहनाद गुग्गुल बतलाया है। दीर्घ स्थाई दशा में बृहत रासना पिण्ड और बृहत सैंधवाद्य तैल का सुझाव दिया है। सूतिकाश्रित आमवात की दशा में उन्होंने वातगजांकुश, महावातगजांकुश, जीरकादि मोदक, शुण्ठी मोदक और सैन्धवाद्य तैल का सुझाव दिया है। अत्यधिक वीर्यक्षय से उत्पन्न आमवात की दशा में त्रयोदशांग गुग्गुल, महारासनादि क्वाथ, बृहत शतावरी घृतम् बृहत अश्वगन्धा घृतम्, अमृतप्राश घृतम और मकरध्वज रस का निर्देश दिया है।

उपदंश से उत्पन्न आमवात की दशा में उन्होंने सारिवाद्य लेह, अमृत गुग्गुल, अमृताद्य घृतम्, अनन्ताद्य घृतम् और महायोगराज गुग्गुल का निर्देश दिया है। संधि स्थल में रोग संक्रमण से उत्पन्न आमवात दशा में उन्होंने वैश्वानर चूर्ण, सिंहनाद गुग्गुल, पुनर्नवाद्य चूर्ण, अभयाद्य चूर्ण, महारासना पिण्ड, विजय भैरव तैल, वृद्धाद्रक लौह और आमवात गजसिंह मोदक का निर्देश दिया है।

समग्र भारतवर्ष में २० वीं सदी के सभी संग्रहकार जैसे सी. के. सेन. एण्ड कम्पनी का "आयुर्वेद संग्रह", एन. एन. सेन एन्ड कम्पनी का "कविराज शिक्षा", बी. एल. सेन एण्ड कम्पनी कृत "आयुर्वेद विज्ञान", वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का "आयुर्वेद सार संग्रह" देवदत्त शर्मा कृत "आयुर्वेक सिद्ध भैषज मणिमाला"। चतुरसेन शास्त्री कृत आरोग्य शास्त्र, हरिदास वैद्य कृत चिकित्सा चन्द्रोदय, राधावल्लभ पाठक कृत चिकित्सा ज्ञान संग्रह, चिकित्सा तत्व प्रदीप, चिकित्सा दर्पण चिकित्सातिलक, चिकित्सा प्रभाकर, चिकित्सा भास्कर, कविराज हरस्वरूप कृत भैषज्य संग्रह, हकीम मंशाराम कृत यूनानी चिकित्सा सागर, हकीम दलजीत सिंह कृत यूनानी सिद्ध योग संग्रह, लक्ष्मीपति कृत योग रत्नाकर. वासवराजीय, सन्यासी चिकित्सा शास्त्र, गङ्गासहाय पाण्डे कृत सिद्ध भेषज संग्रह इन सबों ने आमवात और उससे युक्त रोगों की चिकित्सा के लिए एक ही मार्ग का अनुसरण किया है। यहां मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि झाड़ फानूस या जड़ी बूटी वाली औषधियों का अनुशरण करने वालों को आमवात की चिकित्सा में कोई फल नहीं प्राप्त हुआ है।

साधारणतः ऐसा कहा जाय कि आमवात और उससे युक्त रोगों की प्रारम्भिक अवस्था में झाड़ फानूस की दवाओं, जड़ी बूटियों और धातु और पारद से घटित या मिश्रित दवाओं दोनों से ही सफलतापूर्वक चिकित्सा की जाती है किन्तु अधिक कठिन, पुराने और हठीले आम वात की दशा में जैसे—१-तीव्र, २-जीर्ण शोथ, ३-संक्रामक शोथ, ४-आमवातिक शोथ, ५-उष्णवातीय शोथ ६-आंतरिक ज्वरीय शोथ, ७-आगन्तुक उपदंशीयशोथ ८-अस्थि शोथ, ९-सन्धियों की क्षय जन्य व्याधियां। और दूसरे अनेकों आमवातीय रोग जो स्रातवन्ध से या आंतरिक स्रोतों के अवरुद्ध होने से, या शरीर के भीतरी मार्गों के अन्दर रुकावट आ जाने से या आवृत्त वाय जो आंतरिक स्रोतों से रक्त और वायु के मुक्त मार्ग को अवरोध उत्पन्न होने से, जिसके विषय में पूर्वाचार्यों ने उच्च स्वर से कहा है। —क्रमशः।

—श्री कविराज डा० प्रभाकर चटर्जी एम० ए०
डी०एस०सी०, एफ०आर०ए०एस० (लण्दन)
आयुर्वेद वृहस्पति, रससिद्ध, ज्योतिर्भूषण,
१७२, बहुबाजार स्ट्रीट कलकत्ता—१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष्मा की सफल चिकित्सा

श्री लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता

[सितम्बर १९६८ से आगे]

क्षय में रसवाही स्रोतों का अवरोध अग्नि की कमी और धातुओं का क्षय प्रमुख कारण है। इसीलिए यक्ष्मी किस अवस्था में चिकित्स्य है इसका निर्देश करते हुए आचार्य सुश्रुत ने लिखा है—

ज्वरानुबन्धरहितं बलवन्तं क्रियासहम् ।
उपक्रमेद्यात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृशंनरम् ।

अधोलक्षणों वाला यक्ष्मी अचिकित्स्य है—

लिंगेष्वऽल्पेष्वपि क्षीणम् ।
महाशनं क्षीयमाणमतिसारानिपीडनम् ।
सूनमुष्कोदरं चैव यक्ष्मिणं परिवर्जयेत् ॥ सुश्रुत ॥

जिन लक्षणों से युक्त क्षयी को चिकित्स्य माना गया है वह क्षय की पूर्वावस्था है। इस अवस्था में चिकित्सा करने से शीघ्र ही स्वास्थ्यलाभ होता है। ऊपर क्षय की जिस अवस्था को अचिकित्स्य माना गया है वह क्षय की द्वितीयावस्था या उत्तरार्धकाल है। परन्तु इस अवस्था में भी निम्न वाक्य के आदेशानुसार चिकित्सा करने पर सफलता प्राप्त होते देखा गया है—

यावद् कंठगताः प्राणाः तावद् भेषज कर्तव्याः

सामान्य चिकित्साक्रम में जो कि अग्निबलबर्धक बृंहण व स्रोतावरोध हर हो ऐसी चिकित्सा करनी चाहिए—

आचार्य चरक ने राजयक्ष्मा की चिकित्सा में बहिः परिमार्जन पर विशेष ध्यान दिया है—

बहिःस्पर्शनमाश्रित्य वक्ष्यतेऽतः परमविधिः ।
स्नेह क्षीराम्बु कोष्ठे तं स्वभ्यक्तमवागहयेत् ॥
स्रोतोविबन्धमोक्षार्थं बलपुष्ट्यर्थमव च ॥
उत्तीर्ण मिश्रकैः स्नेहैः पुनरात्तैः सुखैः करैः ।
मृदनीयात् सुखमासीनं सुखं चोत्सादयेन्नरम् ॥

क्षय रोग की चरकोक्त चिकित्सा सर्वथा उचित है। चिकित्सा का मात्र उद्देश्य पोषक खाद्य पदार्थ देना और शरीर से रोग विष का उच्छेद करना है। त्वचा और त्वग् निम्नस्थ तन्तुओं में उपस्थित रस धातु अन्य धातुओं का नियंत्रण एवं पोषणकरता है। अतएव मल क्षय का जो प्रमुख कारण ह वह रुक जाता हैं अतएव चिकित्सा क्रम में परिमार्जन आवश्यक है।

जलसिक्तस्य बर्धन्ते यथा मले-ऽकुंरास्तरः: ।
तथा धातुदिवृद्धिहिस्नेह सिक्तस्य जायते ॥
—सुश्रुत

शरीर के चर्म और केशमूल में तैल मर्दन करने से शरीर तन्तु बढ़ते तथा नवयौवन प्राप्त करते हैं और जीर्ण तन्तु नष्ट होते हैं। आचार्य चरक ने भी चिकित्सा में अभ्यङ्ग उत्सादन अवगाहन का विधान बतलाया है। यह अभ्यङ्ग प्रातःकालीन सूर्य किरणों में करने से अत्यधिक लाभ पहुंचता है। क्योंकि ऋगवेद में सूर्य भगवान को रोगों के शत्रु और मानव जाति के महान मित्र हैं ऐसा वर्णन आया है—

उद्यन्नद्यमित्रमहोरोहन्नुत्तरांदिवम् ।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ॥

अथर्ववेद में भी वर्णन आया है—

यक्ष्माणां सर्वेषां विषं निरवोचमहं त्वत् ।

सूर्य द्वारा यक्ष्मज कीटाणुओं का विनाश होता है इसी को ध्यान में रख कर हमारे पूर्वजों ने दिनचर्या में सूर्य नमस्कार जैसे दिव्य व्यायाम का विधान किया है। साथ में एकाग्रता भी आवश्यक है इसके लिये निम्न मंत्र द्वारा विधान है—

आदित्यस्य नमस्कारान्......अकालमृत्युहरणम् ।

सूर्य नमस्कार को नित्य प्रति करने से यक्ष्माणुओं को पनपने का अवसर नहीं मिलता है क्योंकि इस आसन से सम्पूर्णफुफ्फसों का व्यायाम होता है। कोई भाग निष्क्रिय नहीं रहता है। फुफ्फुसों का सक्रिय होना यक्ष्मा से बचने का मुख्य साधन है।

आधुनिक युग में पराकासनी सूर्य रश्मियों (अल्ट्रा-वायलेट) द्वारा जो चिकित्सा की जाती है प्राचीन युग में इस चिकित्सा पद्धति का पूर्णीकरण सूर्यनमस्कार द्वारा करते थे। यक्ष्मी के लिये सूर्य प्रकाश, स्वच्छवायु, विश्राम तथा पौष्टिक आहार चिकित्सा के साथ ही औषधि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा लाभ करती है। इसके बिना क्षय चिकित्सा व्यर्थ है। सूर्य किरणों से स्वास्थ्य बढ़ाने वाले तत्वों की अभिवृद्धि होती है शरीर का रंग साफ होता है विटामिन डी एवं ई (जो कि शरीर पौष्टिकता व प्रजनन संस्थान के लिये आवश्यक है) की प्राप्ति होती है। वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा आज हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि शरीर जब प्रकाश को सोख लेता है तब पाचनशक्ति की वृद्धि होती है। यक्ष्मा में सर्वप्रथम पाचन क्रिया ही बिगड़ती है, इससे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट का पाचन सही ढंग से नहीं होता है। सूर्य रश्मियों के प्रयोग से यह सब क्रियायें ठीक प्रकार से होती हैं।

औषधि चिकित्सा क्रम जो कि अग्निबलवर्धक व बृंहण हो ऐसा करना चाहिये। इसके लिये सुवर्ण, मुक्ता, वंशलोचन, अभ्रक पिप्पली आदि से निर्मित योग प्रयोग कराने चाहिये। चिकित्सा में क्लान्ति, ग्लानि या उत्क्लेशकारक औषधियां प्रयोग न करावें। फुफ्फुसीय क्षय में सितोपलादि चूर्ण के साथ स्वर्ण के योग यथा स्वर्णभस्म, स्वर्णवसन्तमालती रस, मृगांकरस, रत्नगर्भपोटली रस, सर्वाङ्गसुन्दर रस आदि को मधु तथा मक्खन से विषम मात्रा में प्रयोग करावें।

सहअनुपान रूप में भोजनोपरान्त द्राक्षासव पिलावें। आंत्रक्षय में सितोपलादि चूर्ण के साथ स्वर्णपर्पटी, नाड़ीक्षय में चतुर्मुखरस, बृहतवातचिन्तामणि, अस्थिक्षय में लोकनाथ रस, सतत प्रतिश्याय रहने पर नारदीय लक्ष्मीविलास रस, अतिसार होने पर जयमंगल रस, श्वास होने पर हेमगर्भपोटली रस को सितोपलादि चूर्ण के साथ प्रयोग कर चिकित्सक गण आज भी यशोलाभ प्राप्त करते हैं।

स्वर्ण शरीर के रुग्ण प्रदेश में जा कर एक विशेष प्रकार से विलय होने वाली प्रोटीन बनाता है जो कि जीवाणु का विनाश करती है और रोग क्षमता करने वाले संस्थान के कोषाणुओं को सचेत करता है। आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में स्वर्ण का प्रयोग सिरा द्वारा करते हैं स्वर्ण के बने योग मायोक्राइसीन आदि आते हैं। प्राचीन काल में स्वर्ण को मुख मार्ग द्वारा भस्म या पारदीय मिश्रणों के साथ प्रयोग करते थे आयुर्वेद में ८–२५ प्रतिशत तक स्वर्ण प्रयोग करते हैं परन्तु एलोपैथी चिकित्सा प्रणाली में ५० प्रतिशत तक मिश्रण कर प्रयोग करते हैं।

उपरोक्त चिकित्सा के अतिरिक्त धातु घटकों को निर्मल कर उनमें उत्पादन शक्ति की वृद्धि करने वाली सिद्धौषधि च्यवनप्राश का सेवन कराना चाहिये। इसमें प्रधान द्रव्य आमलक है जो कि शारीरिक धातुओं को शुद्ध कर उनकी विदग्धता को दूर करता है। इसको यथा शक्ति २-३ तोला प्रतिदिन कई मात्राओं में अजा दुग्ध से लें। यदि साथ में अजीर्ण आध्मान आदि हो तो औषध सेवन काल में भोजनोपरान्त द्राक्षासव लें। क्षय की इसी प्रारम्भिक अवस्था में मौक्तिक, प्रवाल, शंख, शुक्ति का प्रयोग भी च्यवनप्राश के साथ कराया जाय तो शीघ्र लाभ होता है क्योंकि पाचन प्रणाली की क्रिया को ठीककर अस्वाभाविक अम्लता को दूर करना इन भस्मों का प्रधान गुण है। धातुक्षीणावस्था में तरुणास्थि या अस्थियों की संधियों में जो मृदुभाग होता है उसके निष्क्रिय होने पर च्यवनप्राश के साथ शृंगभस्म का प्रयोग करावें।

प्रतिलोम क्षय होने पर च्यवनप्राश के साथ स्वर्णराज वंगेश्वर रस का प्रयोग कराना चाहिए।

स्वेद अत्यधिक आने पर कुलीरास्थि भस्म का प्रयोग च्यवनप्राश के साथ करें।

कुछ ऐसी भी औषधियां हैं जिनका सेवन अकेले ही कुछ काल तक निरन्तर किया जाय तो यक्ष्मी स्थायी रूप से छुटकारा पा सकता हैं। उनमें प्रधान रूप से लशुन व वासा है। आचार्य प्रवर श्री यादव जी त्रिक्रम जी द्वारा निर्मित सिद्धयोग संग्रह में रसोनक्षीर योग क्षय में लाभ करता है। किंतु पित्त प्रधान क्षय में इससे लाभ नहीं होता है क्योंकि लशुन अपने उष्ण तीक्ष्ण गुण के कारण पित्त प्रकोपक होता है। रक्तष्ठीवन युक्त क्षय में लशुन हानिकारक है।

चरक व काश्यप आदि पुराने समय के श्रेष्ठतम चिकित्सक इसका प्रयोग अपने रोगियों में कर यशोलाभ प्राप्त करते थे। क्योंकि लशुन के तेल की शीघ्र उड़ जाने की तीव्र शक्ति और त्वचा पर लगने से व्रणों में शीघ्र प्रवेश कर जीवाणु नष्ट करने की शक्ति, इसके प्रधान दो गुण हैं। इन्हीं गुणों के कारण क्षयी के फुफ्फुसों में जो व्रण या विदर होजाते हैं उनका शीघ्र रोपण करता है। अपनी तीव्र गंध के कारण उत्तम कृमिनाशक है। अस्थिक्षय में लशुन का प्रलेप करने से आशातीत लाभ होता है।

इसके अतिरिक्त एक अन्य औषधि वांसा क्षय के लिए बहुधा प्रचलित है। वैद्य गण उसके योगों व स्वरसादि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग कर यक्ष्मी के लिये स्थायीं लाभ पहुंचाते हैं। वासा की कीर्ति में निम्न शब्द प्रमाण स्वरूप हैं—

वासायां विद्यमानायांमाशायां किमवसीदति ।
रक्तपित्ती क्षयी कासीकिमर्थमवसीदति ।।

आधुनिक क्षय जीवाणुनाशक एण्टाबायोटिक स्ट्रेप्टोमाइसीन के अकेले सेवन से जीवाणुओं की सहनशीलता बढ़ जाती है और औषध का प्रभाव कम हो जाता है और फिर अन्य औषध लाभ विलम्ब से या कम करती है। अतएव यदि रोगी को स्ट्रेप्टोमाइसीन जैसी जीवाणुनाशक औषधि प्रयोग कराने का विचार बने तो साथ में आइसोटीनिक एसिड हाइजड्रोजाइड या पाराएमीनोसैलीसिलिक एसिड का प्रयोग अवश्य करावें । स्ट्रेप्टोमाईसिन इनके साथ ही स्थायी या पूर्ण लाभ करती हैं । इनके प्रयोग से क्षय कीट दुर्बल होते हैं । चिकित्सा में साधारणतया यह विधान रखें कि पहले तीन सप्ताह स्ट्रेप्टोमाइसीन-पास दें । इसके बाद स्ट्रेप्टोमाइसीन व आइसोटिनिकएसिड मिलाकर दें । उपरोक्त तीनों औषधियों का प्रयोग एक साथ कदापि न करें ।

पथ्य—

बिनाऽपि भेषजैर्व्याधि पथ्यादेव विवर्तते ।
न तु पथ्य विहीनानां भेषजानां शतैरपि ।

रोगी यदि पथ्यपूर्वक अपनी दिनचर्या व्यतीत करता है तो बिना औषधि के भी रोग से छुटकारा पाना संभव है परन्तु बिना पथ्य के औषधि सेवन की जाती है तो व्यर्थ ही है चाहे रोगी सैकड़ों औषधियों का प्रयोग भले ही क्यों न करें ।

रोग मुक्ति के लिये औषध की तरह पथ्य व परिचर्या यक्ष्मी के लिये विशेष महत्व रखती है। पथ्य भी चिकित्सा का एक अंग है । रोगी का पथ्य पौष्टिक शुद्ध स्वादिष्ट संतुलित सुसिद्ध एवं पर्याप्त हो । गुरु भोजन से हमेशा बचना चाहिए।

इष्टवर्ण रसस्पर्श गन्धवत् पानभोजनम् ।
इष्टमिष्टैरुपहितं सुखमद्यत् सुखप्रदम् ।।
समातीतानि धान्यानि कल्पनीयानि शुष्यताम् ।
लघून्यहीन वीर्याणि स्वादूनि गंधवन्ति च ।।
यानि प्रहर्षकराणि तानि पथ्यतमानिहि ।

—चरकसंहिता

भोजन में पर्याप्त दूध व मक्खन रहना चाहिए यथा सम्भव टीन या डिब्बों के मक्खन का व्यवहार नहीं करना चाहिए, सदैव ताजा मक्खन ही प्रयोग करें । इससे जीवन शक्ति व भार वृद्धि होती है शरीर में ताजा मक्खन काडलावर आइल के समान ही कार्य करता है ।

चौकरदार आटे की रोटी, पत्ते वाली हरी ताजी सब्जियां, विटामिन सी की पूर्ति के लिए आंवला, नारंगी, कागजी नीबू का प्रयोग करना चाहिए । इससे रोगाक्रांत स्थानों की क्षति पूर्ति शीघ्रता से होती है । मांसाहारियों को रोजाना कम से कम दो अण्डे उबाल कर व हफ्ते में दो बार मछली का प्रयोग करना चाहिये । अण्डे का आमलेट या कटलेट केप्रयोग नहीं करना चाहिये क्योंकि यह पचनेमें भारी होता है । जिन रोगियों को दूध के सेवन से उदर विकार यथा आध्मान अतिसार आदि हो जाते हों तो उनको खौलते हुये दूध में साबूदाना या बार्ली को मिला कर प्रयोग करना चाहिए । उदर शुद्धि पर रोगी सर्वथा ध्यान रक्खे । नियमित समय पर भोजन किया करें भोजन न बहुत गर्म और न बहुत ठण्डा हो ।

अपथ्य—

अधिक मात्रा में चाय, काफी,सोड़ा,तम्बाकू,मद्य,लाल मिर्च, मसाले, विरेचन, वेगावरोध, स्वेदन, विषम भोजन, रुक्षभोजन,रात्रिजागरण,शक्ति से अधिक परिश्रम और मैथुन करना तो सर्वदा परित्याग ही कर देना चाहिये।

—श्री लक्ष्मीचन्द्र गुप्त
आयुर्वेदाचार्य आयुर्वेदालंकार रिसर्च वैद्य
फ़ार्मास्यूटीकल लैबोरेट्री सर्वेयूनिट,
रानीखेत (यू. पी.)

आर॰जी॰लोशन (रजि॰)

इस लोशन के लगाने से सब प्रकार के त्वचा रोग, व्युची खुजली, खाज, चमड़ी फटना, शुष्क होना, फुन्सी दाद, छाजन, फोड़ा आदि दूर होते हैं । यह आयुर्वेदिक पेटेन्ट औषधि है। दवा विक्रेता से खरीद कर लाभ उठावें।

—निर्माता—

आर॰ एन॰ गर्ग आयुर्वेद भवन
सोरों गेट कासगंज (एटा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोड़े और व्रण

श्री आचार्य चरणतीर्थ महाराज

—००:०:००—

फोड़े की पहिचान--

जब किसी भाग में सूजन, दाह होकर यह अंदर से पकता है तब उसे फोड़ा कहते हैं। किसी समय तीक्ष्ण दाह होकर और कभी बिना दर्द के भी सूजन होती है। पकने पर गाढ़ा, हरा, पीला, सफेद, रक्त मिश्रित और कभी पतली पीब निकलती है। दाह होकर जब फोड़ा होता है तब बुखार आती है और उस भाग में पीड़ा होती है। पका न हो तब तक कठिन लगता हैं। पकने पर शूल (पीड़ा) बढ़ती है। अन्त में पककर पीब निकलती है। वह सारे शरीर में या किसी एक अंग में भी हो सकता है।

मूढ़ फोड़े—शरीर के किसी एक भाग में सूजन होकर पीड़ा के साथ फोड़ा निकलता है। स्वच्छता न रखने वाले बच्चों को ज्यादा होते हैं। आम के सड़े फल खाने से, खट्टे पदार्थ खाने की आदत से, खून बिगड़ने से, मधुमेह से फोड़े हुआ करते हैं। पहले उस स्थान की चमड़ी लाल होकर सूजन होती है, उसमें पीड़ा (शूल) होती है। पीड़ा बढ़ती है, बुखार आता है। निद्रा नहीं आती।

व्रण की पहिचान—

शरीर पर विद्रधि या फोड़े के पककर फूटने के पीछे जो बहुत समय तक रिसता नहीं है छाला पड़ता है उसे व्रण कहते हैं। उसी तरह शरीर का कोई अंग काटने से, घिसने से भी व्रण होता है। जिस फोड़े के अन्दर पकने के बाद समय पर फोड़कर पीब नहीं निकलती तो वह पीब नाड़ियों में उतर कर नाड़ी व्रण उत्पन्न करता है।

गंभीर व्रण—जो व्रण बहुत गहरा हड्डी तक पहुंचा हो, रिसता न हो हड्डी को सड़ाता है वह गंभीर व्रण कहा जाता है।

शैय्या व्रण—बीमारी से रोगी को पीठ में कमर में छाला पड़ता है। पहिले लाल छाला होकर पीछे वह भाग सड़कर क्षीण होता है उसे शैय्या व्रण कहते हैं।

कारबंकल—मधुमेह वालों, मूत्राशय के रोगी को, खून बिगाड़ वाले को, वृद्धों को, कमजोर को, यह एक प्रकार का बड़ा फैला हुआ गहरा फोड़ा है। इसमें पहिले चमड़ी लाल होकर जलन होती है। उसके बीच में कठिन हड्डी जैसी चपटी बड़ी गांठें होती हैं। वह फैलता हुआ बड़ा होता है जामुन के रंग का दिखता है। कूर्म (कछुआ) की पीठ जैसे उठा हुआ शोथ होता है। उसमें फूटने के पीछे छोटे छोटे छिद्र पड़ते हैं। उन छिद्रों के चारों ओर की चमड़ी सड़कर निकल जाती है वहां खड्डा पड़ता है। यह बहुत करके पीठ की ओर गरदन कमर में होता है। कभी कूल्हा के बीच में हाथ, पांव, छाती पेट पर भी होता है।

पथ्यापथ्य--

सब प्रकार के व्रणों में वमन कराना, जुलाब देना, लंघन कराना, आवश्यकता होने पर शस्त्रकर्म (औपरेशन) या डाभ (अग्निकर्म) कराना या क्षार का उपयोग कर उसको फोड़ना। चावल, गेहूं, जव, जवारी, मूङ्ग, चना, अरहर, परवल, सहजना की फली, छोटी मूली, तिल का या सरसों का तेल, बेंगन, करेला, सूरण, घी, शहद, दूध हितकारी है। बहुत तीखा, खट्टा अचार आदि का त्याग करें।

व्रण फोड़ने के लिए—हाथी दांत को चंदन की तरह घिसकर व्रण के ऊपर एक इन्च घेरे की टिकिया जैसी लगावें। १५ मिनट में फोड़ा फूट जाता है।

व्रण फोड़ने का मलहम—दन्तीमूल, चित्रक, थूहर, का दूध, आक का दूध, भिलावा की गिरी, कासीस, सेंधा-नमक सब समभाग मिलाकर लगाने से व्रण फूटजाता है।

व्रणकी खराबी निकालने की पुल्टिश—व्रण फूटने के पीछे सब बिगाड़ निकालने के लिए नीम के पत्ते को और बेर के पत्ते को पीस गर्म कर पुल्टिश बांधने से यह सब बिगाड़ को खींचकर बाहर निकालती है। ६ दिन करने से व्रण में का सब बिगाड़ निकल जाता है।

बिगाड़ निकालने का लेप—तिल, नमक, हल्दी, निसोथ, नीम के पत्ते सब समभाग कूट कर उसमें घी मधु मिलाय गर्म कर मोटा पुल्टिश जैसा लगाने से बिगाड़ निकल जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्रण रोपण के लिये—बड़ के अन्दर की छाल, पीपल (अश्वत्थ) की छाल, गूलर की छाल सब साथ में कूट गाढ़ा लेप करने से लाभ होता है।

व्रण रोपण लेप—पीपल की छाल, नीम की छाल, बबूल की छाल, हरड़, तुलसी के पत्ते, मरुवा के पत्ते सब कूटकर लगाने से रोपण होता है।

व्रण पककर फूटकर रोपण लाने का उपाय—संखिया, नीलाथोथा, कली, चूना समभाग ले प्रत्येक को अलग २ पीसें फिर सबको मिला पानी में सोगठी बना विषैला है ऐसा लेबिल लगा रखें। जरूरत हो तब गौमूत्र में पीस दिन में २ या ३ दफे व्रण पर लगाने से वह पककर फूट जाता है। फूट जाने के पीछे चावल को पकाकर दही में मिलाकर गरमागरम व्रण पर पुल्टिस की तरह बांध पट्टी बाधें। एक दिन में ४ बार दही चावल की पट्टी बांधने से ३-४ दिन में व्रण सूख जाता है। फोड़े, बदगांठ, रसोली, मसा, नहीं पकते हुए व्रण, बवासीर इतने रोगों में जिसको पकाकर फोड़ कर मिटाने की जरूरी है उस पर इसे प्रयोग करें।

व्रण बैठा देने की पुल्टिश—अरणी, देवदारु, सौंठ, भारंगी, रास्ना, छोटी कटेरी के फल, मुलैठी के मूल सब सम भाग कूटकर पानी या दूध में पीस गर्म कर पुल्टिस (लापरी) की तरह लगाकर पट्टी बांधें। ३ या ४ दिन में व्रण बैठ जाता है।

व्रण पकाने की पुल्टिश—तिल, अलसी, कूटकर गेहूं का आटा तीनों सम भाग लेकर उसमें नमक १ तोला डालकर दही में मिला गर्म कर पुल्टिश बना रख पट्टी बांधें। ५ से १० दफे बांधने से व्रण पक जाता है।

व्रण फोड़ने का लेप—करंज के बीज, चित्रक, दंतीमूल, भिलावां की गिरी, कनेर का मूल, कबूतर की विष्ठा सब समान भाग लेकर कूट पानी में मिला गर्म कर लेप कर पट्टी बांधें। इससे व्रण फूट जाता है।

विशेष पट्टी—मोम, राल और घी को साथ मिला गर्मकर कपड़े पर लगा दें। पीछे व्रण पर यह पट्टी लगाने से विशेष लाभ होता है। यह पट्टी वात की पीड़ा को भी शांत करती है।

रोपण मलहम—राल, मोम, हीरादखण, कपीला, बोदार, कायफल प्रत्येक समभाग बारीक कर मिला लें। पीछे उसमें नवसार १ तोला मिलाकर गाय के घी से मलहम बना लें। इसे लगाने से व्रण छाले सूखते हैं।

लाभकारी मलहम—सफेद राल १ सेर, तिल का तेल ४ सेर को गर्म कर पिसी हुई राल डालकर पिघल जाने पर किसी पात्र में भरे हुए ठंडे पानी में डाल दें। मलहम जैसा बन जाता है। यह जखमों, घावों, अग्नि आदि से जले हुए पर लगाने से बहुत उपकार करता है।

जात्यादि मलहम—जुई, नीम, पटोल प्रत्येक के पत्ते, खश, मुलहठी, हलदी, कुटकी, मजीठ, नीलाथोथा, सारिवा, करंज के बीज प्रत्येक दस दस तोला लेकर कूटकर महीन करें। गाय का घी २॥ सेर गरम कर उसमें मोम १० सेर डाल पिघल जाने पर सब चीजें डालकर एकत्र कर आधा घंटा तक हिलाते रहें। पीछे चूल्हे से उतार कर ठण्डा हो तब तक हिलाते ही रहें। सब प्रकार के व्रण, छाले इत्यादि में लगावें।

जात्यादि तेल—मोम के सिवाय ऊपर लिखे जात्यादि मलहम के सब द्रव्य ५ सेर पानी और २॥ सेर सरसों के तेल में पकाने से जात्यादि तेल बनता है। इसे कपड़े के टुकड़े पर छिटक कर व्रण पर रख किसी वृक्ष का पत्ता बांधकर पट्टी बांध दें। दिन में दो दफे रीठे के पानी से या सोहागा के पानी से धोकर लगाते रहने से अच्छा लाभ होता है। जात्यादि मलहम का भी इसी तरह उपयोग करें।

व्रण वज्र तेल—कलिहारी (सफेद बछनाग), कुष्ठ, गिलोय, सिंगिया (काला बछनाग), हींग, दूर्बा, मजीठ, करंज के बीज, ढाक के बीज, ढाक के मूल, असगंध, नागर मोथा, नीला थोथा, एलुआ, हल्दी, काकड़सिंगी, मैनसील, हरताल, सौंठ, पीपल, कालीमिर्च प्रत्येक द्रव्य चार-चार तोला लेकर गौमूत्र में महीन पीसकर गौमूत्र दो सेर में डाल पकावें। पानी का अंश जल जाये तब ठण्डा होने पर कपड़छन कर रख लें। जात्यादि तेल की तरह इसका उपयोग करें। व्रण, छाले फोड़े आदि मिटते हैं।

व्रण मार्तण्ड रस—पारद ४ तोला, गंधक ८ तोला लोह भस्म २॥ तोला, ताम्र भस्म, सौंठ, पीपल, काली मिर्च प्रत्येक दो दो तोला, हरड़, बहेड़ा, आंवला प्रत्येक चार चार तोला, शिलाजीत ६ तोला, गूगल २४ तोला, नागरमोथा, कुटकी, गिलोय, चित्रक, वायविडंग, इन्द्रायण के फल, कुष्ठ, हल्दी, देवदार प्रत्येक चार चार तोला सब को कूट कपड़छन कर नीम के पत्ते के रस की और अनन्त मूल के क्वाथ की एक एक भावना देकर छाया में सुखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर घोटकर रख लें। ६ से १० रत्ती पानी या भारंगी गुड़ अथवा श्री बाहुशाल गुड़ अथवा कंटकारी अवलेह के साथ देवें। फोड़े, व्रण, छाले, खून का बिगाड़ आदि में लाभकारी है।

व्रणहर मिश्रण—अष्टामृत पर्पटी १ तोला, अमृता गूगल २ तोला, सिंहनाद गूगल १ तोला, शिलाजीत २ तोला सब साथ पीस ६४ पुड़ियां बना लें। सुबह शाम पानी या महामंजिष्ठादि क्वाथ के साथ १-१ पुड़ियां दें।

व्रणरोपणमलहम—कपास के पत्ते का रस २० तो., शंखजीरा ३ तोला, राल ०॥ तोला, बंग भस्म २ तोला, गाय का घी २० तोला में कपास पत्ते का रस डालकर पकावें। पानी का अंश जल जाए तब राल और मोम डालकर मिल जाने के बाद शंखजीरा और बंग भस्म डाल कर हिलावें। ठण्डा होने पर तांबे के बर्तन में रख लें। और व्रण छाले आदि पर लगावें।

सिंदूरादि रोपण मलहम—सिंदूर २ तोला, बोदार २ तोला, बङ्ग भस्म १ तोला, हिंगुल ४ तोला, मुरगी के अण्डे के छिल्के ॥ तोला, मोम १ तोला, गाय का घी आधा सेर, घी गरम कर मोम डाल मिल जाने पर दूसरी महीन की हुई वस्तुयें डालकर हिलाते रहें। इसे छालों, फोड़ों, व्रणों आदि में लगाने से फायदा होता है।

रोपण मलहम—करंज का तेल ४८ तोला गरम कर उसमें ४ तोला गुड़ डालें। मिल जाने पर सिन्दूर १२ तोला डालकर तैयार कर लें। सब प्रकार के व्रणों पर व्यवहार करें।

व्रण के सादे उपचार

१—खजूर १० तोला और कपड़ा धोने का देशी साबुन ५ तोला महीन पीस मिलाकर पुल्टिस जैसा बना कर फोड़े पर बांधने से फूट जाता है। पीछे रोपण का उपचार करें।

२—गूगल को जलाकर घी में मिलाकर लगाने से व्रण फूट जाता है। चौदह दिन तक लगाते रहने से सब बिगाड़ ठीक हो जाता है।

३—हीरा बोल को पानी में पीस कर लुगदी जैसी बनाकर लगाने से व्रण की गांठ बैठ जाती है।

४—पारद १॥ तोला, कत्था २॥ तोला, राल १० तोला, मोचरस २॥ तोला सब साथ में १२ घंटा पीसकर एक करें। उसमें घी आवश्यकतानुसार मिलाकर फिर १२ घंटा तक घोटें। इसे लगाने से सब प्रकार के व्रण मिटते हैं।

५—दाड़िम की छाल, करंज के बीज, आंवला, ढाक के फूल, मेंहदी, सोरा खार प्रत्येक ढाई तोला सबको कूट घोट कर भेड़ के दूध में पीसकर लगाने से सब प्रकार के व्रण मिटते हैं।

६—बबूल की पत्ती पीसकर मलहम जितना गाढ़ा रख कर व्रण पर बांधें, लाभकारी योग है।

७—कत्था और गूगल दोनों समभाग लेकर पीसकर नीम के पत्ते के पानी में दो दो रुपया भर की टिकियां बनाकर सुखालें। पानी में घिसकर व्रण वगैरह के ऊपर लगावें।

—श्री आचार्य चरणतीर्थ जी महाराज
गोंडल (सौराष्ट्र)

धन्वन्तरि मुफ्त प्राप्त करें

* पुरुषरोगांक में विषय-सूची के बाद प्रकाशित सूचना को ध्यान से पढ़ लीजियेगा।
* ३० नवम्बर से पहिले-पहिले एक बार में कमीशन कम करके १४१ रु. की औषधियां मंगालें, आपको 'धन्वन्तरि' १९६९ में मुफ्त दिया जायगा।
* पुरुषरोगांक में प्रकाशित सूचना की पुश्त पर छपी तालिका १ दिसम्बर से १५ दिसम्बर तक अवश्य भेजदें।
* तालिका भरकर यदि आप न भेजेंगे तो धन्वन्तरि वर्ष १९६९ में आपको मुफ्त नहीं दिया जायगा अतएव तालिका भेजना न भूलें।
* धन्वन्तरि के जो ग्राहक औषधियां मंगा चुके हैं वे तालिका भरकर यथा समय भेजना याद रखें।
* जिन ग्राहकों ने अभी औषधियां नहीं मंगाई हैं या कम मंगाई हैं वे नियमों को पढ़ समझ कर शीघ्र मंगालें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध

श्री डा० पद्मदेव नारायणसिंह एम०बी०बी०एस०

×

मस्तिष्क में रक्तश्राव या सेरेब्रल हेमोरेज (एपोप्लेक्सी)

रोगी को बिस्तरा पर लेटाकर तुरन्त $\frac{1}{4}$ ग्रेन मौर्फिन सल्फेट का मांसपेशी में इन्जेक्शन देना चाहिए। सिर पर बर्फ की थैली रखनी चाहिए। इसके बाद खून ज़माने और रक्तस्राव रोकने वाली औषधियों का प्रयोग करना चाहिए। श्वसन क्रिया रोध या हार्दिक क्रिया लोप होने लगे तो कोरामीन, स्ट्रिक्नीन आदि औषधियों का प्रयोग करना चाहिए। यह बहुत सांघातिक अवस्था होती है, जिससे बहुत कम रोगी बच पाते हैं। जो बचते भी हैं उनमें बहुतों को अर्धाङ्ग या पूर्ण पक्षाघात असर कर जाता है।

नकसीर फूटना या नाक से खून गिरना—रोगी को बैठाकर नाक अंगुलियों के बीच चांपिये। बर्फ मिलने पर उसे नाक पर रगड़िये, नहीं तो ठंडे पानी की पट्टी दीजिए। हाइड्रोजन पेरौक्साइड या उससे भी अच्छा एड्रीनलीन के घोल में रूई का फाहा भिगो कर नाक के अन्दर डालिये। मुखमार्ग से या इन्जेक्शन द्वारा कैल्शियमग्लुकोनेट + विटामिन 'स' और 'के' आदि प्रयोग करना चाहिए।

डायबेटिज या मधुमेह के रोगियों के व्यवहार करने लायक शर्करा रहित मीठा योग

प्रो० गज्जर्स स्टेन्डर्ड केमीकल वर्क्स, बम्बई–स्वीट्नौल (Sveetnol)–यह १०० टिकियों की शीशी में मिलता है और प्रत्येक टिकिया में सोडियम साइक्लेमेट ५० मिलीग्राम + सेकरीन सोडियम ५ मिलीग्राम रहता है। मिठास में एक टिकिया एक चायचम्मच भर चीनी के बराबर होती है।

केम्प कम्पनी–स्वीटिन—१५ सी.सी. की शीशी में।

कैस्टोफीन मैनुफैक्चरिङ्ग कम्पनी–सेक्करीन टेब्लेट्स १००; २००; और ५०० टिकियों की बोतलों में।

एबौट लैबोरेटरीज—सुकेरील (Sucary!) टेब्लेट्स १०० टिकियों की बोतलों में। १ टिकिया १ चाय चम्मच भर चीनी के बराबर मीठी होती है।

कलकत्ता केमीकल कम्पनी–(१) सेकरीन सौल्युबल टेब्लेट (Saccharin Soluble tablet) $\frac{1}{2}$ ग्रेन की १००, १००० तथा $\frac{1}{5}$ ग्रेन की ५०० और ५००० टिकियों की बोतलों में। मात्रा—इच्छानुसार—

(२) साइक्लोसैक (Cyclosac) ५० और २५० टिकियों की बोतलों में। प्रत्येक टिकिया में सोडियम साइक्लोहेक्सिल सल्फमेट १०० एम. जी. + सेकरीन १० एम. जी. रहता है। मात्रा—इच्छानुसार

बङ्गाल केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

सेक्करीन (Saccarin) १३ एम. जी. की १०० और ५०० टिकियों की बोतलों में।

ब्रिटिश ड्रग हाउस—

सेक्करीन टेब्लेट्स–०.२ ग्रेन की २५०, ५००, १०००, २५०० और ५००० टिकियों की बोतलों में।

यूनीकेम लैबोरेटरीज—

यूनीसाइक्लीम (Unicyclim tablets) टेब्लेट्स-यह १०० टेब्लेटों की बोतलों में मिलता है। जिसकी प्रत्येक टेब्लेट में सोडियम साइक्लेमेट १०० एम.जी. + सोडियम सैक्करीन २.५ एम. जी. रहता है। मात्रा–इच्छानुसार।

ऐलेम्बिक केमीकल वर्क्स, बड़ौदा–

एमुरौल (Amurol) १०० और ५०० टिकियों की बोतलों में।

बूट्स कम्पनी–

०.२ ग्रेन की सक्करीन टेब्लेट्स १०० और ५०० टिकियों की बोतलों में।

रक्तष्ठीवन और रक्तवमन

फेफड़ों से या मुख आमाशय-पक्वाशय से खून आना–

अधिक रक्तस्राव होने पर रोगी को बिस्तरा पर आराम करना चाहिए। $\frac{1}{4}$ ग्रेन मौर्फीन + $\frac{1}{100}$ ग्रेन एट्रोपीन सल्फेट का अधस्त्वगीय या मांसपेशी में इन्जेक्शन लगाना चाहिए। सिरामार्ग से या मांस पेशी में १०%

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० सी. सी. कैल्शियम ग्लुकोनेट + विटमिन 'सी' ५०० एम जी का इञ्जेक्शन लगाना चाहिए। मुख से चूसने के लिए रोगी को बर्फ का टुकड़ा देना चाहिए किन्तु उसे मुख ही में गल जाना चाहिए। ठोस आहार २४ घंटों तक नहीं देना चाहिये, और उसके बाद आइसक्रीम, साइट्रेट डाला हुआ दूध और फलों का मीठा रस देना चाहिए। दूसरे-तीसरे दिन से मुलायम किन्तु ठंडा आहार देना चाहिए। उपरोक्त चिकित्सा से खून गिरना नहीं बन्द होने पर कोअगुलेन सिबा—५-१० सी. सी. और विटामिन 'के' का भी एक इञ्जेक्शन रोज मांसपेशी में लगाना चाहिए।

नमकीन योग

जिनके लिये साधारण नमक या सोडियमक्लोराइड का व्यवहार वर्जित माना हो।

कलकत्ता केमीकल—

पोटैशियम साल्ट या के-साल्ट (K-Salt) २; ४; और ८ औंस की बोतलों में।

जरमन रेमेडीज—

सीट्रोफाइनल-एन (Citrofinal-N)—७५ ग्राम की बोतलों में। प्रयोग—इच्छानुसार।

यूनीकेम लेबोरेटरीज—

यूनी-साल्ट (Uni-salt)—यह ३ औंस और १६ औंस की बोतलों में मिलता है। मात्रा—इच्छानुसार।

करतल व चरण तल दाह

सी. सी. एफ. कम्पनी—

२५ एम. जी. प्रति सी. सी. की शक्ति में कैलशियम पेन्टोथीनेट २ सी. सी. की ६, ५०, और १०० एम्पुलों के बक्सों में, तथा १० सी. सी. के रबरकैप युत वायलों में। मात्रा २ सी. सी. का मांसपेशी में इञ्जेक्शन आवश्यकतानुसार रोज या १-२ दिनों के अन्तर पर।

यूनीकेम लेबोरेटरी—

यूनी पेन्टोथीन इञ्जेक्शन—५० एम.जी. प्रति सी.सी. की शक्ति में १० सी.सी. के वायल में पेन्टोथिनिक एसिड़ का योग। मात्रा और प्रयोग पूर्ववत्।

रोश कम्पनी—

बीपेन्थेन मार्का पेन्थेनोल नामक पेन्टोथिनिक एसिड़ का एक योग ५०० एम. जी. शक्ति के २ सी. सी. के ३ और २५ एम्पुलों (मांसपेशी में इञ्जेक्शन के लिए) या १०० एम. जी. शक्ति के लाजेञ्जेज २० और १०० लाजेञ्जों की शीशियों में मुख मार्ग से व्यवहार करने के लिए।

गलगंड या घेंघा

मुख मार्ग से सेवन के लिये थायरायड या चुल्लिका ग्रन्थि तथा आयोडीन के योग—

भंडू कम्पनी—

(१) थायरायड टेब्लेट्स—३० एम० जी० शक्ति की १००; २५०; और १००० टिकियों की बोतलों में। मात्रा—१ टिकिया मुख से आवश्यकतानुसार १-३ बार रोज।

ग्लैक्सो कम्पनी—

एल्ट्रोक्सीनमार्का थायरौक्सीन या चुल्लिका ग्रंथि रस—०.०५ और ०.१ एम० जी० थाइरौक्सीन सोडियम की १०० टिकियों की बोतलों में मात्रा १-२ टिकिया मुख से २-३ बार रोज।

लुगल्स आयडीन शोल्यूशन—

ऊपर या बाहर से घेघा पर मालिश के लिए आयडीन का मलहम।

बूट्स कम्पनी—

आयोसान मार्का आयडीन का मलहम ३० ग्राम की शीशी में। घेघा पर २-३ बार रोज मालिश की जाती है।

भंडू कम्पनी—

आयडीन आयन्टमेन्ट—४५० ग्राम की बोतल में। व्यवहार—उपरोक्त योग के समान ही।

दांतों की बीमारियों पर

बङ्गाल केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

डेन्टल टूथएक् ड्राप्स (Dental toothache drops) ६ सी. सी. की शीशियों में रुई के फाहा से लगाया या भर दिया जाता है।

हैदराबाद केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

टूथएक् ड्राप्स (Tooth-che drops)—१२ सी.सी. की शीशियों में। रुई के फाहा से जिस दांत में दर्द हो वहां लगाया जाता है।

कैस्टोफिन मैनु. कम्पनी—

टूथएक् ड्राप्स (Toothache drops)—रुई के फाहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से दांत में लगाया जाता है।

केम्प एण्ड कम्पनी—

टूथएक् रेमेडी (Tootache Remdy) या दांत दर्द के लिये उपाय।

नासूर या फिशर और बवासीर

(१) फ्रेंको इण्डियन फार्मास्युटिकल्स, बम्बई—

प्रोक्टोसेडील वायन्टमेंट—२-३ बार रोज बवासीर के मस्सों पर लगाया जाता है।

(२) बङ्गाल केमीकल एण्ड फार्मास्युटिकल वर्क्स—

पीलोवायन्ट (Piloint)—मस्सों में ३-४ बार रोज लगाया जाता है।

(३) ईस्ट इण्डिया फार्मास्युटिकल वर्क्स—

१. "प्रोक्टोसोन (Ptoctosone)" वायन्टमेन्ट-लगाने के लिए एक विशेष Applicator युत यह पीड़ाहर मलहम ५ ग्राम के ट्यूब में मिलता है, जिसमें हाइड्रोकोर्टिसन (शोथहर) ०.५%+आयडोक्लोरोहाइड्रोक्सीक्वीनोलीन (एन्टीसेप्टिक) ४% और बेन्जोकेन (पीड़ाहर) ५% रहता है। ३-४ बार रोज लगाया जाता है।

२. प्रोक्टो-क्वीनोल (Procto quinol)—बवासीर, नासूर, तथा मलद्वार के सभी तरह के पीड़ायुक्त या कष्टदायक रोगों में व्यवहार करने के लिये यह मलहम २५ ग्राम के ट्यूब में मिलता है। प्रयोग उपरोक्त योग के समान ही है, केवल इसमें हाइड्रोकोर्टिसन नहीं रहता।

(४) बूट्स कम्पनी—

एच. पी. वायन्टमेन्ट (H. P. ointment)—बवासीर के मस्सों या नासूर वा फिशर में ३-४ बार रोज लगाया जाता है। लगाने के लिये नौज्ल (Nozzle) युत कोलैप्सीब्ल ट्यूब में मिलता है।

(५) स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट—

(१) बैलीन्स (Ballins ointment) वायण्टमेन्ट या मलहम २-३ बार रोज मस्सों पर लगाया जाता है। मुखमार्ग से व्यवहार करने के लिये—(२) बैलीन्स टेब्लेट्स २५ टिकियों की शीशियों में। मात्रा—१ टिकिया ३ बार रोज मुख से भोजन के बाद।

मृगी चिकित्सा

मे एण्ड बेकर कम्पनी—

(१) "गारवायन Garoin" टेब्लेट्स ५० टिकियों की बोतलों में। प्रत्येक टिकिया में फेनिनट्वायनसोडियम १½ ग्रेन+फेनोबार्बिटोनम् सोडियम ¾ ग्रेन रहता है। मात्रा—१-२ टिकिया तीन बार रोज भोजन के बाद। चिकित्साक्रम प्रायः ३-५ वर्षों तक चलाना चाहिये।

(२) रूटोनल (Rutonal)—प्रशामक औषधियों का प्रकरण देखिये।

बूट्स कम्पनी—

"एप्टवायन (Eptoin)" मार्का फेनीनट्वायन सोडियम (Phenyntoin Sodium) ०.१ ग्राम के टेब्लेट १०० टिकियों की बोतलों में। मात्रा १-३ टिकिया रोज।

सैन्डोज कम्पनी—

"मेसेन्ट्वायन" टेबलेट, २०; १००; और १००० टिकियों की बोतलों में। मात्रा ½ टिकिया से आरम्भ कर सप्ताह में ½ टिकिया की मात्रा में बढ़ाते हुए ३ टिकिया से ६ टिकिया रोज (बहुत धीरे धीरे मात्रा बढ़ाते हुये) ले जाना चाहिये, और फिर कम से कम मात्रा जिससे रोगाक्रमण रुका रहे उस मात्रा से ६-१२ महीनों तक प्रयोग करना चाहिए।

ए. वांडर कम्पनी—

(१) ऐन्टीसासेर (Antisacer) मार्का फेनीनट्वायन सोडियम के ०.१ ग्राम शक्ति की ३० और १०० टिकियों की बोतलों में। मात्रा—१-६ टिकिया रोज तक। प्रयोग पूर्ववत्। (२) ऐन्टीसासेर कम्पोजिटम-इसमें फेनीनट्वायन के अतिरिक्त ब्रोमाइडफेनोबार्बिटोन, कैफीन साइट्रेट, और एट्रोपीन आदि दवायें भी रहती हैं इसलिए सभी तरह की मृगियों की चिकित्सा के लिये यह बहुत उत्तम योग है। मात्रा—१-३ टिकिया रोज। दो शक्तियों में मिलता है—(क) बच्चों के लिये, और (ख) वयस्कों के लिये २० और १०० टिकियों की बोतलों में मिलता है।

—श्री डा० पद्मदेव नारायणसिंह एम. बी. बी. एस.
बंगला नं० F/४०, पो० सिंदरी (धनबाद)

✱

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद् के आहार-विहार

श्री गोपाल जी द्विवेदी वैद्य

महर्षि भगवान् आत्रेय के मतानुसार जगत विख्यात सूर्य, पवन और चन्द्रमा ये तीनों, काल, स्वभाव और गति में रहने के कारण काल, संवत्सर, उत्तरायण और दक्षिणायन नामक ऋतु रस, दोष, वातादि दोषजनक और शारीरिक बल के कारण रूप अधिष्ठाता माने जाते हैं।

ऋतु विभाग के कारण सम्वत्सर ६ समझे जाते हैं। इन अंगों में शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्म नामक ऋतुओं में सूर्य उत्तर की ओर रहता है। अतः इसे उत्तरायण या आदान भी कहते हैं। वर्षा, शरद् तथा हेमन्त इन तीनों ऋतुओं में सूर्य दक्षिण की ओर रहता है अतः इसे दक्षिणायन या विसर्ग काल कहते हैं।

इस प्रकार वर्षा, शरद् और हेमन्त में सूर्य का दक्षिण दिशा की ओर चले जाने से वर्षा, शरद् और हेमन्त ऋतु मेघ, वायु और वर्षा के कारण सूर्य के प्रताप, आतप के क्षीण होने से तथा चन्द्रमा के सबल हो जाने से और वर्षा के पानी से संसार की उष्णता दूर होने से संसार में रूक्षता रहित, अम्ल, लवण और मधुर यह तीनों रस यथा क्रम बढ़ते हैं इसलिए इन तीनों ऋतुओं में पुरुषों का अग्नि बल अधिक बढ़ जाता है।

प्रायः शरद् काल में पुरुषों का बल मध्यम हो जाता है। शीत काल में ठण्डी हवा के साथ शरीर में ही रुक कर बलशाली पुरुषों की जठराग्नि प्रबल होजाती है। इसी कारण शीत काल में जठराग्नि गुरु द्रव्य तथा अधिक मात्रा वाले भोजन के पचाने में समर्थ हो जाती है अतः अग्नि के प्रदीप्त होने पर आहार न मिलने पर जठराग्नि शरीरगत धातु को ही जलाने लगती है। अतएव शीतल वायु शीतकाल में शीत गुण विशिष्ट वायु साम्य के कारण बढ़ कर कुपित हो जाती है। अस्तु शीत काल में चारों ओर से ढके हुए यान, घोड़ों, तांगों, रथ आदि की सवारी, शैया तथा आसन कम्बल, व्याघ्र, चर्म, रेशमी कपड़े, सन के कपड़े तथा अन्य विचित्र कम्बलों से निर्मित होने चाहिए। शीत काल में भारी तथा गर्म वस्त्र पहिनना तथा अन्य प्रमाण प्रलेप करना अच्छा है। इस समय लघु हल्के तथा वातल, वातजनक, अन्न पान का उपयोग सर्वथा वर्जनीय है।

दिन में सूर्य की किरणों द्वारा गर्म होकर और रात्रि के समय चन्द्रमा की किरणों से शीतल होकर समय के प्रभाव से जो जल दोषरहित हो जाता हैं तथा अगस्त्य नामक तारे के उदय से जो जल विषरहित हो जाता है उसे हंसोदक कहते हैं। यह शरद् ऋतु का जल सर्वथा दोष रहित, निर्मल तथा अत्यन्त पवित्र होता है। स्नान पान तथा अवगाहन, तैरने के लिये यह जल अमृत के समान गुणकारी है। ये तो रहा ऋतु परिचय। अब आप स्वतंत्र आहार विहार तथा अन्य वर्जनीय कर्मों का अवलोकन निम्न प्रकरणों से करें—

हमारे प्राचीन आयुर्वेद आचार्यों का भी मत है कि—

वर्षा शीतो चितांगानां,
सह सैवार्क रश्मि भि।
तप्तानां संचित वृष्टौ,
पित्तं शरदि कुप्यति।।

अर्थात् मनुष्य के शरीर में व्याप्त वर्षाकालीन शीत शरद् ऋतु में नवीन सूर्य किरणों से सहसा गर्म हो जाता है जिससे वर्षा में संचित पित्त शरद् में कुपित हो उठता है।

उस पित्त को जीतने के लिए तिक्त घृतों का पान कराना तथा विरेचन एवं जलौका द्वारा रक्तमोक्षण कराना हितकारक होता है। क्योंकि कहा भी है कि—

'विरेचन पित्तहराणां' तथापि इसकी शांति और शरीर को स्निग्ध करने के लिए नीम, कुटकी, परवल, दारु हल्दी, पाठा, धमासा, शाहतारा, त्रायमाणा, आदि औषधियों के क्वाथ, काढ़ा से सिद्ध तिक्त घृत का सेवन भी हितकारक है। तथा शरद् में पित्त को शमन करने के लिए भूख लगने पर तिक्त, मधुर, कषाय रस प्रधान पदार्थों का सेवन करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद् के आहार

तिक्त स्वादु कषायं च, क्षुधितोऽन्नं भजेल्लघु ।
शक्तिमुद्गसिता धात्री, पटोलमधु जांगलम् ॥

अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के लिए ऋतु के अनुकूल अपने आहार-विहारों में पूर्व ऋतुओं की अपेक्षा कुछ संशोधन यानि भिन्नता करनी चाहिए जिसमें साठी चावल, मूङ्ग, चीनी, आंवला, परवल, मधु और जंगली पशुओं के मांस को प्रधानता देनी चाहिए। तथा साथ में विटामिन युक्त गेहूं तथा पौष्टिक, तिक्त, मधुर कषाय एवं शीघ्र पचने वाले पदार्थों का सेवन परम लाभप्रद होता है। पित्त की शांति के लिए नीबू का सेवन भी हितकर है। चन्द्रकिरणों की स्निग्धता और गुणकारिता के ही कारण प्रायः अक्टूबर मास में शरद् पूर्णिमा को हमारे यहां बहुत महत्व प्रदान किया गया है। शरद् पूर्णिमा की रात में चन्द्र किरणों में रखकर ठण्डी की हुई खीर खाना बहुत उत्तम समझा जाता है। इसे आयुर्वेद भी मानता है। प्रातः शरद् ऋतु में मधुर तिक्त कषाय रस के सेवन के अलावा शीतल पदार्थों का सेवन करना हितकर है। अर्थात् शीतल स्वभाव वाले अन्न पान का सेवन करना चाहिए। प्रायः नित्य प्रति मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय छयों रसों का अभ्यास करना चाहिए परन्तु उपर्युक्त कहे अनुसार मधुर अम्ल रसों का सेवन विशेष लाभप्रद होता है। इसके अतिरिक्त हर व्यक्ति के स्वभाव का विचार कर दोष धातुओं को साम्यावस्था में रखने के लिये प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति के विपरीत पदार्थ इस ऋतु में सेवन करने चाहिए। जैसे वात प्रधान को स्निग्ध, पित्त प्रधान को शीत और कफ प्रधान को उष्ण पदार्थों का सेवन करना चाहिये। इस ऋतु में प्रातः काल जलपान इत्यादि में भिगोया चना, गर्म जलेबी, दूध, चाय इत्यादि लेने चाहिये। तथा भोजन के दो घन्टे पूर्व ही उपर्युक्त कर्म समाप्त हो जाने चाहिए। अपने आहार में रोटी, साग, सूजी इत्यादि के हलुए तथा अन्य मधुर जैसे—केला, मौसम्मी, नारंगी, अमरूद, किसमिस, बादाम तथा पिस्तों का सेवन ही विशेष रूप से करना चाहिए। रसीले फल भोजनोत्तर केवल दिन के लिए आवश्यक हैं।

पर याद रहे भोजन करने के पहले नमक युक्त अदरख के २-३ टुकड़े खाकर ही अनन्तर मधुर, चिकने तथा हितकारी पदार्थ, मूंग, चावल, घृत युक्त रोटी, उक्त शाक पत्रादि के साथ शान्तिपूर्वक खाकर और तब बाद में मिश्री युक्त दूध पीकर नियमानुसार रहने से व्यक्ति सुखी रह सकता है। क्यों कि ये आवश्यक भी हैं।

शरद के बिहार

यह बरसात के बाद की ऋतु है। इस समय मच्छर इत्यादि लोगों को अधिक परेशान करते हैं इसलिये मच्छरों को भगाने के लिये शाम के समय साधारण घास-फूस इत्यादि जलाकर धुआं कर देना चाहिये। इससे मच्छर भाग जायेंगे। मच्छरों से बचने के लिये मच्छरदानी के भीतर सोना अच्छा होता है। इसके अभाव में कपड़े से अङ्ग ढक कर सोना चाहिये।

प्रायः इस मौसम में शरीर में कडुआ सरसों का तैल लगाना अच्छा है। इसकी मालिस से मच्छर नहीं काटते।

शरीर को उबटन इत्यादि से स्वच्छ कर तदनुसार व्यायाम, कुस्ती, दण्ड, बैठक, मलखम्भ, आदि कसरत करनी चाहिये क्योंकि व्यायाम भी इस ऋतु के लिये अत्यन्त सुन्दर है। व्यायाम में नियम का पालन करना जरूरी है। ऐसा नहीं कि जब कभी या कम ज्यादा कर लिया क्योंकि:—

अंतरे चौथे दण्ड करै ।
दई न मारे आपुने मरै ॥

यह उक्ति इस सम्बन्ध में बड़ी ही लोकप्रिय है। शरद ऋतु में चन्दन, खस, कपूर आदि का सेवन, सुगंधित पुष्पों के हार और श्वेत उज्जवल वस्त्रों का धारण ताम्बूल इत्यादि को चन्द्रमा की स्वच्छ चांदनी में सायंकाल मकान की छत या बगीचों इत्यादि में सेवन लाभप्रद एवं आनन्ददायक होता है। पुष्पों के प्राकृतिक सौन्दर्य का दिग्दर्शन एवं शीतल मन्द सुगन्ध पवन इत्यादि मन को प्रसन्न करने वाले सामयिक दृश्यों का अवलोकन करना चाहिए।

इस मास में मैथुन इत्यादि करना भी उचित है। किन्तु पूर्वोत्तर गौ तथा भैंस का औटाया या दुहा मिश्री युक्त दूध का सेवन हितकारक है।

मित्रों के साथ बैठकर विश्राम करना, मधुर वचनों का सेवन करना, सरोवरों में क्रीड़ा, मनुष्यों का सिरा मोक्षण करके खून निकालना बड़ा ही पथ्यकर है। चन्द्रमा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरणों से अमृत की वर्षा होती है। और बरसात के बाद आकाश स्वच्छ निर्मल हो जाने से इस अमृत वर्षा को ग्रहण करने के लिए यह ऋतु सर्वोत्तम है। प्रायः इस महीने में खून ज्यादातर दूषित होते हैं। इसलिए जुलाब इत्यादि लेकर पहले शरीर को पित्त से शुद्ध कर लेना चाहिए। तदुपरांत रक्तशोधक दवाओं का सेवन करके शरीर को ठीक रखना चाहिए। बरसात का दूषित जल पिये होने के कारण ज्यादा दिन बुखार रहने से इस मौसम में तिल्ली बढ़ जाती है। इसलिए इसके विनाश का भी प्रबन्ध करना चाहिए। अक्टूबर से शरद ऋतु के प्रारम्भ के कारण भी पित्त का प्रकोप होता है। इससे शरीर में क्रमशः प्रमाद की मात्रा बढ़ती जाती है। इसको उपर्युक्त कथित आहार विहारों के माध्यम से अनुकूल कर लेना चाहिए। उसके लिए प्राकृतिक दृश्यों का परिभ्रमण करना, नयनाभिराम वस्तुओं का दर्शन एवं कुछ यौगिक क्रियाओं को करना चाहिए। आलस्य प्रायः उदर में मलाधिक्य होने से होता है। अस्तु इसके लिए विरेचन, जुलाब इत्यादि का आश्रय सर्वथा श्रेयस्कर है। वास्तव में आलस्य का यही एक मात्र कारण है। इस मौसम में प्रसन्न चित्त एवं मनोनुकूल तथा रसोत्पादक कविता, जीवन चरित्र, उपन्यास का अध्ययन करना चाहिए। मन की एकाग्रता लाने के लिए गीता, रामायण, दुर्गा सप्तसती इत्यादि की आराधना करनी चाहिए। क्योंकि इसी ऋतु में दुर्गा पूजा तथा नवरात्रि दीपावली ऐसे त्यौहार जो प्रत्येक प्राणी के लिए लोकप्रिय हैं मनाये जाते हैं।

शरद् की अपथ्यकर वस्तुयें

शरद् में रात्रि की अवश्याय (ओस) का सेवन नहीं करना चाहिए। ओस, यवक्षारादि क्षार, अधिक तृप्त हो कर भोजन, दही, तेल, चर्बी, सूर्य की धूप, तीक्ष्ण मद्य, दिन में सोना, पूर्व की वायु का सेवन अर्थात् सामने से आने वाली वायु के झोकों का सर्वथा परित्याग कर देना चाहिये। इस मौसम में समयानुकूल वस्त्र धारण करना चाहिये। गन्दे जल को जो गड्ढे इत्यादि में एकत्रित हों इन को पड़ने नहीं देना चाहिये। उपर्युक्त ये सभी कर्म-शरद् में असेवनीय हैं।

शरद में सेवनीय आयुर्वेदिक औषधियां

इस ऋतु में पित्त को शान्त करने के लिए पहले विरेचन, इत्यादि से शरीर को शुद्ध करने के बाद ही पौष्टिक तथा अन्य योगों का सेवन करना चाहिए। पित्त नाशक निम्न योग ये हैं—

धमासा, निसोथ, नागर मोथा, उत्तम सफेद चन्दन और मुलहठी इन सबका चूर्ण करके दाख, मुनक्का के पानी में मिलाकर शरद में सेवन करें। इससे शुद्ध दस्त हो जाया करेगा।

प्रवाल भस्म 'चन्द्र पुटित'—यह पित्तशान्ति के लिए उत्तम है! इसका सेवन मधु के साथ करें।

इच्छा भेदी रस—यह तेज जुलाब है।

कामदुधा रस—पित्तविकार नाशक एवं रक्त पित्त में भी इसका प्रयोग करने से लाभ होता है।

मोती पिष्टी—पित्त शान्ति तथा दिल दिमाग की ताकत के लिये विशेष लाभदायक है।

इस मास में मच्छरों के काटने से मलेरिया भी लोगों को विशेष परेशान करता है। उसके लिए प्राणदा तथा मलेरिया नाशक योगों का सेवन करना चाहिए क्योंकि यह खून में मिले रोगों के कीटाणुओं का नाश तथा कब्जियत अरुचि एवं रक्त विकार को दूर करता है। इस ऋतु में रोज गर्म जल में एक नीबू निचोड़ कर पीना, तथा मधु का सेवन करने से भी पित्त का विनाश होता है। रोगानुसार तैल मालिश से भी बड़ा हित होता है। इस ऋतु में शरीर में मालिश करने के लिए कड़वे तैल के अलावा कोई तैल का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। यह तैल इस मास के लिए बड़ा ही हितकर है। इसके अलावा च्यवनप्राश इत्यादि अष्टवर्ग की औषधियां भी हैं जिनका उपयोग करके स्वस्थ रहा जा सकता है।

उक्त आहार-विहार के नियमानुसार रहने से ऋतु जन्य व्याधियों का भय नहीं रहता। लोगों को चाहिए कि इन नियमों को निभावें तथा उक्त नियमों का सहारा लेकर उचित कर्म करें। यदि पूरी ऋतु नहीं कर सकते तो कम से कम ७ दिन पर्यन्त तो अवश्य ही निबाहें और आठवें दिन ऋतु चर्या के आहार विहारों पर ध्यान देकर बर्ताव करें तो व्यक्ति सदैव रोग रहित ऋतु जन्य व्याधियों के चक्र से विमुक्त रह सकता है।

—श्री वैद्य गोपाल जी द्विवेदी
नरहन कलां, पो० मेंढ़ी चन्दौली, (वाराणसी) उ० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिलाजीत

श्री अम्बिकाप्रसाद अवस्थी

हेमाद्याः सूर्य सन्तप्ताः स्रवन्ति गिरि धातवः।
जत्वाभं मृदु मृत्स्नाच्छं यन्मलं तच्छिलाजतु ॥
—च. चि. स्थान ५५

सूर्य के ताप से तपी हुई पर्वत शिलायें लाख के आभा वाले नरम, पिच्छिल, स्वच्छ मल को चुआती हैं। उसे ही शिलाजीत कहते हैं यह चार प्रकार का होता है। जिस शिला में स्वर्ण कण मिश्रित होते हैं, उससे निकलने वाले को स्वर्ण शिलाजीत, जिसमें चांदी के कण होते हैं उसे रजत शिलाजित, तांबे के कण वाले को ताम्र शिलाजीत और जिसमें लोह कण मिश्रित होते हैं उसे लोह शिलाजीत कहते हैं।

गोमूत्र गन्धयः सर्वे सर्वं कर्म सु यौगिकाः।
रसायन प्रयोगेषु पश्चिमस्तु विशिष्यते ॥
—च. चि. स्थान ५६

सब (चारों प्रकार के) शिलाजीतों में गौमूत्र के सदृश गन्ध होती हैं। ये सब सभी कर्मों में प्रयुक्त होते हैं, परन्तु रसायन के प्रयोग में अंतिम अर्थात् लोह शिलाजीत ही अधिकलाभकारी है—

नाम—

संस्कृत में—शिलाजतु, शैल निर्यास, शैलेय आदि, शेष भारतीत भाषाओं में शिलाजीत ही अधिक प्रचलित है, तामिल में उरम्यम और अंग्रेजी में आस्फल्ट (Asphalt) कहते हैं।

प्राप्ति स्थान—यह हरिद्वार, शिमला, नैपाल आदि में प्राप्त होता है।

शोधन—

शिलाजीत में उत्पत्ति के समय अनेक मल, रेतकण, पत्थर, पत्ते, कीट, पतंग आदि मिल जाते हैं, इस कारण सर्व प्रथम इसको शुद्ध जल से धो लेना चाहिए। पश्चात् नीम, गिलोय और घृत की अलग-अलग भावना देने से शिलाजीत शुद्ध हो जाता है।

अथवा—

गरमी के दिनों में जब कड़ी धूप निकले आकाश स्वच्छ वायुवेग रहित होवे तब समतल भूमि पर लोहे के चार पात्र स्थापित करे। उनमें से प्रथम पात्र में शिलाजीत के टुकड़े करके डाल देवे। पश्चात् शिलाजीत से दूना शुद्ध जल और आधा गरम जल डालकर धीरे-धीरे हाथ से मलकर वस्त्र से छान डालें, उस छने हुए जल को लोह पात्र में भर कर रख देवे। धूपमें जब उस पर मलाई जम जावे तब उसको उतार कर दूसरे पात्र में रखता जाय। जब मलाई जमना बंद हो जावे तब जिस पात्र में मलाई जम है उसमें गरम पानी डाल धूप में रखदें। उसमें जो मलाई जमे उसको तीसरे पात्र में रखता जावे। पीछे उसमें गरम पानी डाल पूर्वानुसार धूप में मलाई उतार चौथे पात्र में रखे फिर उसमें जो मलाई पड़े उसे पहले पात्र में रखे। इस प्रकार तब तक करे जब तक कि ऊपर पात्र में साफ पानी न हो जाय। जब साफ पानी हो जाय तब पानी को फेंक कर शिलाजीत निकाल ले। यही शुद्ध शिलाजीत है।

अथवा—

जिस पत्थर से शिलाजीत निकलता है उस पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े कर दुगने अत्यन्त गरम पानी में एक प्रहर तक उन्हें रख छोड़े। फिर हाथों से मसल कर वस्त्र से छानदेवे और धूप में रखे लोह पात्र में डाल दे, फिर उसकी मलाई उतार कर तीसरे पात्र में डाल दें, इस प्रकार जब पात्र के तल भाग में मैल जमना बन्द हो जावे, तब समझे कि शिलाजीत शुद्ध हो गया।

शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा—

शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा चार प्रकार से की जाती है—

१—शिलाजीत को जरा सा लेकर अग्नि पर डालने से अगर धुंआ न उठे।

२—शिलाजीत के जरा से टुकड़े को अंगारे पर डालने से अगर वह लिंग के समान खड़ा हो जावे।

३—शिलाजीत के सूखने पर अगर गौमूत्र की सी गंध आवे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—शिलाजीत को जल भरे पात्र में एक तिनके की नोक में लगाकर डाले। अगर वह तार-तार होकर जल में नीचे बैठ जाये तो समझना चाहिये कि यह शिलाजीत असली है कहा भी है—

श्रेष्ठं शिलाजतु ज्ञेयं यत्तु क्षिप्तं न शीर्यते।
तोय पर्णे यथा पात्रेऽप्रतान्येव विहृष्यते ॥

शिलाजीत के गुण—

रसराज सुन्दर नामक ग्रंथ में लिखा है कि रस, उपरस, पारद, रत्न और सुवर्णादिक अष्ट लोहों में जो गुण हैं वे शिलाजीत में विद्यमान हैं। यह तीखा, कड़वा, गरम और रसायन है। प्रमेह, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षयी, श्वास, वादी, बवासीर, पांडुरोग, मृगी, उन्माद, सूजन, कुष्ठ और कृमि रोग आदि को नष्ट करने में समर्थ है। अन्त में तो यह भी कह दिया गया है कि ऐसा कोई असाध्य रोग पृथ्वी पर नहीं है जो शिलाजीत के खाने से न जाय।

शिलाजीत के अनुपान—

१—छोटी इलायची और पीपल के साथ आधा से एक तोला शुद्ध शिलाजीत को एक महीने तक खानेसे मूत्र कृच्छ, मूत्रावरोध, प्रमेह, क्षयी रोग का नाश करता है।

२—पंचमूल क्वाथ में दूध डालकर ८ रत्ती शिलाजीत मिलाकर पीने से वात गुल्म मिटता है।

३—शुद्ध शिलाजीत को त्रिफला और शहद के साथ खाने से प्रमेह मिटता है।

४—वमन, विरेचन से शुद्ध होकर गिलोय के क्वाथ के साथ शुद्ध शिलाजीत का सेवन करने से वात रक्त तथा कुष्ठ में लाभ होता है।

५—शुद्ध शिलाजीत के मिश्रण से कई चमत्कारी औषधियां निर्मित होती हैं। जिन्हें ग्रन्थों में देखा जा सकता है—जैसे—चन्द्रप्रभावटी, शिलाजीत वटी आदि—

६—महर्षि वाग्भट कहते हैं—

मधुमेहत्वमापन्नो भिषग्भिः परिवर्जितः।
शिलाजतु तुलावद्यात् प्रमेहार्तः पुनर्नवः॥

वैद्यों के द्वारा त्यागा हुआ असाध्य मधुमेह का रोगी भी अगर उचित मात्रा में नियमपूर्वक ४०० तोले शिलाजीत खाले तो उसका सारा चोला ही नया हो जाय।

७—अब हम उस प्रयोग को बतला रहे हैं जो हमारे पूर्वजों द्वारा उन व्यक्तियों को बनाकर दिया जाता था जो अपने को पुरुषत्वहीन समझते थे। मैंने भी इसे एक व्यक्ति पर प्रयोग किया है और सफल पाया है। इसकी पहली पत्नी हीनत्व का दोष लगाकर चली गई थी और दवा करने पर इसने दूसरी शादी की। जिससे २-३ सन्तानें हैं—

दवा का नुस्खा यह है—अकलकरा, कंकोल मिरच, जायपत्री, जायफल, मुलहठी, मलयागिरि चन्दन, लौंग, कलमीतज, पीपल, उरद की दाल ये सब एक एक तोला, केशर, गुरच का सत, कपूर आधा आधा तोला, शुद्ध भांग शुद्ध शिलाजीत और खशखश प्रत्येक २॥ तोला, मिश्री १० तोला सब को कूट पीस मिला कर इतना शहद मिला लेवें जिससे कि गोली बन सके। पश्चात् बेर के बराबर गोली बना चन्दन के चुरा में लपेट कर किसी अच्छे पात्र में रख ले।

प्रतिदिन प्रातः सायं एक एक गोली खाकर दूध पीवे, इसके कुछ दिनों तक लगातार सेवन से धातु पुष्ट हो बाजीकरण हो, स्तंभन हो, सुस्ती प्रमेह जाय तथा मन प्रसन्न हो। इस वटी का नाम आनन्द विहार वटिका है। इसके साथ मालिश हेतु एक तेल भी बनाया था परन्तु उसका शिलाजीत से सम्बन्ध न होने के कारण यहां नहीं दिया गया।

शिलाजीत की मात्रा—प्राचीन काल में इसकी मात्रा ४ तोले की थी। परन्तु आज का व्यक्ति इस मात्रा को पचाने में असमर्थ है अस्तु मेरी समझ से आजकल अधिक सेऽधिक ३ माशा तककी मात्रा में इसका प्रयोग किया जा सकता है। साधारणतः १ या १½ माशा देना चाहिए।

अशुद्ध शिलाजीत—अशुद्ध शिलाजीत के सेवन से दाह, मूर्च्छा, भ्रम, रक्त पित्त, रुधिर विकार, मंदाग्नि, मलावरोध आदि उपद्रव हो जाते हैं। इनके निवारण के लिये काली मिरच घी के साथ सात दिनों तक सेवन करना चाहिए। कहा है—

मरिचं घृत संयुक्तं सेवयेद्दिन सप्तकम्।
शिलाजतु भवं दोषं शांतिमाप्नोति निश्चतम्॥

शिलाजीत की भस्म—शिलाजीत में गंधक और हरताल मिलाकर बिजौरे नीबू के रस में पुट देकर आठ उपलों

—शेषांश पृष्ठ ३९ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिष और आयुर्वेद

विद्यावाचस्पति श्री गणेशदत्त शर्मा "इन्द्र"

ज्योतिष और आयुर्वेद का घनिष्ट सम्बन्ध है। आयुर्वेद मनुष्य के स्वास्थ्य सुधार और रोग निवारण के उपाय और क्रियायें बताता है तो ज्योतिष शास्त्र स्वास्थ्य विषयक सूचनायें देता है। ज्योतिष के दो अङ्ग हैं; एक गणित तथा दूसरा फलित। गणित तो ध्रुव सत्य है, किन्तु दूसरे अङ्ग (फलित) के सम्बन्ध में विचारकों, शोधकों और ज्योतिर्विदों में मतभेद हैं। विभिन्न आचार्यों के अलग अलग मत हैं। इतना तो फिर भी माना जा सकता है कि जननी के उदर-गुहा से शिशु के बाहर आते ही बालक का माता से पृथकत्व होता है। उसका जो भविष्य या वर्त्तमान माता से जुड़ा हुआ था वह अलग होजाता है। उसका अस्तित्व ही पृथक हो जाता है। शिशु गर्भ से बाहर आने पर प्रथम सांस के समय, जो भी आकाश में ग्रहों की स्थिति होती है, उसका जातक पर स्थाई प्रभाव होता है। यह बुद्धि ग्राह्य है कि आकाश के ग्रह नक्षत्रादि तारक पुंज तथा पृथ्वी और उस पर के जड़ चेतनादि का एक ऐसा सम्बन्ध है जिसे देखा नहीं जासकता और सहज ही अनुभव भी नहीं होता। सूर्य चन्द्र का अनेक वृक्ष बनस्पतियों से सीधा सम्बन्ध हम रात दिन देखते हैं। अनेक वृक्ष सूर्यास्त के समय सिमट जाते हैं फूल बन्द हो जाते हैं और सूर्योदय के समय वे यथावत् विकसित होते हैं। ऐसे सैकड़ों वृक्ष वनस्पति आदि हैं जो रसराज चन्द्र से सम्बन्धित हैं। अस्तु मनुष्य पर भी जन्म-काल के ग्रहों की स्थिति का प्रभाव हुए बिना नहीं रह सकता।

रेलगाड़ी को यथावत् संचालनार्थ जैसे सिग्नल और रेल-पट्टी के सांदें (Points) आवश्यक, मार्गदर्शक तथा सुरक्षाहेतु अपेक्षित हैं, उसी तरह मनुष्य को ग्रहों की गति को देखते हुये अपने जीवन का निर्वहन करना हितकर है। ग्रहों से भयभीत होने या आशा निराशा में पड़ने की जरूरत नहीं है। ये तो जीवनगाड़ी को ठीक ठीक चलाने के लिये सिग्नल (संकेत) हैं जो लोग ग्रहों के फलों को अनिवार्य मानते हैं, वे भीरु हैं। ग्रहों के कुफलों को निवारण किया जासकता है। यह मेरा मत ही नहीं ज्योतिषाचार्यों का भी कथन है कि "ग्रहों के प्रभाव को साहस, दृढ़ मनोबल, पुरुषार्थ और धैर्य के साथ मिटाया जा सकता है।" खान पान, रहन सहन, आचार विचारों में परिवर्तन कर देने तथा सावधानी बरतने से ग्रहों का निग्रह किया जासकता है। ग्रहों के कुफलों से बचने के विस्तृत विवरण को प्रस्तुत करना इस लेख का विषय न होने से अधिक लिखना उचित नहीं जान पड़ता। अब हम जन्म के समय ग्रह स्थिति के अनुसार कुछ कुंडलियां दे रहे हैं, जिनसे ज्योतिष का सामान्य ज्ञान करके व्यक्ति भी कुछ जान सकते हैं। ज्योतिष और आयुर्वेद का जहां एक ही स्थान पर पूर्ण अस्तित्व है वह वैद्य और ज्योतिषी धन्य है। उभयाश्रयी विषयों के आधार पर यदि रोगी की चिकित्सा की जाय तो रोगी और चिकित्सक दोनों सफलता पावेंगे ऐसा मेरा मत है। कतिपय रोगों के सूचक जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति को हम वैद्यों तथा रोगियों के उपयोगार्थ यहां लिख रहे हैं—

यह है अर्श रोग सूचक जन्म कुण्डली

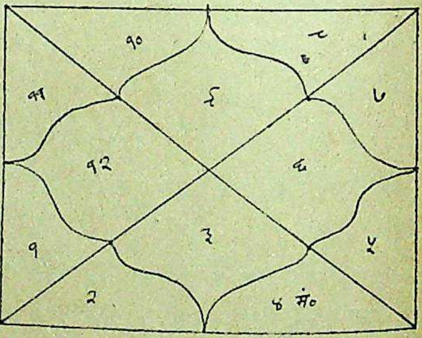

जातक के अष्टम स्थान में मंगल ग्रह की स्थिति अर्श (बबासीर) रोग की सूचक है। अन्य पाप ग्रहों की दृष्टि से रोग के सम्बन्ध में अधिक कहा जा सकता है। इसी प्रकार शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट्य हो तो अर्श का बल कम होजायगा।

आगे की कुण्डली चर्म रोग तथा रक्त विकार वाले व्यक्ति की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

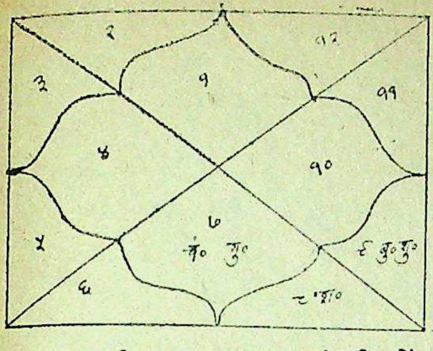

जिस मनुष्य के जन्म समय कुंडली में जन्म से अष्टम स्थान में शनि और शुभ ग्रहों की उस पर दृष्टि न हो तो उस व्यक्ति को दाद, खाज, कुष्ठ आदि चर्मरोग होते हैं।

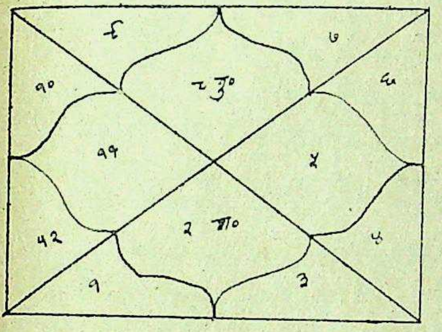

यह वात रोग योग कारक कुण्डली है—

जिस व्यक्ति के जन्म समय लग्न में गुरु और सप्तम स्थान में शनि बैठा हो तो वह व्यक्ति वायु विकार से पीड़ित रहता है। इन ग्रहों की महा दशा में अथवा अन्तर्दशा में यह योग प्रबल बन जाता है।

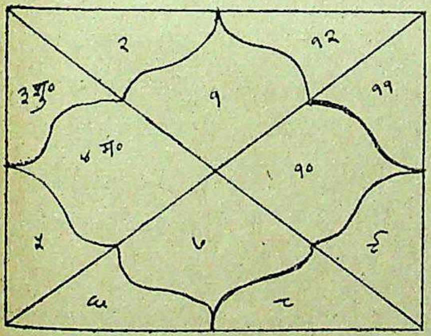

यह कुण्डली कृश-शरीर कारक है

जिस व्यक्ति के जन्म समय लग्न से तीसरे भाग में गुरु और चौथे में मंगल हो उस व्यक्ति का शरीर बलवान और सुदृढ़ नहीं होता। ऐसा मनुष्य विशेषतः दुबला पतला होता है। निर्बलता के कुछ न कुछ लक्षण बनते रहते हैं।

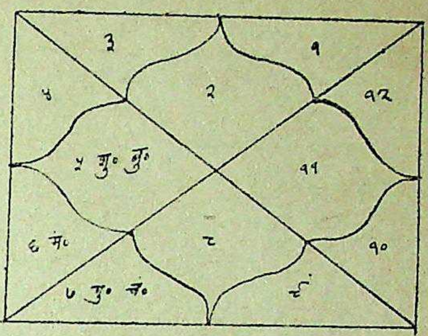

यह वात कफ विकार वाले मनुष्य की जन्म कुंडली है।

इस कुंडली में लग्न से पांचवे स्थान परम मंगल है। यह योग जातक को वात कफ जन्य रोगों से पीड़ित करता है। यदि इस स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो मंगल का प्रभाव यथा समय कम हो जाता है। मंगल की महादशा अथवा अन्तर्दशा में रोग की प्रबलता स्वाभाविक है।

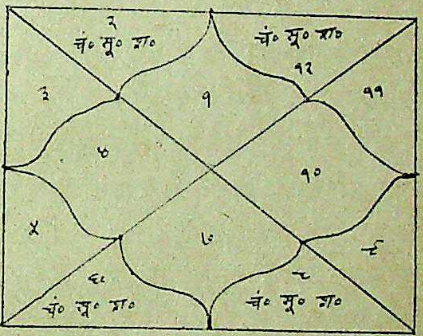

यह दृष्टिमान्द्य योग सूचक जन्म कुण्डली है।

जिस व्यक्ति के जन्म समय, दूसरे, छठें, आठवें अथवा बारहवें स्थान में चन्द्र, सूर्य और शनि तीनों ग्रह, चार स्थानों में से किसी में भी हों, उस मनुष्य की आंखों की ज्योति कम होती है। कम दिखाई पड़ता है। साथ ही शरीर में वायु की प्रबलता रहती है। ग्रहों की महादशा और अन्तर्दशा में ग्रहों का फल उग्र होजाता है।

आगे की कुंडली श्वास, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोग की सूचक है।

जन्म के समय लग्न में चन्द्र हो और पाप ग्रहों से घिरा हो और सप्तम स्थान में शनि चन्द्र को पाप दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

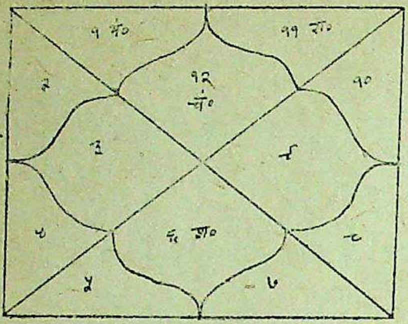

देख रहा हो तो जातक दमा, क्षय, प्लीहा, गुल्मरोग आदि से समय समय पर पीड़ित रहता है। ग्रहों की महादशा और अन्तर्दशा में विशेष रोग वृद्धि होती है।

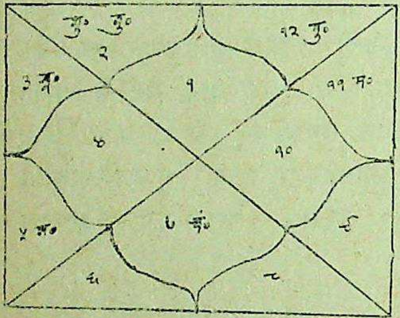

इस कुण्डली में ग्रहों की स्थिति कर्ण पीड़ाकारक है।

जन्म के समय जिसके तृतीय, पंचम और एकादश भाग में पापग्रह पड़े हों और उन्हें शुभ ग्रहों की दृष्टि प्राप्त न हो तो जातक को किसी भी प्रकार की कर्णपीड़ा होती है। श्रवण शक्ति कमजोर हो जाती है। ग्रहों की महादशा तथा अन्तर्दशा में रोग में प्रबलता आजाती है।

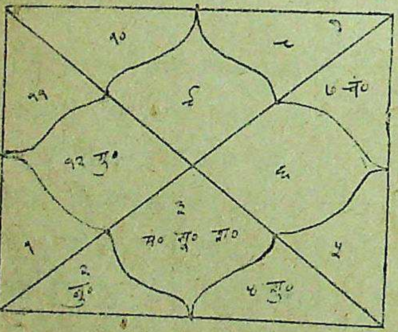

जन्म के समय ग्रहों की यह स्थिति बहरापन सूचित करती है।

जिसकी कुंडली में सप्तम स्थान पर तीन पाप ग्रह बैठे हों और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो जातक बहरा होता है उसे सुनाई नहीं देता है। ग्रहों की महादशा अथवा अन्तर्दशा में रोग में वृद्धि होती है।

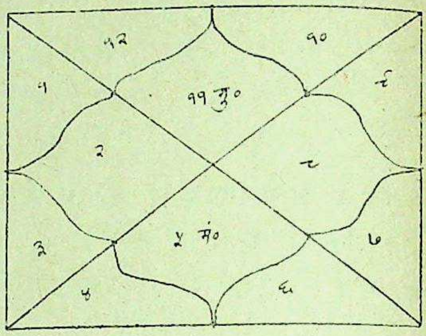

जिस जातक के जन्म समय जन्मकुंडली के लग्न में में गुरु हो और सप्तम स्थान में मंगल हो तो ऐसे व्यक्ति को वीर्य विकार और तत्सम्बन्धी कष्टों का सामना करना पड़ता है। अर्थात् गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित रहता है। ग्रहों की महादशा तथा अन्तर्दशा में रोग प्राबल्य होता है।

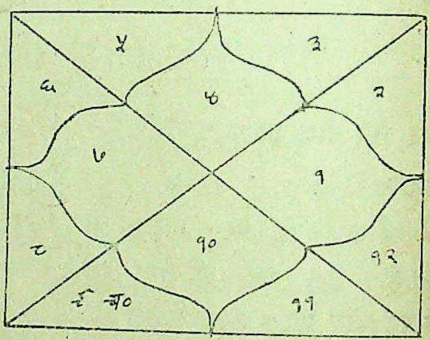

जिसकी जन्म कुंडली के छटवे स्थान में चन्द्र हो तो उसे मन्दाग्नि रोग होता है। उसे भोजन शीघ्र नहीं पचता हमेशा भूख न लगने की शिकायत बनी रहती है।

हम पाठकों को पुनः स्मरण करादें कि पुरुषार्थ उपचार, प्रयत्न, धैर्य और अध्यवसाय से ग्रहों के कुप्रभाव को कम किया जा सकता है।

—श्री गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'
विद्यावाचस्पति
शांति कुटीर, पो० आगर मालवा
(म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोखरू

श्री वैद्य चन्द्रशेखर मिश्र

— × —

पापन के अरि राम जिमि अन्धकार के भानु ।
मूत्रकृच्छ्र तब जगत में अरि गोक्षुर हि मानु ।।

मूत्राघात एवं मूत्रकृच्छ्र कोई नवीन व्याधि नहीं है । चरक संहिता में इसका वर्णन प्रादुर्भाव कारण सूत्रस्थान के सप्तम अध्याय में वर्णित है—

बस्ति मेहनयो शूलं मूत्रकृच्छ्र शिरोरुजा ।
विनामो वङ्क्षणानाह स्याल्लिङ्गं मूत्र निग्रहे ।।

प्रायशः इस रोग से ग्रस्त रोगी ज्ञात अज्ञात में कार्य की व्यस्तता के कारण मूत्रवेग को रोक लेते हैं । तब उन व्यक्तियों पर मूत्राघात या मूत्रकृच्छ्र रोग का प्रकोप हो जाता है । वह इन लक्षणों से लक्षित होता है कि बस्ति एवं कोषों में शूल का चलना, मूत्र की अल्पतम् प्रवृति या बिल्कुल न होना, अण्ड कोषों पर सूजन का होना आदि वस्तु ।

तब डाक्टर लोगों के पास तो सीधा सा उपाय है । "कैथेटर त्वं शरणम्:" उनका तो ब्रह्मास्त्र कैथेटर है और डाक्टरों की शरण में जाने वाले रोगी पर तो कैथेटर रूपी ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कुशल ब्रह्मास्त्र वेत्ता डाक्टर करते ही हैं । दो-चार बार में भाग्यवश रोगी स्वस्थ हो जाता है तो ठीक है अन्यथा समय एवं धन का व्यय कर रोगी पश्चात् वैद्य की शरण में आता है तब हमारा सुदर्शन चक्र गोखरू "त्रिकण्टक" स्वादु कण्टक, श्वदंष्ट्रा ब्रह्मास्त्र रूपी कैथेटर पर क्या विजय प्राप्त नहीं करेगा ? करेगा अवश्य करेगा हमने ऐसे कई डाक्टरों द्वारा छोड़े गये रोगियों को देखा है एवं पूर्ण स्वस्थ भी सुदर्शन चक्र रूपी गोखरू से किया है ।

सफल चिकित्सा विधि

प्रथम उदाहरण—एक जाट था मूत्राघात का रोगी चला गया सीधा कैथेटर रूपी ब्रह्मास्त्र वेत्ता डाक्टरों के पास जनरल हास्पिटल में और दाखिल कर लिया गया इनडोर पेसेन्ट में । दिन में २-३ बार ब्रह्मास्त्र कैथेटर का प्रयोग किया जाने लगा उस पर किन्तु पन्द्रह दिन तक भी हालात यथापूर्व चलती रही । तब उसी का एक मित्र उसको हमारे यहां पर ले आया । किन्तु उसने दवा लेने से इन्कार कर दिया कारण यदि दवा से मूत्र नहीं आवे तो फिर डाक्टर भी ब्रह्मास्त्र का प्रयोग न करें और मुझे मरना पड़े । फिर भी उसको विश्वास दिलाकर एवं सन्तोष बंधाकर गोखरु पञ्चाङ्गार्क, गोक्षुरादि गुग्गुल, शुभ्र पर्पटी की मात्रा एक उसी वक्त दी गई ४ गोली देकर २-२ गोली रात्रि में दो घन्टे के अन्तर से देने को कहा गया । विश्वास करिए रोगी उसी रात्रि में अपने को स्वस्थ महसूस करने लगा अपने आप दूसरे रोज प्रातः काल आकर पैर पकड़ने लगा । उसको पूर्ण आराम मिल गया था फिर उसे २-३ दिन अल्प मात्रा में औषधि सेवन करायी गई और वह पूर्ण स्वस्थ हो गया । आज तक पुनः रोगाक्रान्त भी नहीं हुआ ।

इस रोग में शिरः शूल भयंकर हो तो जवाहर मोहरा, प्रवाल पंचामृत, खताई आदि भी दी जानी चाहिये । अण्डकोषों पर सूजन हो तो तमाखू के पत्ते बांधना अच्छा रहता है । असह्य जलन हो तो इलायची, चन्दन, दुर्वा, मिसरी भी गोखरू के साथ सम्मिलित की जानी चाहिए जो तुरन्त आराम करती है ।

द्वितीय उदाहरण—इसी रोग का दूसरा उदाहरण भी मैं एक रोगी का आपके समक्ष पेश करता हूं । वर्तमान में जहां पर मैं रहता हूं रात्रि को १२ बजे मुझे मूत्राघात के रोगी को देखने जाना पड़ा । यहां पर भी डाक्टर विथ कैथेटर की कृपा ५-७ रोज हो चुकी थी । किन्तु हमारा अव्यर्थ सुदर्शन गोखरू काम आया । मैं वहीं रुक गया तथा आधा तोला गोक्षुरादि चूर्ण, आधा तोला शतावरी चूर्ण दूध में उबालकर शक्कर मिला पिलाया । एक घण्टे बाद रोगी को मूत्र आगया । २-३ मात्रा उसको और दी गईं बस, आज भी वह रोगी पूर्ण स्वस्थ है ।

डाक्टर मूत्रकृच्छ्र की भयानक व्याधि को कैथेटर साध्य मानते हैं जिसमें अश्मरी ग्रन्थि या मूत्रकृच्छ्र आदि की बातें बनाते हैं पर वास्तव में मूत्रकृच्छ्र रोग पर चाहे वह बालक, युवा, वृद्ध कोई भी क्यों न हो गोखरू मूत्रकृच्छ्र

—शेषांश पृष्ठ ३९ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रक या चीता

श्री मक्खनलाल वैद्य भूषण

—×—

इसका वृक्ष भारतवर्ष में प्रत्येक स्थान पर मिलता है। इसके पत्ते बेल के पत्तों से मिलते जुलते हैं आपस में तीन-तीन कभी जोड़ पर कभी नीचे ऊपर डंठल में लगे रहते हैं। यह डंठल छोटा होता है। ग्रामीण मनुष्य इसके पत्तों का शाक बनाकर खाते हैं। इसकी जड़ों और टहनियों में गांठें होती हैं।

जाति भेद--

चित्रक कई जातियों का होता है, जैसे श्वेत, रक्त, कृष्ण, पीत और धूसर आदि अनेक जातियों का वर्णन पुस्तकों में मिलता है। किन्तु हमें केवल रक्त और श्वेत जाति का ही चीता उपलब्ध होता है। इन दोनों की रचना में अंतर केवल इतना है कि लाल चीते के फूल, पत्ते, टहनी आदि रक्ताभ होते हैं तथा श्वेत के फूल, पत्ते और टहनी आदि सब सफेद होते हैं।

इसके पुष्प चमेली के समान तथा डंठल लम्बे होते हैं। इसी लम्बे डंठल में पुष्प कोष लगे रहते हैं। इन पुष्पों पर छोटे छोटे रोम जो शहद के समान एक तरल वस्तु से सने रहते हैं प्रायः मधुमक्खी उन पुष्प कोषों पर मड़राती रहती हैं तथा हाथ से छूने पर चिपचिपे महसूस होते हैं। डंठल पर रेशों के कारण से यह ऐंठी हुई सी प्रतीत होती हैं, पुष्प गुच्छों के रूप में लगते हैं। रक्तवर्ण का चीता औषधि के काम में लाया जाता है। श्वेत की अपेक्षा गुणों में यह उत्कृष्ट भी है।

काले चीते का वर्णन निम्न प्रकार से है—

काले चीते के सेवन करने से बाल काले हो जाते हैं, यदि इसको गौ सूंघ ले अथवा इसकी जड़ दूध में डाल दी जाये तो दूध काला हो जाता है।

गुण धर्म--

चीता—पाचक, रूक्ष, हल्का, अग्निवर्द्धक, पाक में कटु, ग्राही, कडुवा, गर्म, रुचिकारक, अग्नि के समान तीक्ष्ण, शोथ, कुष्ठ, अर्श, कास, वातोदर, कण्डू, यकृत के रोग, ग्रहणी, आम, उदर रोग को नाश करता है और रसायन है। ज्वर में अद्भुत चमत्कारिक प्रभाव करता है।

प्रयोग—

चित्रक मद्यासव (टिंचर)—चित्रकमूल छाल एक भाग, पीपरामूल एक भाग, संतरे का छिलका एक भाग, कुटकी एक भाग, मद्य सोलह भाग।

संधान विधि—७ दिन, मात्रा—२ से ४ माशा।

गुण—अरुचि और अग्निमांद्य के लिये अत्यन्त लाभदायक है। यकृत, संग्रहणी और शोथ में लाभ देता है। यदि किसी बच्चे को अन्न न पचता हो तो इस टिंचर की २ से ५ बूंद दीजिए। भोजन पचने लगेगा और शौच साफ आयेगा।

चीते को घिसकर फूली हुई ग्रंथि पर व शोथ पर लगाना चाहिए। चीते की हरी जड़ से दूध के समान तरल पदार्थ निकलता है। इसको नेत्र रोगों जैसे-लालिमा, सूजन, जलन आदि पर लगाना उपयोगी है। चीते की छाल पीस कर वैसलीन या घृत में मिलाकर लेप करने से दाद नष्ट हो जाता है। चीते के गरम पत्ते पीसकर व्रण पर लगाने चाहिए। चीते की जड़ व देवदारु को पीसकर लेप करने से श्लीपद नष्ट होजाता है। चीते की जड़ को पीस कर घड़े के भीतर लेपित कर जमाये हुए दही का तक्र पीने से अर्श रोग समाप्त हो जाता है।

चीते का तेल—चीता का स्वरस १ सेर, अमलतास के पत्तों का रस १ पाव, हल्दी, बाबची, त्रिफला, अंजीर की छाल २-२ तोला और तिल का तेल १ सेर। सबको मिलाकर तैल पाक विधि से तेल तैयार कर लीजिये।

गुण—यह तेल श्वेत कुष्ठ, दाद, चर्मदल कुष्ठ को नष्ट करता है। चीते की जड़ को मलकर के स्वरस निकाल लें। इसे कच्चे नारियल के जल में उक्त तेल मिला कर तीनों को अग्नि द्वारा पुनः पाक करें जो तेल प्राप्त हो वह कंडू, व्रण, फोड़ों पर लगायें। शरीर में कण्डू जोर से चलती हो तो इसकी जड़ की छाल का क्वाथ पिलावें।

अर्श के मस्सों पर—चीते की जड़ का चूर्ण, सौभाग्य, हल्दी ६-६ माशा, अफीम ३ माशा पीसकर मस्सों पर लेप करें। इससे शांति होगी।

चीते का चूर्ण—चीते की जड़ का चूर्ण, सेंधा नमक, इन्द्रजौ, करञ्ज, बकायन १-१ तोला चूर्ण तैयार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१-२ माशा तक में मिला कर ७ दिन तक सेवन करना चाहिए। इससे अर्श जल्द नष्ट हो जाता है।

चित्रकादि लोह—चीता, सोंठ, वासामूल, गिलोय, शालपर्णी, अपामार्ग क्षार, लालजटा क्षार, मानकन्द ६-६ माशा, लौह भस्म, अभ्रक, पिप्पली, ताम्र भस्म, यवक्षार और पांचों नमक २-२ तोला, गोमूत्र ८ प्रस्थ मृदु अग्नि द्वारा पाक विधि से सिद्ध करें। तैयार होने पर उतार कर शीतल होने के बाद ८ तोला शहद मिला दीजिये। यह यकृत, प्लीहा, शोथ, कामला, पांडु आदि रोगों में लाभदायक है।

चित्रकादि तैल—चीते की जड़, अजवायन, चव्य, कटेरी छोटी, करंजबीज, सेंधा नमक, आक की जड़, प्रत्येक ३ तोला, तेल १ सेर, गोमूत्र ४ सेर, तैल सिद्ध कर लीजिए।

गुण—नासिका द्वारा सूंघने पर नासार्श को समाप्त कर देता है।

चित्रकादि क्षार—चीता, पीपल, सेंधा नमक, बच ४-४ तोला सबको ४ तोला घृत में मिलाकर लघुपुट देकर शीतल होने पर निकाल लें। यह क्षार तैयार है। इसको मधु या गर्म जल से सेवन करने पर तिल्ली, यकृत, गुल्मशूल नष्ट होते हैं। चित्रक को शहद के साथ चाटने पर नकसीर बन्द हो जाती है।

चित्रकादि चूर्ण—चीता, पीपल, हींग, गजपीपल, पोहकरमूल, अनारदाना, स्याहजीरा, वाय बिडंग, धनियां, हाऊबेर, सोया, हिंगुपत्ती, अम्लबेत, अजवाइन, कचूर, अजमोद, काला नमक, तुम्बरु १-१ तोला, सबके बराबर सोंठ, बिजौरे नीबू के स्वरस में भावना देकर सुखा रखें।

गुण—आमवात, गुल्म, तिल्ली, जिगर की खराबी, पेट में उत्पन्न सभी प्रकार के शूलों के लिए अद्वितीय है।

चित्रकादि मोदक—चित्रक, निशोथ, दन्तीमूल, वायबिडंग, सोंठ, मिर्च, पीपल, समभाग चूर्ण करके गुड़ की चाशनी में डालकर लड्डू बना लीजिये। १-१ तोला गर्म जल के साथ लेने पर परिणामशूल को नष्ट करता है।

—श्री पं. मक्खनलाल वैद्य भूषण
श्री पारीक आयुर्वेद भवन
सहजनवां (गोरखपुर)

पृष्ठ ३३ का शेषांश

की अग्नि देवे इस प्रकार आठ पुट देवे तो शिलाजीत की भस्म होवे।

शिलाजीत की यह भस्म, कांत लौह भस्म और वैक्रांत मणि भस्म तीनों सम भाग लेकर उसे त्रिफला, सोंठ, मिर्च. पीपर और घृत मिलाकर बलाबल देख कर देने से पांडु रोग, राजयक्ष्मा, मंदाग्नि, प्रमेह, गोला, तिल्ली, उदर के घोर विकार और योनि विकार नाश होते हैं।

पथ्यापथ्य—

शिलाजीत खाने वाले को दंड,कसरत,धूप, पवन,पित्त संतापक एवं दाहक वस्तुओं को त्याग देना चाहिए। जितने दिन औषधि सेवन करे उससे दूने दिनों तक पथ्य से रहना चाहिये। पथ्य में पुराने चावल, दूध, घृत का अधिकतर सेवन करे। पर उपरोक्त अपथ्यकर वस्तुओं का तो बिलकुल ही त्याग रखे।

—श्री अम्बिकाप्रसाद अवस्थी
पुरवा, गढ़ा, जबलपुर (म. प्र.)

पृष्ठ ३७ का शेषांश

की अत्युत्तम औषधि है। चरकोक्त दस मूत्र विरेचक औषधियों में गोक्षुर की प्रधानता सर्वतोपादेयता एवं सर्व सुलभता है। मूत्रकृच्छ्र में मैं Surgery एवं कैथेटर की आवश्यकता नहीं समझता तथा सभी प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इसका वर्णन भी मूत्राघात अश्मरी आदि के प्रबलतम शत्रु के रूप में मिलता है जैसे—

त्रिकण्टकस्य बीजानां चूर्णं माक्षिक संयुतम्।
अविक्षीरेण सप्ताहम् पीतमश्मरी पातनम्॥
—सु० सं०

घृतं श्वदंष्ट्रा स्वर सेन सिद्धं।
क्षीरेण चौवाष्ट गुणेन पेयम्॥ —च० सं०

गोक्षुरः शीतलः स्वादुर्बलकृत बस्ति शोधनः।
मधुरो दीपनो वृष्योः पुष्टिदः चाश्मरी हरः॥
प्रमेह श्वास कासार्श कृच्छ्र हृद्रोग वात नुत्॥
—भा०प्र०

इसी प्रकार शोढ़ल राज निघण्टु आदि में गोखरु का वर्णन मूत्राघात एवं तत्सम्बन्धी रोगों पर अव्यर्थ बताया गया है जो प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा स्पष्ट भी हो चुका है।

—श्री चन्द्रशेखर वैद्य
राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय
सरगांव (भीलवाड़ा) राज०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी सफल चिकित्सा-विधि

शीर्ष सौषुम्न की एक केस हिस्ट्री

श्री वैद्य हरिमोहन शर्मा

सन् १९६० की वर्षा ऋतु की बात है । मैं सवाई माधोपुर जिले के राजकीय आयुर्वेदीय औषधालय मोरां जो नादौती तहसील का एक प्रसिद्ध कस्बा है में चिकित्सक था। वहां से ४ मील दूर एक गांव है गढ़खेड़ा । वहां मुख्य आबादी मीणा किसानों की है । दोपहर के लगभग २ बजे थे। गढ़खेड़े का समृद्ध किसान लालाजी पटेल मेरे पास आया । मैंने हालचाल वहीं पूछे तो ज्ञात हुआ लड़का १५ दिन से बीमार है। ३ बार बामनबास के डाक्टर को, दो बार गौतम को २-३ बार नादौती और सलावद के चिकित्सकों (वैद्यों) को भी दिखा दिया गया है पर निदान के संबंध में भी वे लोग एक मत नहीं हैं । वैद्यों की जैसी कि गांवों में साधारण आदत है विभिन्न प्रकार की १०-१२ सूईयां लगा चुके हैं । डा० की दवा भी ७ दिन से है । परन्तु अब तक कोई फायदा नहीं है । लड़के का बचना मुश्किल है आदि । ये सभी लोग उस क्षेत्र के स्थानीय निवासी व प्रसिद्ध चिकित्सक माने जाते थे। निदान जो रोगी के घर वालों को बताये गये थे बिगड़ा-मन्थर ज्वर, पुराना विषमज्वर (मलेरिया) श्वसनक ज्वर आदि । बड़े बड़े रोगों और चिकित्सकों के नाम का प्रभाव मुझ पर यह पड़ा कि मैं रोगी देखने रवाना होने से पूर्व ही हताश सा हो गया । खैर रोगी देखने अपनी भेषज मंजूषा के साथ साईकिल पर सवार हो गढ़खेड़ा पहुंचा । गांवों के अंधेरे, सीलन, बदबू और घुटन-युक्त नीची छप्पर वाले एक ओवरे में टूटी सी पुरानी खाट पर अत्यन्त गंदे और मैले बिछौने पर एक १०-१२ वर्ष का बालक अचेत व सन्निपात ग्रस्त हालत में पड़ा था। वह इतना कृश था और अन्धकार इतना था कि लालटेन के टिमटिमाते प्रकाश में इस चारपाई पर कोई लेटा है यह आभास नहीं होता था। चारों ओर १०-१२ स्त्रियां बैठी थीं और ५-६ पुरुष भी बैठे चिलमें पी रहे थे। एक सयाना कुछ झाड़ फूंक कर रहा था । मैंने किवाड़ खोलने के लिए कहा ताकि प्रकाश बढ़े । लोगों ने विरोध किया । पर मैंने दृढ़ता पूर्वक वहां से सभी स्त्री पुरुषों को चले जाने व किवाड़ खोलने को कह दिया । ४-५ मिनट के व्यवधान व कहा सुनी के बाद मैं इस स्थिति में हुआ कि उस अंधेरे ओवरे में कुछ देख सकूं । तंबाकू का धुंआ भी साफ हो गया । वहीं मैंने बच्चे की मां, तहसीलदार जी व लाला जी को बुलाया । बच्चे की परीक्षा की । गले में घरघराहट, अत्यन्त कृष्णवर्ण कृश शरीर १०५ डिग्री ज्वर, प्रलाप बार'बार उठ कर भागने की स्थिति, मूर्च्छावस्था में ही हाथों से कुछ पकड़ने व नोचने की चेष्टा, अबंध, बड़बड़ाहट, नाड़ी गति १०० से ऊपर, हृदय की धकधकाहट अतितीव्र, पहले ऐसा रोगी देखा न था। वातु-पित्त, कफ दोषों का पूरा समूह ही विकृत ७ दिन से पूर्ण मूर्छित व बिना कुछ भोजन किये था। बलपूर्वक पानी अवश्य मुंह में डाल दिया जाता था । अस्तु लगभग १० मिनट तक नाड़ी, नख, हृदय, फुफ्फुस, उदर, नेत्र व जिह्वा की परीक्षा की । नख रक्तहीन शुक्ल, जिह्वा मल-पूर्ण व दुर्गन्धयुक्त, नेत्र श्वेत, उदर जलता हुआ व कठोर सुद्दोयुक्त था । सन्निपात ज्वर है पर श्वसनक है आंत्रिक है या अन्य किसी कारण से यह तलाश करना बाकी था। उठकर बाहर आया । विचार करता रहा पर प्रकाश रेखा अनुपस्थित थी ।

अब रोगी का इतिहास पूछना शुरू किया। मालूम हुआ लगभग २५ दिन पूर्व लड़का गायें चराने गया था। वहां भरे पानी में किसी संपोलेने उसके पांव की छोटी उंगली को डस लिया । जब शाम घर आया तो वह सो गया। दूसरे दिन अपने घर वालों को उसने पिछले दिन की बात कही । घर वालों ने गढ़खेड़ा के रामू सूनार जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो चिकित्सा भी करता था को जाकर कहा उसने बिना कुछ पूछे परीक्षा किये ही उसकी अंगुली अपनी सोने-चांदी काटने की कैंची से काट दी ताकि सर्प विष निकल जाये। २-३ दिन लड़का उसी अंगुली पर गंदा कपड़ा लपेटे गाय चराने जाता ही रहा। उस कटी अंगुली के क्षत पर कीचड़ मल मूत्र सना पानी लगता रहा, वह वर्षा में भीगता भी रहा, साथ ही रोजाना जंगल में आने जाने व घूमने फिरने पर उसे घायल अवस्था में ही श्रम करना पड़ा ज्वर बना। एकाध दिन निभाया गया। इसके बाद गौतम जी को बुलाया। उन्होंने ३ दिन तक इञ्जेक्शन पेनिसिलीन दिये। पर लाभ न होने पर क्रमशः सलावद व नादों के वैद्यों को बुलाया। दोनों ने ही टाइफाइड बताकर क्लोरोमाईसिटीन दी। इधर ज्वर बढ़ता गया ही जाता देख वासनावास के डा० की ३ विजिट कराई गई। अब बच्चा पिछले दिन से मूर्छित है। उठ-उठकर भागता है कपड़े फाड़ता है, अंट-शंट बकता है। प्रकाश से डरता है। अचानक ही मुझे शीर्ष सौसुष्न ज्वर का ध्यान आया। लक्षण मिलाये गये तो मिलते थे। काफी सोच विचार के पश्चात् जो व्यवस्था की गई वह निम्न है—

आधा रत्ती पुटपक्व विषम ज्वरांतकलौह, आधा रत्ती ब्राह्मी वटी, १/४ रत्ती शुद्ध कस्तूरी, १/४ रत्ती भीमसैनी कपूर, शृंगभस्म एक रती, १/४ रत्ती मुक्ता पिष्टी—इन सबकी १ मात्रा प्रति ३-३ घंटे बाद निरन्तर औषधि चालू रखी गई। इसे तुलसी पत्र व ब्राह्मी के साथ पिसवाकर दिलाई। ग्लीसरीन की बत्ती लगाकर मल त्याग कराया और वापस चला आया। दूसरे दिन जब पुनः गया तो मुझे स्वयं स्थिति में सुधार लगा घर वालों को नहीं। अतः आज मात्रा ८ के बजाय ६ बार ही दिलाई। रोगी के घर वालों को सूचीवेंध पर विश्वास ज्यादा था अतः कैम्फर मुश्क इन ईथर का एक सूचीवेंध तथा एक सूचीवेध एड्रीनलीन का दिया। तीसरे दिन रिपोर्ट मिली कि रोगी का बहकना कम है। आंखें अभी खोली नहीं हैं। इस बीच दिन में ४-५ बार ग्लूकोज मिला गौ दुग्ध नली द्वारा पिलाया जाता रहा था। तीसरे दिन से औषधि ४ बार चालू रखी। पांचवे दिन तक निरन्तर गया। दवा भी पूर्ववत् चालू रखी। मुझे संशय तो था पर रोगी की जीवन शक्ति तथा औषधियों के कारण चालू प्रगति से आशान्वित भी था।

पांच दिन बाद कोई खबर नहीं मिली। कोई बुलाने या समाचार कहने भी नहीं आया। दवा अवश्य पांचवे दिन देखने के बाद ३ दिन की बनादी थी। इस बीच तापमान कभी कम तो कभी बढ़ता रहा था। एक बार फिर ग्लीसरीन एनिया द्वारा मलत्याग भी करवाना था। कोई खबर न मिलने के कारण मैंने सोचा रोगी मर गया है।

३-४ मास बाद उधर एक स्थानीय मेला था। मैं सपरिवार वहां गया था। ५-७ मित्र और २-४ इधर उधर के वैद्य बन्धु भी थे। अचानक लालजी मिल गया नमस्कार की। मैंने हाल चाल पूंछा। उसी समय उस लड़के की मां जो वहां आयी हुई थी आई और मेरे पांव पकड़ कर बैठ गई तब तक मुझे वस्तु स्थिति का पता न था। मैं गले से सांत्वना के कुछ शब्द कहने वाला ही था कि लालजी ने पास ही खड़े एक १२-१३ साल के लड़के को मेरे पांवों में लिटा दिया। मैंने पूंछा पटेल जी यह कौन है ? वैद्य जी महाराज यही किशोरी है जिसको आपने जीवन दिया है।

—श्री वैद्य हरिमोहन शर्मा भिषगाचार्य
४०५४, जौहरी बाजार, जयपुर-३ (राजस्थान)

प्राकृतिक चिकित्सा मुफ्त सीखें

प्राकृतिक चिकित्सा से रोग का मुख्य कारण स्थायी रूप से दूर होकर स्वास्थ्य बनता है। इसका आधार लेकर सभी वैद्य हकीम डाक्टर व पाठक लाभ उठा सकते हैं।

गांधी जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में प्राकृतिक चिकित्सा के ज्ञान की निःशुल्क प्रचार के हेतु मेरे निर्देशन में व्यवस्था की गई है। साधारण ज्ञान के लिये २०.०० तथा उच्च ज्ञान के लिये ५०.०० की पुस्तकें पर्याप्त हैं।

इस समय १५ वैद्य महानुभाव इसे सीख चुके हैं। प्रा० चि० की देशी-विदेशी २०० पुस्तकों का सूचीपत्र मुफ्त मंगायें।

—श्री डा० हरिकिशन दास श्रीमाली M. Sc. N. D.
आइडियल हेल्थ स्टूडिओ, कटरा अबूतराब, यहियागंज, लखनऊ-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष्मा पर अजापञ्चक घृत की सफलता

दि० ५ जनवरी १९६८ को श्री कालू सुथार मेरे चिकित्सालय पहुना में चिकित्सा कराने आया, उस समय उस रोगी में यक्ष्मा रोग के पूर्ण लक्षण थे। उसके कथनानुसार मालुम हुआ कि बड़े हास्पीटल में उसका प्रवेश हो गया था परन्तु वह दो दिन बाद वहां से लौट आया और कुछ दिन वह मेरे पास आया। मैंने स्पष्टविधिवत् परीक्षा की तब उसे निम्नाङ्कित लक्षण थे—

कासोऽसतापो वैस्वर्यज्वरः पार्श्वशिरोरुजा।
छर्दनं रक्तकफयोः श्वास वर्चोगदोऽरुचिः॥

फिर भी पूर्ण परीक्षा हेतु उसे मेहताएक्स–रे क्लीनिक भीलवाड़ा ले गया। वहां एक्स–रे रिपोर्ट से स्पष्ट हो गया कि इसका बायें फुपफुस का करीब $\frac{1}{2}$ भाग यक्ष्मा रोग से आक्रान्त है। इसके बाद इस रोगी का E.S.R. करवाया इससे भी यक्ष्मा रोग का स्पष्टीकरण हो गया। चिकित्सा व्यवस्था शुरू की जो इस प्रकार है—

सितोपलादि चूर्ण ३ माशा, अभ्रकभस्म, प्रवालभस्म २-२ रत्ती, गिलोयसत्, चौंसठ प्रहरीपीपल ४-४ रत्ती।

उपरोक्त औषधि २ मात्रा है दिन में दो बार शहद से चटाई गई। अजापञ्चक घृत दिन में तीन बार १-१ तोला बकरी के दूध के साथ दिया एवं उसे सोने बैठने के लिए बकरियों के झुण्ड में रहने का आदेश दिया। यह क्रम चलता रहा। १५ दिन तक कोई परिवर्तन नजर नहीं आया तब रोगी चिकित्सा व्यवस्था से उपेक्षा करने लगा परन्तु मैंने धैर्य दिला कर १५ दिन और चलाने का आदेश दिया ४-५ दिन बाद ही उसकी हालत में सुधार होता गया। चिकित्सा क्रम उसी प्रकार चलता रहा। एक माह बाद रोगी को आशातीत लाभ हुआ।

इस चिकित्सा से रोगी को काफी विश्वास हो गया अतः १ माह तक और उसी प्रकार चिकित्सा व्यवस्था चलती रही। रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो गया। इस समय रोगी का स्वास्थ्य काफी अच्छा है। कोई भी क्षय रोग का लक्षण नहीं है।

—श्री वैद्य मदनलाल श्रोत्रिय भिषगाचार्य, आयुर्वेदाचार्य
चिकित्सालय–पहुना, जिला चित्तौड़गढ़

गोमांस न खाने का वैज्ञानिक रहस्य

जिन कर्मों का आचरण करने या न करने के लिये वेदों ने कहा, उनके पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक कारण रहा है। किन्तु वैदिक काल में धर्म पर अधिक विश्वास था अतः वेदों ने धर्म का सहारा लिया। हमें देखना है कि गोमांस भक्षण के वर्जन के पीछे कौन सा वैज्ञानिक कारण है? जिस प्रकार मलेरिया के कीटाणु मच्छर और मनुष्य में अपना जीवन चक्र पूरा करते हैं, उसी प्रकार एक कीटाणु है जो गाय और मनुष्य में अपना जीवन चक्र पूरा करता है। इस कीटाणु का नाम टेपवार्म है। वह गाय की मांसपेशियों में रहता है। गोमांस को चाहे जितना उबालें वह कीटाणु मरता नहीं। इस प्रकार इसके कीटाणु आसानी से मनुष्य के पेट में पहुंच जाते हैं। पेट में पहुंचते ही अपने अनुकूल वातावरण पाकर ये कीटाणु बढ़ने लगते हैं और कई फीट लम्बे हो जाते हैं। यह कीटाणु उभय लिङ्गी होते हैं। रोज लाखों की संख्या में अण्डे देते हैं। इस प्रकार मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। भारत के लिये यह गौरव की बात है कि जिस तथ्य को दुनिया के वैज्ञानिक अब समझनेकी कोशिश करते हैं या समझते हैं, उसे भारत में वैदिक काल के पूर्व ही लोगों ने जान लिया था।

—श्री वल्लभदास बिन्नानी, 'व्रजेश' साहित्यरत्न, साहित्यालंकार
४३, स्ट्राण्ड रोड, कलकत्ता—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षित प्रयोग

रोगनिवारक सरल प्रयोग–

श्वासरोग नाशक चूर्ण—सोंठ, मिरच, पीपल इन्हें समान भाग ले चूर्ण करें। उसके समान गुड़ और दूना घी मिलाकर चाटने से श्वास का रोग बहुत शीघ्र नष्ट होता है।

ज्वर पर पीपर चूर्ण—पीपर को कूट पीसकर शहद के साथ चाटे तो ज्वर, कास, श्वास, हिचकी, कंठशोथ, प्लीहा आदि रोग नाश हों।

संग्रहणी नाशक पानक—सोंठ, धनियां, सौंफ समान ले पीसकर शाम को २ तोला चूर्ण पाव भरपानी में डाल दें। इसे मसल कर छान लें तथा १ नीबू का रस और तीन चम्मच शहद मिलाकर ५ बजे सुबह पीलें।

इससे पेट साफ रहता है, आंव का बनना बन्द होता है, भूख खुलकर लगती है, खाया हुआ भोजन ठीक से हजम होता है तथा पेट की जलन भी शांत होती है।

अंड शोथ नाशक योग—बड़ी पीपर, सोंठ समान ले चूर्ण करें तथा दोनों के बराबर गुड़ मिलाकर ½ तोला की मात्रा दिन में तीन बार सेवन करें। इससे फोतों में पानी उतर आना (हाईड्रोसील) तथा मसूढ़ों की सूजन शीघ्र नष्ट होती है।

पिष्ट प्रमेह हर योग—एक दिन का उपवास कर हल्दी तथा दारूहल्दी का क्वाथ शहद से लें तथा कुछ दिनों को दाल खाना छोड़ दें केवल रोटी और हरी सब्जी प्रयोग करें। निश्चय ही सफलता मिलेगी।

पेचिस हर योग—आधी कच्ची तथा आधी भुनी सौंफ को पीस बराबर भाग की मिश्री मिलाकर मट्ठे के अनुपान से १-१ तोला दिन में ३-४ बार खायें। शीघ्र ही आंव का नाशकर आपकी व्यथा को तत्काल फायदा मिलेगा।

अरुचि नाशक योग—सुबह भोजन के एक घंटा पूर्व कालानमक तथा अदरख खायें। भूख खुलकर लगेगी।

अनन्तवात शिरो रोग नाशक योग—शहद का मालपुआ खायें तो अनन्तवात (शिर का रोग) दूर हो।

तेल आदि से जले का यत्न—(१) तिल का तेल एक पावभर और खाने का चूना गीला पुराना ४ पैसे भर दोनों को हाथ से एक पहर मसल राब सा कर रुई के फाहा से जले पर लगावें।

(२) पुराना गीला खाने का चूना दही के पानी में पीस जले पर लगावें तो वह अच्छा हो। तेल का जला हो तो उसके फफोले भी दूर होंगे।

अस्थि सन्धि टूट गई हो— सौ बार के धोये घृत में साठी चावल पीस कर लेप करें।

फूले को दूर करने का अञ्जन—चीनिया कपूर का बड़ के दूध में २ माशे तक अञ्जन करे तो फूला दूर हो।

दुखते नेत्रों पर लेप—लोहे के पात्र में नीबू का रस डालें उसको कुछ गाढ़ा करें। बाद में नेत्रों के ऊपर लगावें तो दुखती आंख अच्छी हो।

कर्णशूल पर—बकरे के मूत्र में सेंधा नमक डाल थोड़ा गर्म करें और कान में डालें तो कान का शूल दूर होता है।

कर्ण रोग पर—अदरख का रस, शहद, सेंधानमक, तेल ये सब इकट्ठा कर, इन्हें गर्म कर कान में डालें तो कान की पीड़ा, कर्णनाद, बधिरता और कर्णक्ष्वेड ये सब रोग दूर होते हैं।

पीनस होने पर—कालीमिरच, गुड़, हींग ये तीनों मिलाकर अनुमान मुवाफिक खायें तो पीनस का रोग जाता है।

क्रमि दन्त पर—हींग को थोड़ा गरम कर दांतों के बीच में दें तो दातों के क्रमि नष्ट होते हैं।

बालक का मूत्र बन्द हो गया हो—तो पीपल, मिरच, छोटी इलायची, सेंधा नमक इन्हें पीस मिश्री और शहद से चटावें तो मूत्र अच्छी तरह से उतरेगा।

नींद नाशक अञ्जन—काली मिर्च को महीन पीस शहद से अञ्जन करे तो नींद नहीं आती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांख में बास आती है—नीबू के पत्तों के रस का लेप करें तो कांख की दुर्गन्ध दूर हो।

सिर दर्द पर—तुलसी के पत्तों का रस और थोड़ा सा कपूर पत्थर पर चन्दन सा घिसें। उसके बाद सिर पर मालिश करने से गर्मी से होने वाला सिर दर्द नष्ट हो जाता है।

प्रतिश्याय पर—तुलसी पत्र ११, काली मिर्च ५ और थोड़ी सोंठ मिलाकर बनाई हुई चाय मिश्री मिलाकर पीने से प्रतिश्याय, खांसी तथा अङ्गों की ऐंठन दूर होती है।

अजीर्ण पर—हींग घी में भुनी हुई, मिर्चकाली, पिपरमेंट का फूला तीनों बराबर मात्रा में लें। पहले हींग कालीमिर्च पीसकर एकत्र करलें। बाद में इन्हीं में पिपरमेंट का फूला भी घोटें घोटने से द्रव जैसा बन जायेगा। इसे शीशी में भर कर कार्क लगादें। अजीर्ण, अफरा, जी मचलाना, वमन, पेट दर्द, शूल, बार-बार दस्त आना तथा शिर: शूल में हितकर है।

कफ में—पानी में शहद मिलाकर खाने से कफ कम हो जाता है।

हाथ पैर के दर्द पर—दूध में सौंठ उबाल कर पीने से आराम मिलता है।

दाद में—नींबू काटकर लगाने के बाद स्प्रिट से साफ कर लें।

चेहरे के दाग पर—पीली सरसों को पानी में पीसकर लेप करने से चेहरे के दाग मिट जाते हैं।

अण्ड वृद्धि और श्वास पर—अदरख का रस और शहद पियें तो वाताण्डवृद्धि पचे, तथा श्वास, खांसी, अरुचि और नांक बहना भी बन्द हो।

विषम ज्वर पर—तुलसी का रस, मिरच का चूर्ण साथ पियें तो विषम ज्वर दूर हो।

अतिसार पर—बबूल की छाल का रस शहद में मिलाकर पिलावें तो सात तरह का अतिसार जाय।

तिल्ली पर—घीकुवार का रस हल्दी चूर्ण युक्त पियें तो तिल्ली, अपची और पेट की गांठ निःसन्देह नष्ट होती है।

कण्डूपर—ग्वार पत्र का रस और हल्दी का कल्क सरसों के तेल में पकाकर लगाने से खुजली, दाद, विचर्चिका आदि सब रोग दूर होते हैं।

नेत्रों की सूजन पर—सौंठ, नीम के पत्ते इनमें थोड़ा सेंधा नोन मिलाकर महीन पीस इनकी पिण्डी नेत्रों के ऊपर बांधें। नेत्रों की सूजन और खाज नष्ट करती है।

—श्री डा० हरिश्चन्द्र त्रिपाठी एच०एम०डी० आयुर्वेद विशारद

श्री त्रिपाठी मेडिकल स्टोर, असलनापुर सिकन्द्रा, कानपुर (यू० पी०)

गठिया बात नाशक—

(१) सोंठ, हल्दी समभाग वस्त्रपूत करके सोंठ हल्दी के वजन के बराबर मिश्री मिलाकर एक शीशी में रख लेवें। प्रातः सायं नीम गर्म पानी (गुनगुने उष्ण जल) से कम सेकम ४१ दिन सेवन करें। २॥ से ३ साल के पुराने वात रोगियों पर परीक्षित है।

(२) कम सुनने या ऊंचा सुनने वालों के लिए लहसुन को तिल तैल में जला दें। तेल को निथार कर अथवा छान कर शीशी में भर लें। २ से ५ बून्द तक कानों में तब तक व्यवहार करना चाहिये जब तक रोग न समाप्त हो। लाभ दो हफ्ते बाद ज्ञात होगा।

(३) फसलीबुखार, जुखाम, सर्दी में लौंग, काली मिर्च, सोंठ, छोटी इलायची, दालचीनी और तुलसी पत्र को चाय के पानी की तरह उबालें। उसमें रुचि अनुसार चाय चीनी दूध मिलाकर व्यवहार करें, परीक्षित है।

—श्री रामरतन गुप्ता वैद्य, घुघली (गोरखपुर)

बहु परीक्षित दो प्रयोग

शिवमोदकम्—हर्रा, भूआंवला, शुलफा, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, केवांच बीज, आंवला, बेलगिरी, लौंग, मुरामांसी, भौरी, जटामांसी (बालछड़), भूमि कूष्माण्ड, सोंठ, अनन्तमूल, आमलकी, नागेश्वर, मैथी, चन्द्रसुर, श्यामलता, ब्रह्मझाटी, गजपीपली, घुड़बच, तेजपत्र, इलायची, कालाजीरा, अजवायन, चन्दन, रक्त चन्दन, मूसली, असगन्ध, गोखरू बीज—इन सब द्रव्यों को समभाग में तौल कर खरल में अच्छी तरह कूट के कपड़छन चूर्ण करलें। चूर्ण जितना हो उतनी ही द्राक्षा और चीनी मिला लें। तत्पश्चात् खरल में डालकर खूब पीस कर कांच के जार में रखिये। इसकी मात्रा १ महीने के शिशु के लिये १ रत्ती, इस प्रकार हर महीना १-१ रत्ती बढ़ाकर १ वर्ष के शिशु को १ माशा मात्रा में सवेरे शाम को दूध या जल के साथ देवें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयोग—बालशोष, कास, श्वास, मंदाग्नि, कब्ज, दुबलापन, अतिसार, रोगों के बाद की दुर्बलता, बुद्धिहीनता, इत्यादि बालरोगों पर अमृत तुल्य दवा है। इस औषधिको नवजात बच्चों को नियमित सेवन कराने से बच्चे रोगरहित होकर तन्दुरुस्त सबल तथा धीमान् बनते हैं।

बालामृत वटी—रस सिन्दूर, अभ्रक भस्म, घुड़बच, इलायची, नागेश्वर, जायफल, सोंठ, पीपली, काली मिर्च, जीरा, जायपत्री, तेजपत्र, लौंग, बिडङ्ग, कूठ, काकड़ाश्रृङ्गी, अशगन्ध, अजमोदा, हर चीज को समभाग में लेकर कूट कपड़छन चूर्ण कर लेवें। उसके बाद चूर्ण का अर्ध भाग रसपर्पटी दें। तत् पश्चात् खरल में डालकर शीतल जल डालकर खूब पीसकर मूंग के बराबर वटी प्रस्तुत करलें।

प्रयोग—वमन, अतिसार, वातरोग, कास, श्वास, हिक्का, कण्ठरोग, तृष्णा, छर्दि, अरोचक, मदाग्नि, ग्रहदोष, जल रोग, क्षीर दोष, इत्यादि रोगों में विविध अनुपान के साथ प्रयोग करें। शिशुओं के पतला झाले पर इस वटी को भुने काला जीरे चूर्ण अनुपान से थोड़ा मधु मिलाकर सेवन कराने से १-२ मात्रा में आरोग्य मिलता है। नवजात शिशु को नियमित मातृ दुग्ध में सेवन कराने से बालक चुस्त सबल तथा निरोग रहता है।

—कविराज श्री जीवानन्द साहु
कवि. श्रुत सेवाश्रम, भातबिड़ा
लेविड़ी, (सोहेला) जिला सम्बलपुर

मेरे प्रयोग

मूर्छा रोग—ब्राह्मी की ताजी पत्ती का रस ६ माशे, बच का चूर्ण १ माशा, कुलंजन का चूर्ण १ माशा, शहद ३ माशा, घी ६ माशा सबको मिलाकर चटावें, यह १ मात्रा है। दिन में ऐसी दो मात्रा दें। एक प्रातः एक सायंकाल।

गुण—इसके प्रयोग से मूर्छा, अपस्मार, चित्त भ्रम, दिमाग की कमजोरी दूर होती है तथा बुद्धि बढ़ती है। अगर इस प्रयोग के साथ निम्न तेल का प्रयोग करें तो और शीघ्र लाभ होगा—

ब्राह्मी तेल—ब्राह्मी की ताजी पत्ती का रस २० तोला, काले तिल का तेल १० तोला, पिसी हुई ब्राह्मी की सूखी पत्ती २ तोला, गाय का दूध २० तोला, जल २० तोला सब को मिलाकर पकावें। तेल मात्र शेष रहने पर छान कर शीशी में भर लें। इस तेल की मस्तक पर मालिश करें।

गुण—मूर्छा, दौरे आना, वात विकार तथा बालकों का सूखा रोग भी दूर होता है।

अपस्मार रोग—ब्रह्म दंडी का स्वरस मिश्री मिला कर पीवें तो अपस्मार रोग दूर होता है। अथवा—

ब्रह्म दंडी को घोटकर खांड़ तथा दूध मिलाकर पीने से अपस्मार रोग दूर होता है।

शीतपित्त—(१) शुद्ध गंधक को भांगरे के रस से सात भावना देकर २ रत्ती की मात्रा में शहद से सेवन करें तो शीतपित्त दूर हो।

(२) बादाम के छिलके का धुंआं देने से भी शीतपित्त ठीक हो जाता है।

मुख रोग—मीठे बादाम के छिलके की भस्म, जली सुपारी, बबूल का गोंद समान भाग लेकर कूट पीस कर चूर्ण करें फिर दालचीनी का तेल भी समान भाग डाल दें। इस मंजन के करने से दांतों के सब प्रकार के रोग, दांतों से खून बहना, मसूढ़ों की सूजन, पायरिया आदि रोग दूर होते हैं।

शिरो रोग—बादाम की गिरी तथा खशखश (पोस्त के दाने) समान भाग लेकर दोनों के बराबर खांड़ मिला कर कूट कर रख लें। आवश्यकतानुसार दूध में सेवन करें, यह दिमाग के कफ (रेशे) को सुखाकर बल देता है, बुद्धि को बढ़ाता है तथा पुराने सिर दर्द को ठीक करता है।

बालआध्मान पर—बादाम गिरी दस ग्राम, शुद्ध जयपाल तीन ग्राम, सड़ा खोपरा तीन ग्राम तीनों को पीस कर बाजरे प्रमाण की गोलियां बना लें। एक गोली ताजी पानी में घोलकर पिलावें।

इससे बालक को वमन विरेचन होकर उदर की शुद्धी होगी। इसके बाद एक-दो बताशे थोड़े पानी में घोल कर पिला दें। इससे चित्त की घबराहट व तृषा आदि उपद्रव शांत होंगे। इसके प्रयोग से बालक का पसली रोग भयंकर डबल निमोनियां भी तुरन्त शान्त होता है।

वीर्य स्तम्भक—बादाम की गिरी व खशखश (पोस्त के दाने) के बीज समान भाग लेकर बड़ के दूध की भावना देकर गोलियां बना लें और दूध से सेवन करें।

—श्री डा० गेबी अली आर. एम. पी. आयुर्वेदरत्न
शरीफ मोहम्मदी दवाखाना, आकली दीवान
पोस्ट—खजूरी पंथ (मंदसौर) म० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यालोचन

रामानुभव मंजूषा (सिद्ध भेषज संग्रह)

यह पुस्तक श्री पण्डित रामप्रसाद जी दीक्षित वैद्य द्वारा लिखी गई है जिसे श्री धन्वन्तरि आयुर्वेद फार्मेसी प्रकाशन सरदार शहर (राजस्थान) ने प्रकाशित कर मूल्य ५.०० रखा है जो कि उचित जान पड़ता है।

लगभग २०० पृष्ठ की इस पुस्तक में लेखक ने अपने घराने के परम्परागत् और अपने स्वयं के अनुभव सिद्ध अनुभूत योगों को अकारादि क्रम से बड़े सुन्दर ढङ्ग से दिया है।

मैंने अधिकांश योगों का मनन कर पाया कि वे जिस रोग पर लिखे गये हैं निश्चय ही प्रभावकारी हैं क्योंकि उन योगों में जिन द्रव्यों को लिया गया है वे सब उस रोग के विनाश के लिए स्वयं सिद्ध हैं। ऐसे उत्तमोत्तम परम्परागत गुप्त सिद्ध योगों को जनता के लाभार्थ प्रकाशित कर देने के लिए मैं लेखक महोदय को श्रद्धा के साथ धन्यवाद देते हुये इस पुस्तक का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार हो ऐसी कामना करता हूं।

मद्य निषेध विशेषांक

यह उक्त विशेषांक 'आरोग्य' मासिक अगस्त ६८ माह का अङ्क है जो श्री बिठ्लदास मोदी के संपादकत्व में आरोग्य मन्दिर गोरखपुर से प्रकाशित हुआ है। इस मासिक का वार्षिक मूल्य ६.०० और एक प्रति का ०.५० पैसे है।

इस उक्त अंक में मद्य (शराब) के सेवन से क्या-क्या हानियां, दुष्परिणाम होते देखे गये हैं और हो सकते हैं इस पर देश विदेश के मान्य कर्णधारों, विद्वानों, सन्त महात्माओं के लेखों व बचनों का अतिसुन्दर मननीय और प्रभावशाली सङ्कलन प्रकाशित किया गया है।

चूंकि हमारी राष्ट्रीय नीति मद्य-निषेध के प्रबल पक्ष में है। अस्तु इस अङ्क का राष्ट्र में अधिक से अधिक प्रसार व प्रचार होना अत्यन्त लाभकारी होगा। मंगाने का पता है—

—व्यवस्थापक, आरोग्य मन्दिर गोरखपुर (उ० प्र०)

हम ऐसे सामयिक, राष्ट्रीय नीति प्रतिपादित समाजहितकारी प्रकाशन के के लिये श्रद्धा के साथ सम्पादक महोदय का अभिनन्दन करते हैं और चाहते हैं इस अङ्क का अधिक से अधिक प्रसार हो।

हिंगु या हींग

यह उक्त पुस्तक आचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी भूतपूर्व 'आयुर्वेद निदेशक' मध्य प्रदेश द्वारा प्रणीत होकर फर्म श्री भजनलाल कुंजलाल हींग वाले लोहट बाजार हाथरस यू०पी० द्वारा प्रकाशित हुई है। मूल्य ०.२५ पैसे रखा गया है जोकि उचित है।

इस पुस्तक में आचार्य श्रेष्ठ ने हींग के विभिन्न भाषाओं के नाम, उसके भेद, प्राप्ति स्थल, प्राप्त करने की रीति, उसके गुण, धर्म और शोधन आदि पर उपयोगी प्रकाश डाला है।

अन्त में मात्रा प्रयोगादि देकर इस पुस्तक को केवल वैद्यों के लिये ही नहीं बल्कि सद् ग्रहस्थों के लिये भी उपकारी बना दिया है। आशा है कि वैद्यों के साथ ही साथ साधारण जनता भी इस पुस्तक को अपना कर उचित लाभ प्राप्त करेगी क्योंकि इसमें उत्तम शुद्ध हींग प्राप्त करने के स्थल के साथ ही साथ उसके उपयोग भी यथा स्थान उत्तम ढंग से वर्णित है। हम इस सद् प्रयास की सफलता चाहते हैं।

—श्री अम्बिका प्रसाद प्रवक्ता विद्यावाचस्पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-विधान प्रश्नोत्तर

"धन्वन्तरि" के पाठकों के द्वारा अनेक प्रश्न विधि-विधान विषयक हमसे किये जाते हैं लेकिन हम उन प्रश्नों का समुचित उत्तर नहीं दे पाते। अब पाक्षिक 'आयुर्वेद-संदेश' के प्रधान सम्पादक एवं अखिल भारतीय पत्रकार संघ के सभापति तथा आयुर्वेद जगत के जाने माने विद्वान राजवैद्य पं० सुरेन्द्रनाथ जी दीक्षित ने इन प्रश्नों का उत्तर देना स्वीकार कर लिया है। अब ऐसे प्रश्नों को जिनके उत्तर अन्य पाठकों के लिये भी ज्ञानवर्धक समझे जायेंगे हम श्री दीक्षित जी की सेवा में प्रेषित करते रहेंगे तथा उनके द्वारा जो उत्तर हमको मिलेंगे धन्वन्तरि में प्रकाशित करेंगे। इस प्रकार धन्वन्तरि के पाठकों की समस्याओं का समाधान हो सकेगा।

—सम्पादक।

प्रश्न नं० १—उ० प्र० भारतीय चिकित्सा परिषद की [नियम]ावली कहां से मिल सकती है? यदि इसका हिन्दी [अनुव]ाद मिल सके तो सर्वोत्तम होगा।

उत्तर— उ० प्र० भारतीय चिकित्सा परिषद की [नियम]ावली कोई नहीं है। इण्डियन मेडिसन एक्ट १० [सन् १]९३९ संशोधित सन् १९५६ के द्वारा बोर्ड का [गठ]न होता है। इसका हिन्दी अनुवाद सन् १९३९ में [गवर्नमे]ंट प्रेस में छपा था जोकि समाप्त होगया। उसके [बाद स]न् १९५६ तक कई बार इस कानून में संशोधन [हुए।] संशोधित कानून का हिन्दी अनुवाद सरकार ने [छापा] नहीं। सुपरिटेण्डेण्ट गवर्नमेण्ट प्रेस (विक्रय विभाग) [इलाह]ाबाद को १.२० भेजकर अंग्रेजी भाषा में कानून की [प्रति] उपलब्ध हो सकती है। यदि हिन्दी की आवश्य-[कता] हो तो "आयुर्वेद सन्देश" नामक पाक्षिक पत्र का [विशेषा]ंक "विधि विधानांक प्रथम भाग" सम्पादक आयु-[र्वेद सं]देश लखनऊ–३ को पत्र लिखकर मंगा लेना चाहिये। [इसमें] टिप्पणी सहित इण्डियन मेडिसिन एक्ट का हिन्दी [अनुवा]द तथा उससे सम्बन्धित वैद्य समाज के लिये उप-[योगी] सरकारी आदेश भी प्रकाशित किये गये हैं।

प्रश्न नं० २—अन्य प्रांत के रजिस्टर्ड वैद्य उ०प्र० में [चिकि]त्सा करना चाहें तो उन्हें उ० प्र० से रजिस्ट्री करानी [होगी य]ा नहीं? अन्य प्रांतों में जिनका रजिस्ट्रेशन अनु-[भव] के आधार पर किया गया है तो यहां उनका रजिस्ट्रेशन हो सकेगा या नहीं। हो सकेगा तो किस प्रकार?

उत्तर—किसी प्रांत से रजिस्टर्ड वैद्य को दूसरे प्रांत में जाने पर उसे उस प्रांत में रजिस्ट्रेशन करवाना अनिवार्य है। यदि बिहार या राजस्थान अथवा पंजाब का रजिस्टर्ड वैद्य उ. प्र. में चिकित्सा करता है अथवा उ० प्र० का रजिस्टर्ड वैद्य राजस्थान या बिहार चला जाता है तो पता चलने पर रजिस्ट्रार को अधिकार है कि वह उसका नाम रजिस्टर्ड वैद्यों की सूची से पृथक कर दे। साथ ही उस प्रदेश में तो वह जब तक रजिस्ट्रेशन नहीं करा लेता है तब तक उस प्रदेश के अधिकारों का उपयोग करने का उसको अधिकार ही क्या है? जैसे बिहार-राजस्थान या पंजाब के रजिस्टर्ड वैद्य यदि उ० प्र० में चिकित्सा करते हैं तो पहिला प्रश्न उपस्थित होता है कि आपने यदि उन प्रदेशों को छोड़ दिया है तो क्या आपने वहां के रजिस्ट्रार को सूचित कर दिया है, यदि नहीं तो क्यों? और यदि सूचित कर दिया है तो फिर आप अपने को रजिस्टर्ड कैसे कहते हैं? क्योंकि नियमानुसार तो रजिस्टर से आपका नाम खारिज कर दिया गया होगा।

दूसरी बात यह है कि उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन एक्ट द्वारा अथवा उ० प्र० सरकार द्वारा जो भी अधिकार रजिस्टर्ड वैद्य-हकीमों को दिये गये हैं वह केवल उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड द्वारा रजिस्टर्ड वैद्यों के लिये ही हैं न कि समस्त प्रांतों के रजिस्टर्ड वैद्यों के लिये हैं। ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिति में दूसरे प्रदेश के रजिस्टर्ड वैद्य यदि एलोपैथी की औषधियां और ड्रग्स का उपयोग करते हैं तो उनका चालान ड्रग्स एक्ट के अनुसार हो सकता है। साथ ही यदि ऐसे व्यक्ति मेडिकल या फिटनैस् प्रमाण पत्र देते हैं तो धारा ४२० के अन्तर्गत दर्ज करके जालसाजी का मुकदमा उन पर आसानी से चलाया जा सकता है।

तीसरी बात है ऐसे लोगों के इस प्रदेश में रजिस्ट्रेशन की ? इस दशा में यह स्मरणीय है कि उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन एक्ट में संशोधन कर १३ फरवरी सन् १९५६ से सरकार ने कानून से धारा ४ (जिसमें प्राचीन अनुभवी वैद्यों का रजिस्ट्रेशन होता था) एकदम निकाल दी है, तो फिर अब उसके खुलने बन्द होने अथवा उसमें रजिस्टर्ड होजाने या कर लेने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता है।

वर्तमान में शिड्यूल का पैरा १-२-३ रजिस्ट्रेशन के लिए लागू है। पैरा १ किसी विश्वविद्यालय की आयुर्वेदिक फेकल्टी के स्नातक अथवा गवर्नमेन्ट आयुर्वेदिक कालेज जिनका संचालन सरकार स्वयं करती हो और परीक्षा लेने तथा उपाधि देने की भी व्यवस्था करती है। ऐसे स्नातकों का रजिस्ट्रेशन पैरा १ में होता है।

पैरा २–इसमें केवल उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड से सम्बन्धित आयुर्वेद एवं यूनानी के कालेजों से उत्तीर्ण छात्रों का ही रजिस्ट्रेशन होता है।

पैरा ३–नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ देहली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन, गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय ज्वालापुर तथा उ० प्र० के बाहर किसी भी आयुर्वेदिक कालेज से निकले हुए छात्र जिन्हें उस प्रदेश के इण्डियन मेडिसिन बोर्ड या फेकल्टी ने मान्यता दी हो, इस प्रदेश में पैरा ३ में रजिस्ट्रेशन किए जाते हैं।

प्रश्न नं० ३—रजिस्ट्रेशन के लिए किस किस संस्था की कौन कौन सी उपाधियां मान्य हैं ?

उत्तर—नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ देहली से आयुर्वेद भिषग, वैद्य विशारद, आयुर्वेद विशारद; तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन से वैद्य विशारद परीक्षा पास स्नातक परीक्षा पास करने के दो साल बाद किसी वैद्य का कार्याभ्यास सम्बन्धी प्रमाण पत्र उपस्थित करने पर तथा २१ वर्ष की आयु पूर्ण होजाने पर रजिस्टर्ड किये जाते हैं। साथ ही नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ देहली की आयुर्वेदाचार्य व वैद्याचार्य परीक्षा पास एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन की आयुर्वेदरत्न परीक्षा पास होने का प्रमाणपत्र उपस्थित करने पर २०.०० फीस देकर अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय ज्वालापुर की आयुर्वेद भास्कर जिसमें B. A. M. S. न लिखा हो। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन जि. मथुरा की आयुर्वेद शिरोमणि जिसमें B. O. M. S. या अन्य कोई अंग्रेजी अक्षर न लिखे गए हों तो पैरा ३ में रजिस्टर्ड हो सकते हैं। उक्त संस्थाओं की जिन उपाधियों में अंग्रेजी अक्षर लिख दिये गये हैं वे उपाधियां उक्त संस्थाओं की उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड से मान्य नहीं हैं।

बाकी वे समस्त उपाधियां जिन्हें किसी भी प्रदेश के इण्डियन मेडिसिन बोर्ड या आयुर्वेदिक यूनानी फेकल्टियों ने दिया हो वे सब पैरा ३ के अन्तर्गत रजिस्ट्रेशन के लिये मान्य हैं।

आवश्यक सूचना—नि. भा. आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेद भिषग या वैद्य विशारद तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की परीक्षाओं का अधिक दिनों तक मान्य रहना संभव नहीं है, इसलिए जिसको परीक्षा पास किए दो साल पूरे होगए हैं अथवा धारा ४ में रजिस्टर्ड वैद्यों ने यदि कोई उपर्युक्त उपाधियां प्राप्त करली हों तो उन्हें शीघ्राति शीघ्र २०.०० भेजकर अपना रजिस्ट्रेशन करा लेना चाहिए।

उ० प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड ने निश्चय किया है कि जिनकी प्रवेश योग्यता हाईस्कूल नहीं होगी, या जिन संस्थाओं का पाठ्यक्रम ४ वर्षों का नहीं होगा अथवा जिन संस्थाओं में विधिवत् क्रियात्मक शिक्षा नहीं दी जाती होगी भविष्य में उनके स्नातकों का रजिस्ट्रेशन नहीं हुआ करेगा। इस निश्चय के क्रियान्वित होते ही उन संस्थाओं के स्नातकों का रजिस्ट्रेशन बन्द कर दिया जायगा।

नोट—उ० उ० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड से रजिस्ट्रेशन का आवेदन पत्र मांगने के लिए रजिस्ट्रार उ०प्र० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड धन्वन्तरि भवन, ७–लालबाग, लखनऊ के पते से लिखा पढ़ी करनी चाहिये।

—श्री पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित सभापति
अ० भा० आयुर्वेद पत्रकार संघ
त्रिवेणीगंज (नौबस्ता) लखनऊ-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य आयुर्वेदाचार्य एच.पी.ए. मेडिसिन (जाम.)

प्रश्न—एक रुग्णा, उम्र ५० वर्ष गत दो वर्षों से पीड़ित है, डाक्टरों की राय से 'हाईब्लड प्रेशर' है सभी प्रकार की चिकित्सा कराकर थक चुके हैं अब निम्न लक्षण हैं—चक्कर आते हैं, नेत्रों के सामने सब कुछ घूमता एवं धुंधला नजर आता है,तुरन्त पश्चात् तीव्र वमन होती १५-२० तक, इससे दो दिन तक थकावट बनी रहती है । इस अवस्था में सुनना भी कम होजाता है । बीमारी की यह स्थिति १५-२० दिन के अन्तर से बनती है । एक दो दिन पूर्व से लक्षणों का आभास होने लग जाता है, दौरे के समय सर्वाङ्ग शरीर से तीव्र वेदना तथा पसीना निकलता है । कृपया बीमारी का नाम एवं कोई सफल सहज औषधि चिकित्सा लिखें ?

—बाला बरनवाल वैद्य ध. ग्रा. १५५४२
पो० मदनपुर (नरसिंहपुर) म. प्र.

उत्तर—इस रुग्णा के लक्षण मिले जुले हैं, आपने शरीरसौष्ठव तथा निद्रा, क्षुधा तथा पारवारिक स्थिति के विषय में कोई जिक्र नहीं किया है फिर भी सामान्यतया देखने पर यह 'अपस्मार' नामक रोग ही सम्भव है लक्षण इसके अपस्मार से मिलते जुलते हैं (हृत्कम्पः शून्यता स्वेदो ध्यानं मूर्च्छा प्रमूढता । निद्रानाशश्च तस्मिंश्च भविष्यति भवत्यथ ।।) इन लक्षणों के साथ साथ वातिक लक्षण भी दृष्टिगत आते हैं। इस प्रकार की चिकित्सा लाभप्रद साबित हो सकेगी—धन्वन्तरि स्मृति सागर २ रत्ती, धन्वन्तरि मृतशेखर रस २ रत्ती, धन्वन्तरि मुक्ता भस्म १/२ रत्ती (यह एक मात्रा है) ऐसी तीन मात्रा प्रातः ८ बजे, दोपहर में ४ बजे और रात्रि में १० बजे । ब्राह्मी रसायन १½ तोला, द्राक्षावलेह १½ तोला के साथ दीजिये, भोजन से पूर्व द्राक्षारिष्ट २ तोला जल मिला कर दीजिये । नारायण तैल का अभ्यङ्ग भी शिर पर, हस्ततल, पादतल पर कीजिये, मौसम के फलों का रस या फल भी दीजिये जिस कारण से दौरा होता है, उससे रोगी को बचाने का प्रयास कीजिये ।

प्रश्न—मेरा लड़का जो लगभग १५ वर्ष का है, हकलाना (स्टैमरिङ्ग) रोग से पीड़ित है। बात करने में उसे कठिनाई होती है । किसी शब्द पर जबान रुकी तो कठिनता से आगे बढ़ पाती है, औषधियां वी.पी. पी. से सभी मंगवा सकता हूं कृपया उपचार लिखें ?

नरेन्द्रनाथ बसु, चीफ केमिस्ट, सिसवा बाजार
(गोरखपुर) यू० पी०

उत्तर—औषधियां आप चाहें तो धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़) से मंगा सकते हैं, स्मृति सागर २ रत्ती, वाक्शुद्धि कर चूर्ण १ माशा (बचा, ब्राह्मी, धान्यक, कुष्ठ, शुण्ठी सभी को बराबर लेकर पीसकर चूर्ण बनालें) वृहत् वात चिन्तामणि रस ½ रत्ती, ऐसी दो मात्रा द्राक्षावलेह अथवा घृत+मिश्री के अनुपान से प्रातः तथा सायं दीजिये । दोपहर में वाक् शुद्धिकर चूर्ण शहद में मिलाकर जिह्वा पर लगा दीजिये । इससे जिह्वा पर असर होगा । अल्प औषधियां भी नाड़ी मण्डल को शक्ति प्रदान करेंगी । औषधि सेवन लम्बे समय तक यानी कई मास तक चलेगी । बादाम भी खिला सकते हैं ।

प्रश्न—मेरे एक साथी की शादी हुए १० वर्ष हो चुके हैं, अभी तक कोई बाल बच्चा नहीं हुआ है । तंदु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थी अच्छी है, अधिक गर्मी तथा गर्म पदार्थों के सेवन से मूत्र में जलन होती है, और कोई दुःख दर्द नहीं है, डाक्टर की सलाह से दवाई ली, लाभ नहीं है, कृपया ऐसा योग बतलाइये, जिससे गर्भ धारण हो जावे ?

—कादर बख्श यासीन मोहम्मद मंसूरी,
भावता (झालावाड़) राज०

उत्तर—आपने प्रश्न में बातों को स्पष्ट ही नहीं किया—उम्र, शरीर की बनावट, खान-पान, व्यसन, स्त्री-पुरुष की शारीरिक शक्ति पर कोई बात नहीं लिखी। निकट के किसी वैद्य से सलाह लीजिए अथवा आपके मित्र को ६ मास तक च्यवनप्राशावलेह २ तोला प्रातः सायम्, दो मात्रा लेकर ऊपर से दूध पीना चाहिए। मादक पदार्थों का यदि सेवन करते हों तो छोड़ने का प्रयास कीजिए। मित्र की पत्नी को ६ मास तक फलघृत १½ तोला प्रातःसायम् दो मात्रा, दूध के साथ या भोजन में दीजिये, स्त्री पुरुष औषधि सेवन काल में संयम से रहने का प्रयास करें। आप चाहें तो पूर्ण विवरण मुझे भेज सकते हैं।

प्रश्न—मेरे पिताजी की उम्र ६३ वर्ष है। गत वर्ष माघ मास में उन्हें सन्निपात हुआ ठीक होने पर उन्हें पुनः ठंडक लगकर दायें फेफड़े में शोथ हो गया, उन्हें एलोपैथिक दवा से लाभ हुआ, उपरान्त उन्हें चलने में चक्कर आता है सायं चक्कर अधिक आते हैं—कभी कभी कब्ज रहती है, डाक्टरों की अलग अलग राय हैं, सम्प्रति चश्मा और कुछ आयुर्वेदिक औषधियां चल रही हैं, जो प्रायः लाभ भी कर रही हैं, दस वर्ष पूर्व भी उन्हें एक बार ऐसा ही रोग हुआ था, उचित उत्तर देकर अनुगृहीत कीजिए ?

—रामनरेशकुमार मिश्र वैद्य, पो० चन्दा (गया)

उत्तर—आप जो औषधियां दे रहे हैं तथा लाभ भी प्रतीत होता है, तब क्यों नहीं इसी औषधि को ही सेवन कराते रहिएगा। मेरी दृष्टि से, यदि आपको जंचे तो इस व्यवस्था को प्रारम्भ कर दीजिए—बृहत्वातचिन्तामणि रस १ रत्ती, अश्वगंधा चूर्ण १ मात्रा—ऐसी दो मात्रा च्यवनप्राशावलेह+ब्राह्मरसायन २ तोला के साथ सेवन कराइए। दूध या चाय जो प्रकृति के अनुकूल हो ऊपर से ले सकते हैं। नारायण तैल की मालिश शरीर पर, विशेष कर तालु प्रदेश पर कीजिये, कब्ज के लिए भोजनोत्तर द्राक्षारिष्ट २॥ तोला, समान जल मिलाकर अथवा चित्रकादि वटी ४ चूसने के लिए दीजिए। स्वास्थ्य यदि ठीक है, तो इच्छानुसार तथा शक्ति के अनुसार प्रातः घूमकर भी आ सकते हैं।

—आचार्य कृष्णदत्त शर्मा वैद्य
पो० गणेशगढ़
जिला—श्री गंगानगर (राजस्थान)

पाठकों के प्रश्न

१—उड़ीसा में होने वाली (हिंगुचा) बूटी तथा काश्मीर में होने वाली (मदुरा बूटी) के विषय में पूरी जानकारी देते हुए यह भी बतायें कि ये कहां से कैसे प्राप्त हो सकेंगी ?

२—जुलाई ६७ के कल्याण में श्री स्वामी चिदानन्द सरस्वती के अवसान के विवरण में यह उल्लेख है कि मृत्यु के कुछ समय पूर्व उनके मल मूत्र में चन्दन की सुवास आती थी ?

कृपया शारीरिक विज्ञान की दृष्टि से यह कैसे संभव हो सकता है इसे कोई सज्जन प्रमाणित करने की कृपा करें।

—संपादक

भूल-सुधार

माह जुलाई ६८ के अङ्क में विषधर सर्प की सफल चिकित्सा नामक लेख में एक औषधि धन्वन्तरि वनौषधि विशेषांक चतुर्थ भाग की दी गई है। जिसमें पृष्ठ नम्बर २६० के स्थान में ४६० छप गया है। कृपया ग्राहक गण सुधार कर पढ़ें।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार एवं सूचनाएं

आयुर्वेद भवन में आयुर्वेद निदेशालय

उ० प्रदेश आयुर्वेद सेवा निदेशक आयुर्वेदाचार्य श्री मुकन्दीलाल जी द्विवेदी का आयुर्वेद निदेशालय विक्रमादित्य मार्ग बंदरिया बाग से हटकर दिनांक २ सितम्बर से उत्तर प्रदेश इण्डियन मेडीसिन बोर्ड के आयुर्वेद भवन सरोजनी नायडू रोड पर गोपाल खेड़ा हाउस में स्थापित होगया है। अतः वैद्यगण भविष्य में विक्रमादित्य मार्ग के पते पर पत्र व्यवहार न करके "निदेशक आयुर्वेद, उत्तर प्रदेश, आयुर्वेद भवन, ३२-सरोजनी नायडू रोड, लखनऊ-१" के पते से ही पत्र व्यवहार करें।

आयुर्वेद को प्रोत्साहन

बंगीय आयुर्वेदिक चिकित्सक महासम्मेलन का इसी तारीख १६ अगस्त को उद्घाटन करते हुए राज्यपाल श्री धर्मवीर के इस कथन का स्वागत किया जाना चाहिए कि राज्य सरकार आयुर्वेदिक चिकित्सालय खोलने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोगियों के मुफ्त इलाज के लिए चिकित्सकों को राजवृत्ति देने पर विचार कर रही है। राज्यपाल ने चिकित्सा की इस प्राचीन प्रणाली के विकास की आवश्यकता पर ठीक ही जोर दिया है लेकिन साथ ही साथ विशुद्ध आयुर्वेदिक खाद्यों को तैयार करने की भी व्यवस्था होनी चाहिये। इसमें सन्देह नहीं कि आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली ही हमारे देश और काल के अनुकूल है लेकिन नीम हकीमी से इस प्रणाली का समुचित लाभ नहीं उठाया जा सकता। आधुनिकतम वैज्ञानिक पद्धति अपनायी जाय तो आयुर्वेद अन्य किसी भी प्रणाली से ज्यादा कारगर होगा।

—श्री बल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश'

श्री द्वारकानाथजी सेन की जयन्ती

सरदारशहर-दिनांक ३१-८-६८ को भारत के यशस्वी प्राणाचार्य महामहोपाध्याय श्री द्वारकानाथ जी सेन की १२५ वीं जन्म तिथि के अवसर पर श्री भंवरलाल दूगड़ आयुर्वेद विश्वभारती के सभी अध्यापकों, कार्यकर्ताओं एवं छात्रों ने जयन्ती समारोह बड़े उल्लास के साथ मनाया।

महामहोपाध्याय जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए विद्वान वक्ताओं एवं इतिहास वेता छात्रों में उनके विशिष्ट गुणों का दिग्दर्शन कराते हुए भारतीय वैद्य समाज को उनका अनुकरण करने की मांग की।

संस्था के प्राचार्य वैद्य श्री सोहनलाल शर्मा ने बताया कि आयुर्वेदीय इतिहास में भूतपूर्व विद्वानों की जयन्तियों के मनाने का श्रीगणेश होना आयुर्वेद के हित में एक शुभारम्भ है।

—प्राचार्य

आयुर्वेद रत्न का चिकित्सक संघ

रायपुर-वैद्य ब्रजमोहन शर्मा आयुर्वेदरत्न के संयोजन में "म. प्र. आयुर्वेदरत्न स्नातक चिकित्सा संघ" का गठन किया गया है। मध्यप्रदेश के समस्त आयुर्वेदरत्न चिकित्सकों से निवेदन है कि अपने हितों की रक्षा हेतु संगठित हों। निम्नलिखित पते पर सम्पर्क स्थापित करें—

—श्री वैद्य बृजमोहन शर्मा संयोजक
मध्यप्रदेश आयुर्वेदरत्न स्नातक चिकित्सा संघ
मालवीय रोड, रायपुर (म. प्र.)

सूचना

अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन आयुर्वेद स्नातक संघ उत्तर प्रदेश शाखा की ओर से सूचित किया जाता है कि इस उत्तर प्रादेशिक शाखा की त्रिदिवसीय बैठक प्रसिद्ध कस्बा सराय आकिल में दिसम्बर मास के आखिरी सप्ताह में यानी दिनांक २७, २८, २६ सन् १६६८ को होने जा रही है। सभी उत्तर प्रदेश जिला संगठन सचिवों व आयुर्वेदीय प्रेमियों को सूचित किया जा रहा है कि उक्त तिथि पर आकर सम्मेलन की कार्यवाही का स्वागत करें और प्रदेश शाखा की कार्य प्रणाली की रूपरेखा पर विचार विमर्श करें।

—संगठन सचिव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पं० छांगाणी का स्वागत

निखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ के महामंत्री वैद्यराज पं० शिवकरण जी छांगाणी आयुर्वेदाचार्य के उज्जैन आगमन पर श्री अवन्तिका देशी चिकित्सक मंडल द्वारा दिनांक २५-८-६८ को स्वागत् समारोह का आयोजन किया गया। श्री अवन्तिका देशी चिकित्सक मंडल म० प्र० आयुर्वेदिक मंडल, श्री अवन्तिका आयुर्वेद महाविद्यालय फार्मेसी, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, श्री कल्याण आयुर्वेद भवन आदि संस्थाओं के द्वारा पुष्प मालायें पहिनायीं गयीं।

प्रान्तीय मंडल के अध्यक्ष प्राचार्य पं० वासुदेव शास्त्री ने परिचयात्मक भाषण दिया। पं० छांगाणी जी ने आयुर्वेदिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रस्तावित क्रांतिकारी परिवर्तनों पर विस्तार से प्रकाश डाला। सभा की कार्यवाही डा० कमलसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। डा० पिन्डावाला द्वारा अन्त में आभार प्रदर्शन किया गया।

—प्रचार मंत्री

लोअर बाजार सावड़ा

दिनांक ८-९-६८ को आयुर्वेद मंडल अपर महासू की बैठक सावड़ामें डा अमरसिंह थापा नैपाली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें स्वास्थ्य मंत्री की सेवा में एक पत्र भेजना जिसमें रजिस्ट्रेशन बिल पास होने की प्रसन्नता प्रकट करने का स्वीकृत हुआ और शीघ्र ही रजिस्ट्रेशन बोर्ड बठाने की मांग की गई। इसी प्रकार का एक पत्र हैल्थ डाइरेक्टर हिमाचल प्रदेश की सेवा में भी भेजना स्वीकृत हुआ।

—प्रधान

विश्वनाथ द्विवेदी वाराणसी में

आयुर्वेद शास्त्राचार्य पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी जामनगर के स्नातकोत्तर प्रशिक्षण केन्द्र एवं आयुर्वेदिक अनुसंधानशाला के डाइरेक्टर के पद से रिटायर्ड होगए। प्रसन्नता की बात है कि वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय में वे प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किए गए हैं और इसी ७ सितम्बर को वे अपने नवीन पद का भार ग्रहण कर लेंगे।

समाचार-सार संग्रह

कविराज पुरुषोत्तमदेव मुलतानी

उत्तर-प्रदेश के राज्यपाल ने आन्ध्र-प्रदेश राजकीय आयुर्वेद रसायनशाला के अधीक्षक कविराज पुरुषोत्तम देव मुलतानी को ३ वर्ष के लिए उत्तर प्रदेश राजकीय आयुर्वेद यूनानी भेषजशाला लखनऊ की विशेषज्ञ समिति का सदस्य नामजद किया है। कविराज पुरुषोत्तमदेव मुलतानी मद्रास की इन्डियन मैडिकल कोआपरेटिव फार्मेसी लिमिटेड के आन्ध्र प्रदेश राज्य की ओर से मनोनीत डाइरेक्टर भी हैं।

केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान परिषद की कार्य समिति गठित

भारत सरकार के स्वास्थ्य परिवार नियोजन एवं नगर विकास मन्त्रालय ने केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान परिषद की सिफारिश पर परिषद की एक कार्य-समिति गठित की है जिसके अध्यक्ष इस विभाग के सचिव श्री गोविन्द नारायण हैं और सचिव स्वास्थ्य मन्त्रालय के देशी चिकित्सा विभाग के परामर्शदाता डा. श्री पी. एन. वी. कुरुप हैं। संसद सदस्य पं० शिव शर्मा (बम्बई), कविराज आशुतोष मजूमदार (दिल्ली), योजना आयोग के स्वास्थ्यपरामर्श दाता—डा० ए. एस. सेन तथा स्वास्थ्य परिवार एवं नगर विभाग मन्त्रालय के अतिरिक्त वित्तीय सलाहकार श्री जी. ए. सम्पत कार्यसमिति के सदस्य मनोनीत किये गये हैं।

हिमाचल प्रदेश में वैद्यों और हकीमों का रजिस्ट्रेशन

ज्ञात हुआ है कि हिमाचल सरकार आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सकों के रजिस्ट्रेशन के लिये एक बिल तैयार करने जा रही है। ऐसी सूचना सरकार के हेल्थ विभाग के डाइरेक्टर ने एक आयुर्वेदिक संस्था को पत्र नं० ४-१-६७ एम. आई. डी. एच. द्वारा दी है।

विहार में वैद्यों का रजिस्ट्रेशन

पता चला है कि बिहार राज्य में वैद्यों का रजिस्ट्रेशन चालू हैं। बिना उपाधि प्राप्त जो वैद्य १० वर्षों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा करते हैं अपनी चिकित्सा ख्याति एवं चिकित्सा कौशल का प्रमाण-पत्र किसी विधायक, राजमन्त्रित कर्म-चारी, आयुर्वेदिक यूनानी चिकित्सा परिषद या अधिकाय के सदस्य अथवा वैद्य सम्मेलन के पदाधिकारियों से प्राप्त करते हैं। और वे १५ रु० रजिस्ट्रेशन शुल्क के साथ विहित रीति से आवेदन पत्र भर रजिस्ट्रार, बिहार राज्य आयुर्वेद यूनानी, चिकित्सा परिषद पटना—३ के पते पर भेजते हैं, उनका रजिस्ट्रेशन हो जाता है। यह रजिस्ट्रेशन केवल बिहार में चिकित्सा कार्य करने वाले वैद्यों का ही होता है। बिहार से बाहर रहने वाले वैद्यों को यहां रजि-स्ट्रेशन कराने का प्रयास नहीं करना चाहिये।

वैद्य की डिप्टी हेल्थअफसर-पद पर नियुक्ति

दिल्ली नगर निगम में वैद्यों और डाक्टरों के वेतन समान

दिल्ली नगरनिगम की स्टैंडिंग कमेटी ने प्रथम जुलाई १९६६ की प्रस्ताव संख्या १४३५, विषय नं० १५ के अन्तर्गत वैद्यों एवं हकीमों के वेतन स्तर केन्द्रीय स्वा-स्थ्य सेवा (पी. एच. एस.) के डाक्टरों के समान कर दिया गया है। स्वीकृत डिग्री प्राप्त वैद्यों के वेतन का स्तर रु० ३५-२५-५०० ई० बी० ३०-८०० तथा चिकित्सा कार्य न करने का अतिरिक्त स्वीकृत भत्ता।

स्वीकृत डिप्लोमा प्राप्त वैद्यों का वेतन स्तर, रु० २०-१०-२५० ई. बी. १०-२९०-१५-३३५ ई. बी. १५-४८० तथा एन. पी. ए.। इन वैद्यों को दस वर्ष के बाद रु० ३२५-८०० वाला ग्रेड दे दिया जाएगा।

इसके अतिरिक्त दिल्ली नगर निगम के इतिहास में प्रथम बार एक वैद्य की डिप्टी हेल्थ आफिसर के स्थान पर नियुक्ति की जा चुकी है। वर्तमान अधीक्षक महोदय को ही इस स्थान पर विभूषित किया गया है। उनका वेतन स्तर रु० ६७५-३५-८५०-४०-१०५०-५०-१३०० तथा एन. पी. ए. तथा २०० प्रति मास कार एलाउन्स दिया जायगा। फार्मेसी एवं स्टोर के अफसर इन्चार्ज वैद्य का वेतन स्तर रु० ४२५-२५-४५०-३०-६००-३५-७०५ ई. बी. ३५-९५० तथा एन. पी. ए. दिया जायगा।

आयुर्वेदिक अस्पताल बल्लीमारान के अधीक्षक महो-दय का वेतन रु० ४२५-२५-४५०-३०-६००-३५-७०५ ई. बी. ३५-९५० तथा एन. पी. ए. हो जायगा।

—सचित्र आयुर्वेद से साभार

● जयपुर दिनांक २२, २३ अगस्त सन् ६८ को राजस्थान इण्डियन मेडिसिन बोर्ड की बैठक महन्त मुरली मनोहर शरण वैद्य उदयपुर की अध्यक्षता में हुई, जिसमें निर्णय हुआ कि अनुभव के आधार पर वैद्य हकीमों का रजिस्ट्रेशन एवं सूचीबद्धता का कार्य केवल १५ सितम्बर सन् १९६८ तक ही जारी रहेगा, इसके बाद इसे स्थगित कर दिया जायगा।

इस सप्ताह अनुभव के आधार पर लगभग चारसौ अभ्यर्थियों का रजिस्ट्रेशन हेतु साक्षात्कार किया गया। बोर्ड ने एक प्रस्ताव द्वारा आयुर्वेद का एक वृहत् पुस्तका-लय खोले जाने की योजना भी स्वीकार की, साथ ही यह भी निर्णय लिया कि बोर्ड के सदस्यों का भी शीघ्राति-शीघ्र निर्वाचन कराया जाय। बोर्ड के पार्ट टाइम रजि-स्ट्रार श्री रामपाल शास्त्री के स्थान पर शीघ्र पूर्णकालीन रजिस्ट्रार की नियुक्ति के लिये भी विचार किया गया।

● पता चला है कि राजस्थान में अब तक १२ हजार वैद्य, हकीम, धात्री तथा सूचीबद्ध किये चिकित्सकों की संख्या है। बोर्ड के स्थाई कोष में इस समय ९० लाख रुपया है।

● पता चला है कि राजस्थान सरकार ने राणावत आयोग की सिफारिशों को स्वीकार करते हुए आयुर्वेद विभाग के कर्मचारियों के लिये निम्नांकित वेतन मान निर्धारित किया है—

आयुर्वेद निदेशक १ हजार से १५ सौ तक, फिलासि-फर २७५) से ६५०) तक, प्रथम श्रेणी के वैद्य का वेतन २००) से ८००) तक, द्वितीय श्रेणी के वैद्य हकीमों के के लिये १८०) से ४२५) तक, भिषगाचार्य से नीचे स्तर के वैद्य हकीमों के लिये १५०) से ३२०) तक, सेलेक्शन ग्रेड के कम्पाउण्डरों तथा नर्सों के लिये ११०) से २३०) तक, द्वितीय श्रेणी के कम्पाउण्डरों तथा नर्सों के लिये ७०) से ११०) तक देना स्वीकार किया है। इसके पूर्व वेतन आयोग ने निदेशक आयुर्वेद ११५०) से १५००), प्रोफेसर २५०) से ६२५) प्रथम श्रेणी के वैद्यों के लिये २७५) से ६५०), द्वितीय श्रेणी के लिये १७०) से ३९०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने की सिफारिश की थी।

● विदित हुआ है कि राजस्थान प्रदेश के ख्याति प्राप्त चिकित्सक आयुर्वेदाचार्य पं० सीता राम मिश्र पुनः राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन के निर्विरोध सभापति चुन लिये गए हैं। श्री मिश्र जी लगातार पांच साल से प्रदेश वैद्य सम्मेलन के सभापति हैं। इसके पूर्व ११ साल तक नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ के प्रधान मन्त्री रहे हैं। वर्तमान में अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन के उपाध्यक्ष हैं।

शोक प्रस्ताव

दिनांक ३१-८-६८ को उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध विद्वान लखनऊ आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य श्री शिवदत्त शुक्ल के आकस्मिक निधन पर श्री भंवरलाल दूगड़ आयुर्वेद विश्व भारती सरदारशहर के छात्र एवं अध्यापकों ने पांच मिनट मौन रखकर निम्नलिखित प्रस्ताव पारित कर श्रद्धांजलि अर्पित की—

पुस्तक चाहिए

श्री प्यारेलाल गुप्त द्वारा लिखित 'इन्जेक्शन विज्ञान' की एक प्रति उचित मूल्य या नवीन संस्करण के परिवर्तन में चाहिये।

प्राणाचार्य भवन, विजयगढ़ (अलीगढ़)

विष विज्ञान

इस पुस्तक में विद्वान लेखक ने प्राच्य पाश्चात्य पद्धति से सभी विषों का वर्णन बहुत श्रम के साथ किया है। सर्प विष के विषय में तो अत्युत्तम रीति से वर्णन किया गया है। इस पुस्तक को लेखक ने ग्यारह अध्यायों में विभाजित किया है। परिचय, निदान, चिकित्सा के उपरांत दाहक विष, क्षोभक विष, क्षोभक ऐन्द्रिय विष, मस्तिष्क प्रभावी विष, मूर्छोत्पादक विष, विषैली गैस, चिरकारी विष एवं जान्तव विष नामक अध्याय हैं। मूल्य ५) मात्र।

आयुर्वेद-प्रकाश

भारतीय रसशास्त्र के ज्ञाता उपाध्याय माधव द्वारा रचित आयुर्वेद प्रकाश अथवा रसमाधव एक अद्वितीय रस ग्रन्थ है। इसकी टीका प्रसिद्ध साहित्य मनीषी, अनेक वर्षों से शिक्षण कार्यों में संलग्न पं० सोमदेव जी सारस्वत रस शास्त्री द्वारा की गई है। यह पुस्तक कई पाठ्य क्रमों में भी निर्धारित हैं। विद्यार्थियों के हितार्थ ही यह टीका की गई है। ६५० पृष्ठों की अमूल्य पुस्तक का मूल्य ६) है।

नोट—विद्यार्थी यदि उपरोक्त तीनों पुस्तकें एक साथ मंगायेंगे तो २५ प्रतिशत कमीशन दिया जायगा। पोस्टेज पृथक होगा।

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

बिजली की मशीन

रियायती मूल्य से मगायें

	पूरा मूल्य	रियायती मूल्य
बिजली की मशीन	३५.००	३०.००
बिजली की मशीन रेडियोनुमा रेगूलेटर सहित	४५.००	४०.००
बिजली की मशीन डायनुमायुक्त	६०.००	५२.००

पो०टादि व्यय पृथक्, पूरा विवरण सितम्बर अङ्क में देखें।

पता----दाऊ मैडीकल स्टोर्स विजयगढ़ (अलीगढ़) यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेदिक तथा ऐलोपैथिक इन्जेक्शन एवं अन्य ऐलोपैथिक औषधियां हमसे मंगावें

हमारे पास हमारे अनेक ग्राहकों के पत्र ऐलोपैथिक औषधियां, इन्जेक्शन, आयुर्वेदिक इन्जेक्शनों को भेजने के लिए आते रहते हैं। अब हमने उनकी सप्लाई का समुचित प्रबन्ध पर लिया है। आशा है हमारे सहृदय पाठक हमें सेवा का अवसर प्रदान करते रहेंगे—

इञ्जेक्शन—

एम्बिस्टिन (स्क्वब्ब)	०.७५
एक्रोमाइसिन १०० एम जी.	२.५०
एविल (होस्ट)	०.६०
एण्टिस्टिन (सिबा)	१.१५
बैरिन १० सी.सी. (ग्लैक्सो)	२.६८
बाराफोल १० सी. सी.	४.१५
क्लोडेन १० सी. सी.	२.६०
कोरामीन	०.५५
कोरामीन इफेड्रिन	१.०५
कैल्शियम सैन्ड्रोज विटामिन सी १० सी. सी.	१.६०
डाइक्रिस्टिसिन (स्क्वब्ब)	०.८५
डाइक्रिस्टिसिन फोर्ट (स्क्वब्ब)	१.२५
इफेड्रिन १ सी. सी.	०.२५
ग्लूकोज २५ सी. सी.	०.४०
हेपाफोलिन १० सी. सी.	७.३६
इरगापायरिन ३ सी. सी.	१.४०
इरगापायरिन ५ सी. सी.	१.८०
कैपलिन (ग्लैक्सो)	०.७०
ल्यूटोसाइक्लिन १० एम.जी.	१.४५
ल्यूटोसाइक्लीन २५ एम.जी.	२.६०
लिवर एक्सट्रैक्ट १० सी. सी. (टी. सी. एफ.)	३.५०
लिवर एक्सट्रैक्ट फोर्ट १० सी.सी. (टी.सी.एफ.)	७.१३
मैकलविट १५ सी. सी. (सैन्डोज)	६.६५
मैक्राबिन ५ सी. सी. (ग्लैक्सो)	५.२८
मिल्क (दुग्ध) ५ सी. सी.	०.३०
नैप्टाल २ सी. सी.	०.७०
नोवलजिन	१.३०
नोवोकेन	०.५०
नार्मल सैलाइन २५ सी.सी.	०.४५
ओम्नोमाइसिन (होस्ट)	२.००
पैन्सलीन २ लाख	०.६०
,, ४ लाख	०.७०
,, १० लाख	१.२५
,, २० लाख	२.२३
स्पाजिमण्डन २ सी.सी.	१.७५
टैरामाइसिन २ सी. सी. (ड्यूमैक्स)	२.२५

टेबलेट — प्रति १००

एमाइनोफिलीन	१.८०
ए. पी. सी.	१.२०
एण्टिस्टिन टेबलेट	२०.००
एविल २५ एम. जी.	१२.००
अवेदन	७.५०
एस्प्रो	६.००
एनासिन	६.००
एवोमिन	२३.००
बैरिन ५० एम. जी.	६.६०
,, १०० एम. जी.	१३.८०
ब्यूटाकार्टिण्डण्न	३४.५०
ब्यूटाजोलिडिन २०० एम. जी.	३२.००
डैल्टाब्यूटाजोलिडिन	३०.००
बाइकोलैट	६.२५
बीकाडैक्स	६.००
विटामिन बी कम्प्लैक्स	१.५०
,, ,, फोर्ट (ग्लैक्सो)	१०.६०
बैलरगल	१८.४०
बैरलगन	२७.००
कोर्टेज्मा	२०.००
सिलिन १०० एम. जी.	३.००
,, ५०० एम. जी.	१४.५०
कोसाविल	१४.५०
क्लोडेन	१८.५०
सिबाजोल	४.५०
कोडोपायरिन	८.००
दारजिन	२३.००
दारजिन नियोमाइसिन	४५.००
एन्ट्रोवायोफार्म	१२.००
एबाजाइड	३.५०
ग्लैक्सैना	७.५०
होस्टाकोर्टिन	२३.५०
आइसोनैक्स १०० एम. जी.	२.५०
इन्टेस्टोपैन	१८.००
इर्गापायरिन	२७.००
कैपलिन	३.००
ल्यूटोसाइक्लिन ५ एम. जी.	३४.००
,, २५ एम. जी.	१२०.००
ल्यूमीनोल	६.५०
मैक्साफोर्म	१८.००
एम. बी. ६९३	१०.००
नोवलजिन	२०.००
नीवाक्विन	११.००
आस्टोकैल्शियम	४.५०
औरीसूल	१८.००
पैन्टिड (२ लाख)	२४.००
पैन्टिड सल्फा	३५.००
पैन्सलीन लोजेन्जेज	३.२५
पैप्स	१.७५
सैरीडान	१३.००
सोडामिन्ट	०.२५
सल्फाडाइजिन	५.००
सल्फाग्वानिडिन	१.५०
टैन्टैक्स फोर्ट	४४.००

नोट--मार्तण्ड के सभी आयुर्वेदिक इञ्जेक्शन हमसे कम्पनी दर पर कमीशन लेकर मंगावें।

नियम-- (१) उपरोक्त सभी दर नैट हैं किसी को किसी प्रकार का कमीशन नहीं दिया जायेगा।
(२) पैकिंग पोस्ट व्यय पृथक होगा। (३) कम से कम ५.०० एडवांस भेजें।
(४) केवल वैद्यों को भेजे जायेंगे इसलिए अपना रजिस्ट्रेशन नम्बर अवश्य लिखें।

पता--दाऊ मैडीकल स्टोर्स, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद-ऋतु में—

मकरध्वज वटी व्यवहार करें

'पहले परीक्षा करें' योजना से लाभ उठावें

मकरध्वज वटी आयुर्वेदिक सर्वोपयोगी प्रसिद्ध आयुर्वेदिक 'टॉनिक' है। ४१ गोली की एक शीशी का मूल्य ३.५० है। ३१ दिसम्बर तक "पहले परीक्षा करें" योजना के अन्तर्गत आप १०.०० मनियार्डर से भेज दें हम आपको रजिस्ट्री पार्सल से ४१-४१ गोलियों की तीन शीशी का सील बन्द पैकिट तथा साथ में २१ गोली का १ पैकट भेजेंगे। पहले आप २१ गोली वाला पैकट खोलकर व्यवहार करें इसके सेवन से आपको मकरध्वज वटी के गुणों से संतोष प्राप्त हो तो सीलबन्द पैकट को खोल कर व्यवहार करें। यदि आपको सन्तोष न हो (जिसकी सम्भावना कम है) तो आप तीन शीशी का शील बन्द पैकट उसी पार्सल में पैक करके रजिस्ट्री से हमको वापस कर दें, हम पोस्ट पैकिङ्ग व्यय २.०० काट कर ८.०० आपको मनियार्डर से वापस कर देंगे।

शक्ति संचय के लिए यह सर्वोत्तम ऋतु है
आप भी 'मकरध्वज वटी' मंगाकर व्यवहार करें।

एक बार की परीक्षा आपको 'मकरध्वज वटी' को भक्त बना देगी

नोट—यह रियायत केवल धन्वन्तरि के ग्राहकों को केवल एक बार ही दी जायगी।

धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार-नियोजन परिशिष्ट

परिवार नियोजन कार्यक्रम की महत्ता

श्री गोविन्दनारायण
सचिव-स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और नगर विकास मंत्रालय

भारत की आबादी की समस्या अनेक समस्याओं की जड़ है, स्वयं एक बड़ी समस्या है जो देश को कभी संकट में डाल सकती है। हमारी प्रधान मंत्री का कहना है कि जनसंख्या बढ़ने का अर्थ है कम तरक्की और अधिक समस्यायें। यदि हम इस समस्या को हल कर लेते हैं तो हमारी योजनायें भी सफल होंगी और हम अपने राष्ट्र के भविष्य को भी सुनिश्चित कर सकेंगे।

हमारी आबादी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। राष्ट्र के साधनों में इस गति से वृद्धि नहीं हो रही है और इस कारण हर व्यक्ति को मिलने वाली जीवन की सुख-सुविधाओं में कमी होती जाएगी। लेकिन भारत के परिवार नियोजन कार्यक्रम पर केवल साधनों के परिप्रेक्ष्य में ही नहीं, बल्कि देश की सामाजिक, सांस्कृतिक व प्रशासनिक स्थिति और प्रचार साधनों को ध्यान में रखकर विचार किया जाना चाहिए।

देश की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति को देखते हुए परिवार नियोजन कार्यक्रम का स्वीकार किया जाना और उसके लिए अपने व्यवहार में तदनुकूल परिवर्तन करना लोगों की इच्छा पर निर्भर है। इसलिए समाज में ऐसी तबदीली आनी चाहिए कि लोग छोटे परिवार को ही पसंद करें और व्यवहारिक रूप से इस पर अमल करने लगें। इस प्रकार इतिहास में पहली बार हमारे देश में व्यक्ति के व्यवहार पर खुले रूप से विचार हो रहा है। और लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि व्यक्तिगत व्यवहार का समाज पर क्या असर पड़ता है?

परिवार नियोजन कार्यक्रम से यह बात स्पष्ट हो गई है कि स्वास्थ्य और समाज कल्याण का व्यापक कार्यक्रम न केवल जरूरी है, बल्कि सम्भव और व्यवहारिक भी है।

इसका पता इस बात से भी चलता है कि पहले रोगी को चिकित्सा सुविधाओं की खोज में जाना पड़ता था, लेकिन आधुनिक चिकित्सा-व्यवस्था का लक्ष्य जहां कहीं भी बीमार हो, उसकी चिकित्सा करना और उसे स्वस्थ रखना है और इसे वह सामाजिक आवश्यकता और दायित्व समझता है। दूर-दराज क्षेत्रों में चिकित्सा सुविधायें उपलब्ध करके यह संभव हो सकता है। इस प्रकार चिकित्सा और जनस्वास्थ्य सेवाओं की प्रणाली और नीति में काफी परिवर्तन हुआ है।

जन-शिक्षा और प्रचार

परिवार नियोजन कार्यक्रम का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह कार्यक्रम जनता की भावनाओं को ध्यान में रखकर चलाया जाना चाहिए। अतः कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जनता को तैयार करना जरूरी है और इस प्रकार जन शिक्षा और प्रचार समूचे कार्यालय का आवश्यक अंग होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस कार्यक्रम का सम्बन्ध जनता की भावनाओं से हो, उसे चलाने के लिये अनेक प्रकार के कार्यकर्ताओं की आवश्यकता होती है। एक ओर इस कार्यक्रम को चलाने के लिए आवश्यक संख्या में डाक्टर, कम्पाउन्डर और नर्स चाहिए तो दूसरी ओर समाज शास्त्री चाहिए, जिससे कार्यक्रम को लोगों की भावनाओं और उनकी मान्यताओं को ध्यान में रखकर चलाया जा सके। कार्यक्रम में डाक्टरों और समाज शास्त्रियों को आपस में मिलकर और एक दूसरे के सहयोग से काम करना पड़ता है। इस प्रकार परिवार नियोजन कार्यक्रम आपसी सहयोग से काम करने वाले कार्यकर्ताओं की एक टोली तैयार करने में सफल हुआ है, जो भारत के सार्वजनिक जीवन में एक नई चीज है।

जन-सम्पर्क के नए साधन

सब जानते हैं कि जन-सम्पर्क के आधुनिक साधनों के जरिये केवल २० प्रतिशत लोगों तक ही पहुंचा जा सकता है। देश के अनेक हिस्सों में अभी भी रेल और सड़क यातायात की सुविधायें उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन परिवार नियोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत ऐसी व्यवस्था की जा रही है, जिससे देश के ६ लाख गांवों और ३ हजार नगरों के कोने कोने में रहने वाले लोगों से सम्पर्क किया जा सके।

परिवार नियोजन का संदेश देश के कोने-कोने में पहुंचाने के लिए लोक कला और लोक संगीत के अनेक उपायों का सहारा लिया गया है। फलस्वरूप देश भर में संगीत, कठपुतली के खेल और नाटकों की प्राचीन परम्परा फिर से सजीव हो उठी है। हम उन्हीं साधनों का ही सहारा लेते हैं, जिनकी लोगों में दिलचस्पी है। इसके अलावा लोगों को तैयार करने के लिये अन्य उपाय भी अपनाये जा रहे हैं।

इस प्रकार परिवार नियोजन कार्यक्रम के जरिए लोक कलाओं को राज्य का संरक्षण प्राप्त हुआ है, जो देश की संस्कृति और कला के विकास में काफी सहायक होगा।

आर्थिक लाभ

यह दुख की बात है कि स्वास्थ्य और समाज कल्याण कार्यक्रमों से होने वाले आर्थिक लाभ के आंकड़े प्रशासकों और योजना-निर्माताओं को नहीं भेजे जा सके। लेकिन परिवार नियोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत ऐसी कोशिश की जा रही है कि इसके लक्ष्य निर्धारित समयके अन्दर पूरे हों तथा कार्यक्रम के जरिये श्रमिकों और उद्योग-मालिकों को होने वाले लाभ को प्रचारित करने के लिए अध्ययन किए जायें। यदि हम ऐसा कर सके तो यह एक ऐतिहासिक घटना होगी।

परिवार नियोजन कार्यक्रम देश का अत्यधिक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है, क्योंकि इस पर सब लोगों के लिए खुशहाल जिन्दगी की आशा टिकी है। यद्यपि कार्यक्रम का लक्ष्य साधनों का समान वितरण करके देश के औद्योगिक और कृषि उत्पादन की गति को तेज करना है, लेकिन हम इस लक्ष्य को तत्काल प्राप्त नहीं कर सकते। हमें यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए। जन-भावनाओं से संबंधित कार्यक्रमों को जादू की तरह नहीं चलाया जा सकता। इसमें जनता को प्रेरित करने में कई वर्ष लग जाते हैं। हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि समूचे साधनों के उपयोग के बावजूद हम जन्म-दर को आधा कर देने के लक्ष्य को १० वर्ष से पहले पूरा न कर सकेंगे। लेकिन हमें ऐसा सूचक अङ्क अवश्य तैयार करना चाहिये जिसके आधार पर हम समय-समय पर कार्यक्रम की सफलता का मूल्यांकन कर सकें।

एक चुनौती —

परिवार नियोजन कार्यक्रम हमारे लिए एक चुनौती है। इसकी सफलता पर ही हम एक समृद्ध और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे और कार्यक्रम के विफल होने पर हम निरंतर संकटों का ही सामना करेंगे। मुझे कार्यक्रम से संबंधित कर्मचारियों और जनता पर पूरा विश्वास है, जिनके परिश्रम और सहयोग के बल पर हम इस कार्यक्रमको सफल बना सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस दो या तीन बच्चे
होते हैं घर में अच्छे

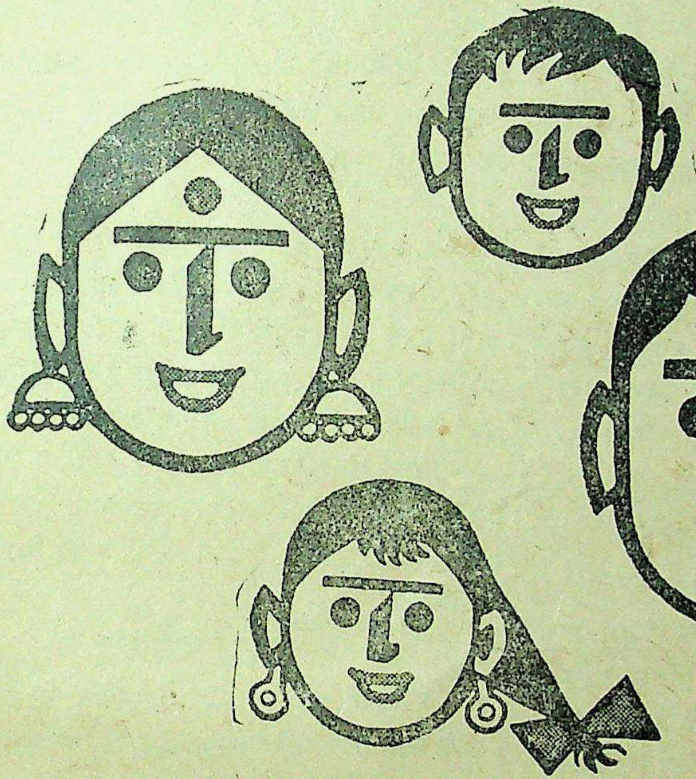

परिवार नियोजन केन्द्र की पहचान लाल तिकोन

davp 68/278

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार नियोजन समाज कल्याण का अनूठा कार्यक्रम

श्री दीपक भाटिया, परिवार नियोजन आयुक्त

भारत का परिवार नियोजन कार्यक्रम समाज कल्याण के इतिहास में अनूठा है। समाज में परिवर्तन लाने तथा चिकित्सा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं को नया अर्थ और दिशा देने में इस कार्यक्रम का अपना स्थान हो गया है। योजना बनाने वाले भलीभांति जानते हैं कि आयोजन की बुनियादी जरूरतें क्या हैं ? वे हैं वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन और आवश्यकताओं, साधनों, लक्ष्य समुदायों कार्यान्वियन की अवधि तथा मध्यकालीन व अन्तिम लक्ष्यों का निर्धारण।

कार्यक्रम की जटिलता

हमारे परिवार नियोजन कार्यक्रम को बच्चा पैदा कर सकने वाले दस करोड़ दम्पतियों की जरूरतें पूरी करनी हैं। दस करोड़ दम्पतियों का अर्थ हुआ, बीस करोड़ व्यक्ति जो संयुक्त राज्य अमरीका की जनसंख्या के बराबर है।

कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में अनेक कठिनाइयां हैं। जो समुदाय हमारे कार्यक्रम के लक्ष्य हैं वे देश के तीन हजार नगरों व कस्बों तथा पांच लाख साठ हजार गांवों में बिखरे हैं अस्सी प्रतिशत जनसंख्या जन सम्पर्क माध्यमों की पहुंच से बाहर है। तेज तथा आधुनिक परिवहन साधन पर्याप्त नहीं हैं। देश के बहुत कम लोग साक्षर हैं। देश के लोगों में तरह तरह की रीति रिवाज प्रचलित हैं। यहां अनेक भाषायें बोलने वाले लोग रहते हैं। इन्हीं कारणों से जटिलतायें पैदा हुई हैं। इन कठिनाइयों को सामने रखते हुए कार्यक्रम को चलाने के लिए वांछित संगठन का विकास करना पड़ा।

छोटी उपलब्धि नहीं

इसलिये यह छोटी उपलब्धि नहीं है कि इतना बड़ा कार्यक्रम तैयार किया गया और इसका कार्यान्वियन शुरू हुआ। इसके लिए निर्णय लेने तथा तेजी से कार्यान्वियन करने में सक्षम एक प्रशासन व्यवस्था का विकास किया गया ताकि लोगों की उनकी अपनी सामाजिक स्थिति के ही अनुकूल व्यवस्था की जा सके तथा सेवायें स्वीकार करने के लिए लोगों को प्रेरित किया जा सके। संगठन का काफी व्यापक होना जरूरी था ताकि यह प्रभावी हो और इसमें अधिक से अधिक लोग भाग ले सकें। लोगों की सेवा के लिए कार्यक्रम में जनता, उनके प्रतिनिधियों तथा स्वयसेवी संस्थाओं की गहरी दिलचस्पी अपेक्षित थी इससे लोगों तक सहज रूप से पहुंच सम्भव हो सकी और उनमें कार्यक्रम में भाग लेने तथा उसके प्रति अपनत्व की भावना पैदा हुई।

कार्यक्रम के प्रति इन संस्थाओं की केवल रुचि बढ़ाना ही आवश्यक नहीं, बल्कि कार्यक्रम का आयोजन करने तथा उसके कार्यान्वियन में उनका सा क्रिया सहयोग लेना महत्वपूर्ण है। यह कहा जा सकता है कि परिवार नियोजन कार्यक्रम को बनाने और चलाने का काम सरकारी कर्मचारियों ने नहीं बल्कि एक ऐसे संगठन ने किया है जो लोगों की जरूरतों के प्रति जागरूक है, लोगों के लिए योजना तैयार करता है तथा लोगों के ही लिए इसे लागू करता है।

अनूठा कार्यक्रम

कार्यक्रम की एक और उपलब्धि यह है कि इससे पहले कभी शिक्षा और प्रेरणा देने का इतना बड़ा और समन्वित कार्यक्रम नहीं चलाया गया। कृषि और उद्योग के क्षेत्र में बड़े अभियान चलाये गये हैं किन्तु वे उत्पादन बढ़ाने के लिये थे। फिर भी, हमारा कार्यक्रम निजी मामलों में व्यक्तिगत आचरण और दृष्टिकोण बदलने से सम्बन्धित है। इसी में इसका अनूठापन है।

उल्लेखनीय परिवर्तन

इतने बड़े प्रयास का ही यह परिणाम है कि भारत की जनता अब पहले की अपेक्षा अधिक मुक्त और निस्संकोच रूप से परिवार नियोजन तथा यौन विषयों के बारे में बात करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा प्राचीन समाज व्यक्तिगत और सामाजिक ठन व सामाजिक जीवन पर उसके प्रभाव का महत्व मझने लगा है। आज का वातावरण देखकर इस पर ना विश्वास नहीं होता कि हमारे समाज में यौन या सी आचरण के बारे में खुलकर बात करना वर्जित था। देश में इस सम्बन्ध में निश्चित परिवर्तन हुआ है और व परिवार नियोजन के बारे में बात करते हैं तो वह न भी दूर नहीं जब लोग इस पर बात करें कि किसी कितने बच्चे पैदा करने चाहिये। सामाजिक वातावरण उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है और शीघ्र ही व्यक्ति को परिवार के लिए अनुमोदन स्वयं समाज से मिलने ता।

जोखिम नहीं

सामाजिक महत्व का यह इतना बड़ा कार्यक्रम है कोई जोखिम नहीं उठाया जासकता। तदनुसार, केवल तरीके लागू किए जा सकें, जिनके कारगर होने पर विवाद नहीं था और ऐसा लम्बे समय के प्रयोग और निक परीक्षण से सिद्ध हो चुका था। लोगों को आप- न, लूप, निरोध (कण्डोम) और अब खाने की गोली कारगर गर्भनिरोधक तरीकों में किसी एक को चुनने अवसर देना पड़ा। ४३ लाख गर्भनिरोधक आपरेशन गए तथा २८ लाख लूप लगाए गए। लोग खाने गोलियों के कारगर तरीके को किस हद तक स्वीकार हैं, इसका पता लगाने के लिए ३१२ आजमाइशी नायें शुरू की जारही हैं।

तरीके का चुनाव

इस प्रकार लोगों को एकओर गर्भनिरोध के विभिन्न कों में से किसी एक को चुनने की छूट दी जारही है न किसी एक को उन पर लादा नहीं जारहा है। के साथ ही, लोगों को अपनी जरूरत के अनुसार भिन्न प्रभावी तरीकों में से एक को चुनने का संतोष निरोध (कण्डोम) को छोड़कर यह कहा जासकता कि अगर अधिकांश लोग आपरेशन, लूप या खाने की ली को स्वीकार करें तो परिणाम संतोषजनक होगा न किसी एक कारगर तरीके के जोरदार प्रचार की क्षा अधिक अच्छा होगा।

समय का महत्व

परिवार नियोजन कार्यक्रम में जन्म-दर में कमी करने का लक्ष्य १९७६–७७ तक पूरा करना है। समयावधि के महत्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती है क्योंकि इसका ख्याल नहीं रखने से हमारी अर्थव्यवस्था की तथा प्रगति के लिए हमारे कार्यक्रमों की अपूरणीय क्षति हो सकती है। चूंकि जनसंख्या के एक विशेष वर्ग में निर्धारित अवधि में लक्ष्य पूरा करना है, इसलिए देश की जनता में सामाजिक परिवर्तन लाने का यह सुविचारित और अनूठा प्रयास है। इतिहास बताता है कि ऐसे परिवर्तन साधारणतया धीरे-धीरे, सहज रूप से लम्बी अवधि में होते हैं।

ऐसे कार्यक्रम के लिए सामग्री की पूर्ति की योजना निश्चित और प्रभावी ढंग से बनायी जाती है। सप्लाई और सेवाओं की व्यवस्था खराब हो जाने से बड़ी हानि हो सकती है तथा लोगों का विश्वास कम हो सकता है। इसलिए परिवार नियोजन संबंधी टोलियों के आवागमन और लगातार सप्लाई की उचित व्यवस्था बनाये रखना जरूरी है ताकि लोगों को जो चाहिए और जहां चाहिए, मिल सके। इसे संभव बनाने के लिए जनसम्पर्क और बिक्री की ऐसे विधियां अपनायी जा रही हैं, जो अबतक बड़े व्यापारिक और औद्योगिक प्रतिष्ठान ही अपनाते थे। हमने चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्य के क्षेत्र में नए कामों और नई विधियों की शुरुआत की है।

मजबूरियां

उपलब्धियों के अलावा, प्रशिक्षण, अनुसंधान और मूल्यांकन के क्षेत्रों में मुख्य रूप से कार्यक्रम की कुछ मजबूरियां हैं। सवा लाख प्रशिक्षित कर्मचारियों की जरूरत होने के कारण प्रशिक्षित कार्यक्रम पूरा होने तक रुका नहीं रह सकता था। दोनों बातों को साथ-साथ चलना था प्रशिक्षण के क्षेत्र में हमारी प्रगति धीमी होने के कारण मुख्यतया प्रशिक्षण संस्थायें बनाने और उनके लिए आवश्यक कर्मचारी भर्ती करने में लगने वाला समय था। अब चूंकि प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के ४६ केन्द्र हो गये, कार्यक्रम तेजी से चलेगा।

अनुसंधान

इसी प्रकार, अनुसंधान के क्षेत्र में २१ केन्द्रों के परिणाम अब मिल रहे हैं। इन परिणामों को कार्यक्रम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुशलता बनाये रखने में लगाना है तथा आगे अनुसंधान करने के लिए नयी समस्याओं का पता लगाना है।

मूल्यांकन कार्यक्रम की कमजोर कड़ी है। मूल्यांकन से तात्पर्य संगठन, तौर-तरीकों और क्षेत्रीय कार्यों के मूल्यांकन से है। इसके अलावा रिपोर्ट भेजने तथा रिकार्ड रखने की ऐसी प्रणाली बनानी होगी, जिससे समय पर निर्धारित केन्द्रों में हुए काम का पता चल सके।

कार्यक्रम के कार्यान्वियन के परिणामस्वरूप जनसंख्या में २० लाख की वृद्धि रोकी गयी है और अगर इसी दर पर प्रगति होती रही तो १९७६-७७ तक हम हर वर्ष जनसंख्या में एक करोड़ २५ लाख की वृद्धि रोक सकेंगे। इस समय जनसंख्या में प्रतिवर्ष १ करोड़ ३० लाख की वृद्धि होती है। इस प्रकार जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि में काफी कमी आ जायगी। तब हम अपनी जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने में सफलता का दावा कर सकेंगे और सर्वांगीण प्रगति के युग में प्रवेश करेंगे।

आगामी कार्यक्रम

हमें इस समय जो कार्य करना है वह अब तक की प्रगति को सुदृढ़ करना है। हमें कार्यक्रम के प्रशिक्षण और मूल्यांकन कार्यों को बढ़ाना है और आंकड़ों के संग्रह की व्यवस्था में सुधार करना है। यह और महत्वपूर्ण है क्योंकि इस कार्यक्रम के कार्यान्वियन के परिणामस्वरूप जनसंख्या की घटबढ़ का ध्यान रखना होगा। यद्यपि लक्ष्य १९७६-७७ का रखा गया है, सुप्रशिक्षित कार्यकर्ताओं, प्राप्त अनुभव तथा प्रशासन के सुधार के कारण हम इस कार्य में तेजी ला सकते हैं। और लक्ष्य की तिथि से पहले जन्मदर में कमी कर सकते हैं।

पूरी कोशिश भी पर्याप्त नहीं

हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। किन्तु पूरी कोशिश भी पर्याप्त नहीं है। हमें अपनी कोशिशों में दोगुनी चौगुनी वृद्धि करनी है। निर्धारित लक्ष्यों को यथासमय पूरा करना है। असफलता के लिये कोई बहाना नहीं हो सकता क्योंकि न तो धन और न जनशक्ति या सामग्री का अभाव है।

इसके अलावा, लोगों को शिक्षा और प्रेरणा देने का जोरदार अभियान चलाया जा रहा है। इसे स्वयं पूरित होना है। तभी हम कह सकते हैं कि छोटे परिवार को स्वीकार करने और अपनाने का वातावरण तैयार हो गया है। कार्यक्रम की सबसे बड़ी गारंटी इस बात में है कि लोग किस अंश तक सहयोग करते हैं और इसमें भाग लेते हैं। इसी में सर्वोत्कृष्ट जन शिक्षा भी निहित है।

मेरा विश्वास है कि साधनों के होने पर तथा अबतक की प्रगति तथा चालू कार्यक्रम से हम निश्चय ही जनसंख्या की समस्या सुलझा सकेंगे।

सोयाबीन

कुछ मास पूर्व धन्वन्तरि में एक लेख सोयाबीन के विषय में प्रकाशित किया गया था जिससे उसको मंगाने के लिये हमें अनेक पत्र प्राप्त हुए थे। लेकिन हम उस समय आपकी आवश्यकता पूर्ति नहीं कर सके थे। अब हमने इसका पूरा प्रबन्ध कर लिया है आप अपनी आवश्यकतानुसार सोयाबीन हमसे मंगा सकते हैं—

मूल्य—१० रुपया प्रति किलो।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

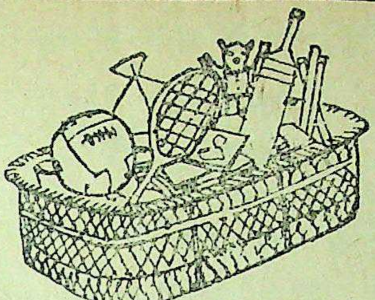

पालने की छुट्टी

पप्पू तीन साल का है और उसका यह पालना? बस, उससे एक दिन छोटा। वे भी दिन थे, जबकि पप्पू के बिना पालना और पालने के बिना पप्पू नहीं था। धीरे-धीरे पप्पू बड़ा हुआ। वह घुटने के बल चलने लगा। अब पालने में झूलना उसे अच्छा न लगता। पालने की छुट्टी कर दी गई। लेकिन, पालने का क्या हो? पप्पू सोचता रहा और उसने एक मजेदार तरकीब सोच निकाली। उसने रंग-बिरंगी किताबें, गुड़िया और बल्ले को पालने में रख दिया और फिर खुश........मां तो जैसे फूली ही न समाई, बोली–"जरा देखिये तो अपने लाडले को। कितना खुश है।" पिता ने एक नजर पप्पू पर डाली। फिर, हंसते हुए पत्नी से बोला–"पालने को हमने खूब लम्बी छुट्टी दी... ठीक ही किया था न?"

जी हां, इन्होंने ठीक किया। समझदार मां-बाप हमेशा परिवार नियोजन करते हैं। परिवार नियोजन का मतलब सिर्फ यही नहीं है कि बच्चे कम हों। बल्कि, इसका मतलब यह भी है कि बच्चे तभी हों, जबकि माता-पिता चाहते हों और उनकी परवरिश के लिये हर तरह से तैयार भी हों। बच्चे का जन्म अब एकदम संयोग की बात नहीं। बच्चे का जन्म अब आपके बस में है।

इसका श्रेय परिवार नियोजन को जाता है।

गुप्त सलाह और सामान के लिये निकटतम परिवार नियोजन केन्द्र में जाइये।

davp 68/171

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार नियोजन में अग्रगण्य महाराष्ट्र के दो जिले

महाराष्ट्र के उस्मानाबाद और बीड़ जिले कई बातों में लगभग एक से हैं। ये दोनों जिले एक दूसरे से मिले हैं और इनका सामाजिक एवं आर्थिक जीवन लगभग एक सा है। दोनों जिले महाराष्ट्र के भीतरी हिस्से में स्थित हैं और रेल लाइनों से दूर पड़ते हैं। इस क्षेत्र में कुछ तेल मिले हैं। वनस्पति तैयार करने वाली एक बड़ी मिल को छोड़कर शेष छोटी मिलें हैं। इस क्षेत्र के लोगों का मुख्य उद्यम खेती है और यहां की अधिकांश जनता भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की है।

ये दोनों जिले अब तक पिछड़े समझे जाते थे, किन्तु दो वर्षों तक लगातार राज्य में परिवार नियोजन में पहला और दूसरा स्थान प्राप्त कर इन्होंने यह साबित कर दिया है कि ये अधिकांश जिलों से आगे हैं। पिछले वर्ष इन्होंने लूप पहनाने के अभियान की ओर विशेष ध्यान दिया। उस्मानाबाद जिले में सबसे अधिक लूप पहनाए गए और इस जिले को १९६६-६७ का कर्वे पुरस्कार दिया गया। बीड़ का स्थान दूसरा था और उसे प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

१९६७-६८ में जब महाराष्ट्र ने गर्भनिरोध आपरेशनों पर अधिक जोर देने का निश्चय किया, तो स्थिति इन दोनों ज़िलों के अनुकूल न थी। फरवरी १९६८ तक उस्मानाबाद और बीड़ जिले धूलिया तथा नासिक जैसे जिलों से बहुत पीछे थे। केवल एक महीना शेष था और इतने कम समय में ये दोनों जिले उल्लेखनीय काम कर पायेंगे, इसकी संभावना कम थी। लेकिन उस्मानाबाद के जिला स्वास्थ्य अधिकारी डा. के. एस. लोहोकरे निराश होने वाले व्यक्ति नहीं हैं। उन्होंने एक महीने के अन्दर क्षेत्र के सभी प्रारंभिक स्वास्थ्य केन्द्रों का दौरा किया और चिकित्सा अधिकारियों को अतिरिक्त मेहनत की प्रेरणा दी।

मार्च के महीने भर उस्मानाबाद और बीड़ के चिकित्सा अधिकारी व्यक्तिगत आराम को तिलांजलि देकर रात दिन गर्भनिरोध आपरेशन करने में जुटे रहे। गाड़ियों की कमी थी अतः चिकित्सा अधिकारी गांव गांव आपरेशन करने के लिये मीलों पैदल अथवा साइकिल पर गए। अधिकतर इन डाक्टरों और इनके सहयोगियों को नस बंदी आपरेशन करने के लिये काफी दिनों तक अपने घरों से दूर रहना पड़ा और ऐसी जगहों पर आपरेशन करने पड़े जहां आपरेशन कक्ष की व्यवस्था क[रना] असंभव था।

बीड़ में डाक्टरों तथा उनके दल को दौरे प[र] जाने के लिये एक गाड़ी थी। जल्दी से इस गाड़ी में आपरेशन कक्ष बनाया गया। प्रारम्भिक स्वास्थ्य केन्द्रों [के] कर्मचारियों को आपरेशन के समय डाक्टर की सहा[यता] करने के दौरान अतिरिक्त प्रशिक्षण दिया गया।

मार्च के अन्त तक उस्मानाबाद में इतने अधिक आ[प]रेशन किए जा चुके थे, जो न केवल पिछले महीनों [के] औसत से अधिक थे, वरन् जिनकी वजह से उसको म[हा]राष्ट्र में पहला स्थान मिला। बीड़ में भी यही हाल थ[ा]।

उस्मानाबाद की जनसंख्या १७, ५०, ००० है। १९६७-६८ में यहां १२, ५०० आपरेशन करने का लक्ष्य [था]। जब अन्तिम आंकड़े इकट्ठे किये, तो पता चला कि उस्मा[]नाबाद में १९, ७७८ नसबन्दी और ३७१ महिलाओं [के] आपरेशन किए गए हैं। इस प्रकार उस्मानाबाद में कु[ल] २०, १४९ अर्थात् लक्ष्य के १६४ प्रतिशत आपरेशन कि[ए] गए। यहां लूप पहनाने का भी अच्छा काम हुआ। य[हां] ४, ८२३ अर्थात् हजार महिलाओं के पीछे २७७ म[हि]लाओं को लूप पहनाये गये। बीड़ की जनसंख्या ११, [] ००० है। यहां ८, २८१ आपरेशन करने का लक्ष्य था। यहां कुल १३, १६१ गर्भ निरोध आपरेशन किए गए। इनमें से १२, ७८४ नसबन्दी और ३७७ महिलाओं के [] इस प्रकार बीड़ में लक्ष्य के १५८,९३ प्रतिशत अ[थवा] हजार व्यक्तियों के पीछे ११७२ आपरेशन किए गये।

उस्मानाबाद और बीड़ की सफलता का श्रेय [] की जागरूक जनता तथा परिश्रमी डाक्टरों को है। इ[सके] अलावा इसका श्रेय उन प्रचारकों को भी है जिन्होंने [घर] घर जा कर लोगों को आपरेशन कराने की प्रेरणा दी। ऐसे लोगों में पराली गाव के शाहबुद्दीन का नाम उल्ले[ख]नीय है, जो लगभग एक हजार लोगों को आपरेशन [के] लिए लाये। निःसन्देह उन्हें लाए गये हर आदमी के लि[ए] पुरस्कार दिया गया।

यह नहीं कहा जा सकता कि महाराष्ट्र के ये दो जिले परिवार नियोजन के काम में आगे भी चोटी पर रहेंगे। किन्तु इस बात पर विश्वास किया जा सकता है कि इनके काम में कभी ढील नहीं होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर रेलवे

सूचना

दिनांक १।१०।६८ से समय सारिणी में सामान्य परिवर्तन किये जा रहे हैं। कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन नीचे दिये जा रहे हैं।

१. नई गाड़ियां चालू की गई—

गाजियाबाद तथा नई दिल्ली के बीच में एक नई गाड़ी चालू की गई है जो कि निम्न समयों पर चला करेगी—

अ—८.४५ जाना	गाजियाबाद	आना	११.५०
९.३७ आना— ९.४० जाना—	दहली	(Via Gal)	
९.५० आना	नई दहली	जाना	९.५२

सादुलपुर तथा हनुमानगढ़ के बीच एक अन्य नई गाड़ी चालू की गई है जो कि निम्न समयों पर चला करेगी—

ब—१७.२० जाना	सादुलपुर	आना	६.५०
२२.०० आना	हनुमानगढ़	जाना	१.१५

२. गाड़ियों की चाल बढ़ाई गई—

२६ गाड़ियों की ५ से लेकर ६० मिनट तक चाल बढ़ाई गई है।

३. रुकने के नये स्थान—

गाड़ी नं०	स्टेशन
१. ३ ए० एफ०/४ ए० एफ०	रामगंज
२. ३५१ अप	सूरासूसी
३. २ डी जे पी	गंधरा
४. १ वी डी एफ/४ वी डी एफ	बसई धनकोट
५. १ वी डी एस	जटौला जोरी सम्पका
६. ६८ डाउन	ऊटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	सादाबाद मोहम्मदपुर
७. १ वी डी एफ	अमोसी
८. २ एल सी	रामचन्द्रपुर
९. १ आर सी	साहिबाबाद
१०. ३ एम डी	

४. गाड़ियों के रुकने के स्थान बंद किये गये—

गाड़ी नं०	स्टेशन
१. ५१ अप/५२ डाउन	जाफराबाद
२. ४ ए के/५ ए के; ७ ए के/१० ए के	दुखनावरन
३. १ ए ए/३ ए ए, ६ ए ए/ ८ ए ए	गुरसर सुतलानी
४. २ ए एफ/५ ए एफ	रामगंज
५. ३४४ डाउन	गंधरा

५. गाड़ियों के समयों में महत्वपूर्ण परिवर्तन—

अ—ब्रोड गेज

१ आर सी	३.४५	जाना	रायबरेली	२ आर सी	आना	२३.४०
	१०.२०	आना	कानपुर		जाना	१७.०५
१ सी सी एम	२.४५	जाना	चोपन	२ सी सी एम	आना	२१.४५
	८.१०	आना	मिर्जापुर		जाना	१६.४०
१ सी सी जी	११.४५	आना	चुनार	२ सी सी जी	जाना	१४.३५
२ टी एफ	५.३०	जाना	टूंडला			
	१०.४५	आना	फरुखाबाद			
३३१ अप	५.४५	जाना	नई दहली			
१३ अप	११.१५	आना	दहली			

—मीटर गेज

अप	२१.५०	जाना	फुलेरा	२०८ डाउन	आना	६.३५
	६.३०	आना	जयपुर			
	४.००	जाना	मेरता रोड			
		आना	बीकानेर			
		जाना	जोधपुर			
		ना	मारवार			
			फुलेरा	२१० डाउन	आना	१७.१५
			जोधपुर		जाना	८.१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113414

	२०.५५	जाना	जोधपुर		आना	७.२०
	००.३५	आना	मारवाड़		जाना	३.४५
१ जे डी पी	३.५०	जाना	फुलेरा	२ जे डी पी	आना	२२.३०
			दिगाना		जाना	१८.००
१ जे जे वी	८.४०	जाना	जोधपुर	२ जे जे वी	आना	१२.५५
	१५.४५	आना	बारमेड़		जाना	६.१०
२ जे एस वी	३.०५	जाना	जोधपुर			
	९.५०	आना	मारवाड़			
१ जे आर एम	१७.४५	जाना	रतनगढ़	२ जे आर एम	आना	१०.००
	००.१५	आना	मेरतारोड		जाना	३.३०
१ जे पी जे	१८.२०	जाना	जैसलमेर	२ जे पी जे	आना	१०.५०
	२२.३५	आना	पोकरन		जाना	६.४०
४ जे एम एम	१०.००	जाना	मेरतारोड	३ जे एम एम	आना	११.३७
	१०.३२	आना	मेरता सिटी		जाना	११.०५
२ जे पी वी	४.४५	जाना	पीपर रोड	३ जे पी वी	आना	९.२०
	६.४५	आना	बिलाश		जाना	७.२५
४ जे वी पी	१३.१०	जाना	बालोतरा	३ जे वी पी	आना	१९.००
	१५.३०	आना	पचपाड साल्टडिपो		जाना	१७.३०

६—वातानुकूलित कोच

वातानुकूलित कोचों की सुविधा

अ—४१ अप/४२ डाउन मंसूरी एक्सप्रैस दहली से चलने वाली में १६-१०-६८ से तथा देहरादून से चलने वाली में १७-१०-६८ से समाप्त की जायगी।

ब—वातानुकूलित कोच ९३ अप/९४ डाउन जोधपुर मेल में हफ्ते में दो बार (हफ्ते में तीन बार के बजाय) दहली से सोमवार और शुक्रवार को तथा जोधपुर से शनिवार और बृहस्पतिवार को चला करेगा।

७—सीधे/आंशिक जाने वाले डिब्बे—

१ अप/२ डाउन मेल में दहली और कालका के मध्य चलने वाले एक प्रथम श्रेणी के डिब्बे के स्थान पर एक तृतीय श्रेणी का डिब्बा होगा।

गाड़ियों के समय, सीधे जाने वाले खण्डीय डिब्बे चलाने और बन्द करने, गाड़ियों में स्थान के वर्गीकरण के फेर बदल आदि के सम्बन्ध में पूरी-पूरी जानकारी के लिये कृपया अक्टूबर १९६८ की समय सारिणी रेलवे टिकट घर, आरक्षण, पूछताछ कार्यालयों तथा प्रमुख स्टेशनों के बुकस्टालों पर बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

—प्रमुख परिचालन अधीक्षक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्तरि

मकर ध्वज वटी

[विशुद्ध आयुर्वेदिक]

किसी कारण से उत्पन्न अशक्ति
निर्बलता, सुस्ती, खून की कमी
उत्साह व स्फूर्ति का अभाव आदि
अनेक विकार
शीघ्र नष्ट होते हैं और
शरीर पुष्ट शक्ति सम्पन्न व
कान्तिमय हो जाता है
ताजा खून पैदा होता, बजन
बढता व खूब भूख लगती है
कुछ ही दिनों में शरीर में
नवीन शक्ति, उत्साह व फुर्ति
उत्पन्न होती है ।

★

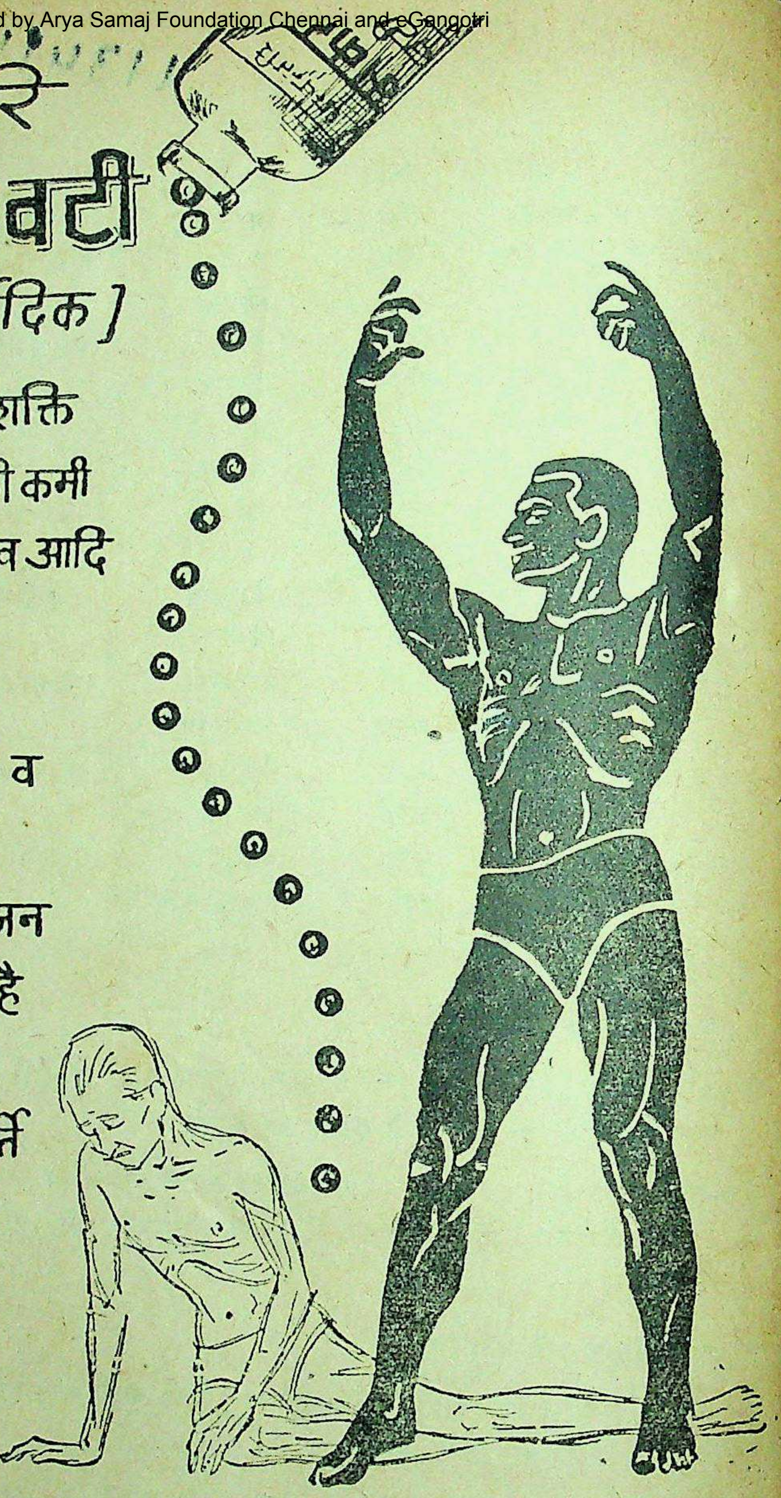

निर्माता. धन्वन्तरि कार्यालय
विजयगढ़ (अलीगढ़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐलोपैथी का मान मर्दन करने वाली—

कुछ चमत्कारी वनस्पतियां

बावलीघास-चूर्ण—यह रक्त रोकने वाली अव्यर्थ महौषधि है। अर्श का, रक्तप्रदर का, रक्तपित्त या नाक से खून जाता हो तो इसकी ३-४ मात्रा सेवन से ही रुक जाता है। बहुत बार एलोपैथी के इन्जेक्शनों के निष्फल हो जाने पर इसने तत्काल कार्य किया है। १॥ माशा चूर्ण और ५ काली मिर्च लेकर सिल पर पीसकर पानी में घोल कर ६ माशा मिश्री मिलाकर सुबह-शाम पिलाना चाहिये। शुद्धतापूर्वक मंगाकर, छाया में सुखाकर चूर्ण बनाया गया है। मूल्य १ किलो ७.०० और ५० ग्राम का डिब्बा ५० पैसा।

रास्ना चूर्ण—अभी हाल में हुए विद्वानों के परीक्षण से यह सिद्ध होगया है कि यह सभी वात रोगों की अव्यर्थ महौषधि है। कुछ चिकित्सकों का तो कहना है कि पक्षाघात की इससे उत्तम दूसरी औषधि नहीं है। विशेषतः पक्षाघात पर और अन्य समस्त वातरोगों पर इसके १ तोले चूर्ण का क्वाथ बनाकर दिन में दो बार पिलाना चाहिये। मूल्य १ किलो चूर्ण ७.०० और ५० ग्राम का डिब्बा ५० पैसा।

पलास पत्र चूर्ण—बार बार हो जाने वाले गर्भस्राव और गर्भपात की अव्यर्थ महौषधि है। जिन स्त्रियों का १०-१० बार गर्भ गिर चुका था वह इसके व्यवहार से सन्तानवती हुई हैं यदि गर्भस्थिति का पता लगते ही इसका व्यवहार प्रारम्भ करा दिया जाय और जब तक बच्चा न हो प्रतिदिन व्यवहार कराया जाय तो हम गारंटी के साथ कह सकते हैं कि गर्भ में किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं होगी और स्वस्थ और सबल बच्चा उत्पन्न होगा। गर्भावस्था में होने वाले प्रदर के लिये भी यह बहुत ही लाभप्रद है। इससे प्रदर भी ठीक होजाता है और गर्भ भी सुरक्षित रहता है। ३ माशे की मात्रा को प्रातःकाल गाय के पाव भर दूध में डालकर और पाव भर पानी डालकर औटाना चाहिये जब दूध मात्र शेष रह जाय तब मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये। मूल्य १ किलो ७.०० और ५० ग्राम का डिब्बा ५० पैसा।

उदुम्बर पत्र चूर्ण—यह मधुमेह की अव्यर्थ महौषधि है। इसके निरन्तर सेवन से पुराने मधुमेह और बहुमूत्र में शीघ्र लाभ होता है। १ तोले चूर्ण को पाव भर पानी में औटा कर चौथाई शेष रहने पर पिलाया जाय। यदि इसमें १ माशा शुद्ध शिलाजीत भी घोलकर पिलाया जाय तो और भी उत्तम है। मधुमेह की यह अल्प मूल्य की औषधि मूल्यवान औषधियों से अधिक गुणकारी है आप मधुमेह रोगी को कोई भी औषधि सेवन करायें साथ में इसे भी अवश्य सेवन करायें। मूल्य १ किलो चूर्ण ७.०० और ५० ग्राम का डिब्बा ५० पैसा।

सत्यानाशी के बीज—छाजन की अव्यर्थ महौषधि। अब तक यह समझा जाता रहा है कि छाजन असाध्य रोग है किन्तु इस औषधि के व्यवहार से निश्चित लाभ होता है। अनेक छाजन के रोगी इससे ठीक हो चुके हैं। सरसों का शुद्ध तेल लेकर उसे आग पर गरम करना चाहिए और इन बीजों को डालकर नीम की लकड़ी से घोंटना चाहिए। जब मलहम जैसा बन जाय तब ठंडा करके शीशी में भर लेना चाहिये। सत्यानाशी के पंचांग का पानी बनाकर उससे धोकर यह मलहम लगानी चाहिए। पाव भर तैल के लिये आवश्यक ५० ग्राम बीजों का मूल्य २.००

सत्यानाशी पंचांग चूर्ण—इसमें से २५ ग्राम चूर्ण आध सेर जल में डालकर खूब खौलाना चाहिए। खौलने पर ठंडा होने पर छानकर छाजन को खूब धोकर मलहम लगानी चाहिये। मूल्य ५० ग्राम का ४० पैसा।

गर्ग वनौषधि भंडार विजयगढ़ (अलीगढ़)

मुद्रक—वैद्य देवीशरण गर्ग [illegible] प्रेस विजयगढ़, प्रकाशक—वैद्य देवीशरण गर्ग, [illegible]
सम्पादक—वैद्य [illegible] B. Sc., [illegible] A. M. B. S.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

For the use of Registered Medical Practitioners, Hospitals and Laboratories only
Registered with the Registrar of Newspapers for India under R. N. 2197/57.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

121
30 JAN 1969

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़ की
प्रामाणिक शास्त्रोक्त एवं सफल पेटेंट औषधियां
निम्न--स्थानों
से प्राप्त कर समय और खर्च की बचत करें

अलीगढ़—त्रिलोकेन्द्र मामू भांजा रोड
हाथरस— „ „ लोहट बाजार,
आगरा—सुगनचन्द राजकुमार जैन रावतपाड़ा
कर्वी—वैद्य बिन्दा प्रसाद गुप्ता, नई बाजार
जरवल बाजार (बहिराइच)-श्री राम आसरे रामगोपाल
कानपुर-वैद्य श्यामाचरण सक्सैना ११८/१५७ कौशलपुरी
गनाई (अल्मोड़ा)—मनराल औषधालय, गनाई
राठ (हमीरपुर)—श्री नारायण आयुर्वेदिक कार्यालय
बांदा—१. श्री भगवानदास कुंजबिहारी लाल
२. श्री भास्कर बादर्स
गुना—श्री कस्तूरचन्द माण्डल, सदर बाजार
पेण्डा रोड—श्री चांदमल राठी
किशुनपुर (फतेहपुर)—वैद्य रामगोपाल भगवानदास
मुरादाबाद—पं० मुकन्दराम भरोसेलाल अमरोहा गेट
सीतापुर—पं० प्रभुदयाल वैद्य आयुर्वेदाचार्य
चौमुहा (मथुरा)—गुप्ता एण्ड कम्पनी
टूण्डला (आगरा)—श्री मूलचन्द इन्द्रसैन जैन
महोली (सीतापुर)—श्री भगवान दीन बाबूराम
घुंघली (गोरखपुर)—श्री रामरतन गुप्ता, शिव आयुर्वेदिक फार्मेसी
सिकन्दरपुर (फरुखाबाद) श्री जमुनाप्रसाद रामशरणलाल
कागारौल (आगरा)—श्री लक्ष्मीनारायण गोइल
बरौत (इलाहाबाद)—श्री हीरालाल सीताराम
मैनपुरी—श्री शिव भंडार
छिबरामऊ (फरुखाबाद)—डा० गुरुदयालसिंह जी
बिलासपुर—श्री हरीराम भीखमशाह, सदरबाजार
सिकंदरपुर (कानपुर)—श्री अक्षय मेडीकल स्टोर्स
मऊरानीपुर (झांसी)—श्री पुरुषोत्तम बबेले
फखरपुर (बहराइच)—श्री राजकरन सिंह जी
बबेरु (बांदा)—डा. सूर्यभान गुप्ता B. A. M. S.
कटनी—श्री सुरेश मेडीकल स्टोर्स, कमनिया गेट
पौढ़ी (गढ़वाल)—मो. मोहमद इस्माइल एण्ड सन्स
अतर्रा (बांदा)—मै० शंकर मेडीकल स्टोर्स
„ „ —मै० तिवारी जनरल स्टोर्स
हिंडौन सिटी—श्री चिम्मनराम पीरूराम
सिवनी मालवा (होशंगाबाद)—कैलाश औषधि भण्डार
शाढोरा (गुना)—श्री कल्याण चिकित्सालय
श्री मुन्नीलाल उर्फ जगन्नाथ प्रसाद
दूरा (आगरा)—श्री ठाकुरदास अग्रवाल
फफूंद (इटावा)—श्री रमानिवास औषधालय
गोला का बास (गौंडा)—श्री रामकिशोर हरिकृष्ण
करनैलगंज (गोंडा)—श्रीरवीन्द्र मेडीकल स्टोर्स
शेखा अहरौरा (मिर्जापुर)—अशोक मेडीकल हाल
अगवानपुर (मुरादाबाद)—वैद्य महेशचन्द गुप्त
बांसगांव (गोरखपुर)—श्री रामदास शिवनाथ प्रसाद
झांसी—श्री हरीराम सुन्दरानी, अन्दर सैयर गेट
खागा (फतेहपुर)—डा. मदनमोहन अग्निहोत्री
मोरावां (उन्नाव)—श्री बिन्दा प्रसाद श्रीराम गुप्ता चन्दनगंज
जगनेर (आगरा)—श्री मुरारीलाल अग्रवाल
कुरावली (मैनपुरी)—श्री ओ३म औषधि भण्डार
सहता (आगरा)—डा० बालचन्द जी शर्मा
खुरहंड (बांदा)—डा० रामकुमार पाण्डेय
खमरिया (वाराणसी)—श्री बरणवाल औषधि भण्डार
बांसडीह (बलिया)—श्री दिनेश मेडीकल स्टोर्स

जिन स्थानों पर हमारे एजेंट नहीं है वहां के औषध विक्रेता नियम व सूचीपत्र मंगाकर शीघ्र एजेंसी ले लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113414

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri